चन्द्रोदय ग्रन्थमाला—ग्रन्थ २.

हिन्दी

रचना चन्द्रोदय

पहला भाग।

लेखक,

रामलोचन शरण।

सम्पादक,

पण्डित गिरीन्द्र मोहन मिश्र,
एम. ए., बी. एल., काव्यतीर्थ।

मिलने का पता:-

चन्द्रोदय ग्रन्थमाला—ग्रन्थ २.

हिन्दी

रचना चन्द्रोदय ।

पहला भाग ।

(उच्च कक्षाओं के लिये)

लेखक,
रामलोचनशरण ।

प्रकाशक,
हिन्दी पुस्तक भण्डार,
लहेरियासराय

बी. एल्. पावगी द्वारा
हितचिन्तक प्रेस, रामघाट, बनारस सिटी में मुद्रित ।

दूसरी बार

मूल्य १)

॥ रामः ॥

भूमिका ।

शिक्षाविभागों और विश्वविद्यालयों के संचालकों ने 'रचना' को विद्यार्थियों की शिक्षा का एक प्रधान भाग समझकर मातृभाषा की बड़ी भलाई की है, परन्तु इस विषय की पुस्तकों की कमी से शिक्षकों और विद्यार्थियों को जो जो कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती हैं, सभी जानते हैं। हाँ, इसकी पूर्ति के लिये दो चार पुस्तकें भले ही दीख पड़ती है, परन्तु उनसे, जहाँ तक हम समझते हैं, यह कार्य भलीभाँति सम्पादित नहीं होता या होता भी है तो कुछ अंशों में इधर उधर की बातें बताकर क्लिष्ट भाषा में लिखे केवल लेखों हो तक, सो भी नियमानुसार नहीं। **हमने यह ग्रन्थ इसी अभाव की पूर्ति के लिये लिखा है।** यदि परीक्षापत्रों को देखेंगे तो समझ सकेंगे कि इस ग्रन्थ को आप सज्जनों की सेवा में पहुँचने की कितनी आवश्यकता थी।

जनवरी में हमारे **प्रवेशिका व्याकरणबोध** और **हिन्दी व्याकरण-चन्द्रोदय** नामक दो ग्रन्थ निकले। इन्हें गुणग्राही अधिकारियों और शिक्षकों ने ऐसा अपनाया कि वर्ष के भीतर ही **इनके तीन संस्करण होगये।** बीच बीच में हमारे प्रिय शिक्षक पत्र पर पत्र भेजने लगे कि आप रचना की भी एक पुस्तक लिखें। जब हम १९१३ में गया जिला स्कूल में थे उसी समय से इस काय के लिये बहुत कुछ करते धरते आरहे थे, इधर यह उत्तेजना मिली। विवश हो, कलम उठानी पड़ी और शीघ्रता में जहाँ तक होसका के सामने यह ग्रन्थ बनकर पहुँच गया।

इस ग्रन्थ में क्या है 'विषयसूची' देखने से तो ज्ञात होहीगा, परन्तु संक्षेप में यहाँ भी लिखते हैं। **इसके दो भाग किये हैं-पहले में हिन्दी भाषा, अक्षर, शब्द, वाक्य, विराम, भाषाव्यवहार, अपप्रयोग, अर्थप्रकाश और पत्ररचना इत्यादि के पाठ हैं और**

दूसरे में मुख्य मुख्य विषयों पर २०२ लेख हैं, जिनमें १०१ पूरे हैं जो प्रायः सभी, विषयविभागों (Points) के अनुसार अलग अलग विच्छेद (Paragraph) बाँधकर लिखे गये हैं, और शेष १०१ के विषयविभाग और इनके संक्षिप्त विवरण दिये गये हैं। इनकी सहायता से विद्यार्थी आपसे आप बिना किसी कठिनाई के लेख पूर्ण कर लेंगे। जहाँ तक होसका है **भाषा ऐसी रक्खी गई है जिसमें किसी प्रकार की अड़चन उपस्थित न हो।**

हिन्दी भाषा की कई बातों में विद्वानों का मतभेद है। जहाँ ऐसा असमंजस आपहुँचा है वहाँ प्रयोग पर ध्यान रखकर हमने अपना विचार दिया है और अन्य विद्वानों के मत भी उद्धृत कर दिये हैं। इस ग्रन्थ के पहले भाग के उदाहरणों के प्रायः सभी वाक्य और कुछ अनुच्छेद तथा दूसरे के १० लेख अविकल या कुछ परिवर्तन के साथ प्रसिद्ध विद्वानों के लेखों से लिये गये हैं। ऐसा करने में हमें भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, राजा लक्ष्मणसिंह, पण्डित बालकृष्ण भट्ट, पण्डित अम्बिकादत्त व्यास, बाबू रामचरण सिंह, पण्डित केशवराम भट्ट, पण्डित रामावतार शर्म्मा, पण्डित कामताप्रसाद गुरु, पण्डित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी, लाला भगवानदीन, बाबू मैथिलीशरण गुप्त, पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्याय, पण्डित रामजीलाल शर्म्मा, बाबू श्यामसुन्दरदास और बाबू राजेन्द्रप्रसाद इत्यादि विद्वानों के ग्रन्थों और सामयिक पत्रपत्रिकाओं से विशेष सहायता मिली है, इसलिये हम उनके बड़े ही ऋणी हैं।

साहित्यसागर में जितने गोते लगायेजायँ उतनी ही **"गूढ़ विषयों की बारीकियाँ"** दृष्टिगोचर होने लगती हैं। यदि उन बारीकियों की ओर ध्यान दें तो यह ग्रन्थ विद्वानों की दृष्टि में अयोग्य ठहरेगा। ऐसी अवस्था में समझते हैं कि हमने इसके लिखने में अनधिकार चेष्टा की है, परन्तु साथ ही यह सोच कर मन को धीरज भी होता है कि मातृभाषा की सेवा करने का अधिकार सभी को है, बने या न बने। यदि बड़े विद्वान् पुष्पों की माला चढ़ाकर उसकी

आराधना करते हैं तो हमें भी एक साधारण पुष्प द्वारा उसकी पूजा करनी चाहिये ।

स्थानीय नैथब्रूक स्कूल के हिन्दी शिक्षक बाबू **भूषणसिंहजी** ने रचना की थोड़ीसी बातें लिखी थीं । उन्होंने हमारी धारणा देखकर उदारता से अपनी कापी हमें दे दी, इससे जहाँ कहीं थोड़ी बहुत सहायता मिल गई है । साथ ही उक्त स्कूल के हेडपण्डित और हिन्दी के मार्मिक लेखक **श्री जीवनाथरायजी, व्याकरण-काव्यतीर्थ** ने इस ग्रन्थ के कतिपय जटिल अंशों में हमें अच्छी सहायता दी है, या यों कहिये कि यदि वे हाथ न बटाते तो वे अंश एक प्रकार से अधूरे ही रहते । अतः, इन हितैषियों के हम हृदय से गुण गाते और कृतज्ञता प्रकाश करते हैं ।

कुर्सों निवासी **पण्डित तुलाकृष्ण चौधरी** तथा अपने सहयोगी **पण्डित सिद्धिनाथ मिश्र, बाबू सूबालाल** और **बाबू रघुनाथप्रसाद** जी की प्रेरणा से हमने यह ग्रन्थ लिखा हैं, इसलिये इन बन्धुवरों के, तथा हिन्दी प्रचारिणी सभा के मन्त्री **श्री पण्डित गिरीन्द्रमोहन मिश्रजी** के, जिन्होंने अपना अमूल्य समय लगाकर इसका संशोधन किया है, हम अत्यन्त ही कृतज्ञ हैं ।

बहुत कुछ होने पर भी यह ग्रन्थ अभी पूर्ण नहीं कहला सकता । इसमें अभी बहुत से विषय पड़ेंगे । हमने ऐसे विषयों का संग्रह भी किया है, परन्तु कागज और छपाई की महँगी और मूल्य बढ़ जाने के भय के कारण नहीं दे सके । " परीक्षाओं के प्रश्नपत्र भी पूरे नहीं पड़ सके । आशा है, अगले संस्करण में उत्तर सहित पूरे प्रश्नपत्र दिये जायँ और यथासम्भव और कुछ सुधार भी किया जाय ।"

इस ग्रन्थ के लिखने और छपने इत्यादि में बड़ी ही शीघ्रता की गई है । पाठकों से प्रार्थना है कि वे यदि किसी प्रकार की भूल पावें तो कृपा कर अपनी राय सहित लिख भेजें कि पुनरावृत्ति में उसे सुधारने का प्रयत्न किया जाय ।

रामलोचनशरण ।

द्वितीय संस्करण की भूमिका ।

उस परम पिता परमेश्वर को अनन्त धन्यवाद है जिसकी अनुपम कृपा से हिन्दीप्रेमियों ने इस पुस्तक को ऐसे अपनाया कि वर्ष के भीतर ही इसके द्वितीय संस्करण की आवश्यकता हो गई । यद्यपि जहाँ तहाँ आवश्यक संशोधन कर दिया गया है तथापि कुछ और विषयों का समावेश इसमें कर देने की जो ग्रन्थकार की इच्छा थी वह शीघ्रतावश पूरी न हो सकी । आशा है हिन्दीप्रेमी इसे क्षमा करेंगे और इस संस्करण को भी पूर्ववत् अपनाकर उनके उत्साह को बढ़ायँगे जिससे हिन्दी गगनाङ्गन में शीघ्र अभिनव चन्द्रोदय हो सके ।

जीवनाथराय ।

विषयसूची ।

उपक्रमणिका (Introduction).

हिन्दी भाषा (Hindi Language).

अक्षरप्रकरण (Letters).

उच्चारण और विवरण (Pronunciation and Spelling).

अक्षर सम्बन्धी परिवर्तन (Phonetic changes).

शब्दप्रकरण (Words).

शब्द और अर्थ (Words & Meaning).

शब्दसंगठन (Structure of Words).

शब्दप्रयोग (Uses of Words).

वाक्यप्रकरण (Sentences).

वाक्य (Sentence).

वाक्यभेद (Kinds of Sentences).

वाक्यरचना (Syntax).

वाक्यविभजन (Analyssi).

परिवर्तन (Conversion).

चिन्हाविचार (Punctuation).

भाषाव्यवहार ।

अपप्रयोग ।

अशुद्धियाँ—

अर्थप्रकाश (Expression of Meaning).

पत्ररचना (Letter-writing).

परीक्षापत्र (Examination Papers).

नोट—पाठों के अन्त में अभ्यास (Exercises) और प्रकरणों के अन्त में मिश्रित अभ्यास (Miscellaneous Exercises) हैं। कुल ६२ अभ्यास (Exercises) हैं।

रामः ।

हिन्दीरचना ।

उपक्रमणिका (Introduction)-

हिन्दीभाषा (Hindi Language).

हिन्दीभाषा (Hindi Language).

"हिन्दी उस भाषा का नाम है, जो विशेषतया युक्तप्रान्त, बिहार, बुँदेलखंड, वघेलखण्ड, छत्तीसगढ़ आदि में बोली जाती है और सामान्यतया बंगाल को छोड़ समस्त उत्तरी और मध्यभारत की मातृभाषा है। मोटे प्रकार से इसे भाषा भी कहते हैं।" —मिश्रबन्धुविनोद।

हिन्दी की उत्पत्ति (Origin of Hindi)-

"हिन्दी की उत्पत्ति के विषय में दो मत हैं, एक तो यह कि यह संस्कृत की पुत्री है और द्वितीय यह कि इसकी उत्पत्ति प्राकृत से है, अथवा यों कहें कि प्राकृत ही बदलते बदलते अब हिन्दी होगई है। अधिकतर लोगों का विचार इसी द्वितीय मत पर जमता है, यद्यपि बहुत से विज्ञपुरुष अब भी प्रथम मत को ही ग्राह्य समझते हैं। भारतीय लिंग्विस्टिक सर्वे में डा० ग्रियर्सन ने इस विषय पर बहुत श्रम किया है और उन्हीं के एवं अन्य लेखों के आधार पर पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'हिन्दी भाषा की उत्पत्ति' नामक एक पुस्तक लिखी है। यह निश्चयात्मक समझपड़ता है कि हिन्दी की बहुत अधिक क्रियाएँ प्राकृत से ही निकली हैं, परन्तु कुछ संस्कृत, फ़ारसी आदि से भी निकली हुई जानपड़ती हैं। शेष शब्दों को

हिन्दी ने संस्कृत, प्राकृत, फ़ारसी, अरबी, अँगरेज़ी, चीनी, फ्रेंच आदि भाषाओं से पाया है और अब भी पाती जाती है।

हिन्दी की उत्पत्ति जानने केलिये इसके पूर्ववाली भाषाओं का कुछ वर्णन आवश्यक है। आदिम आर्यलोग तिब्बत, उत्तरी ध्रुव, दक्षिणी रूस, मध्य एशिया में से चाहे जहाँ से आये हों, पर पहलेपहल वे खोकन्द और बदख्शा में पहुँचे। वहाँ से कुछ लोग फ़ारस की ओर गये और शेष आर्य्यावर्त्त को चलेआये। फ़ारसवाले आर्य्यों की भाषा के परजिक और मीड़िक नामक दो भेद हुए। पारजिक भाषा बढ़ते बढ़ते पहलवी होकर समय पर फ़ारसी होगई। मीड़िक भाषा मीड़िया अर्थात् पश्चिमी फ़ारस में बोली जाती थी। पारसियों का प्रसिद्ध धर्म्मग्रन्थ 'अवस्ता' इसी भाषा में लिखा है। खोकन्द आदि से चलते चलते सैकड़ों वर्षों में आर्य्य लोग पंजाब पहुँचे। उस समय तक उनकी भाषा का रूप मीड़िक अर्थात् आसुरी भाषा से बदलकर पुरानी संस्कृत हो गया था। इसी में ऋग्वेद की पुरानी ऋचाएँ लिखी गई और इसी कारण ऋग्वेद के प्राचीनतम भागों की भाषा, अवस्ता की भाषा से कुछ कुछ मिलती है। पंजाब में आने से आर्य्यों की **पुरानी संस्कृत** यहाँ के आदिम निवासियों की भाषा से, जिसे **पहली प्राकृत** कह सकते हैं, मिलने लगी। यह गड़बड़ देखकर आर्यों ने अपनी भाषा का संस्कार करके उसे व्याकरण द्वारा नियमबद्ध कर दिया। इस प्रकार **वर्त्तमान संस्कृत** का जन्म हुआ। यह भाषा पुरानी वेदवाली संस्कृत से कुछ कुछ पृथक् है। आर्य्यों ने अपनी भाषा को शुद्ध एवं पृथक् रखने केलिये उसे नियमबद्ध तो कर दिया, पर सांसारिक स्वाभाविक प्रवाह किसी के भी रोके नहीं रुकता। आर्य्यों ने पुरानी प्राकृत को संस्कृत में नहीं घुसने दिया, पर समय पाकर आर्य्यों और अनार्य्यों में सम्पर्क की विशेष वृद्धि से स्वयं संस्कृत पुरानी प्राकृत में घुसने लगी और इस प्रकार पुरानी प्राकृत बढ़ते बढ़ते **मध्यवर्त्तिनी प्राकृत अर्थात् पाली भाषा** होगई, जो अशोक के समय प्रचलित थी और जिसमें बौद्धों के अधिकतर धर्म्मग्रन्थ लिखे

गये। संस्कृत कठिन होने के कारण सर्वसाधारण की भाषा न रह सकी और स्वयं आर्य्य भी प्राकृत बोलने लगे। इस प्रकार संस्कृत केवल पुस्तकों की भाषा रह गई और सर्वसाधारण में उसका व्यवहार न रहा। अतः, बोलचाल की भाषाओं से उसकी गणना उठ गई। जैसे जैसे समय बीतता गया वैसे ही वैसे दूसरी प्राकृत अर्थात् पाली का भी विकास होता गया और समय पाकरके मागधी, शौरसेनी, महाराष्ट्रीय आदि उसके कई विभाग होगये। इन्हीं अन्तिम भाषाओं को अब **प्राकृत** कहते हैं। वास्तव में यह प्राकृत के तृतीय रूप हैं, परन्तु अब द्वितीय रूप को पाली और प्रथम को पुरानी प्राकृत कहते हैं। प्राकृत के तृतीय रूपों के भी विकास समय के साथ होते गये। व्रजभाषा पश्चिमी विभागों की शौरसेनी प्राकृत का रूपान्तर है और पूर्वी भाषा मागधी का। अवधी भाषा शौरसेनी और मागधी के मिश्रण से बनी है। हिन्दी को पंडितों ने पूर्वी, माध्यमिक और पश्चिमी नामक तीन प्रधान भागों में विभाजित किया है। इनके अतिरिक्त राजपूतानी तथा पंजाबी भाषाओं का ठेठ पश्चिमी नामक एक और प्रधान विभाग हमारी समझ में होना चाहिये। इनका कुछ कुछ सम्पर्क गुजराती आदि भाषाओं से भी है। हिन्दी के मुख्य उपविभागों में मैथिली, मगही, भोजपुरी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, उर्दू, राजपुतानी, व्रजभाषा, कन्नौजी, बुन्देली, बाँगरू, दक्षिणी, खड़ीबोली आदि भाषाएँ हैं।

इन उपर्युक्त विकासों में कोई भी एकाएकी नहीं हुआ, वरन् प्रत्येक विकास शताब्दियों में धीरे धीरे होता रहा। एक देश की भाषा ग्राम ग्राम प्रति बदलती हुई अधिक दूर चलकर बिल्कुल दूसरी भाषा में परिवर्त्तित हो जाती है, परन्तु किन्हीं मिले हुए ग्रामों में भारी हेरफेर नहीं जानपड़ता। अवधी भाषा बंगाली से नितान्त पृथक् है, पर यह पार्थक्य धीरे धीरे ग्राम ग्राम प्रति बढ़ते बढ़ते हुआ है और यह नहीं कहा जा सकता कि अमुक स्थान से अवधी भाषा समाप्त होती है और मैथिली का प्रारम्भ होता है, अथवा मैथिली भाषा समाप्त होकर बंगाली चलती है। ठीक यही दशा समयानुसार

भाषाओं के हेरफेर की है। अतः,ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता कि हिन्दी का उत्पात्तिकाल क्या है ? मोटे प्रकार से इसकी उत्पत्ति प्रायः ७००सम्बत् के लगभग समझनी चाहिये, क्योंकि भाषा के प्रथम ग्रन्थ का समय सम्बत् ७७० है।"

—मिश्रबन्धुविनोद।

हिन्दी के अक्षर (Hindi Letters)—

हिन्दी भाषा जिन अक्षरों में लिखी जाती है उन्हें देवनागरी कहते हैं। देवनागरी के ४९ अक्षर हैं—

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ
क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न प फ ब भ म
य र ल व श ष स ह
ं (अनुस्वार), : (विसर्ग)

ऊपर लिखे अक्षरोंमें ऌ और ॡ × ये दो, हिन्दी में कभी नहीं आते तथा ॠ का प्रयोग भी कदाचित् * ही मिलता है।

ड ढ क ख ग ज औरफ के नीचे बिन्दी लगाकर आगे के अक्षर बनाये गये हैं—ड़, ढ़, क़, ख़, ग़, ज़, फ़। इनमें 'क़, ख़, ग़, ज़ और फ़' ये पाँच, हिन्दी में प्रयुक्त फ़ारसी, अंगरेज़ी इत्यादि भाषाओं के शब्दों में मिलते हैं। इन दिनों हिन्दी के कतिपय लेखक 'अ, आ, इ, उ' आदि अक्षरों के साथ बिन्दी या अर्द्धचन्द्र (ॅ लगाकर' मअ़लूम, 'इल्म, उम्र, लॉर्ड, जॉर्ज' इत्यादि शब्द लिखने लगे हैं।

× पाणिनीय व्याकरण में ऌ का दीर्घत्व नहीं माना गया है, परन्तु कलाप-व्याकरण और सारस्वत ने मानलिया है।

* मातॄण, पितॄण इत्यादि शब्द सन्धि के नियम से शुद्ध हैं, परन्तु ये विकल्प से मातृण, पितृण इत्यादि भी होते हैं।

नोट—ड़, ढ़, को छोड़ शेष अक्षरों के साथ बिन्दी आदि चिन्हों का प्रचार सर्वत्र नहीं है।

हिन्दी के शब्द (Hindi Words)-

हिन्दी में जितने शब्द बोले जाते हैं वे व्युत्पत्ति के अनुसार चार प्रकार के होते हैं—तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी।

१. **तत्सम** वे संस्कृत शब्द हैं जो अपने असली स्वरूप में हिन्दी में आये हैं। जैसे—माता, कवि, वायु, राजा, पिता, आज्ञा, अग्नि, वत्स, अश्रु, कर्पूर, काष्ठ, कोकिल, इत्यादि।

२. **तद्भव** वे हैं जो संस्कृत शब्दों से बने हैं। जैसे—खेत, राह, मेह, आँसू, आम, ऊँट, कपूर, काठ, कोयल, गेहूँ, गाँव, घिन, हाथ, चैत, साँग तेल, नींद, पाँव, मक्खी, रात, लाज, इत्यादि।

३. **देशज** शब्द संस्कृत से नहीं निकले हैं, वे भरतखण्ड के आदिम निवासियों की बोलियों से लिये गये हैं। जैसे—डाभ, पेट, पगड़ी, खिड़की, अरिबन, डोंगी, इत्यादि।*

नोट—खटखटाना, धड़ाम, चट इत्यादि अनुकरणवाचक शब्द भी इसी भाग में गिने जाते हैं।

४. **विदेशी** शब्द वे हैं जो फ़ारसी, अरबी, अङ्गरेज़ी, इत्यादि अन्य भाषाओं से आये हैं। जैसे—

फ़ारसी—आदमी, उमेदवार, बाग़, चश्मा, दूकान, चाकू, कमर, दाग़, मोज़ा, गुलाब, चापलूस, शर्म, जहान, फरेब, बराबर, होश, सूद, गुमास्ता, हर, ख़ूब, ज़ोर, गुल, अर्ज़ी, आज़ाद, दोस्त, रेशम, गर्म, कद्दू, ज़बान, दरबार, निशान, अरमान, उस्ताद, दुश्मन, सौदा, रास्ता, ख़ून, लाल, इत्यादि।

---

* ऐसे शब्दों की संख्या बहुत थोड़ी है और ऐसा सम्भव है कि आधुनिक आर्यभाषाओं की बढ़ती के नियमों की अधिक खोज और पहचान होने से विद्वान् लोग अन्त में इनकी संख्या बहुत कम कर देंगे।

अरबी–इम्तिहान, ऐतराज़, औरत, हाल, सिफारिश, अदालत, मुक़द्दमा, तारीख़, तनख़्वाह, मालूम, हाल, ख़लल, इजलास, अदना, ज़ामिन, फ़र्क़, फ़ायदा, किताब, हुक्म, माफ़ी, मुफ़्त, ख़राब, ख़बर, ख़याल, कुल, अजनबी, हकीम, असबाब, ज़ब्त, करीब, हराम, हिफ़ाज़त, हिम्मत, क़िस्सा ग़रीब, इजारा, लायक़, ख़ास, इजाज़त, आदाब, अदब, दफ़्तर, हुक्क़ा, गुस्सा, कसर, हिसाब, हक़, फ़ुरसत, मुख़्तार, फ़क़ीर, इत्यादि ।

तुर्की–तोप, चक़मक़, लाश, तगमा, कोतल, उर्दू, कलग़ी, क़ुली, क़ाबू, क़ालीन, आग़ा, चोग़ा, बावर्ची, क़ैंची, कलाबतू, कुमक, इत्यादि ।

पोर्चुगीज़—कमरा, नीलाम, आलमारी, पादरी, मेज़, गिर्जा, फर्मा, गोदाम, इत्यादि ।

अंगरेज़ी—क़लक्टर, लाट, प्रेस, डाक्टर, टीन, अपील, स्लेट, डिग्री, फीस, गिलास, कमीटी, फंड, स्कूल, रेल, समन, टिकट, नोटिस, लालटेन, रजिस्टरी, पतलून, कोट, इंच, फुट, मास्टर, लम्प, थियेटर, कमीशन, अरदली, बटन, बक्स, बिल, कम्पनी, इत्यादि ।

इबरानी (Hebrew)–यहूदी, इसमाईल, इत्यादि ।

यूनानी–कीमिया, कामूनी (पचानेवाली मीठी दवा), अनीसून (एक प्रकार की सौंफ) क़रनफ़ल (लौंग), इत्यादि ।

नोट–(१) प्रगति लागू, चालू, बाड़ा, बाजू, (ओर, तरफ), सीताफल इत्यादि मरहठी भाषा के और उपन्यास, प्राणपण, चूड़ान्त, भद्रलोग, गल्प, नितान्त इत्यादि बङ्गला भाषा के शब्द हैं, जो हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं ।

(२) हिन्दी में क्रिया और सर्वनाम शब्द प्रायः सबके सब तद्भव हैं ।

(३) तत्सम शब्द जो हिन्दी में आये हैं और आ रहे हैं वे प्रायः संस्कृत की प्रथमा के–अनुस्वार और विसर्ग रहित–एकवचन रूपों में हैं ।

(४) तत्सम और तद्भव शब्दों में रूपों की भिन्नता के साथ साथ बहुधा अर्थों की भिन्नता भी होती है । तत्सम शब्द प्रायः सामान्य अर्थ में आता है और तद्भव विशेष अर्थ में । तत्सम से कभी कभी गुरुता का और तद्भव से लघुता का अर्थ लेते हैं । इसी प्रकार कभी कभी तत्सम के दो अर्थों में से तद्भव

से केवल एकही अर्थ लेते हैं। जैसे-स्थान (जगह)-थान (पशुशाला), थाना (कोतवाली), दर्शन (मान्यजनों और देवताओं के दर्शन)-देखना (साधारण अर्थ में सभी केलिये), वंश (कुटुम्ब, बाँस)-बाँस (एक पौधा विशेष), गर्भिणी (केवल मनुष्य केलिये)-गाभिन (चौपायों केलिये)। सौभाग्य (अच्छाभाग्य)-सुहाग (पति के जीते रहने की दशा, पति का प्यार, अच्छा भाग्य), क्षेत्र (पवित्र स्थान-तीर्थ इत्यादि, रेखागणित का चित्र, जगह)-खेत (अन्न का खेत), स्तन (केवल मनुष्य केलिये)-थन (चौपायों केलिये)इत्यादि।

१—अभ्यास (Exercise).

१. किस भाषा को हिन्दी भाषा कहते हैं? २. हिन्दी भाषा कहाँ से निकली है? ३. हिन्दी में देवनागरी के कौन कौन अक्षर आये हैं? ४. फ़ारसी, अंगरेज़ी आदि भाषाओं के शब्दों में बिन्दीवाले कौन कौन अक्षर मिलते हैं? ५. किन किन अक्षरों के साथ बिन्दी आदि चिन्हों का प्रचार सर्वत्र नहीं है? ६. व्युत्पत्ति के अनुसार कितने प्रकार के शब्द हिन्दी में बोले जाते हैं? पाँच पाँच उदाहरण दो। ७. किन किन विदेशी भाषाओं के शब्द हिन्दी में आये हैं? प्रत्येक के पाँच पाँच उदाहरण दो। ८. देशज शब्दों के पाँच उदाहरण दो। ९. तत्सम और तद्भव शब्दों में रूपों की भिन्नता के साथ साथ बहुधा अर्थों की भिन्नता भी होती है-इसके पाँच उदाहरण दो। १०. यदि विदेशी शब्दों को निकाल दें तो हिन्दी की कोई हानि भी होगी? कैसे?

अक्षरप्रकरण (Letters).

उच्चारण और विवरण

(Pronunciation and Spelling).

अ— (१)

उच्चारण केलिये प्रत्येक व्यञ्जन में अ मिला हुआ है। इस अ का उच्चारण अवश्य होना चाहिये, परन्तु नीचे लिखी अवस्थाओं में इसका उच्चारण प्रायः नहीं होता——

१. हिन्दी के अकारान्त शब्दों में अन्त्य अ का उच्चारण नहीं होता। जैसे-रात, दिन, मोहन, कलस, लटकन, गपड़चौथ, इत्यादि।

अपवाद–एकाक्षरी शब्द का, शब्द के संयुक्त अन्त्याक्षर का और इ, ई या ऊ के आगे के य का **अ** पूर्ण उच्चरित होता है । जैसे–व, न, धर्म, इन्द्र, प्रिय, सीय, राजसूय, इत्यादि ।

२. चार अक्षरों के अकारान्त शब्द में दूसरे अकारान्त वर्ण का **अ** अनुच्चारित रहता है । जैसे–झटपट, कामरूप, इत्यादि ।

अपवाद–यदि दूसरा अक्षर संयुक्त हो या पहला अक्षर उपसर्ग हो तो दूसरे अक्षर का **अ** पूर्ण उच्चरित होता है । जैसे–सत्यलोक, प्रचलित ।

३. अकारान्त भिन्न तीन अक्षरों के शब्द के दूसरे या चार अक्षरों के शब्द के तीसरे अकारान्त वर्ण का **अ** अनुच्चारित रहता है । जैसे–कपड़ा भागना, निकलना, समझना, इत्यादि ।

४. यौगिक शब्दों के मूल अवयवों का अन्त्य **अ** अनुच्चरित रहता है । जैसे–देवलोक, प्रबलता । लड़कपन, इत्यादि ।

५. शब्द के आदिवर्ण का **अ** सदा उच्चरित रहता है ।

ऋ–

ऋ का उच्चारण **रि** की भाँति होता है, भेद नहीं जानपड़ता । इसी आधार पर पुराने काव्य ग्रन्थों में 'रिषि' रितु, रिन' शब्द मिलते हैं ।

ए और ओ–

१. कभी कभी **ए** और **ओ** बिना खिंचावट के उच्चरित होते हैं और ऐसी अवस्था में इन्हें कोई कोई क्रमशः **इ** और **उ** से बदलकर भी लिखते हैं । जैसे–एकाई–इकाई, एकट्ठा–इकट्ठा, एलाका–इलाका, देखाना–दिखाना, दोहाई–दुहाई, मोटाई–मुटाई, सोहाग–सुहाग, इत्यादि ।

२. '**ऐ** और **औ**' कई शब्दों में **अय** और **अव** के समान और कई शब्द में **अइ** और **अउ** के समान उच्चरित होते हैं । जैसे–मैना, डैना, कै, मौका, और, खिलौना–मैया, भैया, मैत्री, कौआ, गौ, इत्यादि ।

य और ष—

य और ष को कहीं कहीं ज और ख की भाँति भी बोलते हैं। जैसे—सूर्य, मनुष्य, इत्यादि। इसी आधार पर कई पुराने ग्रन्थों में य और ष के बदले ज और ख मिलते हैं। जैसे—जमुना, जजमान, भाखा, इत्यादि।

ड़ और ढ़—

ड़ और ढ़ प्रायः शब्द के अन्त अथवा बीच में आते हैं। जैसे—घोड़ा, बाढ़, बड़ाई, चढ़ाई, इत्यादि। अनुनासिक दीर्घ स्वरवाले व्यञ्जन के आगे ड़ या ढ़ के बदले क्रम से ड या ढ भी ला सकते हैं। जैसे—मेंढ़ा—मेंढा, खाँड़—खाँड, इत्यादि।

ल—

कई शब्दों में जहाँ पहले 'र' लिखाजाता था वहाँ अब 'ल' लिखना अच्छा समझा जाता है। जैसे—चेरा—चेला, ढारना,—ढालना, बारना, बालना, भोरा—भोला, इत्यादि।

नोट—'ऋ, ण, ष' ये अक्षर केवल संस्कृत के शब्दों में आते हैं। जैसे—ऋण, ऋषि, पुरुष, गण, रामायण, इत्यादि। 'ङ, ञ और ण' हिन्दी के शब्दों के आरम्भ में नहीं आते। **विसर्ग** केवल थोड़े से हिन्दी के शब्दों में आते हैं। जैसे—छिः, छः इत्यादि।

(२)

मूर्द्धन्य ण—

ऋ, र् और ष् के आगे न् के बदले ण् आता है। जैसे—ऋण, तृष्णा, इत्यादि।

यदि स्वर, कवर्ग, पवर्ग, य, व, ह और अनुस्वार में से कोई 'ऋ र् या ष्' और 'न' के बीच में आवे तो भी न् के बदले ण् आताहै। जैसे—रण, वरुण, रामायण, रावण, ग्रहण, श्रवण, प्रमाण, इत्यादि।

अपवाद–दुर्नाम, दुर्निवार, दुर्नीति, इत्यादि ।

स्वाभाविक णवाले शब्द–गण, गुण, निपुण, पाणि, मणि, वेणी, वेणु, वाणिज्य, वाणी, वीणा, वाण, वणिक, इत्यादि ।

मूर्द्धन्य ष--

अ, आ को छोड़ और किसी स्वर, क् या र् के आगे स् के बदले ष् होता है । जैसे–जिगीषा, विवक्‌षा=विवक्षा, निषिद्ध, विषम, सुषुप्ति, इत्यादि ।

अपवाद–विस्मरण, अनुसरण, विसर्ग इत्यादि ।

ब और व--

बोलने और लिखने में ब और व में भेद अवश्य रखना चाहिये । जो वेद को बेद और बात को वात लिखते हैं, वे भूल करते हैं । प्रायः अधिकतर विद्यार्थी तो व कभी लिखते ही नहीं । जहाँ व आना चाहिये वहाँ व और जहाँ व लिखना चाहिये वहाँ व् लिखते हैं, यह बड़ी भूल है । ब और व के उच्चारण स्थानों पर सदा ध्यान रखना उचित है ।

१. संस्कृत के बध्, बन्ध्, बल्, बाध्, बिद् या बिन्द, बुध बृंह् और बृह इत्यादि धातुओं से बने शब्द **बकारादि** हैं । जैसे–वीभत्स; बन्ध, बन्धन, बधिर, बंधु, बंध्या; बल, बालुका; बाधा, बाहु; बिन्दु; बुद्धि, बोध; ब्रह्म, ब्रह्मा, ब्राह्मण, ब्रह्मचर्य; बृहत्; इत्यादि ।

२. बहु, बाण, बाल, बिम्ब, बिल, बिल्व, बलात्, बलात्कार, बाला, बड़वानल, इत्यादि शब्द **बकारादि** हैं ।

३. हिन्दी की क्रियाएँ प्रायः सभी **बकारादि** हैं । जैसे–बोलना, बनाना, बकना इत्यादि।

अपवाद–वारना । (आगे देखो)

४. फ़ारसी के उपसर्ग बद, बा और बे तथा प्रत्यय बन्द, बर, बरदार, बाज बान और आबाद इत्यादि **बकारादि** हैं । जैसे–बदनाम बाकार,

बेसबर, नालबन्द, राहबर, हुक्काबरदार, ठट्ठेबाज़, बाग़वान, हैदराबाद, इत्यादि।

५. संस्कृत के निम्न लिखित शब्द **वैकल्पिक** हैं (अर्थात् ब और व दोनों से लिखे जाते हैं, परन्तु ब से लिखना अधिक प्रचलित है)–बाल्मीकि (वाल्मीकि), बाणिज्य (वाणिज्य), बल (वल), बाली (वाली), बाधा (वाधा), बाण (वाण), बाल (वाल=केश), बक (वक), बाष्प (वाष्प), बकुल (वकुल), बटु (वटु), बर्बर (वर्वर), बलि (वलि), बल्लव (वल्लव), बाहु (वाहु), बाह्य (वाह्य), बिन्दु (विन्दु), बीज (वीज), बीर (वीर), इत्यादि।

६. हिन्दी के निम्न लिखित शब्द भी **वैकल्पिक** हैं, परन्तु ब से लिखना अधिक प्रचलित है—

बिदाई (विदाई), बिलोना (विलोना), बिलपना (विलपना), बिलसना (विलसना), इत्यादि।

नोट–(१) **ब** और व के भेद से नीचे के शब्द अर्थों में भेद डालते हैं–
बासना (सुगन्धित करना)-वासना (इच्छा)।
बारना (बालना to light)-वारना (न्योछावर करना)।
बीरा (बीड़ा=पान की खीली)-वीरा (वीरा स्त्री)।

(२) नीचे लिखे शब्द संस्कृत में **व** से और हिन्दी में **व** और **ब** दोनों से लिखे जाने लगे हैं। जैसे–वन–बन, वचन–बचन, वात–बात (वायु), वाद–बाद (बहस), इत्यादि।

अनुस्वार (ं) और अनुनासिक (ँ)–

अनुस्वार (ं) पूर्ण रूप से तानकर उच्चरित होता है, परन्तु अनुनासिक* (ँ) में कुछ भी तानना नहीं पड़ता। जैसे–हंस, हँसी, इत्यादि।

युक्ताक्षर का आदि अक्षर यदि पञ्चम वर्ण हो तो इसे लोग अनुस्वार में भी बदलने लगे हैं। जैसे–गङ्गा–गंगा, चञ्चल–चंचल, घण्टा–घंटा, नन्द–नंद, चम्पा–चंपा, इत्यादि।

* मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः।१।१।८-पाणिनि।

नोट–(१) वाङ्मय, सम्राट्, तिन्हें, उन्हें इत्यादि शब्दों में आये पंचमवर्ण अनुस्वार में नहीं बदलते।

(२) अंतस्थ और ऊष्मवर्णों के पहले अनुस्वार नहीं बदलता। जैसे–संयोग, संरक्षण, संलग्न, संवाद, संसार, संहार, इत्यादि।

ठेठ–हिन्दी के शब्दों में दीर्घस्वरों के आगे (तथा क्रिया और इससे बनी संज्ञा में ह्रस्व स्वर के आगे भी) अनुनासिक (ँ) का प्रयोग होता है। जैसे–दाँत, नींद, सूँढ़, रेंढ़ी, सोंठ, मैं, उन्हें, दोनों, गूँगा, पाँचवाँ, परसों, जहाँ, लड़कों को; ऊँघना, रेंकना, हँसना, पहुँचना, हँसी, पहुँच, इत्यादि।

अपवाद–थोड़े से शब्दों में ह्रस्व स्वर के आगे भी अनुनासिक का प्रयोग होता है। जैसे–उँगली, मुँह, कुँवर, मँगनी, बहँगी, लहँगा, महँगा, इत्यादि।

नोट–इन दिनों पुस्तकों में अनुनासिक के बदले अनुस्वार ही का प्रयोग देखा जाता है, परन्तु यह उचित नहीं। जानपड़ता है कि त्वरालेखन के कारण लेखकों ने असावधानी की है या प्रेसों की अयोग्यतासे ऐसी बात हुई है। जो कुछ हो, परन्तु नये विद्यार्थियों–विशेष कर विदेशियों–केलिये यह रीति सन्देह में डालनेवाली है, अतः, हमारी राय है कि अनुस्वार और अनुनासिक में अवश्य भेद रक्खा जाय।

२. अभ्यास (Exercise).

१. शब्दों में कहाँ कहाँ अ का उच्चारण नहीं होता और कहाँ कहाँ होता है? २. 'काम, मोहन, अनबन, राजघाट' इन शब्दों में कहाँ कहाँ अनुच्चरित अ हैं? ३. चार वर्णों के शब्दों में कहाँ कहाँ अनुच्चरित अ आते हैं? ४. पाँच ऐसे शब्द कहो जिनके प्रथमाक्षर के स्वर ए या ओ के बदले इ या उ भी ला सकते हैं? ५. दो उदाहरण दो जिनसे यह प्रमाणित हो कि ड़ या ढ़ के बदले ड या ढ भी ला सकते हैं?

६. शुद्ध करो।

ब्राह्मनी, विम्वोष्ट, सूर्जवंहन, मनुस्य, बेद, भवबन्धण, धनुसबान, विष्मरन, चेस्टा, विसमकोन, हन्सी, नन्द, चन्पा, चयचल, सम्बाद।

७. कुछ ऐसे शब्द लिखो जो व और ब के भेद से अर्थ में भी भेद रखते हैं।

८. कुछ ऐसे शब्द लिखो जो संस्कृत में व से और हिन्दी में व और ब दोनों से लिखे जाते हैं। ९. अनुस्वार और अनुनासिक में क्या भेद है ?

अक्षरसम्बन्धी परिवर्तन ।

(Phonetic Changes).

१. सन्धि (Euphony)—हिन्दी का संस्कृत से घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण हिन्दी में आये तत्सम शब्दों केलिये संस्कृत के ही नियम लगते हैं, परन्तु यह नियम केवल शब्दों ही तक लगकर रहजाते हैं, हिन्दी के वाक्यों से उनका कुछ भी सम्बन्ध नहीं। **यदि** के साथ **अपि** मिलकर और **इति** के साथ **आदि** मिलकर बने **'यद्यपि' 'इत्यादि'** शब्द हिन्दी में भलेही लिखेजाते हैं, परन्तु **'राम यदि उपस्थित होता।'** केलिये **'राम यद्युपस्थित होता।'** का निर्वाह संस्कृत के वाक्य 'सुन्दरमिदमालेख्यमस्ति' की भाँति हिन्दी में कभी नहीं होसकता।

सन्धि के सहारे दो भिन्न भाषाओं के शब्द नहीं मिलाये जाते । अतः, कालेज+अध्यापक, खरच+आमदनी, मेरा+आशीर्वाद, के वदले कालेजाध्यापक, खरचामदनी, मेराशीर्वाद, लिखना उचित नहीं ।

संस्कृत में सभी प्रकार के शब्द सन्धि के नियमों से प्रायः मिला दिये जाते हैं, परन्तु हिन्दी में ऐसा मेल केवल शब्द और प्रत्यय में ही देखा जाता है, प्रत्यय के बदले दूसरे शब्दों के मेल में नहीं । हम 'लड़का' शब्द के साथ 'आई' प्रत्यय मिलाकर 'लड़काई' लिखते हैं, परन्तु 'लड़का' शब्द के साथ 'आया था' क्रिया लाकर **'लड़का आया था'** के बदले **'लड़काया था'** नहीं लिख सकते ।

नीचे प्रकृति और प्रत्यय के मेल के कुछ नियम दिये जाते हैं—

१. यदि प्रत्यय का आदि वर्ण स्वर हो तो मिलने के पहले शब्दान्त का स्वर गिरपड़ता है और यादि शब्द के अन्त्याक्षर के पूर्व दीर्घ स्वर हो

तो वह ह्रस्व होजाता है या उसका आधा उच्चारण होता है। ऐसी अवस्था में ए को इ से और ओ को उ से बदल देते हैं। यदि शब्दान्त का व्यञ्जन द्वित्त हो तो एक गिरपड़ता है। जैसे–लड़का + आई = लड़काई, लड़ + आई = लड़ाई, देख + आई = दिखाई, बिल्ली + आव = बिलाव, कुत्ता + इया = कुतिया, चौवे + आइन = चौबाइन, बाप + औती = बपौती, इत्यादि।

नोट–(१) ऐसे भी थोड़े से शब्द हैं जिनके अन्त्याक्षरों के पर्व के स्वर ह्रस्व नहीं होते और पूर्ण उच्चरित होते हैं। जैसे–डाक + ऊ = डाकू, चोर + ई = चोरी, अहीर + इन = अहीरिन, विहार + ई = विहारी, इत्यादि।

(२) ऐसे भी थोड़े से शब्द हैं जो बिना कुछ परिवर्तन के, प्रत्यय के साथ मिलजाते हैं। जैसे–गुरु + आई = गुरुआई।

२. यदि प्रत्यय का आदि वर्ण व्यञ्जन हो तो शब्द के साथ प्रायः बिना कुछ परिवर्तन के मिलाते हैं। थोड़ेसे शब्दों में इस नियम का निर्वाह नहीं होता। जैसे–चिल्ला + हट = चिल्लाहट, पानी + वाला = पानीवाला–लड़का + पन = लड़कपन, चूड़ी + हारा = चूड़िहारा, बड़ा + पन = बड़ापन, बड़प्पन, इत्यादि।

संयोग (Combination)–(१) किसी वर्ग के दूसरे या चौथे अक्षर (महाप्राण) के द्वित्वाक्षर का उच्चारण नहीं हो सकता, इसलिये संयोग का पूर्ववर्ण क्रमशः पहला या तीसरा अक्षर (अल्पप्राण) रहता है। जैसे–अच्छा, शुद्ध, रक्खा, इत्यादि।

नोट–बोलचाल में उच्चारण का झुकाव, वर्ग के पहले और दूसरे या तीसरे और चौथे अक्षरों के पूर्व और ह्रस्व स्वर के परे, क्रमशः उसी वर्ग के प्रथमाक्षर के बिठाने की ओर है। जैसे–कुत्ता, रक्खा, अच्छा, खट्टा, चिट्ठी, कत्था, इत्यादि। पता, चचा, छठा, चखा, लखा इत्यादि इस नियम के अपवाद हैं, परन्तु इन पर भी झुकाव का प्रभाव पड़ रहा है जिससे कोई कोई चच्चा, छट्ठा, मिट्ठा, इत्यादि, बोलबैठते हैं। *

---

* दिल्लीवाले प्रायः वर्ग के दूसरे और चौथे अक्षरों को क्रमशः पहले और तीसरे में बदलकर उच्चारण करने की ओर झुकते हैं। दे' भूख, धंधा, धोखा और ठंढा' इत्यादि शब्दों को क्रमशः 'भूक, धंदा, धोका और ठंडा' इत्यादि बोलते और लिखते हैं।

(२) संस्कृतनियमानुसार प्रायः दन्त्य स् के साथ त, थ का। तालव्य श् के साथ च, छ का और मूर्द्धन्य ष् के साथ ट, ठ का संयोग होता है। जैसे—स्थान, निश्चय, पुष्ट, इत्यादि।

नोट—यह नियम अंगरेज़ी शब्दों के लिये ग्राह्य नहीं है। मास्टर को माष्टर, वेस्ट को वेष्ट, मजिस्टर को मजिष्टर, इत्यादि लिखना हम उचित नहीं समझते।

(३) स्वर के आगे र् के साथ ह भिन्न किसी व्यञ्जन का संयोग हो तो यह व्यञ्जन विकल्प से दुहरा सकता है। जैसे—कर्म या कर्म्म, धर्म या धर्म्म, कार्य या कार्य्य, सूर्य या सूर्य्य, कर्ता या कर्त्ता, इत्यादि। (दुहरा लिखने की चाल कम होरही है।)

(४) जब निश्चयसूचक 'ही' को 'तब' और 'ब अन्त वाले कालवाचक अव्ययों के आगे लाते हैं तब ब के स्वर अ को गिरा देते हैं। इसके बाद ब् और ह दोनों 'भ' में बदले जाते हैं। जैसे-सब + ही = सभी, तब + ही = तभी, जब + भी = जभी, इत्यादि।

(५) कुछ सार्वनामिक बहुवचन शब्दों के आगे 'ही' लगाने से शब्द का अन्त्य स्वर गिरपड़ता है और तब ही के साथ संयोग हो जाता है। जैसे – हम + ही = हम्ही, तुम + ही = तुम्ही, जिन + ही = जिन्ही, उन + ही = उन्ही, इत्यादि।

नोट—हम्ही और तुम्ही के बदले हमी और तुमी भी लिखते हैं।

(६) ग और द के आगे ह रहने से वे दोनों स्वभावतः विकल्प से घ और ध में बदल जाते हैं। जैसे—पगहा—पघा, गदहा—गधा इत्यादि।

नोट—(१) हिन्दी में ज्ञ का उच्चारण बहुधा ग्यँ के तुल्य होता है, परन्तु इसका शुद्ध उच्चारण कुछ कुछ ज्यँ के समान है। ज्ञ और क्ष केवल संस्कृत शब्दों ही में आते हैं। जैसे—आज्ञा, परीक्षा, इत्यादि।

(२) ङ् और ञ् हिन्दी में सदा संयुक्त ही लिखेजाते हैं, परन्तु ण, न और म अलग और संयुक्त दोनों लिखे जाते हैं। जैसे—गङ्गा, चञ्चल, लवण, मन, राम, घण्टा, दन्त, चम्पा, इत्यादि।

लोप (Elision)-(१) संधि की भाँति दो शब्दों के मिलाने में यदि पहले शब्द का अन्त्य व्यञ्जन और दूसरे का आदि व्यञ्जन एक ही हों तो उच्चारण में सरलता केलिये दूसरे का आदि व्यञ्जन गिरपड़ता है और इसका स्वर पहले के अन्त्य व्यञ्जन के स्वर का स्थान लेता है। पहले शब्द में अन्त्य व्यञ्जन के पहले का दीर्घ स्वर ह्रस्व होजाता है। जैसे-वह + ही=वही, यह + ही=यही, यहाँ + ही=यहीं, तहाँ + हीं=तहीं, नाक + कटा=नकटा, इत्यादि।

(२) सार्वनामिक कई शब्दों के आगे निश्चय सूचक 'ही' लगाने से इसका ह गिरपड़ता है। जैसे-उस + ही=उसी, तिस + ही=तिसी, इत्यादि।

(३) उच्चारण में सरलता केलिये नीचे के शब्द भी अक्षरों के गिराने से बन गये हैं। जैसे-दुधांड़ी (दूध + हाँड़ी), भैया (भइया = भाई + इया), मैया (मइया=माई + इया), दैया (दइया = दाई + इया), पछैंया (पछँइया = पछँहिया = पछांह + इया), इत्यादि।

नोट-(१) गँवारू बोलियों में कई शब्दों के कोई न कोई अक्षर बदल गये हैं। जैसे-मतवल (मतलब), बेराम (बीमार), अमधुर-अरमुद (अमरूद), अमदी (आदमी), राल (लार), चहुँचना (पहुँचना), निसाफ (इनसाफ), इत्यादि। (शुद्ध बोलचाल में इन शब्दों का प्रयोग नहीं होता।)

(२) प्राकृत भाषा की भाँति, चलित हिन्दी में तो नहीं, परन्तु कतिपय प्रान्तिक भाषाओं में कुछ निष्प्रयोजन अक्षर भी मिलगये हैं। जैसे-पचासक (पचास), कछुक (कुछ), बाकीरो (बाकी), इत्यादि।

४. स्वराघात (Accentuation of Vowels)-

किसी शब्द के उच्चारण में प्रत्येक अक्षर पर स्वर का जो धक्का लगता है उसे स्वराघात कहते हैं।

संयुक्त व्यञ्जन के पूर्वाक्षर का, या अनुच्चरित अकारवाले अक्षर के पूर्वाक्षर का स्वर बोलने में तनजाता है। जैसे-पक्ष, अज्ञ, पर, बोलकर, इत्यादि।

संयोग के पूर्व का स्वर जहाँ तानकर बोलने में क्लेशकर होता है,

वहाँ बोलना और लिखना पलट भी देते हैं। जैसे—विपत्ति—विपत्, सम्पत्ति-सम्पद्, दुःख—दुख, इत्यादि।

विसर्गवाले अक्षर का उच्चारण झटके के साथ होता है। जैसे—दुःख, निःसन्देह, दुःशासन।

नोट—भिन्न भिन्न अर्थवाले एक ही रूप के शब्दों के अर्थ स्वराघात ही से जानेजाते हैं। जैसे—तू मेरे लड़के को **पढ़ा**। मैंने ग्रन्थ **पढ़ा**।

३. अभ्यास (Exercise).

१. मिलाओ।

बड़ा+आई, माई+इया, अब+ही, जहाँ+ही, बड़ा+पन।

२. विच्छेद करो—कभी, उसी, मिठास, भूखा, गोला, लड़कपन।

३. नीचे लिखे प्रत्येक शब्दयुगल में कौन शुद्ध है? कारण दो।
कर्म—कर्म्म, सूर्य—सूर्य्य, पगहा—पघा, गदहा—गधा, मास्टर—माष्टर।

४. नीचे लिखे शब्दों के लिये अपनी राय प्रकट करो।
अमधुर, मतबल, चहुँपना, निसाफ, कछुक, मइया।

५. स्वराघात से क्या लाभ है? उदाहरण दो।

४. मिश्रित अभ्यास।

(Miscellaneous Exercise).

१. नीचे जहाँ अशुद्ध वर्ण हो, शुद्ध करो और कारण दो-

गन्डक में बाढ आई है। गुफ्का में साधु रहता है। अच्छी पुस्तक पढ़ो। सन्सार में बुरे लोग भी हैं। निस्चय् नहीं हुआ है कि यह किस श्थान का पुस्प है। अक्षोहिणी एक बड़ी सेना का नाम है। आपको नमष्कार है। राम को पुरष्कार दो। भासा भाष्कर के कई मियम अब नहीं माने जाते। इस चिन्ह को विशर्ग कहते हैं। मै आपको अन्तष्करन से आसीर्वाद देता हूँ। निरोग रहने के नियम कहिये। बूढापा आगया। पीआस लगी है। रामायन में राम और रावन की कहानी है। इसका क्या प्रमान है? बिसमकोन किसे कहते हैं? ब्राम्हन से ग्रहन की बात पूछो। मुझे यह बात श्मरन नहीं। चार बेद हैं और अठारह पुरान।

शब्दप्रकरण (Words).

शब्द और अर्थ (Words and Meanings).

शब्द (Word)—

कान से जो सुनपड़े उसे **शब्द** कहते हैं। सुने हुए शब्द या तो ध्वन्यात्मक होते हैं या वर्णात्मक। जिनके अक्षर स्पष्ट न सुनपड़ें वे ध्वन्यात्मक और जिनके अलग अलग सुनपड़ें वे वर्णात्मकशब्द कहलाते हैं। व्याकरण में वर्णात्मक शब्दों का विचार होता है। ऐसे शब्द दो प्रकार के होते हैं—**सार्थक** और **निरर्थक**। सार्थक शब्द का अर्थ होता है और निरर्थक का कोई अर्थ नहीं।

व्युत्पत्ति के विचार से सभी शब्द दो प्रकार के होते हैं—**रूढ़** और **यौगिक**, परन्तु संज्ञाएँ तीन प्रकार की हैं—रूढ़, यौगिक और **योगरूढ़**।

जिस शब्द के खण्ड × सार्थक न हो सकें उसे **रूढ़** शब्द कहते हैं। जैसे—धन, गज। किसी रूढ़ शब्द में उपसर्ग, प्रत्यय या दूसरे शब्द के मिलाने से जो शब्द बने उसे **यौगिक** शब्द कहते हैं। ऐसे शब्द के खण्ड सार्थक होते हैं तथा खण्डार्थ और शब्दार्थ में पूर्ण सम्बन्ध भी रहता है। जैसे—दुर्जन (दुर्+जन), धनवान् (धन + वान), पाठशाला (पाठ+शाला)। जो यौगिक शब्द के समान ही बने, परन्तु सामान्यार्थ को छोड़ विशेषार्थ का प्रकाश करे उसे **योगरूढ़** संज्ञा कहते हैं। जैसे—पङ्कज, जलज, चक्रपाणि।

रूपान्तर के अनुसार सार्थक शब्दों के दो भेद हैं--विकारी और अविकारी। लिङ्ग, वचन और पुरुष के कारण जिस शब्द के रूप में कोई विकार होता है उसे विकारी और जिसके रूप में कोई विकार नहीं होता उसे अवि-

---

× कोष के विचार से अक्षर का भी अर्थ होता है, परन्तु यह अर्थ रूढ़ शब्द के अर्थ से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखता।

कारी या **अव्यय** कहते हैं। विकारी शब्दों के चार भेद हैं—**संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण** और **क्रिया**। 'संज्ञा' किसी वस्तु के नाम को, 'सर्वनाम' संज्ञा के स्थान में आनेवाले शब्द को, 'विशेषण' * संज्ञा की विशेषता बतलाने वाले शब्द को और क्रिया किसी व्यापार या काम को कहते हैं। अव्यय भी चार प्रकार के हैं—**क्रियाविशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक** और **विस्मयादिबोधक**। जो क्रिया के अर्थ में कोई विशेष बात पैदा करे उसे 'क्रियाविशेषण,' जो सम्बन्ध दिखावे उसे 'सम्बन्धबोधक,' जो दो वाक्यों, वाक्यखण्डों या शब्दों का परस्पर अन्वय दिखावे उसे समुच्चयबोधक या उभयान्वयी और जो मनोविकार को अर्थात् आश्चर्य, हर्ष, पीड़ा आदि को प्रकट करे उसे 'विस्मयादिबोधक' अव्यय कहते हैं। जैसे—संज्ञा—पुस्तक काशी। सर्वनाम—मैं, कौन, जो, वह। विशेषण—सुन्दर, काला, अच्छा। क्रिया—कहता हूँ, सोता था। क्रियाविशेषण—झटपट, धीरेधीरे। सम्बन्धबोधक—सहित, समेत। समुच्चयबोधक—और, या। विस्मयादिबोधक—ओह !, वाह !, हाय !

अर्थ (Meaning)—

अर्थ ३ प्रकार के हैं—**वाच्य, लक्ष्य** और **व्यङ्ग्य**।

१. यदि कोई शब्द अपने नियत अर्थ का बोध करावे तब उसे **वाच्य** कहते हैं। जैसे—बैल एक पशु है। यहाँ बैल शब्द का अर्थ पैर, सींग, और खुर आदि वाला स्वनाम प्रसिद्ध पशु है, इसलिये यह अर्थ वाच्य हुआ और बैल शब्द वाचक। (वाच्यार्थ का बोध अभिधानामक शब्दशक्ति से होता है।)

---

* विशेषण संज्ञा की व्यापकता को बाँध देता है। विशेषणरहित संज्ञा से जितने पदार्थों का बोध होता है, विशेषण सहित से उससे कम का होता है। 'गाय' शब्द जितने का बोध करता है, काली गाय से उतने का नहीं होता, क्योंकि 'काली' शब्द 'गाय' की व्यापकता को बाँध देता है।

२. यदि कोई शब्द नियत अर्थ का बोध न कराके अपने सादृश्य या गुण का बोध करावे तो ऐसा अर्थ **लक्ष्य** कहलाता है । जैसे—वह मनुष्य बैल है । यहाँ बैल शब्द अपने नियत अर्थ का बोध नहीं कराता, क्योंकि मनुष्य कभी चार पैरोंवाला पूँछदार बैल नहीं हो सकता । यहाँ बैल शब्द "बैल के सदृश" इस अर्थ का बोध कराता है, अर्थात् इससे उस मनुष्य की जड़ता, मूर्खता इत्यादि का बोध होता है । वह मनुष्य बैल है=वह मनुष्य मूर्ख है, इसलिये यह अर्थ 'लक्ष्य' हुआ और बैल शब्द 'लक्षक' (लक्ष्यार्थ का बोध लक्षणा नामक शब्दशक्ति से होता है ।)

३. एक अर्थ **व्यङ्ग्य** भी होता है। जैसे-किसी ने कहा कि सूर्यास्त हुआ । इतने में छात्र ने समझा कि सन्ध्योपासन केलिये आचार्य्य आज्ञा देते हैं । (व्यङ्ग्यार्थ का बोध व्यञ्जना नामक शब्दशक्ति से होता है।

८. अभ्यास (Exercise).

१. अभिधा, लक्षणा, और व्यञ्जना में क्या भेद है ? प्रत्येक का उपयोग कहाँ होता है ? उदाहरण दो ।

२. अर्थ कितने प्रकार के हैं ? समझाओ ।

३. वाक्य में शब्द कितने प्रकार के आते हैं ? उदाहरण दो ।

४. व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द कितने प्रकार के हैं ? समझाओ ।

५. यौगिक और योगरूढ संज्ञाओं में क्या भेद है ? उदाहरण दो ।

शब्द संगठन (structure of words).

नये नये शब्द बनाने के मुख्य साधन **प्रत्यय, उपसर्ग** और **समास** इत्यादि हैं ।

जो शब्दांश किसी शब्द के अन्त में जोड़ा जाता है उसे **प्रत्यय** और जो पूर्व में जोड़ा जाता है उसे **उपसर्ग** कहते हैं । मनुष्यत्व, लड़कपन, घरवाला इत्यादि शब्दों में त्व, पन और वाला इत्यादि प्रत्यय तथा दुर्जन, निर्दोष, प्रबल इत्यादि में दुर्, निर् और प्र इत्यादि उपसर्ग हैं ।

कई पदों का मिलकर एक हो जाना **समास** कहलाता है । समास से

उत्पन्न यौगिक शब्दों को समस्त या सामासिक शब्द कहते हैं। जैसे—राजमन्त्री, चक्रपाणि, गौरीशङ्कर, इत्यादि।

प्रत्ययान्त शब्द।

प्रत्यय मुख्यतः दो प्रकार के हैं-(१) वे जो धातु के अन्त में आते हैं। (२) वे जो नाम * के अन्त में आते हैं। 'लिखावट, आया' इत्यादि शब्दों में 'वट' और 'या' पहले ढंग के और 'मनुष्यत्व, बाहरी' इत्यादि में "त्व और ई' दूसरे ढंग के प्रत्यय हैं।

धातु के अन्त में आनेवाले प्रत्यय

धातु के अन्त में आनेवाले प्रत्ययों से बने शब्द दो प्रकार के हैं—(१) क्रिया प्रत्ययान्त (जैसे—खाया, जाता, इत्यादि। इसका वर्णन व्याकरण में देखो।) और (२) कृत्प्रत्ययान्त (भेद और उदाहरण नीचे देखो।)

कृत्प्रत्ययान्त शब्द।

(१) संज्ञा (Nouns derived from roots)-

(क) भाववाचक (Abstract Nouns)—

प्रत्यय—०, आ, आई, आन, आप, आव, आस, ई, औनी, त, ती, न्ती, न, ना, नी, र, वट हट, इत्यादि।

शब्द—मार, दौड़, देख, सोच, विचार। गुजारा, घाटा, छापा, घेरा। लड़ाई, चढ़ाई, गढ़ाई, पढ़ाई,। उठान, लगान,। मिलाप जुलाप। चढ़ाव। उतराव, बनाव, घुमाव। निकास, हुलास, प्यास। बोली, हँसी। पढ़ौनी। लिखौनी, कमौनी,। बचत, लागत, लगत, खपत। चढ़ती। घटती। बढ़न्ती, घटन्ती। लेन, देन। होना, चलना। होनी, कटनी, मरनी। ठोकर। मिलावट, सजावट, लिखावट, चिल्लाहट, खुजलाहट, इत्यादि।

नोट—'देखने से, संभालने से, बचाने से और कहने से' इत्यादि के बदले आधुनिक कविताओं में 'देखे से, संभाले, बचाये, कहे से' इत्यादि भी

* क्रिया के अतिरिक्त जितने शब्द हैं सभी को संस्कृत में नाम कहते हैं।

मिलते हैं। (उदाहरण प्रयोगप्रकरण में देखो।)

(ख) कर्तृवाचक (Agentives)–

प्रत्यय–आ, री, का, र, इत्यादि।

शब्द–भूँजा(भूँजनेवाला काँदू)। कटारी। उचक्का। झालर। इत्यादि।

(ग) कर्मवाचक (Accusative Nouns)–

प्रत्यय–ना, नी, इत्यादि।

शब्द–ओढ़ना (एक प्रकार का वस्त्र जिसको ओढ़ते हैं)। सूँघनी, ओढ़नी, खैनी, पीनी, इत्यादि।

(घ) करणवाचक–(Instrumental Nouns)—

प्रत्यय–आ, आनी, ई, उ, औटी, न, ना, नी, पा, इत्यादि।

शब्द–झूला, घोटा, ढोला, जाता, लग्गा। मथानी। रेती, जोती, लग्गी। झाड़ू। कसौटी। वेलन। घोटना, बेलना, ढकना, छनना, चलना, झरना, ढपना। घोटनी, बेलनी, ढकनी, चलनी, करनी, कतरनी, छोलनी, सुमरनी, कुरेलनी, खोलनी, मथनी। खुरपी। इत्यादि।

(२) विशेषण—

(Adjectives derived from roots).

(क) कर्तृवाचक (Agentives used as Adjectives)–

प्रत्यय–आऊ, आक, आका, आड़ी, आलू, इयाँ, उआ, ऊ, एरा, ऐत, ऐया, ओड़, ओड़ा, क, क्कड़, टा, ता, ना, वाला, वैया, सार, हार, हारा, इत्यादि।

शब्द–टिकाऊ, कमाऊ, खाऊ। तैराक, पैराक। लड़ाका, उड़ाका। खिलाड़ी। झगड़ालू। बढ़ियाँ, घटियाँ। पढुआ। डरू, बेचू। लुटेरा, नोचेरा। फनैत, ढलैत। बटैया। हँसोड़। भगोड़ा। घालक, जाचक। भुलक्कड़, कुदक्कड़। चट्टा। रोना (जैसे–रोनी सूरत)। पढ़नेवाला। पढ़वैया। मिलनसार। राखनहारा। इत्यादि।

(ख) भूतकालिक कृदन्त विशेषण-
(Past participial Adjectives).

प्रत्यय-आ।

शब्द-पढ़ा, धोआ, खाया, नहाया, इत्यादि।

नोट-(१) कभी कभी 'आ' प्रत्यय के आगे 'हुआ' लगाते हैं। जैसे-पढ़ाहुआ, खाया हुआ, इत्यादि।

(२) 'आ' प्रत्यय के अर्थ में 'इत' 'ऊ' और 'औआ' भी मिलते हैं। जैसे-थकित, जड़ित, जरू, चढ़ौआ, बनौआ, इत्यादि।

(ग) वर्त्तमान कालिक कृदन्त विशेषण-
(Present Participial Adjectives).

प्रत्यय-ता।

शब्द-पढ़ता, बहता, चलता, दौड़ता, इत्यादि।

नोट-कभी कभी ता के आगे हुआ भी आते हैं। जैसे-पढ़ताहुआ, दौड़ता हुआ, इत्यादि।

(३) अव्यय (Derived from roots)—

भूतकालिक और वर्तमानकालिक विशेषण क्रिया इत्यादि की विशेषता बतलाने के कारण अव्यय भी हो जाते हैं। ऐसे अव्यय द्वित्त होकर अधिकतर आते हैं, परन्तु अकेले कम। जैसे-बैठेबैठे, दौड़तेदौड़ते, आते, जाते, सोचते, विचारते, सोते जागते, आते ही आते।

संस्कृत कृत्प्रत्ययान्त शब्द।

संस्कृत के जितने तत्सम और तद्भव शब्द हिन्दी में आये हैं, संस्कृत-नियमानुसार प्रायः सभी—नहीं तो तीन चौथाई से अधिक शब्द, धातुज हैं। हिन्दी में केवल उन्हीं शब्दों को धातुज मानना उचित जान पड़ता है जो 'खाना, पीना, करना' इत्यादि के समान हिन्दी क्रियाओं से सम्बन्ध रखते हों। नहीं तो, लुहार (लौहकार का अपभ्रंश, लौहकर्म पूर्व में रहते कृधातु से अण् प्रत्यय) और सुनार इत्यादि शब्दों को भी कृदन्त में गिनना पड़ेगा,

जो हिन्दी भाषा केलिये एक भारी खटक है। यहाँ केवल बहुज्ञता मात्र के-लिये संस्कृत के कुछ प्रत्यय और शब्द दियेगये हैं।

(१) संज्ञा (Nouns derived from roots).

(क) भाववाचक--

(Abstract Nouns derived from roots).

अ (घञ्, अच्)–भू–भाव, स्वद्–स्वाद, पच्–पाक, त्यज्–त्याग, नश्–नाश, मुह्–मोह, ध्वन्स–ध्वंस। जि–जय, भी–भय।

अन (ल्युट्)–ध्यै–ध्यान, गम्–गमन, ज्ञा–ज्ञान, श्रु–श्रवण, मा–मान, दृश्–दर्शन, शी–शयन, कृ–करण, कथ्–कथन, दा–दान।

आ (अङ्)—सेव्—सेवा, मेध्—मेधा, दय्—दया, कृप्—कृपा।

न (नङ्)–यज्–यज्ञ, प्रच्छ–प्रश्न, यत्–यत्न।

ति (क्तिन्) स्तु–स्तुति, शक्–शक्ति, बुध्–बुद्धि, वच्–उक्ति, दृश् दृष्टि, क्लम्–क्लान्ति, गम्–गति, प्री–प्रीति, ख्या–ख्याति, वृध्–वृद्धि, मन्–मति, भज्–भक्ति, स्था–स्थिति, शम्–शान्ति, पुष्–पुष्टि, ऋध्–ऋद्धि, रम्–रति, क्षम्–क्षति, भी–भीति।

य (क्यप्)–शी–शय्या, हन्–हत्या।

अ–कित्–चिकित्सा, मान्–मीमांसा, गुप्–जुगुप्सा, ज्ञा–जिज्ञासा, पा–पिपासा, लभ्–लिप्सा, जि–जिगीषा।

इत्र–चर्—चरित्र।

(ख) कर्तृवाचक (Agentives derived from roots)-

अक (ण्वुल्)–गै–गायक, नी–नायक, पू–पावक, स्मृ–स्मारक, पच–पाचक, दृश्–दर्शक, पठ्–पाठक, जनि–जनक, कृ–कारक।

अ (क, अण्, ट, ड)–धन+दा–धनद, जल+दा–जलद, गृह+स्था-गृहस्थ। लौह+कृ–लौहकार, माला+कृ–मालाकार, कुम्भ+कृ–कुम्भकार। वन+चर्–वनचर, दिवा+कृ–दिवाकर, खे+चर–खेचर। पङ्क+जन्-पङ्कज, ख + गम्–खग।

अन (ल्यु)-मदि—मदन, नन्दि-नन्दन, नाश्-नाशन, साधि-साधन, शोभि-शोभन, रम्-रमण, गह्-गहन ।

ता (तृन, तृच्)-दा-दाता, पा-पाता, जि-जेता, भुज्-भोक्ता, वच्-वक्ता, सू-सविता, कृ-कर्त्ता, श्रु-श्रोता, रच्-रचयिता ।

अक (ण्वु)-रञ्ज्-रजक, नृत्-नर्तक ।

अ (अच्)-सृप्-सर्प, दिव्-देव, भू-भव ।

उ-तन्-तनु, मृ-मरु, बन्ध्-बन्धु । अश-आशु, मन्-मनु, स्यन्द-सिन्धु, बन्ध्-बधु ।

उण्-साध्-साधु, वा-वायु, जन्-जानु, तल्-तालु ।

अन्य-ऋ-अरण्य, पृष्-पर्जन्य ।

अनि-अव्-अवनि, धृ-धरणि ।

उर-मथ्-मथुरा ।

य (क्यप्)-सृ-सूर्य ।

(ग) कर्मवाचक—

(Accusative Nouns derived from roots).

अ (घञ्, अप्)-अर्थ्-अर्थ । हन्-घन ।

य (क्यप्)-भृ-भृत्य, कृ-कृत्य, शास्-शिष्य ।

य (ण्यत्)-भृ-भार्य्या, कृ-कार्य ।

उ-चर्-चरु ।

मन (मनिन्)-कृ-कर्म्म ।

मन्-धृ-धर्म्म ।

(घ) करणवाचक—

(Instrumental Nouns derived from roots).

अन (ल्युट्)-कृ-करण, चर्-चरण, नी-नयन, घ्रा-घ्राण ।

त्र-शास्-शास्त्र, स्तु-स्तोत्र, पत्-पत्र, शस्-शस्त्र, अस्-अस्त्र ।

अ (घञ्)–पद्–पाद ।

य (क्यप्)–सृ–सूर्य्य ।

इत्र–खन्–खनित्र ।

(ङ) सम्प्रदानवाचक—

अ (घञ्)–दास्–दास ।

अन (ल्युट्)–सम् + प्र + दा–सम्प्रदान ।

(च) अपादानवाचक—

म (मक्)–भी–भीम, भीष्म ।

अ (क्)–स्रु–स्रुव ।

आनक–भी–भयानक ।

अ (घञ्)–उप + अधि + इ–उपाध्याय ।

अन (ल्युट्)–अप + आ + दा–अपादान ।

(छ) अधिकरणवाचक—

इ (कि)–जल + धा–जलधि, नि + धा–निधि ।

अ (घ, घञ्)–गो + चर्–गोचर, व्रज्–व्रज, आ + पण्–आपण । रम्–राम, अधि + इ–अध्याय ।

अन (ल्युट्)–अधि + कृ–अधिकरण, स्था–स्थान ।

(२) विशेषण—

(Adjectives derived from roots.)

(क) भूतकालिक कृदन्त विशेषण—

(Past Participial Adjectives).

त (क्त)–मस्ज्–मग्न, क्लम्–क्लान्त, मुह्–मुग्ध, मूढ़, दृह्–दृढ़, दीप्–दीप्त, क्षि–क्षीण, मद्–मत्त, भञ्ज्–भग्न, बन्ध्–बद्ध, पूर्–पूर्ण, हृष्–हृष्ट, कुप्–कुपित, व्यथ्–व्यथित, रुज्–रुग्ण, दी–दीन, वाञ्छ्–वाञ्छित, ख्या–ख्यात, दा–दत्त, बाध्–बाधित, जीव्–जीवित, पच्–पक्व,

दृश्-दर्शित, ऋ-अर्पित, स्था-स्थापित, कृप्-कल्पित, पा-पिपासित, मान्-मीमांसित ।

(ख) वर्तमानकालिक कृदन्त विशेषण—

(Present Participial Adjectives).

अत (शतृ)-विद्-विद्वान्, अस्,-सत ।

आन, मान (शानच्) वृध्-वर्द्धमान, विद्-विद्यमान, सेव्-सेव्यमान, कम्प्-कम्पमान, दृश्-दृश्यमान, आस-आसीन, धाव्-धावमान, ज्वल्-जाज्वल्यमान, दीप्-देदीप्यमान ।

(ग) भविष्यकालिक और औचित्यबोधक कृदन्त विशेषण—

तव्य-कृ-कर्त्तव्य, भू-भवितव्य, वच्-वक्तव्य, दृश्-द्रष्टव्य, दा-दातव्य, गम्-गन्तव्य, हन्-हन्तव्य ।

अनीय-दृश्-दर्शनीय, श्रु-श्रवणीय, पूज-पूजनीय, सेव्-सेवनीय, रम्-रमणीय, वाञ्छ्-वाञ्छनीय, शिक्ष्-शिक्षणीय, ग्रह्-ग्रहणीय, कम्-कमनीय ।

य (यत्, ण्यत्, क्यप्)-दा-देय, पा-पेय, सह-सह्य, रम्-रम्य । वि+चर्-विचार्य्य, मान्-मान्य, त्यज्-त्याज्य, भुज्-भोज्य, बुध्-बोध्य, युज्-योग्य, पूज्-पूज्य, स्तु-स्तुत्य ।

(घ) कुछ और विशेषण शब्द—

ई (णिन्)-स्था-स्थायी, भू-भावी, दा-दायी ।

उ (कु)-लघ-लघु, ऋज्-ऋजु, मृद्-मृदु ।

वर (क्वरप्, वरच्)-नश्-नश्वर । स्था-स्थावर, भास्-भास्वर

उर (घुरच्)-भञ्ज्-भङ्गुर ।

आलु (आलुच्)-दय्-दयालु, नि+द्रा-निद्रालु ।

उक (उकञ्)-हन्-घातुक, भू-भावुक ।

इष्णु (इष्णुच्)-वृध्-वर्धिष्णु, सह्-सहिष्णु ।

(३) संस्कृत कृत्प्रत्ययान्त कुछ और शब्द।

(क) अन्य शब्द के साथ कृत्प्रत्ययान्त शब्द का मेल—

इन्द्र + जित् (जि + क्विप्) = इन्द्रजित्। विज्ञान + वित् (विद् + क्विप्) = विज्ञानवित्। वसु + धा (धा + क) = वसुधा। विश्व + भर (भृ + खच्) = विश्वम्भर। कुम्भ + कार (कृ + अण्) = कुम्भकार। कर्म्म + कार (कृ + अण्) = कर्म्मकार। अग्र + सर (सृ + ट) = अग्रसर। सर्व्व + ज्ञ (ज्ञा + क) = सर्व्वज्ञ। आतप + त्र (त्रै + ड) = आतपत्र। गृह + स्थ (स्था + क) = गृहस्थ। अनु + ज (जन् + ड) = अनुज। मनः + हारी (हृ + णिन्) = मनोहारी। शास्त्र + कार (कृ + अण्) = शास्त्रकार। जल + चर (चर् + ट) = जलचर। शोक + हर (हृ + अच्) = शोकहर। बल + कर (कृ + ट) = बलकर। अग्र + नी (नी + क्विप्) = अग्रणी। धन + द (दा + क) = धनद। भू + प (पा + क) = भूप। मनसि + ज (जन् + ड) = मनसिज। भुज + ग (गम् + ड) = भुजङ्ग, भुजग। कृत + घ्न (हन् + क) = कृतघ्न। सत्य + वादी (वद् + णिन्) = सत्यवादी।

(ख) उपसर्ग के साथ कृत्प्रत्ययान्त शब्द—

प्र—नम् + क्ति = प्रणति। प्र—भू + डु = प्रभु। उत्—तॄ + क्त = उत्तीर्ण। वि + स्तॄ + क्त = विस्तीर्ण। वि + स्तृ + क्त = विस्तृत। नि—स्था + अङ् = निष्ठा (स्त्री०)। वि—ज्ञा + ड = विज्ञ। प्र—सद् + क्त = प्रसन्न। वि—श्वस् + क्त = विश्वस्त। सम्—यम् + णिन् = संयमी। आ—श्रि + अच् = आश्रय। आ—ह्वे + क्त = आहूत। वि—धा + कि = विधि। आ—धा + कि = आधि। परि—श्रम् + णिन् = परिश्रमी। आ—छद् + क्त = आच्छादित। प्र—जन् + ड = प्रजा (स्त्री०)। सम्—राज + क्विप् = सम्राट्। आ—सञ्ज् + क्ति = आसक्ति। प्र—दा + क = प्रद। अभि—ज्ञा + क = अभिज्ञ। परि—मा + क्त = परिमित। उत्—विज् + क्त = उद्विग्न। वि—धा + य = विधेय। आ + सद् + क्ति = आसत्ति।

नाम के अन्त में आनेवाले प्रत्यय।

(नाम के अन्त में आनेवाले प्रत्यय दो प्रकार के हैं-तद्धित प्रत्यय और कारकान्त। नाम में जिन प्रत्ययों के लगाने से शब्दभेद बनते हैं वे तद्धित और जिनके लगाने से कारक बनते हैं वे कारकान्त कहलाते हैं।)

तद्धित प्रत्ययान्त शब्द।

(१) संज्ञा (Nouns).

(क) भाववाचक (Abstract Nouns)--

प्रत्यय-आ, आई, आना, आपा, आस, इख, इत, ई, ठा, डा, त, नी, पन, हट, गी, इत्यादि।

शब्द-आपा। बुराई, भलाई। ठिकाना। बुढ़ापा, सुघड़ापा। मिठास, खटास। कालिख। अपनाइत। गर्मी, सर्दी। कनैठी। दुखड़ा। रंगत, संगत। चांदनी। लड़कपन, बचपन। चिकनाहट, रुखड़ाहट, जिन्दगी, बन्दगी, उम्दगी, ताजगी, रंजगी, मर्दानगी (गी प्रत्यय फारसी है)। इत्यादि।

(ख) ऊनवाचक या लाघवार्थक (Diminutives)-

प्रत्यय-आ, वा, ई, क, चा, टा, ड़ा, ड़ी, या, री, ली, इत्यादि।

शब्द-पिलुआ, नौआ। बचवा, चमरवा। रस्सी, कटोरी। ढोलक, खुर्दक, बालक, तुपक। बगीचा, सन्दूकचा। रोंगटा। जोगड़ा, टुकड़ा। पलंगड़ी, टंगड़ी, खलड़ी। खटिया, डिबिया, कुतिया। कोठरी, छतरी। खटुली, बटुली। इत्यादि।

नोट-हिन्दी में बहुतसे ऐसे शब्द प्रयुक्त होते हैं, जिन्हें देखते ही एकाएक 'ऊनवाचक' का ध्यान बँधता है, परन्तु वे वास्तव में ऐसे नहीं हैं। जैसे-अँगूठी, कजरी-कजली, खरही, खोई, गाती, गुड्डी, चक्की, छड़ी, ड्योढ़ी, थैली, पहुँची, सिरकी, इत्यादि। (ये शब्द क्रमशः "अँगूठा, कजरा, खरहा, खोआ, गाता, गुड्डा, चक्का, छड़ा, ड्योढ़ा, थैला, पहुँचा, सिरका" इत्यादि शब्दों के ऊनवाचक जानपड़ते हैं, परन्तु ऐसी बात नहीं है।)

(ग) कर्तृवाचक (Agentives)—

प्रत्यय—आर, इया, ई, उआ, रा, वन, वाल, वाला, हारा । गर, गार। ची, दार, इत्यादि ।

शब्द—सुनार, लुहार, कुम्हार । अढ़तिया, मखनिया । भंडारी, कोठारी, तेली । मछुआ । सँपेरा, कसेरा, दँतवन । कोतवाल । गोवाला । चुड़िहारा।

क़लइगर, कारीगर, ज़रगर । यादगार । ख़ज़ानची, मशालची । ज़मीनदार । (इनमें उर्दू ढंग के प्रत्यय हैं ।)

(घ) सम्बन्धवाचक—

प्रत्यय—आल, औती, औटी, जा, ठा; डा, रा, ला, हर । आना, ई, का, ची, दान, इत्यादि ।

शब्द—ससुराल, ननिहाल । कठौती । हथौटी । भतीजा, भांजा। अँगेठी । मुखड़ा, नाकड़ा । कठरा, मँगरा, ककहरा । पीतल, नकेल। खंडहर, खोहर ।

जुर्माना, तलवाना, नज़राना, बयाना, दस्ताना । आदमी, मिर्ज़ाई। एका, मैका । घड़ोंची, दुमची । पानदान, गुलदान, ज़ुज़दान, क़लमदान, शमादान । (इनमें उर्दू ढंग के प्रत्यय हैं)

(२) विशेषण (Adjectives).

(क) **प्रत्यय**—आ, आइन, आहा, ई, ऊ, एरा, ऐ, ऐआ, ऐत, ऐला, ओं, ओं, का, ठा, तना, था, ना, रा, ल, ला, वाल, वाला, वाँ, सा, हर, हरा, हा, इत्यादि ।

शब्द—ठंडा, भूखा, निगोड़ा, कुबड़ा, पूर्वा । गोबराइन, घिनाइन। दखिनाहा, उतराहा । कई । पेटू, बाजारू, गर्जू । चचेरा, फुफेरा, ममेरा। जै, कै, तै । घरैया, बनैया । नतैत, लठैत। बनैला, विषैला । बीसो, पचासो। बीसों, पचासों । मायका । छठा । इतना, उतना । चौथा । अपना । दूसरा, तीसरा । बिगरैल, खपरैल । अगला, पिछला, पहला, सुनहला । दिल्लीवाल, काशीवाल । रामवाला, आपवाला । पाँचवाँ, बारहवाँ । आपसा, आगसा,

ऐसा, वैसा। लुतहर। सुनहरा। रुपहरा, इकहरा, दुहरा। टकहा, भुतहा, पैसाहा। इत्यादि।

(ख) उर्दू ढंग के प्रत्यय–आना, गीन, नाक, वान, मन्द, वर, सार, शाही, गार, दार, बाज़, इत्यादि।

शब्द–दोस्ताना, सालाना। ग़मगीन। दर्दनाक, खौफ़नाक। निगहबान, मिहरबान। अक्लमन्द, दौलतमन्द। ताक़तवर, क़ूवतवर। खाकसार। आपाशाही, नादिरशाही। मददगार। मजेदार। दगाबाज़ इत्यादि।

सर्वनाम (Pronouns).

प्रत्यय–स, ना।

शब्द–आपस, अपना।

(४) अव्यय (Indeclinables).

प्रत्यय–आँ, ए, ओं, तक, न, व, भर, यों, सों, हाँ, इत्यादि।

शब्द–वहाँ, यहाँ, जहाँ, कहाँ। ऐसे, कैसे, जैसे। कोसों, मुद्दतों, पहरों, घंटों। घरतक, लालतक, भीतरतक। दूधन, पूतन, मुसलन, मुश्किलन, जब्रन। अब, तब, जब, कब। घरभर, रातभर। यों, त्यों, ज्यों, क्यों। परसों, तरसों, नरसों, अतरसों। यहाँ, वहाँ, बारहाँ, अक्सरहाँ। इत्यादि।

(५) क्रिया (नामजधातु–Verbs).

१. लाज–लजाना, ठंढा–ठंढाना, गर्म–गर्माना, भीतर–भितराना, लात–लतियाना, बात–बतियाना, झूठ–झुठलाना।

२. रंग–रंगना, गाँठ–गाँठना, चिकना–चिकनाना।

३. दाल–दलना, चीथड़ा–चिथड़ना।

४. भनभन–भनभनाना, भरभर–भरभराना, छनछन–छनछनाना, टर्र–टर्राना, इत्यादि।

नोट–ऊपर कई शब्दों में 'आ' कई में 'या', कई में 'ला' और

कई में शून्य प्रत्यय लगाने से नामधातु बने हैं। कुछ नामधातु अनियमित हैं और कुछ ध्वनि विशेष के अनुकरण से बने हैं।

संस्कृत तद्धितप्रत्ययान्त शब्द।

(१) संज्ञा (Nouns).

१. संज्ञाओं से बनी संज्ञाएँ—

(Nouns derived from Nouns).

(क) भाववाचक (Abstract Nouns)—

ता–प्रभु–प्रभुता, बन्धु–बन्धुता, मित्र–मित्रता।

त्व–प्रभु–प्रभुत्व, बन्धु–बन्धुत्व, मनुष्य–मनुष्यत्व।

अ (अण्)–मुनि–मौन, कुतुक–कौतुक, सुहृद्–सौहार्द।

य (ष्यञ्)–चोर–चौर्य्य, दूत–दौत्य, पण्डित–पाण्डित्य।

य–दूत–दूत्य, सखा–सख्य।

(ख) अपत्यवाचक (Patronymic Nouns)–

अ (अण्)–वसुदेव–वासुदेव, रघु–राघव, मनु–मानव, यदु–यादव, पाण्डु–पाण्डव, जनक–जानकी, द्रुपद-द्रौपदी, पुत्र–पौत्र, दुहितृ–दौहित्र।

य (ण्य, यञ्)–दिति–दैत्य, जमदग्नि–जामदग्न्य, चणक–चाणक्य।

आयन (फक्)–नार–नारायण, बदर–बादरायण।

इ (इञ्)–दशरथ–दाशरथि, दक्ष–दाक्षी।

एय (ढक्)–कुन्ती–कौन्तेय, राधा–राधेय, भगिनी–भागिनेय।

इक (ठक्)–रेवती–रैवतिक।

नोट–(१) व्यवसाय अर्थ में–नौ–नाविक (इक–ठन् प्रत्यय)।

(२) स्थान अर्थ में 'अधि' और 'उप' उपसर्गों के आगे त्यकन् (त्यक) प्रत्यय लगाते हैं। जैसे–अधि–अधित्यका, उप-उपत्यका।

(३) उपासक अर्थ में–विष्णु + अ = वैष्णव, सूर्य + अ = सौर, गणपति-गाणपत्य, इत्यादि।

२. विशेषणों से बनी संज्ञाएँ ।

(Nouns derived from Adjectives).

(क) भाववाचक (Abstract Nouns)—

ता—बुद्धिमत्—बुद्धिमत्ता, नम्र—नम्रता, शठ—शठता, गुरु—गुरुता, लघु—लघुता, मूर्ख—मूर्खता, मधुर—मधुरता, शूर—शूरता, धीर—धीरता, सुन्दर—सुन्दरता, सहाय—सहायता, सुजन—सुजनता, उदार—उदारता, दरिद्र—दरिद्रता ।

त्व—गुरु—गुरुत्व, लघु—लघुत्व, मूर्ख—मूर्खत्व, महत्—महत्त्व, शूर—शूरत्व, वीर—वीरत्व, एक—एकत्व, धीर—धीरत्व, द्वि—द्वित्व ।

अ (अण्)—गुरु—गौरव, लघु—लाघव ।

(२) विशेषण (Adjectives).

(क) संज्ञाओं से बने विशेषण)—

(Adjectives derived from Nouns).

इक (ठक्, ठञ्)—न्याय—नैयायिक, पुराण, पौराणिक, तर्क—तार्किक, वेद—वैदिक, अलङ्कार—आलङ्कारिक, काय—कायिक, मुख—मौखिक, नगर—नागरिक, समाज—सामाजिक, देह—दैहिक, समुद्र—सामुद्रिक, लोक—लौकिक, विषय—वैषयिक । समय—सामयिक, वर्ष—वार्षिक, मास—मासिक, दिन—दैनिक ।

य (यत्, य)—कण्ठ—कण्ठय, तालु—तालव्य, अन्त—अन्त्य, प्राक्—प्राच्य । ग्राम—ग्राम्य, सभा—सभ्य ।

मत्, वत् (मतुप्)—बुद्धि—बुद्धिमान, बुद्धिमती, श्री—श्रीमान् । रूप—रूपवान्, विद्या विद्यावान्, ज्ञान—ज्ञानवान् ।

विन्—तेजस्—तेजस्वी, मनस्—मनस्वी, यशस्—यशस्वी, मेधा—मेधावी ।

इन्—ज्ञान—ज्ञानी, धन—धनी, प्रणय—प्रणयी, अर्थ—अर्थी, दुःख—दुःखी ।

मय (मयट्)—स्वर्ण—स्वर्णमय, जल—जलमय, प्रस्तर—प्रस्तरमय, दया—दयामय—दयामयी (स्त्री०) ।

इत—आनन्द—आनन्दित, दुःख—दुःखित, फल—फलित, पुष्प—पुष्पित ।

ल—पांसु—पांसुल, मांस—मांसल ।

इल–पङ्क–पङ्किल, जटा–जटिल, तुन्द–तुन्दिल।

र–मुख–मुखर, मधु–मधुर।

ईय–देश–देशीय, राजन् (क्) +ईय–राजकीय।

इय–यज्ञ–याज्ञिय, राष्ट्र–राष्ट्रिय।

ईन–कुल–कुलीन, ग्राम–ग्रामीण।

इन–मल–मलिन।

(ख) कुछ और विशेषण (some other Adjectives)–

भवत्–भवदीय. अस्मद्–मदीय, तद्–तदीय, युष्मद्–त्वदीय।

लघु–लघिष्ठ, गुरु–गरिष्ठ, पाप–पापिष्ठ। श्रेष्ठ, ज्येष्ठ, बलिष्ठ, कनिष्ठ। चिरन्तन, पुरातन।

गुरुतर, गुरुतम। वृद्धतर, वृद्धतम। प्राचीनतर, प्राचीनतम। आदिम, मध्यम, अधम, अग्रिम, अन्तिम।

(३) अव्यय (Indeclinables).

दा–एकदा, सर्व्वदा, सदा।

त्र–कुत्र, अत्र, तत्र, सर्व्वत्र, अन्यत्र, परत्र।

था–सर्व्वथा, अन्यथा, उभयथा।

चित्–किञ्चित्, कदाचित, कुत्रचित्।

शः– (शस्)–क्रमशः, प्रायशः, अल्पशः।

सात्–(साति)–भस्मसात, भूमिसात्।

तः (तस्)–फलतः, वस्तुतः, कार्य्यतः यथार्थतः, स्वतः।

विशेष्य से विशेषण और विशेषण से विशेष्य बनाना।

एक प्रत्यय के स्थान में दूसरे प्रत्यय के लगाने से अथवा प्रत्ययों के जोड़ने या निकाल देने से विशेषण से विशेष्य या विशेष्य से विशेषण बनजाते हैं।

कृदन्त से बने विशेष्य से विशेषण भय–भीत, जय–जित। गमन–गत, खेल–खिलाड़ी, डर–डरू, इत्यादि।

कृदन्त से बने विशेषण से विशेष्य–हृत–हरण, स्तम्भित–स्तम्भ, भूत–भाव, लड़ाका–लड़ाई, कुदक्कड़–कूद, इत्यादि।

तद्धित से बने विशेष्य से विशेषण–दया–दयालु, समाज–सामाजिक, भारत–भारतीय, सोना–सुनहरा, पेट–पेटू, इत्यादि।

तद्धित से बने विशेषण से विशेष्य–मायावी–माया, धनी–धन, पैसाहा–पैसा, ठंडा–ठंड, भौगोलिक–भूगोल, इत्यादि।

नोट–विशेष्य से विशेष्य या विशेषण से भी विशेषण बनाते हैं। सर्वनाम, अव्यय और क्रिया भी अन्य शब्दभेदों से प्रत्ययों को मिलाकर बनाते हैं। (पीछे प्रत्यय का पूरा वर्णन इसी विषय पर है।)

पुल्लिङ्ग विशेष्य से स्त्रीलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग विशेष्य से पुल्लिङ्ग बनाना।

स्त्रीलिङ्ग प्रत्यय–ई, इया, इन, नी, आइन, आनी, आ, इत्यादि।

स्त्रीलिङ्ग शब्द–देवी, नारी, घोड़ी। कुतिया, बुढ़िया, घोड़िया, बछिया। ग्वालिन, चमारिन, तेलिन, ऊँटिन, बाघिन, हंसिन, साँपिन। ऊँटनी, सिंहनी, हथिनी। चौबाइन, पंडाइन, ठकुराइन। ठकुरानी, खत्रानी, पंडितानी, देवरानी, ममानी, चचानी, जेठानी। पाठिका, बालिका, नायिका, इत्यादि।

☞ बोलचाल में 'लुहारिन, चमारिन, ममानी और चचानी' के बदले 'लोहइन, चमइन, मामी और चाची' की प्रधानता है।

नोट–(१) अनियमित–पिता–माता, बाप–मा, राजा–रानी, बैल या साँड़-गाय, भाई–भाभी या भौजाई, ससुर–सास, बेटा–पतोहू या बहू, दामाद–बेटी, मियां–बीबी, इत्यादि।

(२) कई शब्दों के पहले **नर** और **मादा** लगाकर पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग बनाते हैं। जैसे—नर खरगोश–मादा खरगोश।

पुल्लिङ्ग प्रत्यय–ओई, आ, आव, इत्यादि।

पुल्लिङ्गशब्द—बहनोई, ननदोई। रंडा, भैंसा। बिलाव।

नोट—कतिपय अप्राणिवाचक स्त्रीलिङ्ग शब्दों में आ, अ और औटा प्रत्यय लगाने से पुल्लिङ्ग शब्द बनाते हैं। जैसे—पोथी—पोथा, गाड़ी—गाड़ा, लकड़ी—लकड़ा, अधन्नी—अधन्ना, गठड़ी—गट्ठड़, लकड़ी—लक्कड़, टिकड़ी—टिक्कड़, सिल—सिलौटा, इत्यादि।

धातुजधातु (Verbs derived from roots)—

(क) प्रेरणार्थक—

उठना—उठाना, उठवाना। समझना—समझाना, समझवाना। भूलना—भुलाना, भुलवाना। लेटना—लिटाना, लेटाना, लिटवाना। गाना—गवाना। खेना—खिवाना। खोलना—खुलवाना। चुभना—चुभाना, चुभोना, चुभवाना। जीना—जिलाना, जिलवाना। खाना—खिलाना, खिलवाना। कहना—कहाना, कहलाना, कहवाना। बैठना—बैठाना, बैठालना, बिठाना, बिठालना, बिठलाना, बिठवाना। कटना—कटाना, कटवाना। देना—दिलाना, दिलवाना।

(ख) अकर्मक से सकर्मक—

लदना—लादना, फँसना—फाँसना। घिरना—घेरना। फिरना—फेरना। फटना—फाड़ना, छूटना—छोड़ना, बिकना—बेचना, रहना—रखना।

(ग) इच्छार्थक—बकना—बकवासना, भूकना—भुकवासना।

(ङ) संयुक्त क्रिया—

निश्चय—बोलउठना, लेचलना, मारबैठना, लेलेना। **शक्ति**—चलसकना, उठसकना, मारसकना। **समाप्ति**—कहचुकना, मारचुकना। **नित्यता**-(पौन:पुन्य)—जायाकरना, देखाकरना। **तत्काल**—कहडालना, कहदेना, दियेदेना। **इच्छा**—लिखाचाहना, जायाचाहना, गयाचाहना। **आरम्भ**—पढ़नेलगना, देनेलगना। **अवकाश**—जानेपाना, जानेदेना। **परतन्त्रता**—लिखनापड़ना, उठनापड़ना। **एकार्थक**—समझनाबूझना, कूदनाफांदना।

(च) अतिशयार्थक—जलना—जलजलाना, गोदना—गुदगुदाना।

अभ्यास (Exercise).

१. नीचे लिखे शब्दों से विशेषण बनाओ।

पढ़ना, बेचना, घटना, हँसना, खाना, भय, विद्या, पूजा, जीव, लघुत्व, स्थापन, जिज्ञासा, अर्पण, संयम, पिशाच, नीति, अभिमान, शोभा, अग्नि।

२. नीचे लिखे प्रत्येक शब्द से संज्ञा बनाओ।

चढ़ना, भूँजना, उठाना, बोलना, पीना, कतरना, कसना, तालव्य, वायवीय, दर्शनीय, गम्भ, कल्पित, उजला, भूखा, घरैया, रसीला, वृद्ध।

३. नीचे लिखे शब्दों से अव्यय बनाओ।

बैठना, आना, यह, वह, घर, कौन, एक, अन्य, मस्त, यथार्थ।

४. नीचे लिखे प्रत्येक शब्द से क्रिया बनाओ।

बैठना, फटना, भूकना, मारना, जाना, जलना, लाज, भीतर, चिकना, हाल, छनछन, चपत।

५. लिङ्गपरिवर्तन करो।

घोड़ी, बूढ़ा, तेलिन, हाथी, खत्री, देवरानी, चाची, ससुर, खरगोश, गाय।

६. निम्नलिखित विशेषणों से विशेष्य और विशेष्यों से विशेषण बनाओ।

उदय, बलवान्, लघु, जातीय, उपद्रवी, गौरव, संभोग, स्वर्ग, पीड़ित, कम्प, मिलित, सुन्दर, सुकुमार, मनोहर, पार्वतीय, विनय, सेना, उत्थान, खटाई, दर्शन, सुखकर, प्रसन्नता, आहार, लोभ, काल, वायवीय, गौरव, विश्वास, विस्मृत, कान्त, उज्ज्वल, क्षीण, गृहीत, महिमान्वित, अभिमान, पैशाचिक, सम्पूर्ण, आचार, ज्ञानशून्य, मतलब, मूर्ति, विश्वास, निर्दय, आनन्दित, उत्थित, अधिकृत, मरण, दान, लोभी, ज्ञान, बड़ा, फुर्तीला, मधुर, विश्वस्त, पाण्डु, भख, पाक, फीका, मुक्ति, स्वप्न, काल, विज्ञ।

सामासिक शब्द (Compound Words).

तत्पुरुष—

जिस समस्त शब्द का अंतिम खण्ड प्रधान हो उस में तत्पुरुष समास रहता है। जैसे—राजमन्त्री ने पूजा की। गङ्गाजल लाओ। इन वाक्यों में

राजमन्त्री और गङ्गाजल तत्पुरुष समास हैं ।

तत्पुरुष सामासिक शब्द के पूर्वखण्ड में कर्तृवाच्य के कर्त्ता को छोड़ अन्य कारकों और सम्बन्ध के चिन्हों में से कोई एक चिन्ह आता है। जैसे—तिलचट्टा (तेल को चाटनेवाला), शोकाकुल (शोक से आकुल), शरणागत (शरण को आया), बुद्धिहीन (बुद्धि से हीन), गङ्गाजल (गङ्गा का जल), आनन्दमग्न (आनन्द में मग्न) ।

पूर्वखण्ड में कर्म के चिन्ह रहने से द्वितीया, करण से तृतीया, सम्प्रदान से चतुर्थी, अपादान से पञ्चमी, सम्बन्ध से षष्ठी और अधिकरण से सप्तमी तत्पुरुष के सामासिक शब्द बनते हैं । जैसे—

द्वितीयातत्पुरुष—चिड़ीमार, अखँफोड़ा, तिलचट्टा, विस्मयापन्न, गङ्गाप्राप्त, मुँहतोड़, इत्यादि ।

तृतीयातत्पुरुष—शोकाकुल, दुःखाहत, दुःखार्त, इत्यादि ।

चतुर्थीतत्पुरुष—ब्राह्मणदेय, इत्यादि ।

पञ्चमीतत्पुरुष—देशनिकाला, पदच्युत, ऋणमुक्त, इत्यादि ।

षष्ठीतत्पुरुष—गङ्गाजल, लखपती, मुँहचोर, दनौरी, तिलौरी, दुधहर, दहेड़ी, ध्यानधरना, इत्यादि ।

सप्तमीतत्पुरुष—गृहवास, वनवास, आपबीति, कामआना, पाँवपड़ना, राहचलना, इत्यादि ।

कर्मधारय—

तत्पुरुष के जिस समस्त शब्द में विशेष्य विशेषण या उपमान उपमेय का बोध हो उसमें कर्मधारय समास रहता है । जैसे-परम है जो आत्मा= परमात्मा, दीर्घ है जो आकार=दीर्घाकार, कमल की उपमावाला है जो नयन (या कमलस्वरूप नयन या कमलवत् नयन)=कमलनयन, * चन्द्र की उपमावाला है जो मुख (या चन्द्रसा मुख)=चन्द्रमुख, छोटा है जो भैया= छोटभैया, फूली हुई है जो बरी=फुलौरी, पकी हुई है जो बड़ी पकौड़ी ।

* उपमा के शब्द अन्त में भी रहते हैं । जैसे—चरणकमल ।

द्विगु—

कर्मधारय समास के जिस समस्त शब्द का पूर्वखण्ड संख्यावाचक हो उसमें द्विगु समास रहता है। जैसे—पाँच हैं जो तत्व उनका समूह=पञ्चतत्व, चार हैं जो वर्ण=चतुर्वर्ण, इसी प्रकार त्रिभुवन, त्रिरात्र, पञ्चरात्र, पञ्चपात्र, त्रिफला, चौमुहानी, चौहद्दी, तिपाई, चौपाई, दुअन्नी, चौअन्नी, अठन्नी, चौकोन, तिकोना, इत्यादि।

नोट—यह समास बहुधा समाहार (समूह) अर्थ में आता है।

बहुव्रीहि—

जिस समस्त शब्द का कोई खण्ड प्रधान न हो, बल्कि बाहर से आकर कोई विशेष अर्थ प्रधान होजाय उसमें बहुव्रीहि समास होता है। जैसे—चक्रपाणि (चक्र है पाणि में जिनके=विष्णु) चन्द्रशेखर (चन्द्र है शेखर पर जिनके=महादेव), चन्द्रचूड (चन्द्र है चूड़ा पर जिनके=महादेव), चतुर्भुज (चार हैं भुजाएँ जिनकी= विष्णु), पीताम्बर (पीला है वस्त्र जिनका=विष्णु), चन्द्रमुखी (चन्द्रसा मुख है जिसका वह स्त्री), इत्यादि।

केवल विशेष्यशब्दों से बने समस्त शब्द में 'व्यधिकरण' और विशेष्य-विशेषण या उपमान उपमेय से बने शब्द में 'समानाधिकरण' बहुव्रीहि समास होता है। ऊपर के समस्त शब्दों में चक्रपाणि, चन्द्रशेखर और चन्द्रचूड़ 'व्यधिकरण' के तथा चतुर्भुज, पीताम्बर और चन्द्रमुखी 'समानाधिकरण' के उदाहरण हैं।

नोट—कई समस्त शब्द कर्मधारय और बहुव्रीहि दोनों में आते हैं। जैसे—

पीताम्बर { पीला है जो वस्त्र (**कर्मधारय**)
पीला है वस्त्र जिनका=विष्णु (**बहुव्रीहि**)

चतुर्भुज { चार हैं जो भुजाएँ (**कर्मधारय का भेद द्विगु**)
चार हैं भुजाएँ जिनकी=विष्णु (**बहुव्रीहि**)

द्वन्द्व—

जिस समस्त शब्द के सब खण्ड प्रधान हों उसमें द्वन्द्व समास रहता

है। समास होने पर बीच का योजक अव्यय लुप्त होजाता है। जैसे—गौरी की और शङ्कर की=गौरीशङ्कर की, मन से और कर्म से और वचन से=मनकर्मवचन से। इसी प्रकार लोटाडोरी, भातदाल, हाथीघोड़ा, छत्तीस (छ और तीस), चौबीस, पढ़नालिखना, आनाजाना, खानापीना, इत्यादि।

अव्ययीभाव—

जिस समस्त शब्द से अव्यय का बोध हो अर्थात् जिसका रूप लिङ्ग, वचन आदि के कारण कभी नहीं बदले उसमें अव्ययीभाव समास होता है। * जैसे-यथाशक्ति, प्रतिदिन, अनुरूप, आसमुद्र, हाथोंहाथ, बारबार, पहलेपहल, एकाएक, हररोज़, रोज ×, रातोरात, अनजाने, अनपूछे, इत्यादि।

नञ् समास।

निषेधार्थक 'न' शब्द के योग में जब समास होता है तब उसे नञ्समास कहते हैं। जैसे—नहीं जो अन्त=अनन्त, नहीं है अन्त जिसका वह=अनन्त, नहीं है नाथ जिसका वह=अनाथ।

संस्कृत के ऐसे सामासिक शब्द का उत्तर खण्ड यदि स्वर से आरम्भ हो तो न का 'अन्' और यदि व्यञ्जन से हो तो न का 'अ' होजाता है। जैसे—अनन्त, अनादि, अनाथ, अचेतन।

नीचे लिखे शब्दों में भी नञ् समास है—अपवित्र, अछूता, अनादर, अनसुना, निकम्मा, नाखुश, अनपढ़, अज्ञात, नाराज़, अनजान, इत्यादि।

नोट—(१) द्वन्द्व समास के अन्त में आनेवाले निशा और रात्रि शब्दों के अन्तिम स्वर अ से बदल जाते हैं। तत्पुरुष के उत्तर पद 'राजन्, सखि और अहन् को राज, सख और अह से बदल देते हैं। जैसे—अहर्निश, अहोरात्र, दिवारात्र। महाराज, प्रियसख, सप्ताह।

(२) 'महत्' बहुव्रीहि और कर्मधारय में 'महा' बदल जाता है। 'दास' शब्द के पूर्व काली, षष्ठी, देवी इत्यादि का अन्त्य स्वर प्रायः ह्रस्व हो

---

* जब दो शब्द मिलकर अव्यय होजायँ, अर्थात् उनका रूप विभक्तियों में न बदले तब ऐसे समास को अव्ययीभाव कहते हैं।—प० रामावतार शर्मा।

× बदले हँसने के 'रोज़' रोता था।—प० केशवराम भट्ट।

जाता है। समास में पूर्व पद के न का लोप होजाता है। जैसे–महाजन, महाबाहु, महद्गुण (षष्ठीतत्पु०)। कालिदास, पंडिदास, देविदास। गुणिगण, महात्मगण, राजगण, हस्तिगण, राजवंश।

(३) बहुतेरे संस्कृत तथा कुछ अन्य भाषाओं के समस्त शब्द अपभ्रंश होकर हिन्दी में आये हैं। उनके अर्थ मूलरूपों में परिवर्तन करने ही पर स्पष्ट होते हैं। जैसे–अट्ठावाकर (अष्टावक्र), सौत (सपत्नी), सलोना (सलवण), बादल (वारिद), कहार (स्कन्धधार), सोना (सुवर्ण), सवा (सपाद) साढ़े (सार्द्ध), पौन (पादोन), हथसार (हाथीशाला), भनसार (भानसशाला), कंसार (कान्दुशाला), इत्यादि।

(४) संस्कृत नियमों से बने कतिपय समस्तशब्द जो हिन्दी में आये हैं। जैसे–घृतान्न, व्यर्थ, अहर्निश, अहोरात्र,वाचस्पति,सरसिज,मनसिज,नवागत, सुखसुप्त, एकाह, सप्ताह, ग्रामान्तर, निर्भीक, अन्यमनस्क, सस्त्रीक, सदय, सभय, सपुत्र, चञ्चलाक्ष, कुक्कुटाक्ष, पुण्डरीकाक्ष, कमलाक्षी, चञ्चलाक्षी, शरचापहस्त, आबालवृद्धवनिता,यावज्जीवन, प्रत्यक्ष, समक्ष, परोक्ष, त्रिलोकी, सपत्नी, सोदर, सहोदर, नृपकुञ्जर, मद्यपायी, मिष्टभाषी, नष्टप्राय, नेत्रपथ, कापुरुष, कदन्न, दम्पति, अश्रुतपूर्व, वीरकेशरी, इत्यादि।

७. अभ्यास (Exercise).

१. 'पीताम्बर' 'चतुर्भुज' में कौन समास हैं? समझाओ।

२. नीचे लिखे समस्त शब्दों में समास बताओ और विग्रह करो—

हाथोहाथ अनपढ़, सीताराम, चन्द्रमुख, चौकोन, दुपहर, शरणागत, चालचलना, पङ्कज, चौंतीस।

सहचरशब्द।

(Correlative terms).

सहचर शब्द द्वन्द्व समास से बनते हैं। ये प्रायः तीन प्रकार के होते हैं–विपरीतार्थबोधक, प्रायः एकार्थबोधक और सजातीय।

विपरीतार्थबोधक सहचर शब्द—

(Antonyms correlated).

अग्रपश्चात्, भद्राभद्र, आयव्यय, जन्ममृत्यु, पापपुण्य, जयपराजय, धर्म्माधर्म्म, जीवनमरण, जलथल, दोषगुण, आकाशपाताल, स्वर्गनरक, हर्षविषाद, रातदिन, हिताहित, इत्यादि ।

प्रायः एकार्थबोधक सहचर शब्द—

(Words almost of the same meaning correlated).

मानमर्य्यादा, बलविक्रम, बलवीर्य्य, क्रियाकर्म, आमोदप्रमोद, तर्कवितर्क, दीनदुःखी, श्रद्धाभक्ति, जीवजन्तु, सेवाशुश्रूषा, मणिमाणिक्य, धनदौलत, हँसीखुशी, हाटबाजार, चालचलन, इत्यादि ।

सजातीय सहचर शब्द—

(Words of the same group correlated).

वरकन्या, आहारविहार, अन्नवस्त्र, रीतिनीति, फलफूल, अस्त्रशस्त्र, हाथपाँव, क़ागज़क़लम, नामधाम, साजबाज, दूधदही, इत्यादि

८. अभ्यास (Exercise).

(१) शून्य स्थानों को पूर्ण करके सहचरशब्द बनाओ ।

पिता–, हृष्ट–, अङ्ग–, आकार–, लज्जा–, आचार–, काठ–, मामला–, घर–, आमोद–, बन्धु–, मान–, जन–, सुख–, देश–, धनी–, हँसी– ।

द्विरुक्ति (Words Repeated).

द्विरुक्ति भी रचना का एक अङ्ग है। कभी द्विरुक्ति के दोनों खण्ड एकसे होते हैं और कभी कुछ विकृत। नीचे कुछ उदाहरण दियेजाते हैं—

घरघर, बनबन, राम ही राम, मन ही मन, दल के दल, हाथोंहाथ, कानोंकान, बातोंबात, मीठेमीठे, एकएक, दोदो, दोनों के दोनों, एक सौ पाँचपाँच, दो हजार चार सौ तीनतीन, पौने दोदो, सवा तीनतीन, साढ़े-

चारचार, सवा सवा, डेढ़डेढ़, अढ़ाई अढ़ाई, दो रुपये चार आने एक एक पाई, पाँच मन दो दो सेर, तीन दिन चार घण्टे चार चार मिनट, दो महीने पाँचपाँच दिन, तीन वर्ष चार चार महीने, रोरो, जबजब, पीपी, होतेहोते, रगड़ते रगड़ते, तबतब, नयेनये, लालाकर इत्यादि।

अभ्यास (Exercise).

१. द्विरुक्ति बनाओ।

एक रुपया सात आने। दो महीने तीन दिन। पौने तीन। बात में। घर पर। तीन अच्छे आम। सात मन तीन सेर दो छटाँक।

उपसर्ग (Prefixes).

उपसर्ग शब्दों के पूर्व में मिलकर उनके अर्थ बदलदेते हैं। जैसे—यश-अपयश, गुण—अवगुण, जय—पराजय, योग—वियोग, इत्यादि।

(१) संस्कृत के बीस उपसर्ग हैं। इनके प्रधान अर्थ या भाव उदाहरण सहित आगे लिखेजाते हैं।

प्र—अतिशय, उत्कर्ष, गति, यश, उत्पत्ति और व्यवहार आदि का प्रकाशक है। जैसे—प्रबल, प्रणाम, प्रताप, प्रसिद्ध, इत्यादि।

परा—विपरीत, नाश और अनादर आदि का प्रकाशक है। जैसे—पराजय, पराभव, परास्त, पराधीन, इत्यादि।

सम्—सहित और उत्तमता आदि का प्रकाशक है जैसे—सन्तुष्ट, सम्बन्ध, सम्मुख, संस्कार, संस्कृत, इत्यादि।

अप—हीनता, लघुता, आदि का प्रकाशक है। जैसे—अपयश, अपवाद, अपशब्द, अपमान, अपकार, इत्यादि।

अनु—सादृश्य, पश्चात् और क्रम आदि का प्रकाशक है। जैसे—अनुरूप, अनुगामी, अनुचर, अनुताप, इत्यादि।

अव—अनादर, भ्रंश और हीनता, आदि का प्रकाशक है। जैसे—अवज्ञा, अवगुण, अवनति, अवतार, इत्यादि।

निर्—निषेध और रहित आदि का प्रकाशक है। जैसे—निर्दोष, निराकार-निर्जीव, निर्भय निर्धन, इत्यादि।

दुर्—कठिनता, दुष्टता, निन्दा और हीनता आदि का प्रकाशक है—जैसे-दुर्गम, दुर्जन, दुर्दशा, दुर्बुद्धि, दुर्मति, इत्यादि।

अभि—अधिकता और इच्छा आदि का प्रकाशक है जैसे—अभिमत, अभिप्राय, अभिमान, इत्यादि।

वि—भिन्नता, हीनता, असमानता और विशेषता आदि का प्रकाशक है। जैसे-वियोग, विलाप, विकार, विवरण, विशेष, विलक्षण, इत्यादि।

अधि—प्रधानता, समीपता और उपरिभाव आदि का प्रकाशक है। जैसे—अधिराज, अधिपति, अध्यक्ष, अधिकार, इत्यादि।

सु—उत्तमता, सुगमता और श्रेष्ठता आदि का प्रकाशक है। जैसे—सुजाति, सुगम, सुयश, सुजन, सुलभ, इत्यादि।

उत्—उच्चता और उत्कर्ष आदि का प्रकाशक है। जैसे—उदय, उद्गम, उदाहरण, उत्पत्ति, इत्यादि।

अति—अतिशय और उत्कर्ष आदि का प्रकाशक है। जैसे—अतिकाल, अतिभाव, अतिगुप्त, इत्यादि।

नि—बहुत और निषेध आदि का प्रकाशक है। जैसे—निरोध, निवारण, निषेध, नियोग, इत्यादि।

प्रति—प्रत्येक, बराबरी, विरोध और परिवर्तन आदि का प्रकाशक है। जैसे—प्रतिदिन, प्रतिशब्द, प्रतिवादी, इत्यादि।

परि—सर्वतोभाव, अतिशय और त्याग इत्यादि का प्रकाशक है। जैसे—परिपूर्ण, परिजन, परितोष, परिच्छेद, इत्यादि।

अपि—निश्चय और छिपाव आदि का प्रकाशक है। जैसे—अपिधान।

उप—समीपता, लघुता और सहायक इत्यादि का प्रकाशक है। जैसे—उपवन, उपग्रह, उपकार, इत्यादि।

आ—सीमा, ग्रहण, विरोध, चढ़ाव, खिंचाव आदि का प्रकाशक है। जैसे—

आसमुद्र, आजन्म, आदान, आगमन, आरोहण, आकर्षण, इत्यादि ।

ऊपर लिखे उपसर्गों के सिवा नीचे लिखे शब्दांश भी उपसर्गवत् आते हैं—

अ, अन्—निषेध और अभाव आदि का प्रकाशक है । जैसे—अपवित्र, अयश, अनादि, अनन्त, इत्यादि ।

कु—बुराई और नीचता आदि का प्रकाशक है । जैसे—कुपुत्र, कुजाति, कुपात्र, कुयश, इत्यादि ।

स—साथ, संयोग आदि का प्रकाशक है । जैसे—साकार, सप्रेम, सपत्नीक, इत्यादि ।

सह—साथ, संगति आदि का प्रकाशक है । जैसे—सहगमन, सहयोगी, सहचर, इत्यादि ।

(२) हिन्दी उपसर्ग (या संस्कृत के तद्भव उपसर्ग)—

अ, अन—निषेध और अभाव के प्रकाशक हैं । जैसे—अतोल, अमोल, अजान, अपढ़, अनमिल, अनरीति, अनपढ़, इत्यादि ।

अप—हीनता, लघुता आदि का प्रकाशक है। जैसे—अपसगुन, अपयश ।

नि—निषेध और अभाव आदि का प्रकाशक है । जैसे—निकाम, निडर, निकम्मा, निगोड़ा, इत्यादि ।

स (सु)—उत्तमता, साथ आदि का प्रकाशक है । जैसे—सपूत, सजग ।

क (कु) बुराई और नीचता आदि का प्रकाशक है । जैसे—कपूत, कुटेव, कुढङ्ग, कुखेत, इत्यादि ।

बि—'बिना' का प्रकाशक है । जैसे—बिचारा ।

(३) उर्दू ढङ्ग के उपसर्ग—

ला, बे—अभाव अर्थ में आते हैं । जैसे—लाचार, लापरवाह, बेशक, बेकार, बेशुमार, इत्यादि ।

ब—अनुसार का अर्थ देता है । जैसे—बदस्तूर, बजिन्स, इत्यादि ।

हर—प्रति का अर्थ देता है । जैसे—हररोज, हरघड़ी, इत्यादि ।

दुर-में का अर्थ देता है। जैसे-दरअसल, दरहकीकत, इत्यादि।

नोट-कहीं एक, कहीं दो, कहीं तीन और कहीं चार उपसर्ग भी एकसाथ आते हैं। जैसे-वि-विहार, वि+अव-व्यवहार, सु+वि+अव-सुव्यवहार, सम्+अभि+वि+आ-समभिव्याहार, इत्यादि।

१०. अभ्यास (Exercise).

१. उपसर्ग शब्द को क्या करता है?

२. नीचे लिखे शब्दों में जो उपसर्ग आये हैं, उनके अर्थ लिखो—

आगमन, परिपूर्ण, प्रत्युत्तर, कुपात्र, निषेध, विहार, अनुचर, प्रयोग, अवतार, दुर्जन, उत्पत्ति, अतोल, अपजस, सपूत, कपूत, बेशक, बदस्तूर।

३. ऊपर लिखे शब्दों के अर्थ बताओ।

प्रत्यय एवं उपसर्गवत् प्रयुक्त शब्द।

(Words used as suffixes & prefixes).

प्रत्ययवत् प्रयुक्त शब्द—

(Words used as suffixes).

—अन्वित-आश्चर्यान्वित, विस्मयान्वित, क्रोधान्वित।

—आच्छन्न-शोकाच्छन्न, मेघाच्छन्न, तिमिराच्छन्न, मायाच्छन्न।

—कर्म्म-शिल्पकर्म्म, कृषिकर्म्म, कुकर्म्म, अपकर्म्म, सत्कर्म्म, शुभकर्म्म।

—चर-अनुचर, सहचर, खेचर, भूचर।

—च्युत-स्थानच्युत, पदच्युत, धर्म्मच्युत, कर्म्मच्युत, राज्यच्युत, स्वर्गच्युत।

—प्रिय-प्राणप्रिय, अप्रिय, ज्ञानप्रिय, सत्यप्रिय, शान्तिप्रिय, सुखप्रिय।

—पति-पशुपति, श्रीपति, भूपति, नृपति, विश्वपति, रमापति, गणपति।

—परायण-सत्यपरायण, न्यायपरायण, धर्म्मपरायण, ज्ञानपरायण।

—भ्रष्ट-स्थानभ्रष्ट, धर्म्मभ्रष्ट, स्वर्गभ्रष्ट, पथभ्रष्ट, तपोभ्रष्ट, आचारभ्रष्ट।

—मुख-विमुख, पराङ्मुख, सम्मुख, सुमुख।

—लोक-इहलोक, परलोक, गोलोक, त्रिलोक, सुरलोक, देवलोक।

—रूप-अनुरूप, कुरूप, स्वरूप, विश्वरूप।

—यात्रा-जीवनयात्रा, समुद्रयात्रा, रथयात्रा, डोलयात्रा।

(२) उपसर्गवत् प्रयुक्त शब्द—
(Words used as Prefixes).

धर्म–धर्मबुद्धि, धर्मज्ञान, धर्म्मशील, धर्म्मात्मा, धर्म्मभीरु, धर्मद्वेषी ।

अर्थ–अर्थविचार, अर्थकरी, अर्थगौरव, अर्थनीति, अर्थलोभ, अर्थव्यय, अर्थहीन, अर्थागम, अर्थबोधक ।

आत्म–आत्मगरिमा, आत्मघाती, आत्मचिन्ता, आत्मज्ञान, आत्मतत्व, आत्मत्याग, आत्मतृप्ति, आत्मदान, आत्मदोष, आत्मद्रोह, आत्मप्रशंसा, आत्मप्रसाद, आत्मविक्रय, आत्मविसर्जन, आत्मविस्मृति, आत्मनिर्भर, आत्मप्रतिष्ठा, आत्मरक्षा, आत्मशासन, आत्मश्लाघा, आत्मशुद्धि, आत्मसंयम, आत्मसमर्पण ।

कर्म्म–कर्म्मवीर, कर्म्मयोग, कर्म्मकाण्ड, कर्म्मभोग, कर्म्मफल, कर्म्मप्रिय, कर्म्मनाशा, कर्म्मनिष्ठ, कर्म्मचारी, कर्म्मकुशल ।

बल–बलवान्, बलशाली, बलहीन, बलविक्रम, बलप्रयोग, बलपूर्वक ।

विश्व–विश्वप्रेम, विश्वपति, विश्वजित्, विश्वकर्म्मा, विश्वव्यापी, विश्वविद्यालय, विश्वम्भर, विश्वनाथ, विश्वविख्यात, विश्वजित्, विश्वकोष ।

राज–राजाज्ञा, राजकर, राजदण्ड, राजद्रोह, राजधानी, राजगृह, राजनीति, राजपथ, राजभोग, राजलक्ष्मी, राजवंश, राजटीका, राजसूय, राजस्व, राजहंस, राजसभा, राजद्वार, राजसिंहासन, राजपुरुष, राजकार्य्य, राजकन्या, राजकुमार, राजघाट, राजदरबार ।

लोक–लोकमत, लोकलज्जा, लोकनाथ, लोकप्रिय, लोकपाल, लोकापवाद, लोकनिन्दा ।

सर्व–सर्वनाम, सर्वनाश, सर्वजन, सर्वग्रास, सर्वाधिकारी, सर्वसाधारण, सर्वमय, सर्वत्र, सर्वथा, सर्वदा, सर्वोपरि, सर्वानन्द, सर्वेश्वर ।

११. अभ्यास (Exercise).

१. निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्येक को प्रत्यय के समान व्यवहार करके यौगिक शब्द बनाओ ।

अनुष्ठान,-अन्तर,-अवलम्बन,-अर्थी,-आगार,-आलय,-उचित,-उत्तम,-उदय,-आत्मा,-आर्त्त,-आशय,-आहत,-कर,-कार, -कला,-ग्रहण,-गोचर,-जय,-वत्सल,-वर्ग,-भाजन,-मण्डल,-मात्र,-यात्रा,-लोक,-शाला,-शाली।

निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्येक को उपसर्ग के समान व्यवहार करके यौगिक शब्द बनाओ।

इति, सत्य, यथा, धर्म, जीवन, हिम, श्री।

पदसंगठन

(Structure of parts of a Sentence).

संक्षिप्त विवरण।

ऊपर शब्दों के बनाने की रीतियाँ बताई गई हैं। उन्हीं बने हुए शब्दों और मूल शब्दों से संगठित वाक्यों के द्वारा हमलोग अपने मनोभाव को प्रकट करते हैं। वाक्यों में शब्दों की आकृतियाँ प्राय: कुछ न कुछ बदल जाती हैं। 'लड़का-झगड़ा-हट '—इन तीनों शब्दों से कोई विशेष भाव नहीं निकलता। यदि हम कहें—लड़के को झगड़े से हटाओ' तो इससे एक पूर्ण भाव निकलता है और उपर्युक्त शब्दों की आकृतियाँ भी बदल जाती हैं तथा साथ साथ कुछ **शब्दांश** या चिन्ह भी दीख पड़ते हैं, जिन्हें **विभक्ति** चिन्ह कहते हैं। वाक्य के एक एक अंश को **पद** कहते हैं। प्रत्येक पद में एक विभक्ति अवश्य रहती है। ऊपर के वाक्य में तीन पद हैं—'लड़के को, झगड़े से, हटाओ' इन पदों में को, से और आओ' विभक्तियाँ हैं।

संस्कृत के प्रत्येक पद में विभक्ति अवश्य दिखाई देती है, परन्तु हिन्दी केलिये यह बात नहीं है। हिन्दी के कई पदों में विभक्तियाँ नहीं दीख पड़तीं, परन्तु उनमें गुप्त रूप से रहती अवश्य हैं।

वाक्यों में पाँच प्रकार के पद होते हैं—संज्ञापद, सर्वनामपद,

विशेषणपद, क्रियापद और अव्ययपद । इन पदों की रचना व्याकरण की पुस्तकों में देखो । विस्तारभय से हमने यहाँ इसका वर्णन नहीं किया है । हाँ, लिङ्ग, वचन और कारक पर कुछ प्रकाश डाला जाता है ।

लिङ्ग—

लिङ्ग उसे कहते हैं जिससे पुरुष या स्त्री का ज्ञान हो । लिङ्ग दो हैं-पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग । पुरुषजाति बोधक शब्द पुल्लिङ्ग और स्त्रीजातिबोधक शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । जैसे—घोड़ा (पुल्लिङ्ग) और घोड़ी (स्त्रीलिङ्ग) ।

वचन—

वचन उसे कहते हैं जिससे एकत्व या अनेकत्व का ज्ञान हो । जैसे-घोड़ा (एक)—घोड़े (अनेक), घोड़ी (एक)—घोड़ियाँ (अनेक) । वचन दो हैं—एकवचन और बहुवचन । शब्द के जिस रूप से एक पदार्थ का बोध हो उसे एकवचन और जिससे एक से अधिक पदार्थों का बोध हो उसे बहुवचन कहते हैं । ऊपर के उदाहरण में 'घोड़ा' और 'घोड़ी' एकवचन तथा 'घोड़े' और 'घोड़ियाँ' बहुवचन हैं ।

बहुवचन के चिन्ह '**ए, एँ, ओं, यों, ओ, यो** और **याँ** हैं ।

कारक—

कारक उसे कहते हैं जो क्रिया की उत्पत्ति में सहायक हो अर्थात् जो किसी शब्द का सम्बन्ध क्रिया से बतावे । कारक ६ हैं—कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण ।

नोट—सम्बन्ध और सम्बोधन का, क्रिया के साथ सम्बन्ध नहीं है, इस-लिये इन्हें संस्कृत के वैयाकरणों ने कारक नहीं माना है । भाषाभास्कर, भाषाप्रभाकर आदि पुस्तकों में ये कारक मानेगये हैं ।

जो काम करे उसे कर्त्ता, जिस पर काम का फल हो उसे कर्म, जिस के द्वारा काम हो उसे करण, जिसके लिये काम किया जाय उसे सम्प्रदान, जिससे कोई वस्तु अलग हो उसे अपादान और आधार को अधिकरण कहते हैं । जैसे—राम ने पाठशाला में आलमारी से मोहन केलिये हाथ से पुस्तक को निकाला ।

कर्त्ता और कर्म दो दो प्रकार के होते हैं—**प्रधान** और **अप्रधान** । वाक्य में यदि क्रिया के लिङ्गवचन कर्त्ता के अनुसार हों तो उसका कर्त्ता प्रधान (उक्त) और कर्म अप्रधान (अनुक्त) होता है । जैसे—राम पुस्तक पढ़ता है । सीता ग्रन्थ पढ़ती है । इसी प्रकार वाक्य में यदि क्रिया के लिङ्ग वचन कर्त्ता के अनुसार न हों तो कर्म प्रधान (उक्त) और कर्त्ता अप्रधान (अनुक्त) होता है । जैसे—राम ने पुस्तक पढ़ी । राम से पुस्तक पढ़ी गई ।

कर्म कारक सकर्मक क्रियाओं के साथ आता है । कई सकर्मक क्रियाएँ दो कर्म लेती हैं । जैसे—उसने **राम को ग्रन्थ** दिखाया । मैंने **उसको एक रीति** बताई । ऐसी क्रिया का एक कर्म वस्तुबोधक और दूसरा प्राणिबोधक होता है । वस्तुबोधक को मुख्य कर्म और प्राणिबोधक को गौण कर्म कहते हैं । 'कहना, पूछना, दुहना, जाँचना, पकाना' इत्यादि क्रियाओं के साथ अपादान कारक का चिन्ह भी आता है । जैसे—मैं तुमसे (को) एक बात कहता हूँ । उसने आपसे (को) क्या पूछा ? रसोइया चावल से भात पकाता है । दरिद्र धनी से धन जाँचता है । हम गाय से दूध दुहते हैं ।

यदि किसी अकर्मक क्रिया के साथ उसी के धातु से बना हुआ या उससे मिलताजुलता कोई कर्म आवे तो वह सजातीय कर्म कहलाता है । जैसे—राम प्रतिदिन एक लम्बी दौड़ दौड़ता है ।

आधार तीन प्रकार के हैं—औपश्लेषिक वैषयिक, और अभिव्यापक । (१) औपश्लेषिक उस आधार को कहते हैं जिसके किसी अवयव से संयोग हो । जैसे—वृक्ष पर पक्षी है । दरी पर बैठता है । वह घर में है । (२) वैषयिक वह आधार है जिससे विषय का बोध हो । जैसे—ईश्वर में मन लगा है । भोजन में चित्त लगा है । इन वाक्यों में मन का विषय ईश्वर और चित्त का विषय भोजन है । (३) अभिव्यापक वह आधार है जिसमें आधेय सम्पूर्ण रूप से व्याप्त हो । जैसे—परमेश्वर सब में हैं । तिल में तेल है ।

कारक के चिन्ह—

कर्त्ता—शून्य, ने, से ।
कर्म—शून्य, को ।
करण—से ।
सम्प्रदान—को ।
अपादान—से ।
अधिकरण—में, पर ।

नोट—(१) शून्य चिन्ह से तात्पर्य चिन्ह रहित का है ।

(२) हेतु, द्वारा, कारण, पूर्वक, करके इत्यादि से करण का, केलिये, के अर्थ, के निमित्त इत्यादि से सम्प्रदान का और को से कभी कभी अधिकरण का अर्थ लेते हैं । जैसे—ज्ञान द्वारा सुख मिलता है । विद्यार्थी केलिये पुस्तक खरीदो । राम हाट (को) गया ।

सम्बन्ध और सम्बोधन—

जो लगाव, स्वत्व या अपनापन का बोध करावे, उसे सम्बन्धपद कहते हैं और जिसके साथ लगाव हो वह सम्बन्धी कहलाता है । जैसे—राम का बेटा, पीतल का लोटा । सम्बन्ध का चिन्ह 'का' है ।

किसी को पुकार या चिताकर अपनी ओर सावधान करने को सम्बोधन कहते हैं । जैसे—हे राम, दया करो ! अरे लड़के, कहां जाते हो !

सम्बोधन के चिन्ह 'हे, अरे' इत्यादि हैं ।

१२. अभ्यास (Exercise).

१. कारक कितने हैं ? प्रत्येक की परिभाषा लिखो । २. 'सम्बन्ध' और 'सम्बोधन' कारक हैं या नहीं ? कारण बताओ । ३. 'से' और 'को' किन कारकों के चिन्ह हैं ? उदाहरण दो । ४. आधार कितने प्रकार के हैं ? उदाहरण दो । ५. गौणकर्म किस कारक में रहता है ? उदाहरण दो ।

शब्दप्रयोग (Uses of words)

बोलने और लिखने में केवल **सार्थक** शब्दों का व्यवहार होता है । कभी कभी **निरर्थक** शब्दों का भी प्रयोग देखाजाता है । वे वाक्य की थोड़ी सी शोभा बढ़ादेते हैं या कभी उनसे कोई अर्थ (जैसे—अनुकरण

इत्यादि का) समझ लिया जाता है । जैसे—अरे राम, कुछ पानीवानी पिलाओगे या नहीं ? क्या अल्लबल्ल बकता है !

शब्दों के अर्थ (Meanings of words).

किसी शब्द का अर्थ तीन प्रकार से करते हैं—प्रतिशब्द द्वारा, व्युत्पत्ति द्वारा और लक्षण या परिभाषा द्वारा।

१. प्रतिशब्द (Synonyms)—

एक अर्थ के शब्द आपस में **प्रतिशब्द** कहलाते हैं। जैसे—"कमल, अब्ज, अम्बुज, अरविंद, उत्पल, कँवल, कुवलय, कुमुद, कोकनद, तामरस, नीरज, पङ्कज, पद्म, राजीव, वारिज, शतदल, श्रीपर्ण, सरसिज, सरोज, और सरोरुह" ये शब्द आपस में प्रतिशब्द हैं।

जहाँ तक होसके 'प्रतिशब्द को शब्द से सरल तथा उसी की श्रेणी में रखना चाहिये। विशेष्य का प्रतिशब्द विशेष्य होवे, विशेषण नहीं। इसी प्रकार विशेषण का प्रतिशब्द विशेषण होवे, विशेष्य नहीं। अतः, 'भानु' का प्रतिशब्द मार्तण्ड या भास्कर न देकर 'सूर्य' देना उचित है। इसी प्रकार 'तृषित' का अर्थ प्यास न देकर 'प्यासा' देना चाहिये।

नोट—हमने यहाँ विस्तारभय से 'प्रतिशब्द' के उदाहरण छोड़ दिये हैं। इसकेलिये सदा कोषों का व्यवहार करना चाहिये।

२. व्युत्पत्त्यर्थ (Etymological Meaning)-

प्रकृति प्रत्यय के योग से और समास इत्यादि से जो अर्थ करते हैं वह **व्युत्पत्त्यर्थ** है। यौगिक या योगरूढ़ शब्द का ऐसा अर्थ शीघ्र ही समझ में आजाता है। जैसे—पाठक=पाठ करनेवाला, देवालय=देव (देवता) का आलय (घर), चक्रपाणि=चक्र है पाणि में जिनके अर्थात् विष्णु, तरंग उठती है जिसमें सो तरंगिनी (नदी), विष्णु है इष्टदेव जिसके सो वैष्णव, इत्यादि।

३. लाक्षणिक या पारिभाषिक अर्थ—
(Implied Meaning).

जिस शब्द का ठीक प्रतिशब्द नहीं मिलता उसका **लाक्षणिक** अर्थ करते हैं। जैसे—अध्यवसाय=कई बार असफलता प्राप्त होने पर भी दृढ़ता से उसी कार्य में तत्पर रहना।

१३. अभ्यास।

१. नीचे लिखे वाक्यों के मोटे अक्षरों में छपे शब्दों से क्या अर्थ समझते हो ? खाने केलिये **रोटीओटी** ले आओ। **जूताऊता** पहन कर तैयार होजाओ। **अल्लबल्ल** मत बको।

२. नीचे लिखे शब्दों के प्रतिशब्द लिखो।

किरण, चन्द्र, जल, पृथ्वी, बिजली, भौंरा, मृत्यु, मेघ, राजा, रात, समुद्र, साँप, सूर्य, स्त्री, हाथी और सोना।

३. नीचे लिखे शब्दों के व्युत्पत्त्यर्थ लिखो।

विद्यालय, पाठशाला, पीताम्बर, चन्द्रमौलि, त्रिपुरारि, सुशीलता, प्रीतिपात्र, पुण्यवान्, नीरोग, सलोना, चन्द्रचूड़ और चौहद्दी।

४. नीचे लिखे शब्दों के पारिभाषिक अर्थ बताओ।

उद्योग, वाणिज्य, सूक्ष्मदर्शक, यन्त्र, त्रिभुज, सरौता।

कुछ एकार्थक शब्द और उनमें अर्थभेद।
(Distinction between synoynmous terms).

प्रयोग के अनुसार शब्द के अर्थ पर ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है। बहुतसे एकार्थक शब्द हैं जिनमें साधारण दृष्टि से कोई भेद नहीं जान-पड़ता, परन्तु उनमें अर्थगत भेद अवश्य है। अतः, अर्थगत भेद पर ध्यान रखकर शब्दव्यवहार करने से रचना की गम्भीरता बढ़जाती है। नीचे कुछ उदाहरण देते हैं।

१. **अज्ञान**—स्वाभाविक बुद्धि रहित।

अनभिज्ञ—अभिज्ञता (तजरुबा) रहित।

२. **अलौकिक**—जो लोक में दुर्लभ हो।

अस्वाभाविक- जो सृष्टि या मनुष्य की प्रकृति के विरुद्ध हो।

३. **अहङ्कार**-अपने को उचित से अधिक जानना।

अभिमान-प्रतिष्ठा में अपने को बड़ा और दूसरे को छोटा समझना।

गर्व, दर्प-रूप, यौवन, कुल, विद्या और धन इत्यादि के कारण अभिमान प्रकाश करना और दूसरों को घृणा की दृष्टि से देखना।

गौरव-अपनी महत्ता का यथार्थ ज्ञान।

दम्भ-किसी अयोग्य व्यक्ति का पाखण्ड प्रदर्शन।

४. **अस्त्र**-ऐसा हथियार जिसको फेंक के मारे।

शस्त्र-ऐसा हथियार जिसको हाथ में रखके मारे।

५. **अज्ञ**-अनजान, जो कुछ न जाने। **मूर्ख**-जड़बुद्धि।

६. **आधि**-मानसिक कष्ट। **व्याधि**-शारीरिक कष्ट।

उपकरण-वह सामग्री जिसकी सहायता से कोई कार्य सिद्ध हो।

उपादान-वह सामग्री जिससे कोई पदार्थ बने।

८. **ज्ञानी**-बुद्धिमान्। **अभिज्ञ**-अनुभवी।

९. **दया**-दूसरों के दुःख दूर करने की स्वाभाविक इच्छा।

कृपा-छोटों के साथ की जानेवाली दया।

सहानुभूति-दूसरे के सुख दुःख को अपना सुख दुःख समझना, हमदर्दी।

करुणा-वह दया जो किसी के दुःख से दुःखी होकर करें।

१०. **प्रेम**-किसी के साथ निरपेक्ष स्वाभाविक अनुराग।

भक्ति-पूज्य जनों के साथ अकपट अनुराग। **श्रद्धा**-सद्विषय में निष्ठा।

स्नेह-आशीर्वादयोग्य पात्रों (पुत्र, कन्या इत्यादि) के साथ अनुराग।

प्रणय-परस्पर सापेक्ष अनुराग।

११. **प्रणाम**-बड़ों के प्रति नम्रता।

नमस्कार-बराबर वालों के प्रति नम्रता।

अभिवादन-आत्मपरिचय देकर प्रणाम करना।

१२. **पुत्र**-बेटा। **बालक**-कोई लड़का।

१३. बन्धु—जो वियोग नहीं सह सकें (अत्याग सहनो बन्धुः)।
सुहृद्—जो प्रेमी सदा सहमत रहें (सदैवानुमतः सुहृत्)।
मित्र—जिनकी क्रिया एक हो (एकक्रियं भवेन्मित्रं)।
सखा—जिनके प्राण एक हों (समप्राणः सखा मतः)।
१४. प्रमाद—जानी हुई वस्तु में असावधानी के कारण होनेवाली भूल।
भ्रम— अज्ञता से होनेवाली भूल।
१५. शोक—वियोग का दुःख। दुःख—साधारण कष्ट।
१६. सम्राट्—राजाओं का राजा, सार्व्वभौम भूपति।
राजा—भूपति मात्र।
१७. सेवा—देवताओं और गुरुजनों की टहल।
शुश्रूषा—दुःखित और रोगी व्यक्तियों की टहल।
१८. स्त्री—कोई स्त्री। पत्नी—विवाहिता स्त्री।
१९. द्वेष—कारणवश दूसरों से शत्रुता या घृणा।
ईर्षा—दूसरों की सफलता देखकर जलना।
स्पर्द्धा—उन्नति में दूसरे से बढ़जाने की इच्छा।

१४. अभ्यास।

१. नीचे लिखे प्रत्येक शब्दयुगल में परस्पर क्या भेद है ?
कीर्ति—यश, नमस्कार—प्रणाम, आधि—व्याधि, कृपा—करुणा।
२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो।
वाण एक शस्त्र का नाम है। महावीर ने भगवान् को स्नेह के साथ नमस्कार किया। भगवान् सारे संसार को भक्तिपूर्वक पालता है। महारानी विक्टोरिया के बालक पंचम जार्ज हमारे राजा हैं।
३. पहले प्रश्न के शब्दों को वाक्यों में रक्खो।

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द (Paronyms).

कई शब्द ऐसे हैं जिनके उच्चारण प्रायः एकसे हैं, परन्तु अर्थ एक नहीं। नीचे थोड़ेसे ऐसे शब्द दियेजाते हैं—

अंश (भाग)-अंस (स्कन्ध) । अणु (कन)-अनु (उपसर्ग)। इति (समाप्ति)-ईति (शस्यविघ्न)। कुल (वंश)-कूल (तीर) । कृत (किया हुआ)-क्रीत। (खरीदा हुआ) चिर (दीर्घ)-चीर (वस्त्र) । च्युत (भ्रष्ट)-चूत (आम्रवृक्ष) तरणी (नौका)-तरुणी (युवती)। दार (पत्नी)-द्वार (दरवाजा) । दारा (भार्य्या)-द्वारा (हेतु)। दिन (दिवस)-दीन (दरिद्र) । द्विप (हाथी)-द्वीप (टापू)। दूत (संवाददाता)-द्यूत (जूआ)। देश (राज्य)-द्वेष (शत्रुता)। नीड़ (खोता)-नीर (पानी) । पाणि (हाथ)-पानी (जल) । परुष (कठोर)-पुरुष (नर)। प्रसाद (अनुग्रह)-प्रासाद (महल)-प्रकृत (यथार्थ)-प्राकृत (भाषाविशेष)। वसन (वस्त्र)-व्यसन (विषयानुरक्ति) । बलि (पूजोपहार)-बली (बलशाली) । बिना (अभाव में)-वीणा (बाजा)। लक्ष (लाख)-लक्ष्य (उद्देश्य)। शङ्कर (शिव)-सङ्कर (जारज)। शव (लाश, रात)-सब (कुल)। शम (शान्ति)-सम (बराबर)। शर (तीर)-सर (तालाब)। सुत (पुत्र) -सूत (सारथी, सूता) । शुचि (पवित्र)-सूचि (सूई)-सूची (तालिका)। शूर (वीर)-सूर (सूर्य्य) -सुर (देवता, आवाज)।

१८. अभ्यास (Exercise).

१. नीचे लिखे प्रत्येक शब्दयुगल में परस्पर क्या भेद है ? वाक्य बनाकर बताओ। अन्न—अन्य, अशक्त-असक्त, आर्ति—आरती, कृत—क्रीत, दीप-द्वीप, सिल,-सील, लक्ष-लक्ष्य, नीड़-नीर, शब—सब, शम—सम।

भिन्नार्थक शब्द (Homonyms).

भिन्नार्थक शब्द दो एक अन्य शब्दों से ध्वनि और प्रायः उच्चारण में मिलते तो हैं, परन्तु उनके अर्थ और मूल भिन्न भिन्न होते हैं। कुछ उदाहरण नीचे दियेजाते हैं—

१. आगा (हिन्दी)-अगवाड़ा (front).

आग़ा (फ़ारसी)-सर्दार (leader).

२. आन (हिन्दी) लाज (shame), दूसरा (other).
आन (अरबी)–समय (time).
३. आम (हिन्दी)–फल (mango).
आम (अरबी)–साधारण (common).
४. इतवार (हिन्दी)–रविवार (sunday).
इतबार (फ़ारसी) विश्वास (confidence).
५. कन्द (संस्कृत)–मूल (root).
क़न्द (फ़ारसी)–मिस्री (sugar candy).
६. कफ (संस्कृत)–बलग़म (phlegm).
कफ़ (फ़ारसी)–फेन (foam).
कफ़ (अरबी)–कमीज का कफ़ (cuff).
७. कुन्द (संस्कृत) फूल (a kind of flower).
कुंद (फ़ारसी) मन्द (dull).
८. कुल (संस्कृत)–वंश (family).
कुल (अरबी)–सब (whole), केवल (only).
९. कै (हिन्दी)–कितना (how many), अथवा (or).
क़ै (अरबी)वमन (vomiting).
१०. खैर (हिन्दी)–कत्था (catechu).
ख़ैर (फ़ारसी)–कुशल (welfare), कुछ परवा नहीं (very well).
११. गौर (संस्कृत)–गोरा (fair complexioned).
ग़ौर (अरबी) ध्यान (close attention).
१२. चारा (हिन्दी)–घास (forage).
चारा (फ़ारसी)–उपाय (remedy).
१३. जाल (संस्कृत)–जाल (net), माया (illusion).
जाल (अरबी)– फरेब (deceit).
१४. तूल (संस्कृत)–रूई (cotton).

तूल (अरबी)—लम्बाई (length).

१५. पट (संस्कृत)—कपड़ा (cloth), परदा (screen).

पट (हिन्दी)—किवाड़ (shutter), उलटा (upside down), तुरत (at once).

१६. पर (संस्कृत) पराया (foreiegn), दूर (distant), ऊपर (on), किन्तु (but), तौभी (still).

पर (फ़ारसी) पाँख (feather).

१७. रास (संस्कृत)—क्रीड़ा, एक प्रकार का नाच।

रास (हिन्दी)-डोर, बाग (reins).

रास (फ़ारसी)—अंतरीप (cape).

१८. सर (संस्कृत)—तालाब (pond), तीर (arrow), पानी (water).

सर (फ़ारसी)—सिर (head), प्रधान (chief).

सर (अंग्रेज़ी)—महाशय (sir).

१९. हाल (हिन्दी)—पहिये की हाल (the tire of a wheel) आसन्न काल (recent time).

हाल (अरबी)—अवस्था (condition). विवरण (statement).

१६. अभ्यास (Exercise).

नीचे लिखे प्रत्येक शब्दयुगल परस्पर भिन्नार्थक शब्द हैं, उनकी भिन्नता वाक्य योजना द्वारा बताओ-- अम्ब- अम्ब, आचार-आचार, आयत—आयत, कुल—कुल, नाल-नाल, संग-संग, सन--सन, हार--हार।

एक शब्द के भिन्नभिन्न अर्थ।

(Apparent Homonyms)

हिन्दी में कुछ ऐसे शब्द हैं जो भिन्नार्थक शब्दों की भाँति दीख पड़ते हैं, परन्तु वास्तव में वैसे नहीं हैं। भिन्नार्थक

शब्द (Homonyms) भिन्न भिन्न मूलों से निकलते हैं, लेकिन नीचे का प्रत्येक शब्द एक ही मूल रखता है और भिन्न भिन्न अर्थ देता है।

अर्थ–धन, अभिप्राय, प्रयोजन, कारण, निमित्त।

अङ्क–परिच्छेद, चिन्ह, संख्या, गोद।

गुण–स्वभाव, कौशल, रस्सी, सत्व–रज–तम, गुणा, इन्द्रिय-विषय, रौंदा। **गुरु**–शिक्षक, भारी, श्रेष्ठ।

गोत्र–कुल, गोत, पहाड़। **घृणा**–घिन, दया, धिक्कार।

जलज–कमल, मोती, मछली, शङ्ख, सिवार, चन्द्रमा।

जीवन–जीविका, जल, प्राण। **तत्व**–मूल, यथार्थ, पञ्चभूत, ब्रह्म।

तनु–काया, दुबला, पतला।

तात–पिता, भाई, मित्र, बड़ा, पूज्य, प्यारा।

तारा–नक्षत्र, आंख की पुतली, बालि का स्त्री, बृहस्पति की स्त्री, देवी विशेष। **ताल**–ताड़, बाजे का ताल, पोखरा, हरताल।

नाग–साँप, हाथी, नागकेशर। **पक्ष**–पक्ष,पंख, दल, ओर, सहाय, बल।

पत्र–पत्ता, चिट्ठी, पंख, रथ, पुस्तक का पन्ना। **पय**–दूध, जल।

पोत–बच्चा, नाव, स्वभाव, वस्त्र, गुरिया।

रस–पौधे का दूध, सार, स्वाद, काव्यरस, जल, प्रेम, पारा, षट्रस।

विधि–ब्रह्मा, ईश्वर, भाग्य, रीति। **वेला**–समय, ज्वार, समुद्रतट।

शिव–महादेव, मङ्गल, भाग्यशाली, वेद।

सारंग–रागविशेष, मोर, सर्प, मेघ, हरिण, पानी, देशविशेष, पपीहा, हाथी, राजहंस, सिंह, कोयल, कामदेव, रंगविशेष, वर्ण, धनुष, भौंरा, मधुमाछी, कपूर, कमल, भूषण, फूल, छत्र, शोभा, रात, दीपक, स्त्री, शंख, वस्त्र। **सुधा**–अमृत, पानी।

सैन्धव–नमक, घोड़ा, सिन्धु नदी के पास का।

हरि–विष्णु, इन्द्र, साँप, मेंढ़क, सिंह, घोड़ा, सूर्य, चाँद, तोता,

वानर, यमराज, हवा, ब्रह्मा, शिव, किरण, मोर, कोयल, हंस, आग, धनुष, पहाड़, गज, कामदेव, हरा रंग ।

१७. अभ्यास (Exercise).

नीचे लिखे शब्द किन किन अर्थों में प्रयुक्त होते हैं ?

धर्म, तात, कान, शुचि, पान, सुधा, वेला, तत्व, पत्र, सारंग ।

विपरीतार्थक शब्द (Antonyms).

जो दो शब्द आपस में प्रतिकूल अर्थ बतावें वे विपरीतार्थक शब्द कहलाते हैं । ये नीचे लिखे प्रकार से बनकर प्रयुक्त होते हैं—

(१) भिन्न शब्द द्वारा—आकाश—पाताल, आदि—अन्त, आय-व्यय, आलोक—अन्धकार, ऊँच—नीच, उदय—अस्त, जीवन—मरण, पण्डित-मूर्ख, स्तुति-निन्दा, गुरु—लघु, मित्र—शत्रु, सुख—दुःख, स्थावर—जङ्गम ।

(२) नञ् योग द्वारा—आदि अनादि, ज्ञान—अज्ञान, भद्र— अभद्र, मङ्गल—अमङ्गल, शान्ति—अशान्ति, शुद्ध—अशुद्ध, सम्भव—असम्भव ।

(३) उपसर्ग द्वारा—मान—अपमान, यश—अपयश, योग—वियोग, घात—प्रतिघात, वाद—प्रतिवाद, राग—विराग, विवाद—निर्विवाद ।

(४) उपसर्ग परिवर्तन द्वारा—अनुराग—विराग, अनुग्रह—निग्रह, आदान—प्रदान, उपकार—अपकार, सजीव—निर्जीव, सम्पद्—विपद्, सरस-नीरस, सुगन्ध—दुर्गन्ध, सुलभ—दुर्लभ, संयोग—वियोग, इत्यादि ।

(५) लिङ्ग परिवर्तन द्वारा—राजा—रानी, माता—पिता, इत्यादि ।

नोट—ऐसे विपरीतार्थक शब्द **कभी कभी एक साथ भी प्रयुक्त होते हैं । जैसे—सुखदुःख, पापपुण्य, साधुअसाधु, सुजातिकुजाति, दानवदेव, ऊँचनीच, आगे पीछे, धर्म्माधर्म्म, दोषगुण, जीवनमरण, हिताहित, न्यायान्याय, शुभाशुभ, इत्यादि । (पीछे ' सहचर शब्द ' देखो ।)**

१८. अभ्यास (Exercise).

१. नीचे लिखे शब्दों के प्रतिलोम शब्द बताओ ।

प्रश्न, नीच, बालक, पुण्य, देव, शुभ, धनी, आकाश, घात, मिथ्या, विराग, जङ्गम, अन्त।

२. उपर्युक्त शब्दों से बने प्रतिलोम शब्दों को वाक्यों में रक्खो।

वर्णविन्यास भिन्न एकार्थक शब्द।

(Words of the same meaning but of different spelling).

बहुतसे एकार्थक शब्द ऐसे हैं जिनके वर्णविन्यास नाममात्र के भेद रखते हैं। जैसे-

अगुआ–अगुवा, अंगुली–उंगली, अञ्जलि–अञ्जली, अटवी–अटवि, अन्तरिक्ष–अन्तरीक्ष, अमिय–अमी, अभिवन्दन–अभिवादन, अवनि–अवनी, अलि–अली, आँचल–आँचर, आलि–आली, इन्धन–ईंधन, इम्रती–इमरती, कटि–कटी, कलश–कलस, किशलय–किसलय, कुटिर–कुटीर, कैकेयी–कैकयी, कोष–कोश, कौशल्या–कौसल्या, गड़हा–गढ़ा, गदहा–गधा, गाण्डिव–गाण्डीव, घिण–घिन, चमगादड़–चमगीदड़, चरित–चरित्र, छठी–छट्ठी, जोति–जोत, झंगा–झगा, टकुआ–टकुवा, ठोंकना–ठोकना, डाल–डार, ढाना–ढाहना, तक्र–तक्र, तगमा–तमगा, तरणि–तरणी, दश–दस, दास–दाश, धरणि–धरणी, धूली–धूलि, निमिष–निमेष, प्रतिकार–प्रतीकार, फुलवाड़ी–फुलवारी, बलीमुख–बलिमुख, बहन–बहिन, भृकुटि–भ्रकुटि, भल्लुक–भल्लूक, भूमि–भूमी, मणि–मणी, महि–मही, मसुर–मसूर, मूसल–मुसल, युवती–युवति, रँहट–रहट, रशना–रसना, रात्रि–रात्री, लहू–लोहू, वराणसी–वाराणसी, वशिष्ठ–वसिष्ठ, वाष्प–वास्प, शायक–सायक, शिलाजित–शिलाजीत, शूकर–सूकर, श्रेणि–श्रेणी, संडसी–सँड़सी, सरयु–सरयू, सुमरण–सुमरन, हुई–हुई, हिंसक–हिंस्रक, इत्यादि।

१९. अभ्यास।

१. वर्णविन्यास भिन्न एकार्थक शब्दों के बीस उदाहरण दो।

२. पहले प्रश्न के उत्तरवाले शब्दों से वाक्य बनाओ।

उपसर्गभेद से एक धातु के भिन्नभिन्न अर्थ–

(Different Meanings of roots with Prefixes).

भिन्न भिन्न उपसर्गों के साथ एक मूल धातु के (विशेष कर संस्कृत के किसी धातु के) भिन्न भिन्न अर्थ हो जाते हैं। जैसे–

१. हृ (चोरी करना, लेजाना, इत्यादि)–

प्रहार = प्र–हृ (मारना) + घञ् = आघात ।
संहार = सम्–हृ (नाश करना) + घञ् = विनाश, ध्वंस ।
आहार = आ–हृ (खाना) + घञ् = भोजन ।
विहार = वि–हृ (टहलना) + घञ् = भ्रमण ।
व्यवहार = वि–अव–हृ (लेना) + घञ् = आचरण ।
परिहार = परि—हृ (छोड़ना) + घञ् = परित्याग ।
उपहार = उप–हृ (भेंट देना) + घञ् = भेंट ।
अपहरण = अप–हृ (चोरी करना) + अन् = चोरी ।
प्रतिहारी = प्रति–हृ (रक्षा करना) + णिन् = द्वारपाल ।
प्रत्याहार = प्रति–आ–हृ (अलग करना) + घञ् = निवारण ।

२. ईक्ष् (देखना)–

अपेक्षा = अप–ईक्ष् (प्रतीक्षा करना) + अ (स्त्री० आ) = प्रतीक्षा ।
उपेक्षा = उप–ईक्ष् (तुच्छ जानना) + अ (स्त्री०आ) = अनादर ।
निरीक्षण = निर्–ईक्ष् (देखना) + अन = देखभाल ।
परीक्षा = परि–ईक्ष् (जाँचना) + अ (स्त्री०आ) = जाँच ।
प्रतीक्षा = प्रति–इक्ष् (राह देखना) + अ (स्त्री० आ) = अपेक्षा ।

३. गम् (जाना)–

अनु–अनुगमन (पश्चाद्गमन)। निर्–निर्गमन (निःसरण)।

प्रति–प्रतिगमन (लौटना)। आ–आगमन (आना)।
उत्–उद्गम (उत्पत्ति)। सम्– सङ्गम (मिलन)।

४. कृ (करना)

अनु–अनुकरण (देखादेखी)। प्रति–प्रतिकार (प्रतिशोध)।
सम्–संस्कार (जीर्णोद्धार)। वि–विकार (परिवर्तन)।
अधि–अधिकार (स्वामित्व)। उप–उपकार (भलाई)।
अप–अपकार (बुराई)। प्र–प्रकृत (यथार्थ)।
प्र–प्रकार (ढंग)। आ–आकार (रूप)।
आ–आकृति (रूप)। दुर् –दुष्कर (असाध्य)।

५. नी (राह दिखाना)—

परि–परिणीत (विवाहित)। अप–अपनीत (अपसारित)।
आ–आनीत (लायाहुआ)। निर्–निर्णीत (स्थिरीकृत)।
उप–उपनीत (उपस्थित)। अभि–अभिनीत (खेलाहुआ)।
प्र–प्रणीत (रचित)। वि–विनीत (नम्र)। अनु–अनुनय (प्रार्थना)।

६. भू (होना)—

प्र–प्रभूत (प्रचुर)। सम्–सम्भूत (उत्पन्न)।
परा–पराभूत (पराजित)। उत्–उद्भूत (सम्भूत)।
अनु–अनुभूत (बीता हुआ)। अभि–अभिभूत (पराजित)।

७. वद् (बोलना)—

अप–अपवाद (अपयश)। परि–परिवाद (निन्दा)।
परि–परिवर्तन (बदला)। वि–विवाद (झगड़ा)।
प्रति–प्रतिवाद (आपत्ति)। अनु–अनुवाद (उल्था)।
अभि–अभिवादन (वन्दना)। प्र–प्रवाद (अफ़वाह)।
सम्–संवाद (ख़बर)।

८. वृत् (होना)—

प्र–प्रवृत्त (उद्यत)। नि–निवृत्त (विरत)।

अनु–अनुवर्तन (पश्चाद् गमन)। आ–आवर्तन (घूमना)।

९. ज्ञा (जानना)—

अव–अवज्ञा (अनादर)। अनु–अनुज्ञा (अनुमति)।
प्रति–प्रतिज्ञा (दृढ़ सङ्कल्प)। वि–विज्ञान (विशेष ज्ञान)।
अभि–अभिज्ञान (स्मारक) परि–परिज्ञान (सम्यक् ज्ञान)।

१०. चर् (घूमना)—

सम्–सञ्चार (विस्तार)। अनु–अनुचर (सहचर)।
परि–परिचर (भृत्य)। वि–विचार (अभिप्राय)।

११. चि (संग्रह करना)—

सम्–सञ्चय (सङ्ग्रह)। अप–अपचय (क्षति)।
उप–उपचय (वृद्धि)। परि–परिचय (पहचान)।

१२. ग्रह (लेना)—

नि–निग्रह (शासन)। परि–परिग्रह (ग्रहण)।
अनु–अनुग्रह (दया)। सम्–सङ्ग्रह (सञ्चय)।
प्रति–प्रतिग्रह (दान ग्रहण)। आ–आग्रह (व्यग्रता)

१३. पत् (गिरना)—

नि–निपात (विनाश)। उत्–उत्पात (उपद्रव)।
प्र–प्रपात (गिरना)। सम्–सम्पात (जैसे–सम्पात वृत्त)।

१४. स्था (ठहरना)-

प्र–प्रस्थान (यात्रा)। अव–अवस्थान (स्थिति)।
अधि- अधिष्ठान (स्थिति)। उत्–उत्थान (उठना)।
अनु–अनुष्ठान (सम्पादन)। वि + अव–व्यवस्था (स्थिरता)।
अव–अवस्था (हालत)।

१५. दा (देना)—

आ–आदान (ग्रहण)। प्र–प्रदान (अर्पण)।
प्रति–प्रतिदान–(विनिमय)। उप + आ–उपादान (सामग्री)।
नि–निदान (मूलकारण)।

१६. दिश् (आज्ञा देना)—

आ–आदेश (आज्ञा)। उप–उपदेश (शिक्षा)।
निर–निर्देश (आदेश)। प्र–प्रदेश (छोटा देश)।
वि–विदेश (दूसरा देश)। प्रति + आ–प्रत्यादेश (खण्डन)।

१७. धा (स्थापित करना)—

प्र–प्रधान (खास) अनु + सम्–अनुसन्धान (खोज)।
नि–निधान (भण्डार)। वि–विधान (विधि)।
परि–परिधान (वस्त्र)। अभि–अभिधान (शब्दकोष)।
उप–उपधान (तकिया)।

१८. युज् (मिलना)—

प्र–प्रयोग (व्यवहार)। अप–अपयोग (अपव्यवहार)।
सम्–संयोग (मिलाव)। नि–नियोग (आदेश)।
अनु–अनुयोग (प्रश्न, खोज)। दुर्–दुर्योग (षड़यन्त्र)।
वि–वियोग (विरह)। सु–सुयोग (अवसर)।
उत्–उद्योग (चेष्टा)। प्रति–प्रतियोग (बाधा)।
अभि–अभियोग (नालिश)। उपयोग (व्यवहार)।

२०. अभ्यास (Exercise).

निम्न लिखित धातु भिन्न भिन्न उपसर्गों के योग से कौन कौन अर्थ देते हैं, उन्हें उदाहरणों के साथ लिखो-ईच, कृ, भू. चर्, दा, धा और युज्।

शब्दभेदों में परिवर्तन।

(The same word used as different Parts of speech).

हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे हैं जो प्रयोग के अनुसार भिन्न भिन्न शब्दभेदों में आते हैं। नीचे थोड़े से ऐसे उदाहरण दियेजाते हैं।

(१)

अच्छा...संज्ञा-अच्छों से मिलिये, बुरों से बचिये ।

विशेषण-राम ने **अच्छा** काम किया ।

अव्यय-अच्छा, हम आवेंगे ।

आगे...संज्ञा-पुस्तक आप के **आगे** में है ।

क्रियाविशेषण-वह **आगे** आया ।

सम्बन्धबोधक अव्यय-वाटिका मन्दिर के **आगे** है ।

और...विशेषण-और लड़कों ने क्या कहा ?

अव्यय-राम **और** श्याम पढ़ने गये हैं ।

इसलिये...क्रियाविशेषण-वह **इसलिये** नहाता है कि ग्रहण लगा है ।

समुच्चायक-तू दुर्दशा में है, **इसलिये** मैं तुझे दान दिया चाहता हूँ ।

एक...विशेषण-एक दिन ऐसा हुआ ।

सर्वनाम-१. **एक** आता है, **एक** जाता है ।

२. पुनि बन्दौं शारद सुरसरिता । युगल पुनीत मनोहरचारिता ।
मज्जन पान पाप हर **एका** । कहत सुनत **इक** हर अविवेका ।

क्रियाविशेषण-एक तुम्हारे ही दुःख से हम दुःखी हैं ।

को... क्रिया-आपने यह प्रतिज्ञा **की** ।

सम्बन्ध का चिन्ह--आप **की** घोड़ी अच्छी है ।

कुछ...सर्वनाम-घी में **कुछ** मिला है ।

विशेषण-कुछ पानी ।

क्रियाविशेषण-लड़की **कुछ** छोटी है ।

केवल...विशेषण-रामहिं **केवल** प्रेम पियारा ।

क्रियाविशेषण-तू **केवल** चिल्लाता है ।

समुच्चायक-करतीहुई विकटताण्डव सी मृत्यु निकट दिखलाती है,
केवल एक तुम्हारी आशा प्राणों को अटकाती है ।

कोई...सर्वनाम-कोई गया है या नहीं ?

विशेषण–तुम्हारी **कोई** पुस्तक अच्छी नहीं ।

क्रियाविशेषण–इसमें **कोई** २०० पृष्ठ हैं ।

क्या...सर्वनाम–राम ने आपको **क्या** कहा ?

विशेषण–वहाँ **क्या** बातें हुईं ?

क्रियाविशेषण–घोड़े दौड़े **क्या** हैं, उड़आये हैं ।

जो...सर्वनाम–बाघ, **जो** बैठा था, मारागया ।

विशेषण–**जो** किताब चाहो , लेलो ।

अव्यय–उसका सामर्थ्य नहीं, **जो** आपका सामना करे ।

दोनों...विशेषण–**दोनों** लड़के ।

सर्वनाम–दुविधा में **दोनों** गये, माया मिली न राम ।

पत्थर...संज्ञा–**पत्थर** मत फेंको !

अव्यय–तुम मेरी मदद **पत्थर** करोगे !

साथ...संज्ञा–विपत्ति में कोई **साथ** नहीं देता ।

सम्बन्धबोधक अव्यय–मैं आपके **साथ** गया ।

क्रियाविशेषण–वे लड़के **साथ** खेलते हैं ।

यह...सर्वनाम–**यह** किसका घर है ?

विशेषण–**यह** किताब किसकी है ?

क्रियाविशेषण–लीजिये, महाराज, मैं **यह** चला ।

हाँ...क्रियाविशेषण–तुमने भात खाया ? **हाँ** ।

संज्ञा–उसने **हाँ** में **हाँ** मिलाया ।

(२)

अकाल–संज्ञा (=दुर्भिक्ष), विशेषण (जैसे–अकालमृत्यु) ।

करकरा–संज्ञा (=सारस विशेष), विशेषण (जैसे–करकरा रुपया) ।

करारा–संज्ञा (=किनारा), विशेषण (जैसे–करारा रुपया) ।

किराना–संज्ञा (मसाला), क्रिया (फटकना) ।

गोदना–संज्ञा, क्रिया ।

तीर–संज्ञा (बाण), अव्यय (समीप)।
रमना–संज्ञा (मैदान), क्रिया (घूमना)।
सीधा–संज्ञा, विशेषण, अव्यय।

२१. अभ्यास (Exercise).

नीचे लिखे शब्दों को भिन्न भिन्न शब्दभेदों में रखकर वाक्य बनाओ। कौन, जी, थोड़ा, दुर्, न, प्रति, बहुत, सो, यहाँ, वाहवाह।

पदांशपरिवर्त्तन।

(Change of components).

यौगिक पदों के किसी अंश के बदले उसी अर्थ का कोई अन्य मधुर शब्द रखकर रचना की सुन्दरता बढ़ासकते हैं।

जैसे–पृथ्वीपति–भूपति, आनन्दकर–सुखकर, सुरबाला–देवबाला, श्रवणगोचर–कर्णगोचर, गँठकट्टा–गिरहकट्टा, नृपति– नरपति, नीरनिधि–जलनिधि, भूपाल–महीपाल, राजकुमारी–राजकन्या–राजपुत्री, जगदीश–जगन्नाथ, मृगाक्षी–मृगनयनी, क्षीरसमुद्र–क्षीरसिन्धु, राजादेश–राजाज्ञा इत्यादि।

२२. अभ्यास (Exercise).

नीचे लिखे यौगिक शब्दों में प्रत्येक के किसी एक अंश को उसी अर्थ के किसी शब्द से बदल कर यौगिक शब्द बनाओ।

जलज, जलधि, सुखद, सर्वज्ञ, भूपति, लोकपाल, निशाचर, देवबाला, पुण्यशाला, शस्त्रशाला और ज्ञानशून्य।

उच्चारणभेद से अर्थभेद।

(Accent & Emphasis).

शब्द के किसी विशेष अक्षर के उच्चारण में भेद डालने से उस शब्द का और वाक्य के किसी विशेष शब्द के उच्चारण पर बल देने से उस वाक्य का अर्थ बदलजाता है जैसे—

(१) खेर-ख़ेर, कै-क़ै, आगा-आग़ा, कूल-क़ुल, इत्यादि * ।

(२) वह **क्या** काम करता है ? (वह काम कौन है ?)-वह क्या **काम** करता है ? (हम नहीं जानते कि वह काम करता है ।)

आप ग्रन्थ पढ़ते हैं ? (आप पढ़ते हैं या कोई दूसरा ?)-आप **ग्रन्थ** पढ़ते हैं ? (ग्रन्थ या कोई दूसरी चीज ?

नोट-पीछे 'स्वराघात' देखो ।

२३. अभ्यास (Exercise).

(१) चार ऐसे उदाहरण दो जिनमें उच्चारणभेद से अर्थभेद होजाय ।

(२) नीचे लिखे प्रत्येक शब्दयुगल में परस्पर क्या भेद है ? गौर-ग़ौर, खैर-ख़ैर, कै-क़ै, कद-क़द ।

अपभ्रंश शब्द (Corrupted Words).

हिन्दी में बहुतसे तद्भव शब्द आये हैं जिन्हें अपभ्रंश शब्द भी कहते हैं। नीचे थोड़ेसे ऐसे शब्द और उनके मूल संस्कृत शब्द दियेजाते हैं।

आज-अद्य, अजान-अज्ञान, अबुझ—अबुध, अनाड़ी-अनार्य, अफीम-अहिफेन, आम-आम्र, आसरा—आश्रय, आँवला-आमलक, ईख-इक्षु, उठान-उत्थान, उछाह-उत्साह, उबटन-उद्वर्तन, उघारना-उद्घाटन, उबालना-उद्वेलन, ऊमस-ऊष्म, ऊँट-उष्ट्र, कबूतर-कपोत, काग-काक, कुम्हार-कुम्भकार, कोयल-कोकिल, कोरा-केवल, खटिया-खट्वा, खपरा-खर्पर, खोंता-खगायतन, गोबर-गोविट्, गहरा-गभीर, गड़हा-गर्त, गुनी-गुणी, घी-घृत, घड़ी—घटी, घाट-घट्ट, चोंच—चञ्चु, चूल्हा-चुल्लिका, चौकी-चतुष्किका, छाता—छत्र, जीभ-जिह्वा, जेठ-ज्येष्ठ, जोरू-जाया, जमुहाना-जृम्भा, जम्बीरी-जम्बीर, ठाकुर—ठक्कुर, तुरत-त्वरित, तीता-तिक्त, दाद-दद्रु, दाँत-दन्त, धुआँ-धूम्र, धुनि-ध्वनि, नाच-नृत्य,

* अर्थ पीछे देखो ।

निराला—निरालय, नह—नख, पूत—पुत्र, पतला—प्रतनु, पढ़ना—पठन, बेल—वल्ली, बुरा—विरूप, भौंरा—भ्रमर, माथा—मस्तक, मझला—मध्यम, मुँह—मुख, मिट्टी—मृत्तिका, योग—योग्य, रिन—ऋण, रिस, रोस—रोष, रुखाई—रुक्षता, रसोई—रसवती, लाख—लक्ष, लाज—लज्जा, लत्तर—लता, सेज—शय्या, सूत—सूत्र, सोग—शोक, सत्तू—सक्तु, सलाई—शलाका, हाट—हट्ट, हाथ—हस्त, इत्यादि।

२४. अभ्यास (Exercise).

१. नीचे लिखे शब्दों के मूल शब्द बताओ—

आज, आठ, आधा, अगुआ, उगाल, उछाह, कपड़ा, काम, कबूतर, कटारी, काठ, कोठा, कुआँ, करेला, खटिया, गहरा, घाव, चोंच, चोर, छुरी, तीता, दाख, मछली, जूझना, बिजली, बादल, सेठ, सौत, सच, हाथ, हिय, तेरस।

प्रत्ययान्त शब्दप्रयोग।

कृत् और तद्धित प्रत्यय।

(१) **संज्ञाप्रयोग**—

उनके **देखे** से जो आजाती है, रौनक़ मुँहपर, वह समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है।

आन **सँभाले** जान थी जाती, जान **बचाये** आन थी जाती।

एक न संभला मेरे **संभाला**, था जो बेताब अन्दरवाला।

न आये अगर वह तुम्हारे **कहे** से, तो मिन्नत करो घेरेघेरे मनालो।

(२) **विशेषणप्रयोग**—

खाया मुँह, **नहाया** बदन नहीं छिपता।

बीती ताहि बिसारिदे, आगे की सुधि लेय।

मरे को मारनो न सूरकी बड़ाई है।

ऐ **जानी पहचानी** रातो, तनहाई की **डरानी** रातो!

गया वक्त फिर हाथ आता नहीं।
कहीं झरोखे **कटे हुए** हैं, कहीं चौतरे **पटे हुए** हैं।
फूल **बिछे** हैं किसी भवन में, सुरभि **सना** है सदा पवन में॥
बहता पानी निर्मला बंधा गंदा होय।
बहती गंगा में हाथ धोलो।
तो मेरी मनकली **सूखती** झट खिलजाती।
पढ़ता सुग्गा उड़गया।

(३) **अव्यय प्रयोग—**
बैठे बैठे दिन नहीं कटता।
लड़का **दौड़ते दौड़ते** थकगया।
लड़की **दौड़ते दौड़ते** थकगई।
इस जीव को शरीर में न तो किसीने **आते** देखा न **जाते**।

ईश्वर की माया को लोग **सोचते** और **विचारते** ही रहे, परन्तु आजतक उसका भेद किसीने नहीं पाया।

थक गई मैं दुःख **सहते सहते**, थकगये आँसू **बहते बहते**।
उठते बैठते रोका सबको, **सोते जागते** टोका सबको।
तेरे **आते** ही **आते** काम आखिर होगया।
नन्दजी से **मिल** कुशलक्षेम **पूछ** कहने लगे।
वह **पूछके** आता है। मैं **खाकर** जाता हूँ। मैं **खाकरके** जाता हूँ।

(४) आजकल **'हारा, हार'** इन प्रत्ययों से बने बहुतसे **शब्द** गद्य में नहीं आते। जैसे—राखनहारा, सिर्जनहार, इत्यादि।

(५) **'औआ'** प्रत्यय दो अर्थों में आता है। जैसे—चढ़ौआ=चढ़ा हुआ, चढ़नेवाला। बिकौआ=बिका हुआ, बिकनेवाला।

(६) इये, इयेगा, इयो और ना प्रत्ययान्त विधि क्रियाएँ अविकारी हैं, क्योंकि उनमें लिङ्ग, वचन और पुरुष के कारण कोई विकार नहीं होता। जैसे— **चाहिये, खाइये,** 'सर मेरा काटके **पछताइयेगा,** झूठी फिर

किसकी कसम **खाइयेगा** ?' '**चलियो** सबँसे यों तू, पर जी मत **फँसाइयो**।' 'नाजुक है दिल, न ठेस **लगाना** इसे कहीं।' 'लगा कहने, चल भाग रे फिर न **आना**–मियाँ, मैं भी चलता हूँ टुक रहके **जाना**।'

(७) संस्कृत का मतुप् (मान् , वान् ,) प्रत्यय तद्धित में और शानच् (आन, मान) कृदन्त में आता है। मतुप् प्रत्ययान्त शब्द का अन्त्य न हल् होता है, परन्तु **शानच्** का नहीं। जैसे–श्रीमान, बुद्धिमान्, दयावान्, वर्तमान, वर्द्धमान, क्रियमाण, विद्यमान, इत्यादि।

नोट–अनुमान, परिमाण, प्रमाण इत्यादि शब्द शानच् या मतुप् प्रत्ययान्त नहीं हैं।

(८) जिन शब्दों के अन्त और उपान्त में **अ, आ** या **म** आवे उनके उत्तर तथा **विद्युत्, स्रज्, नभस्**, इत्यादि शब्दों के उत्तर **वत्** लाते हैं, इन्हें छोड़ शेष शब्दों के उत्तर **मत्** लाते हैं। जैसे–ज्ञानवान्, दयावान्, लक्ष्मीवान्, विद्युत्वान्, स्रग्वान्, श्रीमान् नभस्वान्। धीमान्, बुद्धिमान्।

(९) **क्विप्** प्रत्यय लगाकर व्यञ्जनान्त धातुओं से बने और **शतृ** (अत्) एवं स्यत (स्यत) प्रत्ययान्त शब्द **सर्वदा हलन्त** ही रहते हैं। जैसे–जगत, विपद्, सम्राट्, वणिक्, विद्युत, आपद, सम्पद्, उपनिषद्, (उपनिषत्), प्रावृट्, सम्यक्। जाग्रत्, महत,। भविष्यत्।

(१०) किसी **शब्द** के परे एक ही अर्थ में एकबार **दो प्रत्ययों** का लगाना अशुद्ध है। जैसे–ऐक्यता, धैर्यता, नैपुण्यता, दारिद्र्यता। इनके बदले "ऐक्य, धैर्य, नैपुण्य, दारिद्र्य या एकता, धीरता, निपुणता, दरिद्रता" लिखना उचित है।

१९. अभ्यास (Exercise).

१. कर्तृवाचक के किन किन प्रत्ययों का प्रयोग आजकल की हिन्दी में नहीं होता। २. किसी शब्द के परे एक ही अर्थ में एकबार दो प्रत्ययों को ला सकते हैं या नहीं? क्यों?

३. नीचे लिखे शब्द शुद्ध हैं या अशुद्ध ? क्यों ?

वर्त्तमान्, विद्यमान, बुद्धिमान, अनुमान्, प्रमाण, जगत, महत, भविष्यत, सामयत्व, महानता।

४. नीचे लिखे वाक्यों में मोटे अक्षरों से छपे शब्द किन किन प्रत्ययों से किन किन अर्थों में बने हैं ?

"सबही से मिल **बोलना**, मीठे मीठे **बोल**। मीठी **बोली** बोलकर, बनो यार अनमोल।" उसकी **निशानियाँ** और **यादगारें** सैंतकर रखते थे। "हरी भरी वर वृक्षाओ, लिये फूलों की है **डाली**। **झोंके** आआकर किसके, हाथ चूमते हैं इसके।" फिर जब विरुद्ध **पक्षवाला** इसका **चुटीला** उत्तर देता था और **चिथेड़ने** लगता था तब पूरब के **सूर्य** को पश्चिम में उगवा देता था। इसमें जब एक **आदमी** खड़ा होकर **वक्तृता** करता तब इधर की दुनिया उधर हो जाती थी।

कारकान्त प्रत्यय (Case-endings).

शून्य चिन्ह।

शून्य चिन्ह नीचे लिखी अवस्थाओं में आता है—

१. **उक्त कर्त्ता में**। जैसे—मोहन आया। महाराज बोले। वह तो भूले थे हमें, हम भी उन्हें भूलगये। सीता एक ग्रन्थ लाई है। वह पीछे होलिया। श्रीकृष्ण मथुरा चल दिये। निकलआओ कि अब मरता है बूढ़ा।

२. **उक्त कर्म में**। जैसे—मैंने रोटी खाई। रावण से सीता हरी गई। योंही रात सारी उन्होंने गँवाई।

३. **द्विकर्मक क्रिया के जब दोनों कर्म रहें तब मुख्य कर्म में**। जैसे—उसने नंगों को वस्त्र दिये। मैंने उसे एक रीति सिखाई। हम को चालें बतायगा अब कौन ?

४. **विधेयभाव में**। जैसे—लड़की सूखकर काठ होगई। क्या आपने उसे आदमी समझा है ?

५. **सम्बोधन में**। जैसे–छिपे हो कौनसे पर्दे में बेटा !

नोट–बहुवचन में चिन्ह संस्कार के अनुसार अर्द्धानुस्वार रहित ओ या यो लाते हैं। जैसे–हे बेटो।

६. **किसी शब्द के केवल अर्थ मात्र में और लिङ्ग, वचन, परिमाण, संख्या या दर इत्यादि के अर्थ में**। जैसे–बालक, सुन्दर, घोड़ियाँ, घोड़े, एक मन चावल, चार, दो रुपये सेर मिठाई, इत्यादि।

७. **किसी किसी क्रियाविशेषण में**। जैसे– न खाया, अच्छा ही हुआ ! हो चुका, भला चलो भी तो। बेढब पड़ाहुआ है, झगड़ा इधर उधर। इत्यादि।

ने।

ने चिन्ह नीचे लिखी अवस्था में आता है×–

अनुक्त कर्त्ता में [अर्थात्–

(क) सकर्मक क्रियाओं के सामान्य, आसन्न, पूर्ण और सन्दिग्धभूत कालों में कर्त्ता के आगे ने चिन्ह आता है।

जैसे–मैंने रोटी खाई। रानियों ने पेड़ खाये हैं। रानियों ने सखियों को बुलाया था। राम ने पुस्तक पढ़ीहोगी।

अपवाद–

१. **भूलना** क्रिया के कर्त्ता में ने चिन्ह का प्रयोग हमें नहीं मिला है। जैसे–आप **वह** प्रतिज्ञा न **भूले होंगे**। वह तो **भूले थे** हमें हम भी उन्हें भूलगये। बुद्धिमती मां का उपदेश **गारफ़ील्ड** कभी न **भूले**।

नोट–'**लाना** क्रिया केलिये नीचे की टिप्पणी देखो।'

× ने चिन्ह नीचे लिखी अवस्था में नहीं आता–

उक्तकर्त्ता में [अर्थात्–

(क) अकर्मक क्रिया के कर्त्ता में ने चिन्ह कभी नहीं आता। जैसे-वह आया। मैं गया हूँ। राम सोया था।

२. '**बोलना, समझना, बकना, जनना, सोचना** और **पुकारना**' इन क्रियाओं के कर्त्ता 'ने' चिन्ह विकल्प से लेते हैं।

बोलना–**महाराज** बोले। (प्रेमसागर)

(कर्म लुप्त रहने पर 'ने' लुप्त रहता है, परन्तु कर्म के साथ कोई कोई लाते हैं।)

वह झूठ बोला। (प० अम्बिकाप्रसाद बाजपेयी)।
रामचन्द्रजी ने झूठ नहीं बोला। (पं० रामजीलालशर्मा)
उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला। (बालविनोद)।
उसने कई बोलियाँ बोलीं। (पं० अ. प्र. बाजपेयी)

समझना– **हमने** तुम्हारी बात नहीं समझी।
हम तुम्हारी बात नहीं समझे।
हमको समझा है दिल में क्या **तू ने**।
हम न समझे कि यह आना है या जाना तेरा। (भट्टजी)

बकना– **तुम** बहुत बके।
तुमने बहुत बका। (पं० अम्बिकादत्त व्यास)

जनना– **भैंस** पाड़ा जनी।
भैंस ने पाड़ा जना। (पं० अम्बिकादत्त व्यास)
बकरी तीन बच्चे जनी (पं० केशवराम भट्ट)
चित्राङ्गदा ने तुझे जना (लाला भगवानदीन)
आसन्त्रित कर सूर्यदेव को **मैं ने** मन में,
मन्त्रशक्ति से तुझे जना था पितामवन में।
(श्री मैथिली शरण गुप्त)

(ख) सकर्मक 'भूलना' क्रिया के कर्त्ता में ने चिन्ह का प्रयोग नहीं होता तथा 'बोलना, समझना, बकना, जनना, सोचना और पुकारना' में विकल्प से होता है। (उदाहरण ऊपर देखो।)

(ग) सामान्य, आसन्न, पूर्ण और सन्दिग्धभूत भिन्न सभी कालों की सकर्मक क्रियाओं के कर्त्ता ने चिन्ह रहित होते हैं। जैसे–मैं भात खाता था। राम पुस्तक पढ़ता है।

सोचना— **उसने** यह बात सोची।
वह यह बात सोचा। (पं० केशवराम भट्ट)

पुकारना— **पूतना** पुकारी। (पं० केशवराम भट्ट)
(कर्म लुप्त रहने पर न भी लुप्त रहता है, नहीं ता नहीं।—भट्ट) **चोपदार** पुकारा—करा खाँ! निगाह रूबरू। (राजा शिवप्रसाद)
सत्पुरुषों ने जिसको बारम्बार पुकारा, अच्छा है।
जिसने गली में तुझको पुकारा। (पं० केशवराम भट्ट)

३. सजातीय कर्म लेने के कारण **जो अकर्मक क्रिया सकर्मक होजाती** है उसके कर्त्ता के आगे ने चिन्ह नहीं आता, परन्तु कोई कोई ऐसी कुछ क्रियाओं के साथ सामान्य, आसन्न, पूर्ण और सन्दिग्ध भूतकालों में ने चिन्ह लाते भी हैं। जैसे—

सिपाही कई लड़ाइयाँ लड़ा।
वह शेर की बैठक बैठा। (पं० कामताप्रसाद गुरु)।
मैं क्रिकेट खेला। (पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी।)
उसने टेढ़ी चाल चली।
मैंने बड़े खेल खेले हैं।
उसने चौपड़ खेली। (पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी।)

(ख) सब खण्ड सकर्मकवाली संयुक्त क्रिया के कर्त्ता के आगे सामान्य, आसन्न, पूर्ण और संदिग्ध भूत कालों में ने चिन्ह आता है। जैसे—मोहन ने ग्रन्थ को देखलिया। मैंने उत्तर देदिया था।

(घ) एक, अधिक या सब खण्ड अकर्मकवाली संयुक्त क्रियाओं के कर्त्ता ने चिन्ह रहित होते हैं। जैसे—मैं एक पुस्तक लाया। श्याम पीछे होलिया। राम पढ़लिखचुका। सीता सोगई।

नोट—लाना क्रिया 'ले' धातु और 'आना' के योग से बनी है। पहले इसका रूप ल्याना था, पर बाद लाना होगया। (प० अ० प्र० बाजपेयी)।

अपवाद–नित्यताबोधक * सकर्मक संयुक्त क्रिया का कर्त्ता ने चिन्ह कभी नहीं लेता।

वे बारबार गिनाकिये, हाथ कुछ न लगा। (भारतेन्दु)

वह रात भर बैठेबैठे पढ़ाकिया।

वह चित्रसी चुपचाप खड़ी सुनाकी। (प० अम्बिकादत्त व्यास)

इस दृश्य को **पाण्डव** सामने बैठे देखाकिये। (बालभारत)

वह तो भूले थे हमें हम भी उन्हें भूलगये,

हज़रत भी कल कहेंगे कि **हम** क्या कियाकिये। (प० केशवरामभट्ट)

(ग) संयुक्त अकर्मक क्रिया का अन्तिम खण्ड 'डालना' हो तो सामान्य, आसन्न, पूर्ण और सन्दिग्ध भूत कालों में कर्त्ता के आगे ने चिन्ह सर्वदा आता है, परन्तु यदि अन्तिम खण्ड 'देना' हो तो विकल्प से आता है। जैसे–

उसने रातभर जागडाला (प. अम्बिकादत्त व्यास)

जब मानसिंह चढ़आये तब पठानों की **सेना** चलदी।

(प. केशवराम भट्ट)।

श्री कृष्ण मथुरा चलदिये। (प्रेमसागर)

मैं अपनासा मुँह लेकर चलदिया। (विद्यार्थी)

उसने रातभर जागदिया। प. (अम्बिकादत्त व्यास)

अपवाद–

'मुस्कुरादेना, हँसदेना और रोदेना' क्रियाओं के कर्त्ता 'ने' चिन्ह

अपवाद–संयुक्त अकर्मक क्रिया का अन्तिम खण्ड डालना हो तो सामान्य, आसन्न, पूर्ण और सन्दिग्ध भूत कालों में कर्त्ता के आगे ने चिन्ह सदा आता है, परन्तु यदि अन्तिम खण्ड 'देना' हो तो विकल्प से आता है। (उदाहरण ऊपर देखो।)

(ङ) नित्यताबोधक सकर्मक संयुक्त क्रिया का कर्त्ता ने चिन्ह कभी नहीं लेता। (उदाहरण ऊपर देखो।)

* पौनःपुन्य अर्थसूचक।

कभी नहीं छोड़ते। जैसे—मोहन ने नारद को देखकर मुस्कुरादिया। जब वह आये यार ने हँसदिया। मुकद्दर ने रोरो दिया हाथ मलकर। (प. केशवरामभट्ट ×

को।

'को' * चिन्ह नीचे लिखी अवस्थाओं में आता है—

१. अनुक्त कर्म में। जैसे—आमों को खाता है। तारों को देखता है। फूलों को बटोरता है। राम उसे पहचानता है। मैंने ब्राह्मण को सताया है।

२. व्यक्तिवाचक, अधिकारवाचक और व्यापारकर्तृवाचक में। जैसे—राम को पढ़ने दो। मालिक को समझाना। सिपाही को बुलाओ। वह अपने नौकर को कभी नहीं मारता।

३. गौणकर्म या सम्प्रदान कारक में। जैसे—

पूतना कृष्ण को दूध पिलानेलगी। भला, वह किसी को मुँह दिखावेगी! तूने मुझे क्या कहा। मैंने उसको पुस्तक खरीददी। उसने नंगों को वस्त्र दिये।

४. आना, छजना, पचना, पड़ना, भाना, मिलना, रुचना, लगना, शोभना, सुहाना, सूझना, होना और चाहिये इत्यादि के योग में। जैसे—उन्हें याद आतीं हैं आपकी बातें। आपको यह टोपी नहीं छजती। उसको भोजन नहीं पचता। दिल को कल नहीं पड़ती। उसको क्या पड़ा है, बिगड़ता है मेरा। तुझको पराई क्या पड़ी अपनी निबेड़ तू। मुझे प्यारे के बिछोह में कुछ नहीं भाता। मुझे अपना स्वत्व कब मिलेगा? आपको क्या रुचता है, भात या रोटी? बच्चों को

× अनुक्त कर्ता में 'से' इत्यादि चिन्ह भी आते हैं।

* सर्वनाम में 'को' के बदले कहीं कहीं 'ए' लगाते हैं। सम्प्रदान अर्थ में 'केलिये' भी आता है। 'ए' के प्रयोग में ऊपर के सभी नियम और 'केलिये' के प्रयोग में सम्प्रदान अर्थवाले नियम लगते हैं।

मिठाई बहुत रुचती है। अपना घर सभी को भला लगता है। तुझे यह चाल नहीं शोभती। तुम्हारी बात मुझे कुछ भी नहीं सुहाती। आपको क्या सूझा है? तुझे अठखेलियाँ सूझी हैं, हम बेज़ार बैठे हैं। यशोदा को लड़की के होने की भी सुध न थी। क्या मुझे आपसे कुछ भी लगाव नहीं है? आपको सबेरे उठना चाहिये।

५. निमित्त, आवश्यकता और अवस्था द्योतन में। जैसे–राम हमसे मिलने को आये थे। वे स्नान को गये हैं। भोजन बनाने को सीधा तौलाते हैं। इसीके देखने को मैं बचा था। अब मुझको पढ़ने जाना है। तुमको यहाँ फिर आना होगा। उसको अपना पाठ सीखना है। उसको कल रोते रोते बीता।

६. योग्य, उपयुक्त, उचित, आवश्यक, नमस्कार, धिक्कार और धन्यवाद आदि तथा इनके अर्थवाची और और शब्दों के योग में। जैसे–यह आपको योग्य नहीं। क्या यह उसको उपयुक्त है? स्वच्छ वायुसेवन आपको उपयोगी होगा। ऐसा करना आपको उचित नहीं। विद्यार्थी को ब्रह्मचर्य रखना उचित है। मुझको जाना आवश्यक है। पण्डितजी को प्रणाम। ऐसी स्वतन्त्रता को नमस्कार। पापी को धिक्कार। झूठ को फिटकार। आपको धन्यवाद।

७. समय, स्थान और विनिमयद्योतन में। जैसे–गाड़ी भोर को जायगी। वह रात को आवेगा। कल रात को अच्छी वर्षा हुई। मोहन घर को गया। घोड़ा कितने को दोगे? पुस्तक कितने को ली है?

विकल्प–ऐसी जगह कहीं **में** और कहीं **पर** भी लाते हैं। विनिमय में **सम्बन्ध के चिन्ह** भी आते हैं। जैसे–गाड़ी भोर में जायगी। वह रात में आवेगा। कल रात में अच्छी वर्षा हुई। मोहन घर पर गया। घोड़ा कितने में (पर) दोगे। पुस्तक कितने में (पर या की) ली है।

८. समाना, चढ़ना, खुलना, लगाना, होना, डरना, कहना और पूछना आदि क्रियाओं के योग में। जैसे–आपको भूत समाया।

है। ऐसी क्या बू समागई तुमको ? आपको भूत चढ़ा है । मुझे इस चोरी का भेद खुलगया । वह किसी काम का नहीं, उसको आग लगाओ । कोठरी में क्यों नहीं रहते, उसको क्या हुआ है ? कायर को डरें तो कहाँ रहें ? तुमको एक बात कहता हूँ, घर पर कह देना । उसने आपको क्या पूछा ?

विकल्प–समाना, खुलना, लगाना और होना इत्यादि के योग में 'को' के बदले कहीं 'में' और कहीं '**पर**' तथा डरना, कहना और पूछना इत्यादि में 'को' के बदले 'से' चिन्ह भी लाते हैं । जैसे–आपमें भूत समाया है। ऐसी क्या बू समागई तुममें ? आपपर भूत चढ़ा है । मुझ-पर इस चोरी का भेद खुलगया । वह किसी काम का नहीं, उसमें आग लगाओ । कोठरी में क्यों नहीं रहते, उसमें क्या हुआ है ? कायर से डरें तो कहाँ रहें ? तुमसे एक बात कहता हूँ, घर पर कह देना । उसने आपसे क्या पूछा ?

नोट–होना क्रिया के साथ अस्तित्व अर्थ में 'को' के अर्थ में '**के**' भी लाते हैं। जैसे–नन्दजी के पुत्र हुआ है । उसके दाढ़ी है । मेरे एक बेटी है । चली थी बरछी किसी पर किसी के आन लगी । (ऐसी जगह को भी लाते हैं।)

नीचे लिखी अवस्था में 'को' चिन्ह प्रायः लुप्त रहता है, परन्तु विशेष अर्थ में स्वराघात के बदले कहीं कहीं लाते भी हैं–

(१) **छोटे छोटे जीवों तथा अप्राणिवाचक संज्ञाओं के साथ** । जैसे–उसने बिल्ली मारी । मगर एक जुगनू चमकते जो देखा । मैं चिट्ठी लिखता हूँ। बैल घास खाता है ।

(२) **अन्य उदाहरण**–किधर तुम छोड़कर मुझको सिधारे । मैं सुबह आया । वह पटने गया । राम पढ़ने जाता है ।

से।

'से' चिन्ह नीचे लिखी अवस्थाओं में आता है-

१. करणकारक में। जैसे-बाण से मारा। श्री कृष्ण दोनों हाथों से छाती में मुँह लगा, लगे प्राण समेत पय पीने।

२. अनुक्तकर्त्ता में। जैसे-मुझसे रोटी खाईगई। आपसे ग्रन्थ पढ़ेगये। रानी से सोया नहीं जाता।

३. प्रेरककर्त्ता में। जैसे-यदि शत्रुओं से तेरा नाम न जपवाऊँ तो मैं चाणक्य नहीं! सभा में जाते हो तो मेरा प्रस्ताव लोगों से मनवाके छोड़ना। मैं राम से पत्र लिखवाता हूँ।

४. क्रिया करने की रीति या प्रकार बताने में। जैसे-वह सारी शक्ति से यत्न करता है। अन्तःकरण से पूजा करो। धीरे से बोलो। खुशी से रहो।

५. मूल्यवाचक संज्ञा और प्रकृतिबोध में। जैसे-कल्याण कञ्चन से मोल नहीं लेसकते। अनाज किस भाव से बेचते हैं? दो सौ रुपये से घोड़ा मोल लिया। छूने से गर्मी जानपड़ती है। देखने से धनी मालूम होता है।

विकल्प-ऐसी जगह कहीं 'में' और कहीं 'पर' भी लाते हैं।

६. कारण, साथ, द्वारा, चिन्ह, विकार, उत्पत्ति और निषेध में। जैसे-आलस्य से वह समय पर न आया। दया से हृदय पिघलगया। वह गर्मी से रुख तमतमाया हुआ, वह रोने से मुँह भरभराया हुआ। घृत और दुग्धाभाव से दुर्बल हुए हम रोरहे। नदी में रहना, मगर से बैर। छाती से छाती मिलाओ। राजा मन्त्री से सलाह करते हैं। आप पुस्तकें रखजाइये अपने नौकर से भेजदूँगा। अक्षरों से लेखक पहचाने जाते हैं। जटा से साधु जानपड़ता है। वह एक आँख से काना और एक पाँव से लँगड़ा है। कपास, ऊन आदि से वस्त्र बनते हैं। विद्या से ज्ञान होता है। आपसे

आप कुछ नहीं हो सकता। जितना भाग्य में होगा उतना ही मिलेगा, दौड़धूप से क्या लाभ? झगड़ने से क्या प्रयोजन?

विकल्प–साथ, निषेध, धिक्कार इत्यादि अर्थ में **'से'** के बदले कभी कभी **सम्बन्ध का चिन्ह** भी आता है। जैसे–उसने उनपर क्रोध की दृष्टि की। झगड़े का क्या प्रयोजन? एक आँख का काना। एक पाँव का लंगड़ा। आँखों के अन्धे नाम नैनसुख। कानों के बहरे।

'से' के बदले कहीं कहीं **'में'** भी आता है। जैसे–ऐसा काम करो जिसमें यश मिले।

नोट–हेतु, कारण, प्रकार इत्यादि शब्दों के साथ भी 'से' चिन्ह लाते हैं। जैसे–इस हेतु से वह समय पर नहीं पहुँचा। इस कारण से उसका निवारण मैं नहीं करसकता। इस प्रकार से तुम्हारा रहना ठीक नहीं।

७. अपादान (विभाग) में। जैसे–वृक्ष से पत्र गिरते हैं। वह ऐसे गिरा जैसे आकाश से वज्र गिरे।

८. पूछना, दुहना, जाँचना, कहना, रींधना (पकाना, राँधना) इत्यादि क्रियाओं के गौणकर्म में। जैसे–मैं आप से पूछता हूँ। ग्वाला गाय से दूध दुहता है। दरिद्र धनी से जाँचता है। मोहन आपसे कई बातें कहचुका। रसोइया चावल से भात पकाता है।

विकल्प-यहाँ **'से'** के बदले **'को'** भी लाते हैं, परन्तु कहीं कहीं मुख्य कर्म को लोप करना पड़ता है।

९. भिन्नता, परिचय, अपेक्षा, आरम्भ, परे, बाहर, रहित, हीन, दूर, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, अतिरिक्त, लज्जा, बचाव, डर, निकलना, इत्यादि और इन्हीं शब्दों के अर्थवाले दूसरे शब्दों तथा दिग्वाचक शब्दों के योग में। जैसे–वह उससे भिन्न है। राम अपने भाइयों से अलग है। उसको इन सिद्धान्तों से अच्छा परिचय है। धन से विद्या श्रेष्ठ है। बुद्धिमान् शत्रु बुद्धिहीन मित्र से उत्तम है। उससे तो वह पशु भला जो काम सैकड़ों आता है। गङ्गा से हिमालय तक और

कोशी से गण्डक तक मिथिला देश है। घर से बाहरतक खोजडाला। घर से परे बन है। अमेरिका समुद्र से परे है। देश से बाहर भी जायाकरो। ऐ अटकल और ध्यान से बाहर, जान से और पहचान से बाहर। वह विद्या से रहित है। ईश्वर दोषों से रहित है। विद्या से हीन मनुष्य और पशु में भेद नहीं। मँझधार से किनारा दूर है। रहते हैं मुझसे दूर दूर आठपहर अलग अलग। मुझसे आगे। राम से पीछे। कृष्ण से ऊपर। मोहन से नीचे। उस जाति से अतिरिक्त वह जाति है। गुरु से लज्जा क्या! तुम्हें यारों से शर्मानापड़ेगा। दुष्टों से सदा बचते रहना। वह सिंह से बालबाल बचगया। मैं तुमसे क्यों डरनेलगा। ईश्वर से डरो। अब आपसे भय होता है। लोगों को मैदान से निकालदो। दूध से घी निकाला जाता है। घर से दक्षिण नदी बहती है।

विकल्प—आगे, पीछे, ऊपर, नीचे इत्यादि और दिग्वाचक शब्दों के योग में 'से' के बदले **सम्बन्ध का चिन्ह** भी आता है।

१० स्थान और समय की दूरता बताने में। जैसे—जनकपुर यहाँ से चार कोस है। पटना गया से प्राय: ६० मील दूर है। आज से कितने दिन पीछे आप आइयेगा? आज से हजार वर्ष पहले भारत की क्या दशा थी?

११. क्रियाविशेषण के योग में। जैसे—कहाँ से टपकपड़े? किधर से टहलकर आये? बाहर से भीतर गये।

१२. पूर्वकालिक क्रिया के अर्थ में। जैसे—पेड़ से उसने बन्दूक चलाई (पेड़ पर चढ़कर)। कोठे से देखो तब दीख पड़ेगा (कोठे पर चढ़कर)।

१३. निर्धारण (निश्चय) में। जैसे—मोहन कौम हिन्दू से है।

विकल्प—इसी अर्थ में **'से'** अधिकरण के चिन्हों के आगे भी आता है। ऐसी अवस्था में **'से'** कभी गिर भी जाता है। जैसे—इन विद्यार्थियों **में से** किस को चुनते हो? दूर कर वालों को सिर **पर से**। पुरुषों **में** रामचन्द्र उत्तम थे। पत्थरों **में** हीरा बहुमूल्य है।

नीचे लिखे वाक्यों में 'से' चिन्ह प्रायः लुप्त रहता है, परन्तु विशेष अर्थ में कहीं कहीं लाते भी हैं। द्वारा शब्द के आगे 'से' कभी नहीं लाते। जैसे—

इस कारण उसका निवारण मैं नहीं कर सकता। इस हेतु वह समय पर नहीं आसका। इस प्रकार तुम्हारा रहना ठीक नहीं। इस तरह आप क्यों बोलते हैं? मन्त्री के द्वारा राजा से भेंट हुई। मैं तुम्हें जूतेजूते मारूँगा। चावल किस भाव बेचते हो? नौकर के हाथ पुस्तकें भेजी थीं। न आँखों देखा, न कानों सुना। वे दाँतों अँगुलियाँ काटनेलगे। खिलगई मेरे दिल की कली आपही आप। तुमने अपने हाथों ये बखेड़े खड़े किये। बच्चा घुटनों चलता है। अब तेरे किये क्या होगा? किसके भरोसे लड़ूँ? आपके सहारे मेरे दिन कटते हैं। साँप पेट के बल चलता है। ठंढेठंढे सिधारिये घर को। दूधन नहाओ पूतन फलो। किसके मुँह खबर भेजी है? उसकी ओर तुम रहो।

में और पर * ।

नीचे लिखी अवस्थाओं में ऊपर के चिन्ह आते हैं—

१. **अधिकरण में।** जैसे—तिल में तेल है। पेड़ पर पक्षी है। पाठशाला में विद्यार्थी है। छप्पर पर चिड़ियाँ हैं। ईश्वर में मन लगा है।

निर्धारण, कारण, भीतर, भेद, मूल्य, विरोध, अवस्था और द्वारा अर्थ में। जैसे—पशुओं में हाथी बड़ा है। पहाड़ों में हिमालय सबसे ऊँचा है। ऐसा काम करो जिसमें वह कार्य सिद्ध हो। आप कितने दिनों में पहुँचेंगे? समुद्र में अथाह जल है। शिव और विष्णु में भेद नहीं। तुमने यह पुस्तक कितने में (पर) ली है? पैर में जूता, हाथ में कड़ा, गले में गोप। रामजी के ध्यान में लीन रहो। रामजी ने एकही बाण में उसका भवबन्धन काट दिया।

* 'पै' भी अधिकरण का चिन्ह है, परन्तु इसका प्रयोग गद्य में अब कदाचित् ही होता है।

नोट–निर्धारण, कारण और मूल्य बताने में दूसरे चिन्ह भी लाते हैं। (पीछे देखो।)

३. अनुसार, सातत्य, दूरी, ऊपर, संलग्नता और अनन्तर के अर्थों और वार्तालाप के प्रसंग में (पर) चिन्ह लाते हैं। जैसे–नियम पर काम करो। पत्र पर पत्र भेजतेगये, कुछ उत्तर नहीं। यहाँ से चार कोस पर। घोड़े पर चढ़ो। द्वार पर खड़े रहो। इसपर वह क्रोध से बोला।

४. गत्यर्थ धातुओं के साथ। जैसे–मोहन घर पर गया। मैं तुम्हारी शरण में आया।

विकल्प–मोहन घर को गया। मोहन घर गया। मैं तुम्हारी शरण को आया। मैं तुम्हारी शरण आया। (ऐसे वाक्य भी बोलेजाते हैं।)

नीचे लिखे वाक्यों में 'में' या 'पर' चिन्ह प्रायः लुप्त रहता है, परन्तु विशेष अर्थ में कहीं कहीं लाते भी हैं।

इस समय तुम चलेजाओ। सीधे जाओ, दायें बायें कभी मत झाँको। मैं आपके पाँव पड़ता हूँ। इस जगह रहना ठीक नहीं। आपको क्या हाथ लगा? मुझे पढ़नालिखना कुछ काम नहीं आया। एक ही बार इतना खर्च मत करो। वह आठो पहर ईश्वर का ध्यान करता है। जीते जी सुख नहीं मिला। आने सेर चावल कब मिलेगा? प्यारे दीनदयाल के भनक पड़ेगी कान। आँखों देखा खुसरू कहे। सामने रहो।

नोट–सम्बन्धबोधक अव्ययों के आगे भी अधिकरण के चिन्ह लुप्त रहते हैं। (पीछे देखो)

सम्बन्ध और सम्बोधन के चिन्ह।

१. सम्बन्ध का चिन्ह।

का।

का चिन्ह नीचे लिखी अवस्था में आता है—

१. **सम्बन्ध में।** * जैसे—तुलसीदास का + रामायण। राम का भक्त। राम का पुत्र। हाथ की अँगुली। रानी की दासी। पीतल का थाल। स्वर्ण का भूषण। मिट्टी का घड़ा।

२. **सम्पूर्णता, मूल्य, समय, परिमाण, व्याप्ति, अवस्था, दर, बदला, केवल, स्थान, प्रकार, योग्यता, शक्ति के साथ भविष्यत्, कारण, आधार, निश्चय, शुद्धता, भाव, लक्षण और शीघ्रता आदि में।** जैसे—सब के सब चलेगये। सात रुपये की थाली। एक दिन की छुट्टी। एक हाथ का साँप। चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात। एक वर्ष का बच्चा। इसी भारत में कभी आठ मन के भाव से चावल बिकता था। राजा का रंक, राई का पर्वत। घर के घर ही में हो जाय फैसला दिल का। खुली की खुली रहगई आँखें सबकी। बहुत अर्मान एसे हैं कि दिल के दिल में रहते हैं। मिथिला की नारियाँ। अचम्भे की बात सुनने योग्य होती है। दुःख की बोली दुःख देती है। यह पानी पीने का है। बूढ़ा होगया अब मैं चलने फिरने का नहीं। यह बात अब टहरने की नहीं। अब यह विपत्ति की घड़ी टलने की नहीं। गया तो फिर यह नहीं मेरे हाथ आने का। राह का थका बटोही गाढ़ी नीन्द सोता है। समुद्र की मछलियाँ बड़ी होती हैं। सच्चे का सच्चा और झूठे का झूठा आज ही आप जान सकेंगे। दूध का दूध और पानी का पानी। तेरी महिमा अपार, गुण गावे संसार। दिन का सोना और सदा एक वस्तु का खाना अच्छा नहीं। बात का ढीला। मुँह का हलका। शरीर का कोमल

* 'सम्बन्ध' कई प्रकार के होते हैं—कर्तृकर्मभाव सेव्यसेवकभाव, जन्यजनकभाव, अङ्गाङ्गिभाव, स्वस्वामिभाव, कार्यकारणभाव, इत्यादि। (उदाहरण ऊपर देखो।)

× आकारान्त विशेषण के समान 'का' भी 'की' 'और 'के' में बदलता है तथा सर्वनाम में 'और रूपों में' आता है। जैसे—अच्छा घोड़ा—राम का घोड़ा, अच्छी घोड़ी—राम की घोड़ी, अच्छे घोड़े—राम के घोड़े, मेरा घोड़ा—मेरी घोड़ी, इत्यादि।

बात की बात में बात निकल आई। रेलगाड़ी आनकी आन में आपहुँची।

नोट–आधार में 'का' के पूर्व 'में' और 'पर' तथा लक्षण में 'का' के बदले 'से' भी लाते हैं। जैसे–समुद्र में की मछलियाँ। घोड़े पर का आसन। मुँह से हलका। शरीर से कोमल।

३. तुल्य, अधीन, समीप, ओर, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, बाहर, बायाँ, दहिना, योग्य, अनुसार, प्रति, साथ, इत्यादि और इनके अर्थवाची अन्यशब्दों तथा अव्ययों के योग में। जैसे–राम के तुल्य। कर्म के अधीन। घर के निकट। नदी की ओर। आप के आगे। मेरे पीछे। आपके ऊपर। घर के नीचे। पाठशाला के बाहर। राम का बायाँ। तुम्हारे योग्य। कहने के अनुसार। उनके प्रति। पति के साथ। तुम्हें माता कब की पुकार रही है। वह कहाँ का कहाँ गया।

विकल्प–ऊपर के कई शब्दों के योग में 'से' भी आता है। जैसे–तुम्हें माता कब **से** पुकार रही है। वह कहाँ **से** कहाँ गया। (शेष उदाहरण पीछे देखो।)

४. विशेष्य उपमान हो तो उपमेय में। जैसे–दया का समुद्र प्रेम का बन्धन। प्रेम की गाँठ। कर्म की फाँस।

५. कभी कभी गौण कर्म में। जैसे–कोई गधा तुम्हारे लात मारे।

६. उन शब्दों के योग में जो कृदन्तीय शब्दों के कर्त्ता या कर्म के अर्थों में आसकें। जैसे–उसीके आने से तुम भागेजाते हो (वह आया, इसीलिये तुम भागेजाते हो।) क्या हुआ जग के रूठे से? तेरे पढ़ने से मुझे नहीं आवेगा। तुम्हारी कतरब्योंत नहीं जाती। रोटी के खाते ही जी मचलानेलगा (रोटी खाई, इसीलिये जी मचलानेलगा)।

नोट–(१) कभी कभी सम्बन्धी लुप्त रहता है। जैसे–तुम **सबकी** सुन लेते हो, लेकिन **अपनी** कुछ भी नहीं कहते। **मन की** मन ही में रहे। यह कभी नहीं **होने का**। मैं **तेरी** न सुनूँगा। ऐसा तो न हो कि

तकरार की ठहरे।

(२) सम्बन्ध का चिन्ह लुप्तावस्था में कदाचित् ही मिलता है। हाँ, समास करने पर लुप्त होजाता है।

(२) सम्बोधन के चिन्ह।

(हे, ऐ, अरे, अरी, इत्यादि)

हे, ऐ, अरे, अरी इत्यादि चिन्ह, किसी को बुलाने, धिक्कारने अथवा हर्ष, शोक इत्यादि के साथ उसके नाम लेने में आते हैं। हमने ये चिन्ह विस्मयादिबोधक के पाठ में रखदिये हैं, परन्तु अन्य विस्मयादि चिन्हों से बहुत ही भिन्न हैं।

अरी, री इत्यादि को केवल स्त्रीलिङ्ग के सम्बोधन में लाते हैं। जैसे—अरी लड़की, री लुची, इत्यादि।

सम्बोधन बिना चिन्ह के भी आता है। जैसे—राम ! कुछ भी तो सुध लो। लड़के, क्या करते हो ?

कारकादि के चिन्हभेद से अर्थभेद।

एक ही शब्द में भिन्न भिन्न चिन्हों के लगाने से अर्थ में भेद पड़ता है। नीचे ऐसे थोड़ेसे उदाहरण दियेजाते हैं—

{ उसके बहन नहीं है=उसको बहन नहीं है।
उसकी बहन नहीं है=दूसरे की बहन है।

{ चार दिन पर आये=चार दिन के बाद आये।
चार दिन में आये=चार दिन के भीतर आये।

{ लङ्का भारत से दक्षिण है=भारत के बाहर।
कुमारी अन्तरीप भारत के दक्षिण है=भारत का अङ्ग।

२६. अभ्यास (Exercise).

१. नीचे लिखे वाक्यों में कारक इत्यादि का कौन चिन्ह किस अर्थ में आया है ?

वामन से बलि छलागया। हो चुका भला छोड़ भी तो दो। राजा ने

ब्राह्मण को वस्त्र दिये। छिपे हो कौनसे पर्दे में बेटा! मुझे मिठाई अच्छी लगती है। कायर को क्यों डरें? राम ने उसे बड़ी मार मारी। मेरी गैया को कौन दुहेगा? उनसे मुँह छिपाने को क्या पड़ा है। आपको सुख हो। आप-को प्रणाम। राम ने बाण से बाली को मारा। मैं नौकर से भेजदूँगा। इस-से बढ़कर कोई पाप नहीं। उसे सुन्दर वेश से देख खुशी हुई। इससे क्या काम, मुझसे कहो। जब पाँच बरस का बालक हुआ। छ छ पसेरी की बात। विपद की घड़ी टलने की नहीं। मुँहमाँगा धन पाता है। उसके बहन नहीं। माँ कब की पुकार रही है। कवियों में कालिदास बड़े हैं। मैं उनसे किस बात में कम हूँ? हाथ पैर तो कहने ही के नहीं हैं। एक ही तीर में काम तमाम किया।

२. नीचे लिखे वाक्यों में कारक आदि के चिन्ह कहाँ कहाँ लुप्त हैं? क्यों?

मैं पुस्तक पढ़ता हूँ। वह यह बात कहता है। वे बारबार गिनाकिये हाथ कुछ न लगा। मैं आपनासा मुँह लेकर चलदिया। राम कलकत्ते गया। मैं तुम्हें जूते जूते मारूँगा। दूधन नहाओ पूतन फलो। अब तेरे किये क्या होगा? वह आठों पहर ईश्वर का ध्यान करता है। आँखों देखा खुपरू कहे।

३. पाँच ऐसे वाक्य कहो, जिनमें सम्बन्धी लुप्त हों। ४. पाँच ऐसे वाक्य कहो, जिनमें कर्म चिन्हरहित हों। ५. चार ऐसे वाक्य कहो, जिनमें करण चिन्हरहित हों। ६. तीन ऐसे वाक्य हों, जिनमें अधिकरण चिन्हरहित हों। ७. नीचे लिखे प्रत्येक जोड़े के वाक्यों में क्या भेद है?

उसके बेटी नहीं है। उसको बेटी नहीं है।

दो दिन में आये। दो दिन पर आये।

घोड़ा कितने को लाये? घोड़ा कितने में लाये?

८. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो—

उसने पीछे होलिया। सीता ने एक ग्रन्थ लाई है। जब मैंने आपके यहाँ जाकर बैठा तब आपने बोला—"कहो भाई, किधर पर आये हो?" राम ने दिनभर बैठेबैठे लिखाकिया। वह दिनभर सोडाला। जब उसने सोया, राम रोदिया। तुममें यह चाल नहीं शोभती। उसके ओर तुप रहो। राम का बेटी आती है। सीता को बाप अच्छा है। वह सात रुपये लिये तब पुस्तक लाई। कल पानी ने बरसा था, इसलिये मैंने घर से बाहर नहीं निकला।

९. शून्य चिन्ह का प्रयोग उक्तकर्त्ता, उक्तकर्म, मुख्यकर्म, विधेयभाव, सम्बोधन और क्रियाविशेषण में वाक्य बनाकर दिखाओ।

१०. लेना क्रिया के साथ ने चिन्ह का प्रयोग नहीं होता, क्यों?

११. किन किन सकर्मक क्रियाओं के साथ ने चिन्ह का प्रयोग विकल्प से होता है?

१२. को और से के बदले सम्बन्ध के चिन्ह का प्रयोग कब होता है?

१३. अनुक्तकर्म में, व्यापार कर्तृवाचक में और विनिमयद्योतन में 'को' का प्रयोग करो।

१४. अनुक्त कर्त्ता में प्रकृतिबोध में, उत्पत्ति में, भिन्नता बताने में और निर्धारण में 'से' का प्रयोग करो।

१५. 'पर' का प्रयोग कहाँ कहाँ होता है? एक एक उदाहरण दो।

समासप्रयोग।

१ द्वन्द्वसमास में स्त्रीलिङ्ग, मान्य और अल्प स्वरवाले शब्द प्रायः पहले आते हैं। जैसे—माईभाई, राजारानी, रामलक्ष्मण, सीताराम, राधाकृष्ण, दालरोटी, इत्यादि।

२. द्वन्द्व समास से बने समस्त शब्द का **लिङ्ग, अन्तिम खराड के अनुसार** होता है, परन्तु जिसमें पूर्व खण्ड की प्रधानता हो उसका लिङ्ग उसी खण्ड के अनुसार होता है। जैसे—आज ही हमारे राजारानी आये हैं।

नोट—(१) "कुत्ते बिल्ली खायेडालते हैं। नरनारी आये हैं। पिता-माता अच्छे हैं। कितने दिनरात गुजरगये।" इत्यादि वाक्य भी प्रयोग में हैं।

(२) हिन्दी में एक दशा के कई शब्दों को जब द्वन्द्व समास की रीति पर लाते हैं तब अन्तिम शब्द को छोड़, और शब्दों के आगे कारकादि के चिन्हों को, कभी अकेले और कभी चिन्हसंस्कारों के साथ, लोप करदेते हैं। ऐसी दशा में 'और' इत्यादि समुच्चायक का भी लोप होता है, परन्तु प्रायः अन्तिम शब्द के पहले नहीं। जैसे—सोनपुर का मेला देखने योग्य है। वह पुरुषों से और स्त्रियों से और बालकों से और बूढ़ों से भरा रहता है तथा वहाँ हाथियों का और घोड़ों का तो कुछ ठिकाना ही नहीं रहता=

सोनपुर का मेला देखनेयोग्य है। वह पुरुषों, स्त्रियों, लड़कों और बूढ़ों

से भरा रहता है तथा वहाँ हाथी घोड़ों का तो कुछ ठिकाना ही नहीं रहता।

३. तत्पुरुष, कर्मधारय और द्विगु के **लिङ्ग, अन्तिम अंश के अनुसार** और बहुव्रीहि के **विशेष्य के अनुसार** होते हैं। जैसे-गंगाजल मीठा है। महारानी चलीगईं। विक्रमादित्य की सभा में नवरत्न थे। स्वच्छतोया नदी कलकल शब्द करती हुई बहरही है। *

नोट-(१) बहुव्रीहि के समस्त शब्द विशेषण होते हैं, इसलिये उनके परे विशेषण अर्थ में किसी प्रत्यय का प्रयोग नहीं होसकता, अतएव **नीरोग** और **निरपराध** इत्यादि के बदले **नीरोगी, निरपराधी** इत्यादि लिखना अशुद्ध है।

(२) बहुव्रीहि के समस्त शब्द प्रायः दीर्घान्त नहीं होते। अतः निराशा, हताशा इत्यादि के बदले निराश, हताश, इत्यादि होंगे।

४. अव्ययीभाव का **समस्त** शब्द प्रयोग में **अव्यय** है। जैसे-वह मेरे पास प्रतिदिन आता है। **मैंने** भगवान की पूजा यथाशक्ति की।

५. पदों में समास होजाने पर यदि **सन्धि** भी होसके तो वे प्रायः मिलाकर लिखेजाते हैं। जैसे-देशोन्नति, शिक्षानुसार।

२७. अभ्यास (Exercise).

१. द्वन्द्वसमास के पूर्व खण्ड में कैसे शब्द आते हैं? उदाहरण दो। २. द्वन्द्व समास से बने समस्त शब्द का लिङ्ग किस खण्ड के अनुसार होता है? उदाहरण दो। ३. बहुव्रीहि के समस्त शब्द के परे विशेषण अर्थ में कोई प्रत्यय लग सकता है या नहीं? उदाहरण दो। ४. अव्ययीभाव समास का समस्त शब्द प्रयोग में क्या होता है। वाक्य बनाकर दिखाओ।

५. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो—

राम सीता वन चलेगये। नोनराई लाओ। आपकी राजारानी कहाँ रहती है? सीतामढ़ी का मेला बहुतसा घोड़ा, हाथी, बैल और मनुष्य से भरारहता है। मेरे आज्ञा अनुसार चलो। नीरोगी मनुष्य के आनन्द का ठिकाना नहीं।

---

* यौगिक शब्दों के लिङ्ग 'लिङ्ग प्रकरण' में भी दियेगये हैं।

द्विरुक्तिप्रयोग।

१. **संज्ञा की द्विरुक्ति** से प्रत्येक का बोध होता है। जैसे—घर घर देखा एकै लेखा।

यदि संज्ञा की द्विरुक्ति के बीच में 'ही' आवे तो **केवल** या **अभ्यन्तर** का बोध होता है। जैसे—रामही राम पुकारो। मन ही मन सोचो। यदि बीच में सम्बन्ध का कोई चिन्ह आवे तो **लगातार** या **अत्यन्त** का बोध होता है। जैसे—दल के दल आपड़े। गधों का गधा। यदि द्विरुक्ति का पहला खण्ड केवल बहुवचन का संस्कार रक्खे तो **लगातार** का बोध होता है। जैसे—यह चीज **हाथोंहाथ** पहुँचगई। बात **कानोंकान** फैलगई। **बातोंबात** में भेद खुलगया।

२. **विशेषण की द्विरुक्ति** से **अत्यन्त** और **समस्त** का बोध होता है, परन्तु संज्ञा की द्विरुक्ति से **प्रत्येक** का अर्थ निकलता है। जैसे-**मीठे मीठे** बोल बोलो। **एक एक** आम दो। सब के **दो दो** बेटे हुए।

यदि एक से दूसरे को **उत्कृष्ट** या **निकृष्ट** बताना हो तो विशेषण की द्विरुक्ति के बीच में से चिन्ह लाते हैं। जैसे—अच्छे से अच्छे शिक्षक मेरे स्कूल में हैं। **समुदाय** अर्थ में संख्या की द्विरुक्ति बीच में सम्बन्ध का चिन्ह लेता है। जैसे—दोनों के दोनों लड़के मूर्ख निकले।

३. **क्रिया और अव्यय की द्विरुक्ति** स **बराबर, निश्चय** और **धीरेधीरे** का बोध होता है। जैसे—सीता **रोरो** कहने लगी। **जब जब** मैं दूध लाता हूँ, बिल्ली **पीपी** जाती है। **होते होते** वह पहुँचगया। **रगड़ते रगड़ते** आग निकलगई। **जबजब** धर्म की ग्लानि होती है **तबतब** भगवान् अवतार लेते हैं। नयेनये वृक्ष **लालाकर** लगाये गये।

२८. अभ्यास (Exercise).

नीचे लिखे वाक्यों को द्विरुक्ति के अनुसार ठीक करो।

सभी घरों में देखता हूँ एक ही बात है। लगातार रगड़ने से आग निकल आई। सात आम इसको, सात आम उसको, सात उसको, इसी प्रकार प्रत्येक

लड़के को आम दिये गये। यह चीज इस हाथ से उस हाथ, उस हाथ से उस हाथ, उस हाथ से उस हाथ पहुँचा दी गई।

लिङ्गप्रयोग।

जोड़ेवाले शब्दों को छोड़ शेष शब्दों के लिङ्गसूचक नियम नीचे दिये जाते हैं।

पुल्लिङ्ग होते हैं—

१. थोड़े से प्राणिवाचक शब्द—

चील्ह, तीतर, नीलकण्ठ, बेंग, झींगुर, काग, भेड़िया, छछुंदर, कौआ, चीता, झिंगा, पक्षी, पंछी, पिल्लू, कृमि, उकाव, गिद्ध, घड़ियाल, गोह, बाज, लाल, सारस, पण्डुक, मेंढ़क, व्यक्ति, प्राणी।

नोट–(१) नीचे लिखे शब्द दोनों लिङ्गों के लिये हैं, परन्तु पुल्लिङ्ग ही बोलेजाते हैं-बछरू (बाछा-बाछी), पठरू (पाठा-पाठी), शिशु (लड़का-लड़की), कुतरू (कुत्ता-कुत्ती), दम्पति (पति-पत्नी), परिवार, इत्यादि।

(१) बुलबुल शब्द पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों में बोला जाता है।

२. मटर, उर्द, जौ, गेहूँ, धान, लूट, चना, गन्ना, तिल, धनिया, नींबू, इत्यादि।

३. संस्कृत के नपुंसक और पुल्लिङ्ग शब्द।

अपवाद–जय, देह, सन्तान, वास, गन्ध, दाह, सुगन्ध, शपथ, तान, औषध, इन्द्रिय, पुस्तक, उपाधि, राशि, विधि, मृत्यु, ऋतु, वस्तु, आय इत्यादि स्त्रीलिङ्ग हैं।

वैकल्पिक—विनय, विजय, समाज, तरङ्ग, सामर्थ्य, कुशल, वायु, पवन, अग्नि इत्यादि शब्द प्रयोग में स्त्रीलिङ्ग और पुल्लिङ्ग दोनों हैं।

४. अकारान्त और आकारान्त शब्द *–

* इस नियम में संस्कृत के नपुंसक और पुल्लिङ्ग से बने तद्भव शब्द भी रक्खे गये हैं।

कीचड़, बाल, मुँह, कन्धा, जाड़ा, पहिया, इत्यादि।

अपवाद–(१) बाँस, आँच, बाँह, आँव, बूँद, सौंह, आँख, दूब, मीच, नाक, साँस, लहर, सड़क, घास, दाल, हींग, मिर्च, ईंट, लार, कीच, भौंह, मूँछ, काँख, शकर इत्यादि शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं।

(२) लघुता सूचक इया प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे-डिबिया, पिड़िया, हँड़िया, खटिया, पटिया, इत्यादि।

(३) संस्कृत में आत्मन्, महिमन् इत्यादि शब्द पुल्लिंग हैं। इनसे बने आत्मा, महिमा इत्यादि शब्द हिन्दी में स्त्रीलिङ्ग व्यवहृत हैं, परन्तु कोई कोई आत्मा को पुल्लिङ्ग भी लिखते हैं।

५. उर्दू ढंग के आब भागान्त, बकारान्त और शकारान्त शब्द–

गुलाब, जुलाब, हिसाब, कबाब, खिज़ाब, जवाब, पेशाब, नसीब, मज़हब, मतलब, ताश, गोश, गश, जोश, इत्यादि।

अपवाद–शराब, किताब, राब, मिहराब, तलब, किमखाब, तर्कीब, दाब, शब इत्यादि स्त्रीलिङ्ग हैं।

६. आव, त्व, पन, पा, आपा, पना, और य प्रत्ययान्त शब्द–

चढ़ाव, मनुष्यत्व, लड़कपन, बुढ़ापा, गुंडपना, राज्य, इत्यादि।

७. पहाड़ों, ग्रहों, दिनों, महीनों, नगों और धातुओं के नाम–

विन्ध्य, चन्द्रमा, सोमवार, बैसाख, नीलम, सोना, इत्यादि।

अपवाद–धातुओं में चांदी और पीतल स्त्रीलिङ्ग हैं।

८ इ, ई, ऋ, ॠ, लृ, और ॡ को छोड़ शेष अक्षरों के नाम।

९. स्त्रीलिंग नियमों के अपवाद वाले शब्द।

स्त्रीलिङ्ग होते हैं––

१. थोड़े से प्राणिवाचक शब्द—

जोंख, उड़िस, चील, भेड़, बटेर, कोयल, मैना, हिलसा, दीमक, श्यामा, चिड़िया, जूँई, तूती, जूँ, जोंक, अबाबील, सारू, लावा गौरैया, कचबचिया, इत्यादि।

२. मिर्च, मूंग, मसूर, अरहर, गाजर, दाख, सरसों, घिया, इत्यादि।

३. संस्कृत के स्त्रीलिङ्ग, शब्द—

दया, कृपा, आशा, माला, माया, चन्द्रिका, इत्यादि।

अपवाद—'तारा' और 'देवता' प्रयोग में पुल्लिङ्ग है।

४. अरबी के आकारान्त और 'त फ़ अ ई ल' के वज़न-वाले शब्द—जमा, हवा, दग़ा, सज़ा, दवा, दुआ, हया, खता बला, रज़ा, क़ज़ा, अदा, ग़िज़ा, वफ़ा, तमन्ना, कीमिया, दुनिया, तस्वीर, तद्बीर, तर्कीब, तफ़सील, तक्सीर, तहरीर, इत्यादि।

अपवाद—'ताबीज' पुल्लिङ्ग है।

५. ईकारान्त, तकारान्त तथा आस और इशभागान्त शब्द-रोटी, चिट्ठी, रात, छत, गत, पत, ताँत, नौबत, दौलत, प्यास, आस, मिठास, उँचास, कोशिश, बख़्शिश, इत्यादि।

अपवाद—पानी, घी, दही, जी, मोती, भात, दाँत, गात, गोत, मूत, सूत, शर्बत, वक्त, दरख़्त, कृत, सुबूत, कोत, खत, ख़िलअत, दस्त, गश्त, गोश्त, दस्तख़त; बन्दोबस्त, निकास, इजलास, नालिश, तख़्त, भूत, प्रेत, इत्यादि पुल्लिङ्ग हैं।

६. आई, ता, वट, हट, न और कृदन्तीय शून्य प्रत्ययान्त शब्द—लड़ाई, मित्रता, बनावट, आहट, चिकनाहट, कतरन, चालचलन, चलन, उलझन, चमक, पकड़, पूछ, मारपीट, चालढाल, इत्यादि।

नोट—'चालचलन' को कोई कोई पुलिङ्ग भी लिखते हैं।

अपवाद—खेल, बिगाड़, बोझ, बोल इत्यादि पुल्लिङ्ग हैं।

७. तिथियों, नदियों और नक्षत्रों के नाम—

परिवा, दूज, तीज, गंगा, यमुना, अश्विनी, भरणी, इत्यादि।

अपवाद—'पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मूल, पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ नक्षत्र पुल्लिङ्ग हैं।

८. इ, ई ऋ, ॠ, ऌ, और ॡ अक्षरों के नाम।

९. पुल्लिंग नियमों के अपवाद वाले शब्द—

नोट—१. यौगिक शब्द का लिङ्ग उसके अन्तिम खण्ड के अनुसार होता है। जैसे–पाठशाला (स्त्रीलिङ्ग) दयासागर (पुल्लिङ्ग), इत्यादि।

अपवाद–(१) परमात्मा, महात्मा इत्यादि पुल्लिङ्ग हैं।

(२) यदि यौगिक शब्द का अंतिम खण्ड अव्यय सूचक हो तो कोई कोई उसका लिङ्ग प्रथम खण्ड के अनुसार रखते हैं। जैसे–आज्ञानुसार (स्त्रीलिङ्ग), शिक्षानिमित्त (स्त्रीलिङ्ग), प्रश्नानुसार (पुल्लिङ्ग), इत्यादि। *

२. अंगरेजी के बहुतसे शब्द हिन्दी में आये हैं, जिनमें बोतल, डेस्क, इञ्जन, लालटेन, पेन्सिल, रिपोर्ट, रेल, लैम्प, कांग्रेस, कानफरेन्स और लिस्ट इत्यादि स्त्रीलिङ्ग हैं।

३. जो शब्द दोनों लिङ्गों में बोलाजासके उसे स्त्रीलिङ्ग और जिसके लिङ्ग में सन्देह हो उसे पुल्लिङ्ग बोलना उचित है।–(सितारे हिन्द)।

४. विशेषप्रयोग–तुम्हारा बाप बड़ा गौ है। उसकी माता बड़ी गौ है। माता ही सब गुरुओं की गुरु है।

व्यवहार में आनेवाले स्त्रीलिङ्ग शब्द।

अकारान्त शब्द—

अहेर, अकड़, अचकन, अटक, अदरक, अखाड़, अबेर, अलड़बलड़, अक़्ल, अफ़यून (अफीम), अफ़वाह, अमावस, अम्ल, अनबन, अपील, अरहर। आग, आतश, आमद, आन, आवाज़, आस्तीन, आह, आपद, आँट, आड़, आन, आय, आँख, आँत, आवभाव, आशीस, आलिख, । इल्म। ईंट, ईख, । उशीर, उठबैठ, उड़ान, उतारन, उरेब, उलझन, उमीद, उम्र। ऊख, । एड़, एवज़, । ऐंठ। ओट, ओझल, ओप। औलाद, औषध। क़दर, कन्दील, कमर, कमान, कल, कलक, क़लम, कचक, कचकच, कचपच, कचामचा, कतरन, कमर, कसर, कमीज, कसम, कानफरेंस, कांग्रेस, काँख, काटकूट, किमखाब, किताब, किशमिश, किवाड़, किरण, किरीच, कुल, कूक, कोटर, कोयल, कोशिश, कौम, खेप। खरीद, खरभर, ख़बर, खल, खलार, खट, खरक, खाज, खातिर,

* 'समासप्रयोग' देखो।

खाज, खाल, खाट, खान, खिझ, खीर, खीज, खींच, खुशामद, खौर, खैंच, खोरिश, ख़्वाहिश। गच, ग़ज़ल, गपशप, ग़रज़, गर्ज, ग़र्द, गर्दन, गर्दिश, गलबाँह, गवर्नमेंट, गह्वर, गाज, गाँठ, गागर, गाजर, गुज़र, गेंद, गोंद, गोलमिर्च, गंध, गंधक। घाल, घास, घिन, घुमरड, घूस। चरब, चश्म, चलन, चश्मक, चलचुल, चपरास, चपेट, चमक, चकाचक, चकाचौंध, चटक, चटशाल, चटाक, चट्टान, चसक, चहकार, चहलपहल, चाह, चाय, चास, चाट, चाल, चालचलन, चादर, चाप, चालढाल, चिट, चिल, चितवन, चीज़, चुहल, चुरुट, चूक, चूतड़, चैन, चोट, चोंच, चौंक, चौक, चौखट, चंग, छटाँक, छठ, छड़, छलक, छलाँग, छाँ, छाँछ, छाँट, छाँद, छाँटन, छाँह, छान, छाप, छार, छींट, छींक, छूट, छेम, छेंक। जगह, ज़मीन, ज़बान, जड़, जड़ावर, जय, जलन, जान, जागीर, जायदाद, जाजिम, जाँघ, जाँच, जीभ, जेब, जोख, ज्वार। झकोर, झटास, झलक, झाँक, झाँझ, झाड़न, झालर, झाड़, झिझक, झिड़क, झिलम, झील, झूमक, झूल, झोंक। टक, टकसाल, टकर, टंकोर, टनक, टपक, टर, टसक, टहक, टाँक, टाँग, टाँड़, टाप, टाल, टील, टूट, टूम, टेक, टेम, टेर, टेव, टोक, टोकटाक, टोल। ठठक, ठसक, ठिठक, ठिठुर, ठुनुक, ठेक, ठोक, ठोकर, ठोर, ठौर, ठण्ढ, ठण्ढक। डकार, डग, डगर, डाक, डाढ़, डार, डाल, डाह, डाँट, डींग, डीठ, डोर। ढलक, ढार, ढाल, ढील, ढूँक, ढूक। तड़क, तड़प, तड़फ, तमक, तरंग, तरफ, तलवार, तर्स, तलछट, तहसील, तरह, तकरार, तकलीफ़, तदबीर, तफ़सील, तर्ज, तर्कीब, तलब, तलाक़, तस्वीर, तहवील, तलाश, तकसीर, तनख़्वाह, तहरीर, ताक, तान, तातील, तारीख़, तारीफ़, तालीम, तुपक, तोंद, तोल। थाह। दखल, दलील, दपट, दरकार, दरगाह, दलक, दस्तावेज़, दाल, दाढ़, दामन, दाख, दाब, दाद, दिक, दीपक, दीठ, दीवार, दुम, दूर, दूकान, देह। देखरेख, देर, दोजख़, दोहर, दौड़, दौड़धूप। धधक, धमक, धरहर, धरोहर, धाँयधाँय, धाह, धाक, धाँधल, धुन, धूर, धूल, धूर, धूप, धौल। नकेल, नस, नक़ल, नज़र, नज़ीर, नज़म, नब्ज़, नख, नवेद, नस्ल, नसर, नाक, नाव, नास, नालिश, निकल, निछावर, निगाह, निमाज, नींद, नेव, नेवार, नेयाज, नोकचोक, नोकझोंक। पकड़, पलटन, परेड, परवरिश, परवाह, पलक, पहुँच, परस, पहचान, पत्तल, परख, पह, पहल, पखाल, पचक, पछाड़, पजेब, पटकन, पढ़न, पतवार, पागुर, पायल, पाँत, पाग, पिस्तौल, पीनक, पीच, पीठ,

पीव, पीर, पुलिस, पुरशिश, पुस्तक, पुकार, पूछ, पूँछ, पेठ, पैठ, पैंठ, पोय, प्यास। फटकन, फड़, फतह, फब, फबन, फस्ल, फाँक, फाँट, फिकिर, फोस, फुनंग, फूँक, फूट, फूटन, फुहार, फेंक, फेंट, फोंक, फौज़। बक, बम, बहर, बहल, बहार, बन्दूक, बकझक, बकबक, बटन, बवासीर, बहस, बख़शिश, बतास, बर्फ, बगल, बाँक, बाँह, बाग, बाछ, बाड़, बाढ़, बान, बार, बारूद, बालछड़, बास, बागडोर, बिकाव, बिध, बिलबन्द, बिलावल, बिहनौर, बीट, बीन, बुहारन, बुनियाद, बूंद, बूझ, बेन, बैठक, बैल, बोतल, बौछार, बन्धेज। भगेल, भड़क, भस्म, भर, भनक, भरमार, भँवर, भाँग, भाफ, भीख, भीड़, भूख, भूल, भेंट, भैंस। मचक, मटक, मढ़न, मरिच, मरोड़, मलार, मसक, महक, मदद, मसजिद, मसनद, महताब, मलमल, मंजिल, मजलिस, माँग, माँद, मालिश, मार, मिठास, मिर्च, मिस्ल, मीच, मीयाद, मीजान, मीनार, मुहिम, मुराद, मुश्किल, मुहनाल, मुश्क, मुहर, मूँग मूँछ, मूँज, मेंड़, मेहराब, मेज, मेल, मेकदार, मेकराज, मोच, मौज, मंजिल। याद। रगड़, रपट, रसीद, रहकल, रहट, रहन, रहाइस, रसद, रकम, रग, रविश, राख, राब, राल, रान, रास, राह, राय, रिस, रिपोर्ट, रीझ, रीढ़, रीस, रुच, रूह, रूबकार, रेंट, रेंड़, रेख, रेल, रेलपेल, रेह, रोआस, रोक, रोकड़, रोकन, रोर, रङ्ग। लकीर, लचक, लट, लटक, लड़, लताड़, लप, लपक, लपेटझपेट, ललक, लहक, लहकाबर, लहर, लहरबहर, लश, लगाम, लाज, लाद, लार, लाश, लाठ, लाह, लाग, लिम, लीक, लीद, लीर, लू, लूक, लूब, लूह, लेव, लोटन, लोथ, लौंग। वयस, वजह, वारिश, वार, विध, विजय। शक्ल, शमशेर, शर्म, शब, शराब, शकर, शरण, शाख, शाम, शाहराह, शिकार। सकुच, सज, सटक, सटल, सटासट, सड़क, सड़न, समझ, समेट, सरकार, सम्हाल, सहन, समाद, सनद, सतह, सलाह, साँझ, साँकर, साँग, साँभ, साख, साध, सान, साँस, साजिश, सिनक, सिर-फोड़ौवल, सिफारिश, सींक, सीख, सीम, सुगन्ध, सुटुकन, सुड़प, सुध, सुरङ्ग, सुलह, सूत, सूझ, सूँढ, सूजन, सेंध, सैन, सैर, सोंध, सोंठ, सौंफ, सौगन्ध, सौंह। हद, हरताल, हरावल, हलचल, हद, हांक, हाट, हिर्स, हीक, हींग, हैकल, होंड़, होल, हौस।

आकारान्त शब्द—

अदा, अँगिया, अँटिया, अढ़ैया, अर्चा। आतमा। इस्तिका। उखड़ा,

कज़ा, कगारा, कटिया, कठोलिया, किरिया, कीला, कीमिया, कुटिया, कुल्हिया, कोहरा। खता, खटिया, खड़िया, खड़खड़िया, खूँटा। गठिया, ग्रीवा, गुड़िया, गुफा, गुजिया, गुटका, गौखा। घँघरा, घटा। जमा, जँघिया। झुलवा। टिकिया। ठिलिया, ठीका। डिबिया। तकिया, तमचा, तुलिया तौलिया, थलिया। दफा, दवा, दगा, दुनिया, दुपहरिया, दोश्रा। धौंका। नारियां। पगिया, पटिया, पुड़िया, पिद्धिश्रा। फरिया। बांह, बाहना, बला, बिरिया, बुँदिया। भुजा। मनसा, मलिया, मचिया, मड़ैया, मिर्चा। वका। लूका। सजा, सटिया, साँचा, सुविधा। शलूका, शमा। हवा, हवाला।

अन्यस्वरान्त शब्द--

अपमृत्यु, आयु, कुहु, बाहु, रेणु, वायु, वेणु, आबरू, आरजू, खड़ाऊँ, खूँ, गुफ़्तगू, झाड़ू, तराज़ू, दारू, बालू, बू, भू, ब्यालू, ब्यारू, हरें, कै, सैवैं, जैं, अधगो, गो, टेश्रो, दाश्रो, सरसों, पतियारो, कादो, गौं, दौं, परचौ, पौ, भौं, लौ, इत्यादि।

२९. अभ्यास (Exercise).

१. नीचे लिखे शब्दों के लिङ्ग बताओ।

बड़िश, झींगुर, दीमक, बुलबुल, तारा, दाख, हवा, निकास, तिल, तान, समाज, जाड़ा, घास, पीतल, नीलम, छन, काँख, मिठास, किताब, चिराग़, गंध।

२. पाँच ऐसे शब्द कहो, जो दोनों लिङ्गों में बोले जाते हों? ३. पाँच प्राणिवाचक शब्दों को कहो, जो सदा स्त्रीलिङ्ग ही बोले जाते हैं। यौगिक शब्दों के लिङ्ग कैसे जाने जाते हैं?

संज्ञाप्रयोग।

भेद सम्बन्धी विशेषता—

१. कुछ जातिवाचक संज्ञाएँ प्रयोग में **व्यक्तिवाचक के समान** आती हैं। जैसे-पुरी (जगन्नाथ), देवी (दुर्गा), दाऊ (बलदेव), संवत (विक्रमी संवत), इत्यादि। कुछ उपनाम के शब्द—सितारेहिन्द (राजा शिवप्रसाद), भारतेन्दु (बाबू हरिश्चन्द्र), गुसाईंजी (गोस्वामी तुलसीदास),

दक्षिण (दक्षिणी हिन्दुस्थान), इत्यादि। कुछ योगरूढ़ संज्ञाएँ–गणेश, हनुमान, हिमालय, गोपाल, इत्यादि।

२. कभी कभी **व्यक्तिवाचक संज्ञा** व्यक्तिविशेष के गुण की प्रसिद्धि के कारण उस गुण के रखनेवाले सब पदार्थों केलिये आती है, ऐसी अवस्था में वह जातिवाचक होजाती है। जैसे–अल्पस यूरोप का **हिमालय** है। शेक्सपियर यूरोप के **कालिदास** थे।' इन वाक्यों में हिमालय का अर्थ है '**ऊँचा पहाड़**' और कालिदास का अर्थ '**महाकवि**'। इसलिये यहाँ इनको व्यक्तिवाचक न कहकर जातिवाचक कहेंगे।

३. व्यक्तिवाचक, भाववाचक, समूहवाचक और द्रव्यवाचक का बहुवचन नहीं होता। जब इनका प्रयोग बहुवचन में होता है तब ये संज्ञाएँ जातिवाचक होजाती हैं। जैसे–मेरे वर्ग में तीन **राम** हैं। पानीपत में तीन **लड़ाइयाँ** हुईं। दोनों **सेनाओं** में यह समाचार फैलगया। तेली के पास भिन्न भिन्न प्रकार के **तेल** बिकते हैं। आश्चर्य है कि छोटीमोटी **कृपाएँ** मन को मुग्ध करलें। उनकी जानतोड़ **कोशिशें** प्रजा को मनुष्य कोटि में लाने का यत्न कररही हैं। उसके आगे सब रूपवती स्त्रियाँ **निरादर** हैं। ये सब कैसे अच्छे **पहिरावे** हैं!

वचन सम्बन्धी—

जातिवाचक संज्ञा के बहुवचन में भी एकवचन का प्रयोग होता है। जैसे–घोड़ा बली पशु है। यहाँ घोड़ा शब्द से सब घोड़ों का बोध होता है। 'घोड़े बली पशु हैं' ऐसे वाक्य भी प्रयोग में हैं।

यदि कोई शब्द ही बहुवचनबोधक हो तो उनका बहुवचन नहीं बनाना चाहिये। जैसे–मेरे भोजन की सामग्री खरीदो। जाने की तैयारी करो। ऐसी जगह **सामग्रियाँ** और **तैयारियाँ** लिखना उचित नहीं, परन्तु **भिन्नता** के अर्थ में बहुवचन भी लिख सकते हैं। जैसे–दोनों सेनाओं में लड़ने की तैयारियाँ होनेलगीं।

'लोग' शब्द 'जन, गण, वर्ग' इत्यादि के समान बहुवचन का द्योतक

है । जैसे—ब्राह्मण लोग । इस आधार पर '**स्त्रीलोग**' लिखना उचित नहीं, क्योंकि 'लोग' शब्द पुल्लिङ्ग है और इसका स्त्रीलिङ्ग 'लुगाई' है ।

रूप सम्बन्धी—

१. संज्ञाओं में **राजा, महाराजा, पाठशाला, देवता, तारा'** इत्यादि शब्द कहीं कहीं विकृत रूपों में भी मिलते हैं । इनमें **तारा** शब्द के विकृत रूप विशेष प्रचलित हैं । जैसे—देश देश के **राजे** आये । **महाराजों** की कौन चलावे ! मैं सब **पाठशालों** की देखचुका । **देवतों** के ध्यान में भी जो नहीं आता कभी । **तारे** निकल आये ।

२. **दादा, दुलहा, जरा, अदना, आला,** इत्यादि शब्द विकृत और अविकृत दोनों हैं ।

पटना, आरा, दरभंगा, छपरा, कलकत्ता इत्यादि स्थानवाचक शब्द विकृत हैं, परन्तु कोई कोई लेखक इन्हें अविकृत के समान लिखते हैं जिससे उनकी कोमलता नष्ट होजाती है । अतएव ' छपरा से आया । दरभंगा से गया । कलकत्ता में रहता है' इत्यादि वाक्य अशुद्ध हैं ।

४. कुछ विकृत आकारान्त शब्दों का प्रयोग सम्बोधन के एकवचन में अविकृत सा होता है । जैसे—छिपे हो कौन से पर्दे में **बेटा** ! रे **बबुआ** ।

५. कोई कोई लेखक हिन्दी में आये हुए संस्कृत के कतिपय तत्सम शब्दों के सम्बोधन एकवचन रूप संस्कृत ही के नियमानुसार रखते हैं । जैसे—**हे देवि, हे सखे, श्रीमन्**, इत्यादि ।

६. कोई कोई एकारान्त और ओकारान्त संज्ञाओं के चिन्हसहित बहुवचन रूप '**दूबेओं ने, हरेंओं ने, कोदोओं ने, सरसोंओं ने**' इत्यादि के बदले ' दूबों ने, हरों ने, कोदों ने, सरसों ने ' इत्यादि लिखते हैं । ऐसे रूपों से कभी कभी अकारान्त संज्ञाओं के रूपों का बोध होता है, इसलिये इन्हें त्यागना ही उचित है ।

७. विकृत आकारान्त तथा दोनों इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के चिड़ियें, तिथिएँ, देविएँ, इत्यादि नियमानुसार बने रूप प्रयोग में कम आते हैं । इन

के बदले **चिड़ियां, तिथियां, देवियां** इत्यादि रूप प्रयोग में हैं ।

३०. अभ्यास (Exercise).

१. व्यक्तिवाचक संज्ञा जातिवाचक कब होती है ? उदाहरण दो । २. पाँच ऐसे उदाहरण दो, जिनसे जान पड़े कि प्रयोग में जातिवाचक संज्ञाएँ भी व्यक्तिवाचक होती हैं । ३. 'ये सब कैसे अच्छे पहिरावे हैं ?' इस वाक्य में 'पहिरावे' कौन, संज्ञा है ?

४. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो ।

जाने की तैयारियाँ करो । लड़की लोग आरही हैं । तीन नदी से चार मछली लाया । उन किताब को क्या करोगे ? गायों जारही हैं । चार ग्राम से आठ बालकों आये । पाँच बैल को लाओ । खेते पर जाकर अन्नों ले आओ ? कलकत्ता से आया । छपरा में रहता है । देविएँ आती हैं । मातें चली गईं । हे बालकों, कहाँ जाते हो ? तारा निकल आये । नदियें बहरही हैं ।

सर्वनाम प्रयोग ।

(इसकी कुछ बातें वाक्यरचना में देखो ।)

१. 'मैं' और 'तू' के नियमानुसार बने रूपों के सिवाय " मेरे को, मेरे में, हमारे में, तैं, तैंने, तेरे को, तेरे से, तेरे में, तेरे पर, तुम्हारे से, तुम्हारे पर " इत्यादि रूप भी कहीं कहीं बोले जाते हैं, परन्तु इनकी विशेष प्रधानता नहीं है । जैसे-भगवान् जाने, **हमारे में** यह सुमति कब आवगी । (प्रताप) जिन बातों से **हमारे में** चरित्र आता है.........। (साहित्यसुमन)

२. 'अपना' शब्द सार्वनामिक अर्थ देने के सिवा विशेषण और (आगे विशेष्य लुप्त रहने पर) संज्ञा का भी बोध कराता है । जैसे—मैं **आप** वहाँ जाऊँगा । कृपा कर मेरा अपराध क्षमा करें, अब मैं **अपने** को अवश्य सुधारूँगा । मेरा **अपना** पराया कोई काम नहीं आया । जब **अपनों** ने कोई सहायता नहीं की तब पराये की कौन आशा ! सभी **अपनों** की खोजख़बर लेते हैं । **अपनों** से विरोध करनेवाला नष्ट होता है ।

३. इन्होंने, उन्होंको, जिन्होंसे, तिन्हों केलिये, किन्होंने इत्यादि

रूप भी प्रयोग में मिलते हैं। इनमें '**इन्होंने, उन्होंने**' इत्यादि कर्त्ता के रूप, नियमानुसार बने 'इनने, उनने' इत्यादि रूपों से अधिकतर प्रचलित हैं, परन्तु अन्य रूप × कम आते हैं।

४. कोई कोई 'इस्ने, उस्ने, जिस्ने, किस्को, तिस्में' इत्यादि रूप भी लिखते हैं, परन्तु गद्य में अब ऐसे प्रयोग नहीं होते।

५. बहुवचन **ये** और **वे** के बदले क्रम से **यह** और **वह** भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे—**यह** दोनों लड़के बड़े सुशील हैं। **वह** दोनों भाई पटने चले गये। **वह** * कहाँ गये हैं?

६. पूर्वकथित दो वस्तुओं में से पहली के लिये **वह** और दूसरी के लिये यह प्रयोग करते हैं। जैसे—महात्मा और दुरात्मा में इतना ही भेद है कि **उन**के मन, वचन और कर्म एक रहते हैं और **इन**के भिन्न भिन्न।

७. 'कोई' शब्द जब वाक्य में दोहरा आता है तब क्रिया भी बहुवचन हो जाती है, परन्तु आदर में बिना दुहराये भी बहुवचन क्रिया लाते हैं जैसे-**कोई कोई** कहते हैं। आपके यहाँ **कोई** आये हैं?

८. **कौन** और **क्या** जब अकेले आवें तब 'कौन' से **प्राणी** का और 'क्या' से **अप्राणी** का बोध होता है। जैसे—कौन पढ़ता है? कौन है? क्या गिरा? क्या है? (यदि **कौन** और **क्या** के विषय में पहले से कुछ भी ज्ञान प्राप्त हो तो यह नियम नहीं लगता।)

९. सर्वनाम के आगे विशेष्य आने से वह विशेषण कहलाता है। ऐसी अवस्था में सर्वनाम कारकादि के चिन्ह छोड़ तो देता है, परन्तु उसमें संस्कार अवश्य बना रहता है। जैसे—**इस** विषय पर **किसी** प्रकार की चर्चा मत कीजिये।

× विशेष कर गुजराती और महाराष्ट्र लेखक लिखते हैं।

* उर्दूवाले प्रतिष्ठा केलिये वह के बदले **वो** भी बोलते हैं। जैसे-इनके देखे से जो आ जाती है रौनक मुँह पर, **वो** समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है।

नोट–' कौन, जौन, तौन ' इत्यादि यदि ' सा, से, सी ' प्रकारार्थक प्रत्ययों के साथ आवें तो वे ऊपर की अवस्था में नहीं बदलते। जैसे–छिपे हो कौनसे पर्दे में बेटा ! रहो जौन से देश में।

३१. अभ्यास (Exercise).

१. ' यह ' और ' वह ' के प्रयोग में क्या भेद है ? २. ' कौन ' और ' जौन ' में कब विकार नहीं होता ? उदाहरण दो। ३. आजकल ' जो ' के बदले कौन सर्वनाम अधिकतर बोला जाता है ? उदाहरण दो।

४. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो—

हम कोई दिन में तुम के यहाँ जायँगे और तुम के लिये उचित प्रबन्ध करा देंगे। मैं पर वह की बात विदित हो गई। कौन किताब को पढ़ोगे? जौन तौन बालक के साथ मत जाओ। उन्हों से काहे को बोलते हो! मैं मेरे लिये पढ़ता हूँ!

५. नीचे के वाक्यों में रिक्त स्थानों में उचित सर्वनाम रक्खो—

—लाठी उसकी भैंस। तुमने—पाठ याद कर लिया। आप—क्या पढ़ते हैं? —कौन कहता है ? क्या–नहीं जानता कि तुझे ही लिखना होगा ? जो परिश्रम करते हैं–सुख पाते हैं। मैं—उसकी कथा कहता हूँ।

विशेषणप्रयोग।

(इसकी कुछ बातें वाक्यरचना में देखो।)

१. बहुत से परिमाणबोधक विशेषण, बहुवचन विशेष्य के साथ अनिश्चितसंख्या बोधक हो जाते हैं। जैसे–**थोड़े** मनुष्य, **बहुत** लड़के इत्यादि।

२. निश्चयबोधक संख्याओं के पहले **'लगभग, प्रायः'** इत्यादि शब्दों के लगाने से या दो पूर्णांक संख्याओं को एक साथ लिखने से अनिश्चयबोधक विशेषण बनते हैं। जैसे–लगभग चालीस विद्यार्थी, प्रायः बीस लड़के, चारपांच आम, पांचसात दिन, इत्यादि।

नोट–डेढ़ दो रुपये, अढ़ाई तीन वर्ष इत्यादि इत्यादि प्रयोग भी इसी अर्थ में हैं। किसी पूर्णाङ्क संख्या के आगे एक लगाने से लगभग का अर्थ निकलता है। जैसे–चालीस एक आदमी।

३. बीसो, पचीसो, हजारो इत्यादि संख्याएँ निश्चयबोधक विशेषण हैं, परन्तु जब इनके अन्त्यस्वर 'ओं' रहे तब अनिश्चय का बोध होता है। जैसे—**बीसो** आदमी आये (पहले से केवल बीस ही का निश्चय था)। **बीसों** आदमी आये (कई बीस आदमी, अनिश्चय)।

नोट—आजकल बीसों, पचीसों, पचासों, सैकड़ों, हजारों, लाखों इत्यादि कतिपय अनिश्चयबोधक संख्याओं को छोड़, शेष दोनों, तीनों, चारों इत्यादि शब्द 'दोनों, तीनों, चारो' के समान 'निश्चयबोधक' में भी लिखे जाते हैं।

४. थोड़े से विशेषण अकेले भी आते हैं, ऐसी अवस्था में उनके लुप्त विशेष्य अनुमानसे समझते हैं। जैसे—बापुरे बटोही पर **बड़ी कड़ी** बीती। महाराज ने बिछावन पर **लम्बी** तानी।

५. विशेष्यरहित विशेषण, संज्ञा का अर्थ देता है। जैसे—**बड़ों** का कहना मानो। **इतने** में ऐसा हुआ। **जैसे** को तैसे मिले। **पण्डित** जी आये।

नोट—ऐसी संज्ञाएँ कभी जातिवाचक होती हैं और कभी व्यक्तिवाचक। जैसे—झूठ बोलना **पण्डितों को** उचित नहीं (जातिवाचक)। **पण्डितजी** नहीं आये (व्यक्तिवाचक)।

६. कुछ विशेषण सर्वनामों की भाँति आते हैं। जैसे—सभा में **एक** (कोई) आता है तो **एक** (कोई) जाता है। **एक दूसरे** (आपस) में प्रेमव्यवहार रहना चाहिये। दुविधा में **दोनों** गये, माया मिली न राम।

७. विशेषण के स्थान पर विशेष्य और विशेष्य के स्थान पर विशेषण रखना अनुचित है। जैसे—'**वह सन्तोष होगया**।' यह वाक्य अशुद्ध है, इसके बदले '**वह सन्तुष्ट होगया**' या '**उसे सन्तोष होगया**' लिखना उचित है।

८. बहुत्व के अर्थ में विशेषण और विशेष्य, दोनों में से किसी एक ही को बहुत्वबोधक रखना उचित है। जैसे—बहुसंख्यक बालक या बालकगण, बहुतसे आदमी या आदमीलोग। ऐसी जगह '**बहुसंख्यक बालकगण**' और '**बहुतसे आदमी लोग**' अशुद्ध हैं।

६. **सा, नाम, नामक, सम्बन्धी, रूपी** इत्यादि शब्दों को संज्ञा के साथ मिलाकर विशेषण बनाते हैं । 'सा' सर्वनाम के साथ भी आता है । जैसे—फूलसा शरीर, बाहुक नाम सारथी, दशरथ नामक राजा, पाठशाला-सम्बन्धी काम, तृष्णारूपी नदी, इत्यादि ।

३२. अभ्यास (Exercise).

१. नीचे लिखे प्रत्येक जोड़े में क्या भेद है ?

पाँच आम-चार पाँच आम । चालीस आदमी-चालीस एक आदमी । पचासों आदमी-पचासों आदमी ।

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो ।

बीस विद्यार्थी परीक्षा में गये थे, बीसों उत्तीर्ण हो गये । 'माली ने सब पेड़ को काट डाला । सैकड़ो बार हमने समझाया ।' बहुसंख्यक मनुष्यगण यहाँ आये थे । बहुतसे आदमी लोगों को हमने देखा था ।

श्रीमान् सीतादेवी का कथा बड़ा मीठा है । गोरा स्त्री पीला साड़ी पहने हुई है । रूखा सूखा बात बड़ा कड़वा होता है । यह किताब का क्या मोल है ? वह लड़की को बुलाओ । कौन घरमें रहते हो ? कोई काम में शीघ्रता मत करो । इस पुस्तकों का क्या मोल हैं ? उस घरों में कौन रहते हैं ? राम क्रोध हो गया ।

क्रियाप्रयोग ।

१. समीपी भूत और **भविष्यत्** में **वर्तमान काल** का व्यवहार होता है । जैसे—'आप कब आये ? मैं अभी आता हूँ ।' जो तुम कहते हो, हम समझते हैं । 'आप कब जायँगे ? मैं शीघ्र ही जाता हूँ ।' तुम यहाँ बैठो, हम अभी आते हैं । 'कचहरी कब खुलेगी ? बस परसों खुलती है ।'

२. लेखक कभी कभी **भूतकाल** केलिये **वर्तमान** का प्रयोग करते हैं, जिसे **ऐतिहासिक वर्तमान** कहते हैं । जैसे—गोस्वामी तुलसीदास **कहते हैं**—'धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपद काल परेखिय चारी ।'

३. धमकी आदि के अर्थ में भविष्यत् केलिये भूतकाल का प्रयोग

करते हैं। जैसे–यदि बात **खुली** तो मारे जाओगे। 'बचोगे न तुम और न साथी तुम्हारे, अगर नाव **डूबी** तो डूबोगे सारे।'

४. पूर्णभूत केलिये सामान्य और आसन्न भूतों की क्रियाएँ भी कभी कभी आती हैं। जैसे–पिता की आज्ञा से रामचन्द्र जी वन **गये**। गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन से **कहा है**।

५. जब कहने वाला तनिक क्रोध के साथ या उदासी से कुछ कहता है तब **क्रिया का लोप** हो जाता है। जैसे–जब क्रिया नहीं तब डर कैसा ? आपको इससे क्या मतलब ?

६. (क) जब सामान्य वर्तमान काल की क्रिया के आगे **नहीं** आवे तब '**हूँ, है, हैं**' इत्यादि सहायक अंशों को लोप कर देते हैं। जैसे–अब वह यहाँ नहीं आता। आप मेरे यहाँ कभी नहीं खाते।

(ख) रचना की उत्तमता केलिये और अभ्यास के अर्थ में, कभी कभी क्रिया के सहायक अंश '**था थे**' इत्यादि को छोड़ भी देते हैं। जैसे-जब वह **आता** तब पैसे ले जाता। दोनों बली दिन भर तो धर्म युद्ध **करते** और साँझ को घर आ एक साथ भोजन कर विश्राम। * (प्रेमसागर)

७. कभी कभी क्रियार्थक संज्ञा में सम्बन्ध के चिन्ह जोड़कर उससे **भविष्यत् का अर्थ** निकालते हैं। जैसे–अब यह विपत्ति की घड़ी टलने की नहीं। गया तो फिर यह नहीं मेरे हाथ आने का। (भट्टजी)

८. क्रिया के साधारण रूप के आगे–' वाला ' प्रत्यय मिलाकर या यों ही–विद्यमानता बोधक हो (होना) धातु के सामान्य वर्तमान कालिक रूप लगाने से **भविष्यत् का अर्थ** निकलता है। जैसे-डरो उसे जो वक्त है आनेवाला। यदि कुछ काटना है तो बोना पड़ेगा। (भट्टजी)

९. कोई कोई स्त्रीलिङ्ग में '**आई, खाई, गई, दी,** इत्यादि को ' आयी, खायी, गयी, दियी, (दिई) ' इत्यादि लिखते हैं, परन्तु यह रीति खटकती है। इससे 'य' अनुच्चारित वर्ण का दोष देवाक्षर की पवित्र वर्णमाला

---

* वाक्यरचना में ' कर्त्ता और क्रिया का मेल ' शीर्षक पाठ देखो।

पर लगता है। हाँ, संस्कृत शब्दों को—जो संस्कृत व्याकरण से शुद्ध हैं—लिखना अनुचित नहीं। जैसे—धराशायी, सामयिक, दायित्व, निराश्रयी, इत्यादि।

१०. **हुवा, हुया, हुये, होवो, खावो, जावोगे, जावोगी, आवोगे, आवोगी,** इत्यादि रूप त्याज्य हैं, इनके बदले 'हुआ, हुए, होओ, खाओ, जाओगे, जाओगी, आओगे, आओगी' इत्यादि रूप नियमानुसार उचित हैं।

११. कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के जितने बहुवचन रूप 'तुम' के साथ आते हैं वे आदरसूचक 'आप' के साथ नहीं आते। इसके साथ अन्य पुरुषवाले बहुवचन रूप आते हैं, परन्तु कहीं कहीं परिचय, बराबरी और लघुता के विचार से मध्यमपुरुषवाले बहुवचन रूप भी आते हैं। जैसे—(१) आप बैठे हैं। आप बैठते हैं। आप बैठें। आप खावें। आप लिखे-जायँ। (२) **आप** सूर्यकुल के भूषण **हो**। **आप** मोल **लोगे**? **आप** अगलों की रीति पर **चलते हो**।

३३. अभ्यास (Exercise).

१. नीचे लिखे वाक्यों की क्रियाएँ क्या अर्थ देती हैं?

आप कब खायँगे? मैं अभी खाता हूँ। शुकदेवमुनि राजा परीक्षित से कहते हैं। अगर नाव डूबी तो डूबोगे सारे। रामायण में गुसाईंजी ने कहा है।

२. नीचे लिखे वाक्यों के व्यर्थ अंशों को हटादो।

आपको इससे क्या मतलब है? आप उसके यहाँ कभी नहीं जाते हैं। यह बात उचित नहीं है। जब क्रिया नहीं है तब डर कैसा है?

३. कोई कोई स्त्रीलिङ्ग में 'आई, खाई, गई, दी' इत्यादि को 'आयी, खायी, गयी, दियी (दिई) इत्यादि लिखते हैं। इसके विषय में तुम्हारी क्या राय है?

अव्ययप्रयोग।

(१) नहीं, न और मत में भेद—

(क) सामान्यवर्तमान, तात्कालिकवर्तमान, आसन्नभूत और किसी प्रश्न के उत्तर में **नहीं** का प्रयोग होता है। जैसे—मैं **नहीं खाता**। वह

नहीं आ रहा है। इस वर्ष मैंने आम **नहीं खाया है।** तुमने परीक्षा दी है? **नहीं।**

(ख) 'दो या अधिक में किसीका निषेध जताना हो तब और 'विधि में' **न** का प्रयोग होता है। जैसे—न धर्म, न विद्या, न धन, कुछ काम न आया। न खाया, न पिया, न कुछ बात ही की—योंही चलागया। इसे **न ले।** । अभी उपन्यास कभी **न पढ़ना।** यह पुस्तक और किसीके हाथ में **न दीजियो।**

(ग) ऊपर की क्रियाओं को छोड़ अन्यत्र **न** और **नहीं** दोनों आते हैं, भेद इतना ही है कि केवल निषेध में **न** और निषेध की निश्चयता में **नहीं** का प्रयोग होता है। जैसे—वह न आया—वह नहीं आया। मैं न पढ़ूँगा—मैं नहीं पढ़ूँगा।

(घ) **'मत'** केवल विधि में लाते हैं। जैसे—तुम मत जाओ।

नोट— १. 'न' निश्चय के अर्थ में प्रश्नार्थक अव्यय है। जैसे—तुम तो इसी समय पढ़ लोगे न? बोलो न जाओगे?

२. **'न-न'** जब समुच्चयबोधक होकर आते हैं तब पहले न से **'न तो'** और दूसरे से **'और न'** का बोध होता है। जैसे—उसने **न** पढ़ा, **न** पढ़ेगा।

(२) ओर, तरफ, तरह, मार्फत, नाई, खातिर, इत्यादि के **पहले 'की' लाते हैं।** जैसे—राम की ओर, खेत की तरफ, लड़के की तरह, उसकी मार्फत, सोहन की नाई, आपकी बाबत, तेरी खातिर, इत्यादि।

(३) बहुत से अव्यय दो दो करके एक साथ आते हैं और **नित्य-सम्बन्धी** कहलाते हैं। जैसे—'यदि—तो, जो—तो, यद्यपि—तथापि या तोभी, इत्यादि। प्रयोग—**यदि** ठंढ न लगे **तो** यह हवा बहुत दूर तक चलीजाती है। **जो** आप आज्ञा करें **तो** हम जन्मभूमि देख आवें। **यद्यपि** मैं वहाँ नहीं गया **तथापि** मैंने वहाँ का सारा वृत्तान्त सुना।

अन्य नित्यसम्बन्धी अव्यय—जब—तब, ज्यों—त्यों, जहाँ—वहाँ या तहाँ, जिधर—उधर, जोभी—सोभी, अगर्चे—ताहम, इत्यादि।

३४. अभ्यास (Exercise).

१. 'नहीं' और 'न' के प्रयोग में क्या भेद है ? उदाहरण दो। २. 'मत' कहाँ आता है ? ३. चार ऐसे वाक्य बनाओ, जिनमें नित्यसम्बन्धी अव्यय हों।

३५. मिश्रित अभ्यास (Miscellaneous Exercise).

१. नीचे लिखे वाक्यों में जहाँ जहाँ अशुद्धियाँ हों उन्हें शुद्ध करो और अशुद्ध होनेके कारण बताओ।

जब बड़ों को देखो, उन्हें नमस्कार करो, क्योंकि वे तुम पर भक्ति रखते हैं। जब हम अपने बन्धुओं से दूर पड़ जाते हैं, उनको बड़ा दुःख होता है। उन से कुछ लाभ नहीं, क्योंकि वे यहाँ की बातों से अज्ञान हैं। ईश्वर पर भरोसा रखो, क्योंकि वही सबों का राखनहारा है। भगवान की सहायता सभी को मिलती है, अतः विपद में धीरताई रखो। आपने वह प्रतिज्ञा न भूले होंगे। मैं ने आया था, परन्तु आप का भेंट न हुआ। तुमने इसके लिये व्यर्थ चेष्टा करते हो, निराश होना पड़ेगा। निरपराधी मनुष्य को दन्ड देना उचित नहीं। यह खबर इस कान से उस कान, उस कान से उस कान फैलगई। राम का भाई बड़ी गौ है। ब्राह्मणी लोगों का यहाँ रहना उचित नहीं। दोनों राजाओं ने लड़ने की तैयारी करली। दरभंगा से कलकत्ता को आम भेजा जाता है। उन्हीं के लिये पुस्तकों खरीद लो। इस वर्ष बहुत से विद्यार्थीलोग फेल होगये तुम को इससे क्या मतलब है ? महात्मा और दुरात्मा में इतनी ही भेद है कि इन की मन, बचन और कर्म एक रहते हैं और उनके भिन्न भिन्न।

२. नीचे लिखे प्रत्येक शब्द से एक एक वाक्य बनाओ।

सुखदायक, आविर्भाव, हर्षविषाद, जन्ममृत्यु, हिताहित, अनुष्ठान, औत्सुक्य, उत्कण्ठा, तपोभ्रष्ट, सा, नामक, लगभग, इतना।

३. अर्थ लिखो—

प्रयोग, अपयोग, संयोग, नियोग, अनुयोग, दुर्योग, वियोग, सुयोग, उद्योग प्रतियोग, अभियोग, उपयोग।

४. जोड़े वाले शब्दों को छोड़ शेष शब्दों के पुल्लिङ्ग सूचक नियम कौन कौन हैं ? प्रत्येक के दो दो उदाहरण दो।

५. 'अपना' शब्द किन किन अर्थों में आता है ? प्रत्येक के दो दो उदाहरण दो।

७. चार ऐसे वाक्य बनाओ जिनमें जातिवाचक संज्ञाएँ व्यक्तिवाचक होगई हों।

८. नीचे लिखे प्रत्येक शब्दयुगल में परस्पर क्या भेद है ?

सूचि-सूची, जाल-जाल, सर-सर, मित्र-बन्धु, संहार-परिहार, भृत्य-दास, चतुर,-बुद्धिमान्, मूर्ख-मूढ़।

९. नीचे लिखे प्रयोगों पर तुम्हारा क्या विचार है? कारण सहित लिखो।

दियी, हुवा, हुया, खावो, जावोगे, हुये।

१०. नीचे लिखे शब्द शुद्ध हैं या अशुद्ध? कारण दो।

वर्तमान्, श्रीवान्, जगत, नैपुण्यता।

वाक्यप्रकरण।

वाक्य (Sentence).

जिसके सुनने से कहनेवाले का पूर्ण अभिप्राय समझ में आजाय ऐसे शब्दसमूह को वाक्य कहते हैं। जैसे-बालक सोता है। फूल लाल है।

नोट-(१) कभी कभी हमलोग किसी घोड़े इत्यादि को देखकर 'घोड़ा क्या कर रहा है? कौन पशु आता है?' इत्यादि प्रश्न किया करते हैं। ऐसे प्रश्नों केलिये 'चरता है। घोड़ा' इत्यादि उत्तर पाते हैं और सुनतेही पूर्ण अभिप्राय भी सुगमता से समझजाते हैं। अतएव ऐसे स्थानोंमें 'चरता है। घोड़ा।' इत्यादि पूर्णवाक्य हैं, यद्यपि ये 'घोड़ा चरता है। घोड़ा आता है।' इत्यादि केलिये आये हैं।

किसी ने पूछा-"आप खाइयेगा?" उत्तर मिला 'हाँ'। ऐसी जगह 'हाँ।' इतना ही पूर्णवाक्य है। इसमें कर्त्ता और क्रिया दोनों लुप्त हैं।

खण्डवाक्य (Clause) और वाक्यांश (Phrase).

१. जो वाक्य दूसरे की अपेक्षा रखसके उसे खण्डवाक्य कहते हैं। जैसे-तब

वह परीक्षा देगा । वह ज्योंही सोगया । जब वह आता है । यदि वह जाय।

खण्डवाक्य दो प्रकार के हैं–प्रधानवाक्य और अधीनवाक्य । **प्रधानवाक्य** की अधीनता में **अधीनवाक्य** रहता है और उसके एक अंग का काम देता है । जैसे–मैंने समझलिया कि वह चोर है । इस वाक्य में 'मैंने समझलिया' प्रधान वाक्य है और 'वह चोर है' अधीन । यह अधीनवाक्य 'प्रधान' वाक्य की क्रिया का कर्म है ।

नोट–वाक्य के बीच में भी छोटे छोटे वाक्य प्रयुक्त होते हैं जिन्हें **गर्भवाक्य** कहते हैं । जैसे-क्या आपने आर्यपुत्र को, मैं उनका नाम कैसे लूँ, देखा है ? मैं कृष्ण को, वह बड़ा छली है, ढूँढ़ते ढूँढ़ते हारगई ।

२. वाक्य के परस्पर सम्बन्धी दो या अधिक शब्दों को, जिनसे पूरी बात नहीं जानीजाती, **वाक्यांश** कहते हैं । जैसे–इतना सुनते ही, आपके पीछे, भलीभाँति परीक्षा कर लेने पर ।

उद्देश्य और विधेय (Subject & Predicate).

प्रत्येक वाक्य के दो अङ्ग हैं–उद्देश्य और विधेय ।

जिसके विषय में कुछ कहाजाय उसे **उद्देश्य** और उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहाजाय उसे **विधेय** कहते हैं । जैसे–बालक सोता है । इस वाक्य में 'बालक' उद्देश्य है और 'सोता है' विधेय ।

नोट–(१) कितना ही बड़ा या छोटा वाक्य क्यों न हो, परन्तु ये दोनों मोटे भाग इसमें अवश्य रहते हैं । कभी कभी वाक्य में कहीं उद्देश्य, कहीं विधेय और कहीं दोनों लुप्त रहते हैं । (पीछे 'वाक्य' के दोनों नोट देखो ।)

उद्देश्य और विधेय दोनों, 'विशेषण, क्रियाविशेषण इत्यादि शब्दों से' बढ़ाये जासकते हैं । जो शब्द उद्देश्य की विशेषता बतलाते हैं उन्हें **उद्देश्य का विस्तार** और जो विधेय की बतलाते हैं उन्हें **विधेय का विस्तार** कहते हैं । जैसे–सुशील बालक खाकर सोता है ।

नोट–विस्तार के विचार से उद्देश्य और विधेय दोनों के दो दो भेद होसकते हैं–साधारण और वर्द्धित ।

उद्देश्य और उद्देश्य का विस्तार।

(Subject and its Adjuncts).

१. उद्देश्य में नीचे लिखे शब्दभेद हो सकते हैं-

(क) संज्ञा-**बालक** पढ़ता है। (ख) सर्वनाम-**मैं** पढ़ता हूँ।

(ग) विशेषण (संज्ञावत्)-**लोभी** दुःख सहते हैं।

२. उद्देश्य किस कारक में रहता है ?

(क) कर्त्ताकारक में। जैसे-**मोहन** रोटी खाता है। **श्याम ने** रोटी खाई। **रानी ने** सहेलियों को बुलाया। **रामसे** रोटी खाई गई। **मुझसे** बैठा नहीं जाता।

(ख) योग्यता, कर्तव्य और आवश्यकता इत्यादि के जताने में उद्देश्य सम्प्रदान कारक में आता है। जैसे-**आपको** यह कहना योग्य नहीं। **सोहन को** काम करना चाहिये। **रामको** लिखनापड़ेगा। **आपको** पाठ पढ़ना है। +

नोट-जो संज्ञा सम्बोधन में आती है वह मुख्य उद्देश्य नहीं हो सकती, क्योंकि वह विधेय से साक्षात् सम्बन्ध नहीं रखती। सम्बोधन के आगे 'उद्देश्य' मध्यमपुरुष सर्वनाम में गुप्त या प्रकट रहता है। जैसे-हे प्यारे, कहाँ जाते हो ? भगवन् ! तू मेरी ख़बर कब लेगा ? *

३. उद्देश्य के विस्तार में नीचे लिखे शब्दभेद होसकते हैं-

(क) विशेषण। जैसे-**लाल** घोड़ा आता है। **पढ़ता** सुग्गा उड़गया। **आयाहुआ** नौकर सोगया।

(ख) समानाधिकरणशब्द। जैसे-मैं **मोहनलाल** इकरार करता हूँ। राम के पिता **दशरथजी** यह नहीं चाहते थे।

(ग) सम्बन्ध। जैसे-**राम का** घोड़ा घास खाता है।

+ कोई कोई कहते हैं कि इन वाक्यों में 'क्रिया का साधारण रूप' ही उद्देश्य होसकता है।

* वाक्यविभजन में सम्बोधन को छोड़देते हैं या सर्वनाम के साथ उद्देश्य में रखदेते हैं।

विधेय और विधेय का विस्तार।

(Predicate and its Extension).

१. विधेय से, उद्देश्य के विषय में नीचे लिखी कोई एक बात पाईजाती है—

(क) करना। जैसे—मैं खाता हूँ। वह पढ़ता है।

(ख) होना। जैसे—फूल लाल है। सन्ध्या हुई।

(ग) सहना। जैसे—नौकर मारागया। खेत बोया जायगा।

२. साधारण विधेय में केवल एक क्रिया रहती है। जैसे- बालक सोता है। सीता जाती है।

नोट—कई अकर्मक अपूर्ण क्रियाएँ ऐसी हैं जिनके पूरकशब्द विधेय के नित्य साथी समझेजाते हैं।

पूरक के नीचे लिखे शब्दभेद होसकते हैं–

(क) विशेषण। जैसे—वह लड़का **पागल** है।

(ख) संज्ञा। जैसे—राम का भाई **चोर** निकला।

(ग) सम्बन्ध। जैसे—चार बैल **उसके** हुए।

३. विधेय के विस्तार में नीचे लिखे शब्दभेद होसकते हैं-

(क) कर्म। जैसे—घोड़ा घास खाता है।

(ख) विधेयार्थवर्द्धक। जैसे—मेरा भाई रातदिन पढ़ता है। स्त्रियाँ उदास बैठी थीं। मोहन धीरेधीरे पढ़ता है। वह उठकर भागा! मैं ने छुरी से कलम काटी।

☞ कर्म इत्यादि अन्यान्य कारकों में भी उद्देश्य ही के समान शब्दभेद और विस्तार होसकते हैं। इसी प्रकार विस्तार का प्रत्येक अंश आवश्यकतानुसार विशेषण इत्यादि शब्दों से बढ़ाया जा सकता है।

३६. अभ्यास (Exercise).

१. वाक्य किसे कहते हैं ? २. खण्डवाक्य और वाक्यांश किसे कहते हैं ? ३. खण्डवाक्य कितने प्रकार के हैं ? उदाहरण दो ? ४. गर्भवाक्य किसे कहते हैं ? उदाहरण दो। ५. वाक्य के कितने अङ्ग हैं ? उदाहरण देकर समझाओ। ६. उद्देश्य और विधेय के विस्तारों में क्या भेद है ? ७. उद्देश्य के कौन कौन कारक हैं ? उदाहरण दो। ८. क्या सम्बोधन की संज्ञा भी उद्देश्य है ? क्यों ? ९. अकर्मक अपूर्ण क्रियाओं के पूरक में कौनकौन शब्दभेद होसकते हैं ? उदाहरण दो। १०. नीचे लिखे वाक्यों में प्रत्येक अङ्ग को अलग अलग करो—

तुम अपने मन में ऐसा कभी न सोचो। तुमलोग भारत के पुत्र हो। चरित्रबल पाकर ही तुमलोगोंका हृदय बलिष्ठ होगा। एक एक गुण का अभ्यास करके लोग गुणों से अपने को अलंकृत कर सकते हैं।

११. नीचे लिखे प्रत्येक वाक्य में उद्देश्य का विस्तार करो।

कृष्ण को लोग योगी कहते हैं। अर्जुन ने लड़ाई में आश्चर्यजनक कार्य किये। रामचन्द्र सीता और लक्ष्मण समेत वन गये। स्त्री अपने पति केलिये प्राण दे देती है। राम ने वन में लाखों राक्षसों को मारा।

१२. नीचे लिखे प्रत्येक वाक्य में विधेय का विस्तार करो।

शूद्रक नाम का एक परम बुद्धिमान् प्रबल महाप्रतापी राजा राज करता था। राजा बैठे थे कि द्वारपाल ने निवेदन किया। चाण्डाल कन्या आई है। राजा बोले। प्रतिहारी ले आया।

१३. नीचे लिखे प्रत्येक वाक्य के उद्देश्य और विधेय दोनों को बढ़ाओ।

शकुन्तला यही है। रामचन्द्र वन गये। सूए ने आशीर्वाद दिया। सूआ उसी ओर देखने लगा। कादम्बरी ने पूछा। मदलेखा ने कहा।

१४. नीचे लिखे प्रत्येक वाक्य के उद्देश्य या विधेय का विस्तार मान कर वाक्य बनाओ।

हमारी तपस्या के विघ्न की मूर्ति। कैसा विघ्न। साथवालों को विदा करके शकुन्तला के हावभाव देखने की। मेरे हृदय से कैसे। पवन के सम्मुख चलती। बड़े चाव से कान लगाकर। टीडी के समान।

वाक्यभेद (Kinds of Sentences).

(१)

स्वरूप के अनुसार वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—**साधारण(अमिश्र), मिश्र (सङ्कीर्ण) और संयुक्त (संसृष्ट)।**

जिस वाक्य में केवल एक उद्देश्य और एक विधेय हो उसे **साधारण** वाक्य कहते ह। जैसे—राम पढ़ता है।

जिस वाक्य में एक साधारण वाक्य तथा इसी के आश्रित एक या अधिक अङ्गवाक्य होते हैं उसे **मिश्रवाक्य** कहते हैं। जैसे—मैं देखता हूँ कि श्याम खेलता है इसमें 'मैं देखता हूँ' यह साधारणवाक्य है जो मुख्य है और 'श्याम खेलता है' यह अङ्ग है, क्योंकि क्रिया का कर्म है। अन्य उदाहरण—**साधु कहता है कि भूखों को भोजन दो। वह आदमी, जो कल आया था, आज भी आया है। जब पानी बरसता है तब मेढ़क बोलते हैं।**

जिस वाक्य में दो या अधिक साधारण या मिश्रवाक्य रहते हैं उसे **संयुक्तवाक्य** कहते हैं। संयुक्तवाक्य के मुख्य वाक्यों को **समानाधिकरण** वाक्य कहते हैं, क्योंकि वे एक दूसरे के आश्रित नहीं रहते। जैसे—

(१) राम पढ़ता है और श्याम खेलता है। **(दो साधारण वाक्य)**

(२) श्याम माखनचोर है, इसलिये जब मैं ढूँढ़ता हूँ तब वह छिप जाता है। **(एक साधारण और एक मिश्रवाक्य)**

(३) जब भाफ ज़मीन के पास इकट्ठी दिखाई देती है तब उसे कुहरा कहते हैं और जब वह हवा में कुछ ऊपर इकट्ठी दीखपड़ती है तब उसे बादल कहते हैं। **(दो मिश्रवाक्य)**

अङ्गवाक्य (आश्रितवाक्य)

(Subordinate Sentences).

ऊपर कह आये हैं कि मिश्रवाक्यों के अङ्गवाक्य होते हैं, जो मुख्यवाक्यों के अधीन रहते हैं।

अङ्गवाक्य तीन प्रकार के होते हैं-संज्ञावाक्य, विशेषण-वाक्य और क्रियाविशेषणवाक्य।

१. जब किसी अङ्गवाक्य का प्रयोग मुख्य वाक्य की किसी संज्ञा के स्थान में होता है तब उसे संज्ञावाक्य कहते हैं। जैसे-इससे जान पड़ता है कि **बुरी संगति का फल बुरा होता है**। साधु कहता है कि **भूखों को भोजन दो**। उसका यह कथन कि **सूर्य चलता है,** मैं नहीं मानता। यहाँ तीनों वाक्यों के अंगवाक्य क्रमशः **कर्त्ता, कर्म** और **समानाधिकरण** संज्ञा के बदले आये हैं।

नोट-'संज्ञावाक्य' संयोजक अव्यय 'कि' से आरम्भ होता है। कभी 'कि' का लोप भी करते हैं। जैसे-तुम सुशील हो, यह सब जानते हैं। मेरे मित्र ने कहा, "अब मुझे इसकी आवश्यकता नहीं"।

२. जब कोई अङ्गवाक्य मुख्यवाक्य की किसी संज्ञा के विशेषण का काम देता है तब उसे विशेषणवाक्य कहते हैं। जैसे-वह आदमी **जो कल आया था,** आज भी आया है। वह अपने विद्यार्थी को, **जो भागगया था,** मारते हैं। वह अपने विद्यार्थी को उस छड़ी से मारते हैं, **जो मेले में खरीदीगई थी**। यहाँ तीनों वाक्यों के अङ्गवाक्य क्रमशः कर्त्ता, कर्म और करण के विशेषण होकर आये हैं।

नोट-विशेषणवाक्यों को 'जो, जैसा, जितना, जब, जहाँ, जैसे इत्यादि' शब्दों से आरम्भ करते हैं और मुख्य वाक्यों में उनके 'नित्य-सम्बन्धी शब्द' आते हैं। कभी कभी ये शब्द लुप्त भी रहते हैं। जैसे-जो आवे सो जाय। जो बचे सो भागे। जिसकी लाठी उसकी भैंस। जो हुआ सो हुआ। सच हो सो कहदो। उन्होंने जितना काम किया उतना कोई न करेगा।

३. जब कोई अङ्गवाक्य किसी क्रिया के विशेषण का काम देता है तब उसे क्रियाविशेषणवाक्य कहते हैं। जैसे-"**जब पानी बरसता है** तब मेढ़क बोलते हैं। **जहाँ पहले थल था** वहाँ अब जल है। **ज्योंही वह आया** त्योंही चलागया। कोई नहीं उतना खाता, **जितना वह खाता है**।" यहाँ चारों वाक्यों के अङ्गवाक्य क्रमशः कालवाचक, स्थानवाचक,

रीतिवाचक और परिमाणवाचक क्रियाविशेषण हैं।

नोट–क्रियाविशेषण वाक्यों को जब, जहाँ, जिधर, ज्यों, यदि, यद्यपि, कि इत्यादि शब्दों से आरम्भ करते हैं और मुख्यवाक्यों में उनके नित्यसम्बन्धी शब्द आते हैं। कभी कभी ये शब्द लुप्त भी रहते हैं। जैसे–यदि जासको तो जाना। यह रसीद लिखदी कि सनद रहे। बुरा न मानो तो एक बात कहूँ।

समानाधिकरणवाक्य (Co-ordinate Sentences).

हम पीछे लिखआये हैं कि संयुक्तवाक्य के मुख्यवाक्यों को **समानाधिकरणवाक्य** कहते हैं, क्योंकि वे एक दूसरे के आश्रित नहीं रहते।

समानाधिकरणवाक्य चार प्रकार के होते हैं–संयोजक, विभाजक, विरोधदर्शक और कारणसूचक।

१. **संयोजक** में केवल एक वाक्य दूसरे से समान या असमान अवधारण के साथ युक्त रहता है। जैसे- मैं आगे बढ़गया और तू पीछे रहगया। वस्त्र केवल शोभा ही केलिये नहीं हैं, परन्तु उनसे स्वास्थ्य की रक्षा भी होती है। एक तो मेरे पाँव में दाभ की पैनी अनी लगी है दूसरे कुरे की डाल में अंचल उलझा है।

२. **विभाजक** के मुख्यवाक्यों में व्यावृत्ति या विकल्प का सम्बन्ध रहता है। जैसे–राजा प्रजा का रक्षक है, भक्षक नहीं। न वहाँ कोई मनुष्य मिला, न कोई पशु दिखाई दिया।

३. **विरोधदर्शक** के मुख्यवाक्यों में परस्पर विरोध रहता है। जैसे–आपसे बहुत कुछ आशा थी, परन्तु वह फलवती न हुई। मुझे सत्य बोलना चाहिये- परन्तु वह अप्रिय न हो।

४. **कारणसूचक** के मुख्यवाक्यों में परस्पर फल और कारण का सम्बन्ध रहता है। जैसे–आप उसे बहुत चाहते थे, इसीलिये वह नष्ट हुआ। हिमालय पर्वत परमरमणीय है, क्योंकि वहाँ प्रकृति के वास्तविक दर्शन होते हैं।

नोट–जब संयुक्तवाक्य के अंशों में उद्देश्य, विधेय इत्यादि की पुनरावृत्ति नहीं करके अव्यय इत्यादि से काम चलाते हैं तब उसे सङ्कुचितवाक्य

कहते हैं। जैसे-राम और श्याम एक ही शिक्षक से पढ़ते हैं। मैंने पुस्तकें खरीदीं और पढ़ीं। न उसमें मनुष्य थे न जानवर। अब वह राजर्षि के नाम से नहीं, वरन ब्रह्मर्षि के नाम से प्रसिद्ध होगये। गुरुजी बीमार हैं, इसलिये पढ़ाने नहीं आये।

वाक्यभेद।

(२)

क्रिया के अनुसार वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-कर्तृप्रधान, कर्मप्रधान, और भावप्रधान।

कर्तृप्रधान की क्रिया कर्तृवाच्य, कर्मप्रधान की कर्मवाच्य और भावप्रधान की भाववाच्य होती है। जैसे-(१) राम पुस्तक पढ़ता है। (२) राम ने पुस्तक पढ़ी। सीता से ग्रन्थ पढ़ागया। (३) रानी ने सहेलियों को बुलाया। चलाजाय। बैठाजाय। रानी से सोया नहीं जाता।

वाक्यभेद।

(३)

सभी वाक्य नीचे लिखे सात रूपों में मिलते हैं—

१. **विधानार्थक**-जिससे किसी बात का होना पायाजाय। जैसे-रामजी लंका गये। लड़कियाँ लिख रही हैं। २. **निषेधार्थक**-जिससे किसी बात का न होना पायाजाय। जैसे-उसने पुस्तकें नहीं लिखीं। ३. **आज्ञार्थक**-जिससे आज्ञा समझीजाय। जैसे-वहाँ जाओ। बैठा जाय। भात मत खाना। ४. **प्रश्नार्थक**-जिससे प्रश्न समझाजाय। जैसे-कहाँ जाते हो ? यह सड़क कहाँ गई है ? ५. **विस्मयादिबोधक**-जिससे विस्मय आदि समझाजाय। जैसे-अहह ! क्या ही उत्तम दृश्य है ! ६. **इच्छार्थक**-जिस से इच्छा जानीजाय। जैसे-जय हो। भगवान् आपका भला करे। ७. **सन्देहार्थक**-जिससे सन्देह या संभव का बोध हो। जैसे-शायद मैं आऊँ। राम जाता होगा।

३७. अभ्यास।

१. स्वरूप के अनुसार वाक्य कितने प्रकार के होते हैं ? उदाहरण दो। २. समानाधिकरणवाक्य किसे कहते हैं ? उदाहरण दो। ३. आश्रितवाक्य और समानाधिकरणवाक्य में क्या भेद है ? उदाहरण दो। ४. आश्रितवाक्य कितने प्रकार के होते हैं ? उदाहरण दो। ५. समानाधिकरणवाक्य कितने प्रकार के हैं ? उदाहरण दो। ६. सङ्कुचितवाक्य किसे कहते हैं ? उदाहरण दो। ८. सभी प्रकार के वाक्य किन किन रूपों में मिलते हैं ? एक एक उदाहरण दो। ९. नीचे लिखे वाक्यों में कौन किस प्रकार का है ? तीनों वाक्यभेदों के अनुसार बताओ।

"जो किसी अच्छे काम में आप प्रवृत्त होता है उसकी सहायता ईश्वर करते हैं।" यह उपदेश माँ के मुँह से बचपन में मातृभक्त गारफील्ड को बार बार सुनने में आता था। बुद्धिमती माँ का उपदेश गारफील्ड कभी न भूले।

उसने इन सब विषयोंका ऐसा उत्तर दिया कि जिसके स्मरण करनेसे हँसी आती है। उसने उत्तर दिया कि सब कुशल है, परन्तु राजकुमार को तृप्ति न हुई। अब भूमि एक सी आई, दो ही सरपट में लेलेंगे। केश खड़े करके और कनौती उठाकर घोड़े दौड़े क्या हैं, उड़ आये हैं।

१०. नीचे लिखे प्रत्येक शब्द से मिश्रवाक्य बनाओ।

कि, जो, जैसा, जितना, जब, वहाँ, उधर, जैसे, तथापि।

११. नीचे लिखे प्रत्येक शब्द से संयुक्त वाक्य बनाओ।

क्योंकि, वरन, परन्तु, और, इसलिये, अथवा, तथा।

१२. नीचे लिखे प्रत्येक वाक्यांश से एक एक संयुक्त वाक्य बनाओ।

वस्त्र केवल शोभाही के लिये नहीं हैं। दूसरे कुरे की डाल में अंचल उलझा है। राजा प्रजा का रक्षक है। नहीं तो मनुष्य जातिकी स्त्रियों में इतनी दमक कहाँ पाइये। मेरी मनोकामना सिद्ध होनेके लक्षण तो दिखाई देते हैं।

१३. नीचे लिखे प्रत्येक वाक्यांश से एक एक मिश्र वाक्य बनाओ। मैं यह पूछता हूँ। कि सखी ने ब्याह की बात कहीं हँसी से न कही हो। जो जंगल से लाये गये थे। इतना कोई न करेगा। तो एक बात कहूँ।

वाक्यरचना (Syntax).

व्याकरण से सिद्ध किये पदों को मेलके अनुसार यथाक्रम रखने को वाक्यरचना कहते हैं ।

मेल (Concord).

वाक्य का एक पद दूसरे से लिङ्ग, वचन, पुरुष, काल और नियम इत्यादि का जो सम्बन्ध रखता है उसे **मेल** कहते हैं । जब वाक्य में दो शब्द एक ही लिङ्ग, वचन, पुरुष, काल और नियम के हों तब वे आपस में मेल, समानता या सादृश्य रखनेवाले कहेजाते हैं ।

हिन्दी में **कर्त्ता या कर्म के साथ क्रिया का, संज्ञा के साथ सर्वनाम** का, **सम्बन्ध** × **के साथ सम्बन्धी का** और **विशेष्य के साथ विशेषण का मेल** रहता है। कुछ और शब्द भी आपस में सम्बन्ध रखते हैं जो **नित्यसम्बन्धी** कहलाते हैं ।

कर्त्ता और क्रिया में मेल ।

१. चिन्हरहित कर्त्ता की **क्रिया कर्त्ताही के अनुसार** होती है, चाहे वाक्य में कर्म किसी अवस्था में रहे या न रहे । जैसे-श्याम पढ़ता है । सीता पढ़ती है । राम का बालक आता है । सब बालक आते हैं । मैं आता हूँ । वे आते हैं । स्त्री जाती है । स्त्रियाँ जाती हैं । श्याम रोटी खाता है । सीता दासी को पुकारती ।

२. यदि वाक्य में एक ही लिङ्ग, वचन और पुरुष के कई चिन्हरहित कर्त्ता 'और' (या इसी अर्थ के किसी अन्य योजक शब्द) से * संयुक्त हों तो **क्रिया उसी लिङ्ग में बहुवचन होगी,** परन्तु यदि उनके समूह से एकवचन का अर्थ समझा जाय तो **क्रिया एकवचन** होगी । जैसे-राम

+ का, की, के चिन्हयुक्त सम्बन्धपद जब विशेषण मानाजाय तब सम्बन्ध और सम्बन्धी का, नहीं तो केवल सम्बन्ध के चिन्ह और सम्बन्धी का ।

* 'समासप्रयोग' और 'विरामचिन्ह' देखो ।

और श्याम आते हैं। सीता' सावित्री और माधुरीवाटिका में गईं हैं। उसका उत्साह और आनन्द बढ़ा है। भेड़ियाँ और बकरियाँ चररही हैं। वह और वह जाते हैं।

३. यदि वाक्य में दोनों लिङ्गों और वचनों के अनेक चिन्हरहित कर्त्ता हों तो **क्रिया बहुवचन के सिवा लिङ्ग में अन्तिम कर्त्ता के अनुसार होगी**। जैसे-एक घोड़ा, दो बैल और बहुत सी बकरियाँ चरती हैं। एक बकरी, दो गायें और बहुत से बैल चरते हैं।

नोट-(क) ऐसी जगह प्रायः **बहुवचन और पुल्लिङ्ग कर्त्ता अन्त में** रहता है। (प्रयोग में इसका विशेष बिचार नहीं देखा जाता)

(ख) यदि पिछला कर्त्ता एकवचन हो तो क्रिया एकवचन और बहुवचन दोनों होती है। जैसे-तुम्हारी बकरियाँ, उसकी घोड़ी और मेरा बैल उस खेत में **चरता है (चरते हैं)**।—पण्डित अम्बिकादत्त व्यास।

(ग) यदि दोनों लिङ्गों के एकबचन कर्त्ता **और** (या इसी अर्थ के किसी अन्य योजक शब्द) से संयुक्त हों तो **क्रिया प्रायः पुल्लिङ्ग और बहुवचन होती है**। जैसे—"किसी गाँव में एक बुढ़वा और एक बुढ़िया रहते थे। आजही राजा और रानी गये हैं। इस राज्य में बाघ और बकरी एक घाट पानी पीते हैं।"

(घ) समस्त शब्दों की क्रियाओं के नियम **'समासप्रयोग'** में देखो।

४. यदि चिन्हरहित अनेक कर्त्ता हों और उनके बीच में विभाजक शब्द लावें तो **क्रिया लिङ्ग और वचन में अन्तिम कर्त्ता के अनुसार होती है**। जैसे-मेरी बेटी या उसका बेटा आता है। आज मोहन का घोड़ा या राम की बकरियाँ बिकेंगी।

५. यदि चिन्हरहित अनेक कर्त्ताओं और क्रिया के बीच में कोई समुदायवाचक शब्द आपड़े तो **क्रिया, लिङ्ग और वचन में समुदायवाचक शब्द के अनुसार होगी**। जैसे-लड़ाई में बालकयुवा, नरनारी, राजारानी सबके सब पकड़े गये या भीड़ की भीड़ पकड़ी गई।

६. यदि चिन्हरहित अनेक कर्ताओं से बहुवचन का अर्थ निकले तो

क्रिया बहुवचन और यदि एकवचन का अर्थ लें तो **क्रिया एकवचन होती है,** चाहे कर्त्ताओं के आगे समुदायवाचक शब्द हो या न हो। जैसे– इसके मोल लेने में दो रुपये सात आने तीन पैसे लगे हैं। धन, जन, स्त्री और राज मेरा क्यों न गया? खेतबारी, घरद्वार मेरा सब चलागया। चार मास और तीन बरस इसके करने में लगा है। मेरा उत्साह, धैर्य और आनन्द बढ़ताजाता है। इसके मोल लेने में दो रुपया आठ आना लगा है। दाल और भात अच्छा बना है। (**यह नियम जीवधारी केलिये नहीं है**)

७. यदि वाक्य में उत्तमपुरुष, मध्यम और अन्यपुरुष दोनों के साथ या किसी एक के साथ कर्त्ता होकर आवे तो **क्रिया उत्तमपुरुष के अनुसार होगी।** यदि कर्त्ता केवल मध्यम और अन्यपुरुषों में हो तो **क्रिया मध्यमपुरुष के अनुसार होगी।** जैसे–तुम, वह और हम चलेंगे। तुम, वह और मैं चलूँगा। तुम और हम चलेंगे। तुम और मैं चलूँगा। वह और हम चलेंगे। वह और मैं चलूँगा। तुम और वह (श्याम) चलोगे। ×

नोट–वाक्य में पहले मध्यमपुरुष आता है और अन्त में उत्तमपुरुष। अन्यपुरुष दोनों के बीच में लाते हैं। ÷

८. आदर केलिये चिन्हरहित एकवचन कर्त्ता की **क्रिया भी बहुवचन होती है।** जैसे–पण्डितजी आये हैं। वह जाते हैं।

नोट–परमेश्वर केलिये एकवचन ही क्रिया का प्रयोग होता है। जैसे–ईश्वर जानता है, हम झूठ नहीं बोलते।

९. जब कोई स्त्री, अपने पति या परिवार की ओर से या किसी ऐसे समुदाय की ओर से जिसमें स्त्री पुरुष सब हों, कुछ कहती है तब वह भी अपने लिये **पुल्लिङ्ग और बहुवचन क्रिया का प्रयोग करती है।**

× ऐसी जगह दिल्ली के उर्दूवाले पण्डित क्रिया को सदा पुल्लिङ्ग, बहुवचन और अन्यपुरुष में रखते हैं। ÷ इस क्रम को कोई कोई नहीं भी पालते।

जैसे—ब्राह्मणी ने कुन्ती से कहा "न जानें, हम बकासुर राक्षस के अत्याचार से कैसे छुटकारा पावेंगे।"

१०. **क्रिया मुख्य कर्त्ता के अनुसार होती है,** कर्त्ता के विधेय-स्वरूप के अनुसार नहीं। जैसे—लड़की बमिारी से सूखकर काठ होगई। वह राजा स्त्री होगया। 'यह विरोध ही का फल है कि अर्जुन विराट् के घर स्त्रीरूप में बृहन्नला कहलाता है।' स्त्रियाँ झुंड बनगई। औरतें भी आदमी कहलाती हैं।

११. एक कर्त्ता की दो या अधिक क्रियाएँ भिन्न भिन्न कालों में हों तो **कर्त्ता का चिन्ह केवल पहली क्रिया के अनुसार आता है,** परन्तु शेष क्रियाएँ भी नियमबद्ध रहती हैं। जैसे—'मेरे सब लड़कों ने साथ साथ एकही स्थान में विद्या सीखी और खेलेकूदे।'

१२. दो या अधिक क्रियाओं के "समान कर्त्ता" को बारबार न लाकर **केवल एक ही बार लाते हैं** और यदि क्रियाओं के उत्तर अंश समान हों तो उन्हें सबों में नहीं रखते **केवल अन्तिम क्रिया में रखते हैं।** जैसे—सीता खातीपीती थी।

१३. एक वाक्य में **पूर्वकालिक का वही कर्त्ता होता है** जो समापिका क्रिया का होता है, परन्तु कर्त्ता का चिन्ह पूर्वकालिक के अनुसार नहीं होता। जैसे—मैं पाठशाला में बैठकर पढ़ता हूँ।

कर्म और क्रिया में मेल।

१. यदि कर्म चिन्हरहित हो तो चिन्हसहित कर्त्ता की **क्रिया कर्म के अनुसार होती है,** परन्तु यदि दोनों चिन्हयुक्त हों तो **क्रिया सदा एकवचन, पुल्लिङ्ग और अन्यपुरुष में रहती है।** जैसे—मैंने रोटी खाई। मुझसे रोटी खाईगई। रानी ने भात खाया। रानी ने सहेलियों को बुलाया। दासी कहती है कि रानी ने मुझे मारा। उन्होंने उसे अधिक आदर की चीज़ समझा है।

नोट—'श्रोताओं ने खूब ही उत्साह और आनन्द प्रकट किया।' इस

में 'उत्साह और आनन्द' से एकवचन का अर्थ लियागया है। (पीछे 'कर्त्ता और क्रिया में मेल' शीर्षक पाठ का छठा नियम देखो।)

२. यदि कर्म न होसके या लुप्त हो तो चिन्हसहित कर्त्ता की **क्रिया सदा एकवचन पुल्लिङ्ग और अन्यपुरुष में रहती है।** जैसे–मुझ-से बैठा नहीं जाता। मैंने पढ़ा है। रानी ने देखा था।

कर्त्ता, कर्म और क्रियासम्बन्धी नोट—

(१) **अङ्गवाक्य** और **क्रियार्थक संज्ञा** के अनुसार होनेवाली क्रियाएँ सर्वदा एकवचन, पुल्लिङ्ग और अन्यपुरुष में होती हैं। जैसे–तूने कहा कि पुस्तक अच्छी है। इस कार्य केलिये उसका दौड़नाधूपना कुछ भी लाभ-दायक नहीं हुआ। टहलना अच्छा है।

(२) क्रिया जिसके अनुसार होनेवाली है, यदि उसके **लिङ्ग में सन्देह** हो तो **क्रिया पुल्लिङ्ग** ही होती है। जैसे–उसने कुछ न किया। महाभारत में लिखा है। दर्वाजा कौन खटखटाता है?

(३) कतिपय संज्ञाओं के **केवल बहुवचन** प्रयोग मधुर जान पड़ते हैं। जैसे–"प्राण निकलगये। उसने प्राण छोड़दिये। बूँदें पड़रही हैं। आँसू टपकपड़े। आपके दर्शन कब होंगे? अक्षत छीटेगये। ओठ फड़कने लगे।

संज्ञा और सर्वनाम में मेल।

१. सर्वनाम में उसी संज्ञा के लिङ्ग और वचन होते हैं **जिसके बदले वह आता है,** परन्तु कारकों में भेद रहता है। जैसे–राम ने कहा कि मैं आऊँगा। सीता कहती है कि मैं यहाँ नहीं रहूँगी, मुझको वन ही में सुख मिलेगा।

२. सम्पादक, ग्रन्थकार, किसी सभा के प्रतिनिधि और बड़े बड़े अधिकारी अपने लिये **मैं के बदले हमका प्रयोग** करते हैं। जैसे–हमने पहले किसी अङ्क में यह बात लिखी है। हम चौथे अध्याय में यह बात लिख आये हैं। हम अपने सभासदों से इसके विषय में फिर राय लेंगे। हम अपने राज्य का प्रबन्ध कर लेंगे।

नोट-(१) वक्ता केवल अपने लियेभी **मैं** के स्थान में बहुधा **हम** का प्रयोग करते हैं। जैसे-'हम आधी दक्षिणा लेके क्या करें ?' (भारतेन्दु)

३. एक प्रसंग में किसी एक संज्ञा के बदले पहली वार जिस वचन **में सर्वनाम का प्रयोग करें** आगे केलिये भी वही वचन रखना उचित है। एक ही संज्ञा केलिये **आप** और **तुम** अथवा **महाराज** और **आप** कहना असंगत है। जैसे-राम ने श्याम से कहा कि मैं तुझे कभी न पढ़ाऊँगा, क्योंकि **तुमने** हमारी पुस्तकें, जिन्हें **हमने तुम्हारे** बाप से खरीदा था, चुरा ली हैं। 'जिस बात की चिन्ता महाराज को है सो कभी न हुई होगी, क्योंकि तपोवन के विघ्न तो केवल **आपके** धनुष की टङ्कार ही से मिटजाते हैं।' 'आपने बड़े प्यार से कहा कि आ बच्चे, पहले तू ही पानी पी ले।' 'उसने **तुम्हें** विदेशी जान **तुम्हारे** हाथ से जल न पिया।'

नोट-कभी कभी एक ही वाक्य में मैं और हम एकही संज्ञा केलिये क्रमशः व्यक्ति और प्रतिनिधि के अर्थ में आते हैं। जैसे-'मैं चाहता हूँ कि आगे को ऐसी सूरत न हो और हम सब एकचित्त होकर रहें।'

४. कई संज्ञाओं के बदले का एक सर्वनाम **वही लिङ्ग और वचन लेगा** जो उनके समूह से समझेजायँगे। जैसे-राम और श्याम पढ़ने गये हैं, परन्तु वे शीघ्र आवेंगे। श्राताओं ने जो उत्साह और आनन्द प्रकट किया उसका वर्णन नहीं होसकता।

५. '**तू**' **अनादर और प्यार अर्थ** में, किसी संज्ञा के बदले तथा देवताओं केलिये आता है। जैसे-अरे शठ तू क्या करता है ? अरे बेटा, तू मुझसे क्यों रूठगया है ? हे ईश्वर ! तू संसार का स्वामी है। तू अनन्त है। तू घटघट की जानता है। तेरी महिमा अपरम्पार है। (**अब ऐसी जगह तुम भी आने लगा है।**)

६. मध्यमपुरुष मे आप शब्द की अपेक्षा अधिक आदर सूचित करने केलिये, किसी संज्ञा के बदले ये शब्द आते हैं-(१) **पुरुषों केलिये**-'कृपानिधान, महाशय, महानुभाव, कृपासागर, श्रीमान्, हुजूर, हुजूरवाला, साहिब, इत्यादि। (२) **स्त्रियों केलिये**-श्रीमती, देवी, इत्यादि। जैसे-

यदि कृपानिधान की आज्ञा होती तो यह दास घर जाता। हुज़ूर का क्या हुक्म होता है ? श्रीमती की आज्ञा कब होगी ?

७. बड़ों के सामने अपनी हीनता और दीनता दिखलाने केलिये उत्तमपुरुष के बदले ये शब्द आते हैं-(१) **पुरुषों केलिये**-सेवक, दास, सेवकाधम, विनयावनत, बन्दा, इत्यादि। (२) **स्त्रियों केलिये**-दासी, आज्ञाकारिणी, इत्यादि। जैसे-इस सेवक को भी याद में रखियेगा। इस दासी ने क्या अपराध किया है ?

८. आदरार्थ अन्यपुरुष ' आप ' के बदले ये शब्द आते हैं- (१) **पुरुषों केलिये** -श्रीमान, प्रभुवर, मान्यवर, हुज़ूर, इत्यादि (२) **स्त्रियों केलिये**-श्रीमती, देवी, इत्यादि। जैसे-क्या तुम जानते हो कि श्रीमान् कब आवेंगे ? श्रीमती के विषय में आपके पास कोई समाचार आया है ?

सम्बन्ध * और सम्बन्धी में मेल।

१. सम्बन्ध के चिन्ह में **वही लिङ्ग** और **वही वचन** होते हैं **जो सम्बन्धी के होते हैं**। जैसे-सीता का घर। सीता के दो पुत्र। राम की घोड़ी। राम की घोड़ियाँ।

२. **आकारान्त विशेषण के** परिवर्तन में जो जो नियम लगते हैं वे **ही नियम सम्बन्ध के चिन्ह केलिये भी हैं**। जैसे-अच्छा घोड़ा-राम का घोड़ा। अच्छे घोड़े-राम के घोड़े। अच्छे घोड़े को-राम के घोड़े को। अच्छे घोड़ों को-राम के घोड़ों को। अच्छी घोड़ी-राम की घोड़ी। अच्छी घोड़ियाँ-राम की घोड़ियाँ।

नोट-यदि समस्त शब्द सम्बन्धी होकर आवे तब भी ऊपर ही के नियम लगते हैं। (समासप्रयोग देखो।)

३. यदि सम्बन्धी में कई संज्ञाएँ बिना समास के आवें तो सम्बन्ध का चिन्ह उस संज्ञा के अनुसार होगा **जिसके पहले वह रहेगा**। जैसे-राम के बैल, गाय और बकरियाँ चरती हैं। मेरी माता और पिता जीवित हैं।

---

* पीछे मेल शीर्षक पाठ की पादटिप्पणी देखो।

विशेषण और विशेष्य में मेल।

☞ कई बातें पीछे 'विशेषण' में देखो।

१. विशेषण के लिङ्ग और वचन आदि **विशेष्य के अनुसार** होते हैं, चाहे वह विशेषण के आगे रहे या पीछे। जैसे—यह पीली धोती है। यह धोती पीली है। पीले कपड़े लाओ। कपड़े पीले हैं।

नोट—(१) जब कर्मकारक के आगे चिन्ह न रहे तब उसका विधेय-विशेषण ठीक ऊपर के नियम से कर्म ही के अनुसार होता है। जैसे—अपनी लाठी सीधी करो। कोई चीज़ समझो न अपनी बुरी तुम। मैंने लाठी सीधी की। मैंने यह बात पूरी की।

(२) जब कर्मकारक के आगे चिन्ह रहे तब उसका विधेयविशेषण या तो कर्म के अनुसार होगा या सदा एकवचन पुल्लिङ्ग रहता है। जैसे—उसने लाठी को सीधी किया या उसने लाठी को सीधा किया। 'रही बात को अपनी करते बड़ी तुम।' "हम आप जल बुझे मगर इस दिल की आग को, सोने में हमने 'ज़ौक' न पाया बुझा हुआ।"

(३) समय, परिमाण या धन का विशेषण यदि बहुवचन संख्यावाचक हो तो विशेष्य, कारकादि के प्रत्यक्ष चिन्हों के साथ प्रायः एकवचन रूप में रहता है, परन्तु जब चिन्ह प्रत्यक्ष नहीं रहते तब बहुवचन रूप में भी आता है। जैसे—तीन **घण्टे** की छुट्टी मिली। पाँच **रुपये** की पुस्तक लाये। चार **सेर** का आटा बिका। तीन **घण्टे** लगे। मैं चार **रुपये** दूँगा।

२. यदि कई विशेषणों का एक ही विशेष्य हो तो **सबके सब उसी विशेष्य के अनुसार होंगे** तथा अन्तिम विशेषण के पहले 'और, या' इत्यादि में से कोई एक समुच्चायक आवेगा। जैसे—काला और उजला घोड़ा लाओ। काले और उजले घोड़े लाओ। काले और उजले घोड़ों को लाओ। मैंने स्वप्न में एक बड़ी ऊँची और डरावनी मूर्ति देखी।

३. यदि एक विशेषण की कई समासरहित संज्ञाएँ विशेष्य हों तो विशेषण लिङ्ग और वचन में **उसी संज्ञा के अनुसार होगा जिसके समीप वह रहेगा**। जैसे—छोटे लड़के और लड़कियाँ। ऐसी माता और पिता।

नोट—समस्तशब्द के विशेषण केलिये ' समासप्रयोग ' देखो ।
उदाहरण—अच्छे माबाप । हमारे राजारानी ।

४. यदि क्रिया का साधारण रूप किसी संज्ञा के आगे विधेयविशेषण होकर सम्प्रदान या क्रिया की पूर्ति का अर्थ दे तो वह लिङ्ग वचन आदि में **उसी संज्ञा के अनुसार होगा**, परन्तु यदि वह उस संज्ञा के सम्बन्धी का अर्थ दे तो **ज्यों का त्यों रहेगा** । जैसे—'मुझे प्रतीक्षा करनी होगी, बुद्धदेव की है यह उक्ति—कब तक जब तक तुच्छ जीवतक पा न सकें पृथ्वी पर मुक्ति ।' दुःख की व्यथा उठानी पड़ेगी । जो बात होनी थी, होगई । जो उपदेश करना था, करदिया । जो रुपये देने थे, दे दिये । मुझे रोटी खानी चाहिये । उसे दस काम करने चाहिये + । क्या जान देना आसान है ? झूठमूठ कसम खाना छोड़दो । रोटी बनाना सीख लो ।

नोट—ऊपर के उदाहरणों में जहाँ **हमने सम्प्रदान इत्यादि या सम्बन्ध का अर्थ लिया है** वहाँ कोई कोई प्रतिकूल अर्थ भी करते हैं और अपने अर्थ के अनुसार वाक्यों में भेद डालते हैं । जैसे—" जो बात होनी थी, होगई । रुपये की हानि सहना पड़ेगी । दुःख की व्यथा उठाना पड़ेगी । उसे भिक्षा माँगना पड़ेगी । झूठमूठ कसम खाना छोड़ दो । रोटी बनानी सीख लो ।" हमारे जानते ये वाक्य मधुर नहीं जानपड़ते, अतएव प्रतिकूल अर्थ करना भी खटकता है ।

५. भूत और वर्तमानकालिक कृदन्त विशेषण जब क्रिया की विशेषता बतलाते हैं तब उनके **अन्त्य स्वर ' आ ' के बदले सर्वदा 'ए' लाते हैं** । जैसे–लड़की दौड़ते दौड़ते थकगई । थकगई मैं दुःख सहते सहते, थकगये आँसू बहते बहते ।

नित्यसम्बन्धी शब्द ।

वाक्यों में कुछ शब्द ऐसे आते हैं **जो नित्यसम्बन्धी होते हैं** । बहुतसे अव्यय, कतिपय सर्वनाम और थोड़ेसे अन्य शब्द नित्यसम्बन्धी

+ कोई 'चाहिये' का बहुवचन चाहियें बनाते हैं, परन्तु यह खटकता है

है । * नित्यसम्बन्धी शब्दों में भेद डालने से वाक्य अशुद्ध होजाता है । नीचे थोड़ेसे प्रयोग दिये जाते हैं ।

१. **यद्यपि** और **तथापि** में नित्यसम्बन्ध है । 'तथापि' के बदले **किन्तु, पर** या **परन्तु** का लिखना खटकता है, परन्तु '**तौभी**' लिख सकते हैं । जैसे–यद्यपि वह नहीं आया, तथापि मैंने वहाँका सारा वृत्तान्त सुनलिया । यद्यपि वह नहीं आता है तौभी हम उसको प्यार करते हैं ।

२. '**जब**' के साथ '**तब**' का सम्बन्ध है 'तब' के बदले 'तो' का प्रयोग खटकता है । जैसे–जब राम आया तब मैं गया ।

३. '**यदि**' के साथ '**तो**' का सम्बन्ध है 'तो' के बदले 'तब' लिखना खटकता है । जैसे–'यदि मनुष्य मरणशील न होता तो उसकी श्रेष्ठता का कहना ही क्या था !

नोट–(१) 'यदि' के बदले इसी अर्थ में 'जो' भी आता है । जैसे-जो आना हो तो कल ही आओ ।

(२) कभी कभी नित्यसम्बन्धी शब्द गुप्त भी रहते हैं । जैसे–आप आवेंगे तो मैं जाऊँगा । जब आप आवें, मेरी पुस्तक लाइयेगा ।

६८. अभ्यास (Exercise).

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो–

१. सीता ने दासी को पुकारना होगा । रोटी और दाल अच्छा है । एक बैल, दो घोड़ा और बहुत सी गायें चरता है । आपके राजा और रानी कहाँ रहती हैं ? आज मेरी बेटी या उसका भाई आवेंगे । मैं, तू और वह चलेगा । ईश्वर जानते हैं, हम झूठ नहीं बोलता । वह स्त्री बीमारी से सूखकर काठ होगया । स्त्रियाँ भी मनुष्य कहलाता है । श्रोता खूब ही उत्साह और आनन्द प्रकट किये । रानी भात खाई थी । राम ने कही कि पुस्तक अच्छी है । रानी से बैठी नहीं जाती । रामायण में लिखी है । राम प्राण छोड़ दिया । आप खाये ? हाँ, हम खाये । आप कहा था ? जी नहीं, हम नहीं कहा था ।

* 'नित्यसम्बन्धी शब्द' पीछे स्थान स्थान पर दिये गये हैं ।

२. राम श्याम से कहा कि मैंने तुझे कभी न पढ़ाऊँगा, क्योंकि तुम हमारी पुस्तकें, जिसे हम तुम्हारे बाप से खरीदी थी, चुरा लिया है। जिस बात की चिन्ता महाराज को है सो कभी न हुआ होगा, क्योंकि तपोवन के विघ्न तो केवल आपके धनुष की टंकार ही से मिटजाता है। आप बड़े प्यार से कहा कि आ बच्चे, पहले तू ही ने पानी पी ले। वह तुम्हें विदेशी जान तुम्हारे हाथ से जल न पिया। श्रोता जो उत्साह और आनन्द प्रकट किये उनके वर्णन नहीं हो सकते। मैं पाँचवें अध्याय में यह बात लिखा हूँ।

३. चार घण्टों का छुट्टी मिला। मैंने तीन रुपयों का पुस्तक लाई। मैं रोटी को पतली बनाई। छोटी लड़के और लड़कियाँ आई हैं। दुःख की व्यथा उठाना पड़ेगा। बातें करना पड़ेगी। आपको दाल खाना चाहिये। रोटी बनानी सीख लो। मैं पीड़ा सहती सहती थक गई। यदि आप नहीं आते तब मुझे कौन सहायता देता? यद्यपि आप नहीं आया, परन्तु मैं सभी बातें जान लिया। मैं ज़रा ही सा चुहका था कि वह फूटकर रोदिया। वह चोर को पकड़ित है।

क्रम (Order).

(१)

१. वाक्य में उद्देश्य या कर्त्ता को पहले और विधेय या क्रिया को अन्त में रखते हैं। जैसे—बालक खाता है।

नोट—कर्त्ता या क्रिया चाहे एक हो या अनेक, दोनों अपने ठीक स्थानों पर आते हैं और जब अनेक हों तब अन्तिम कर्त्ता या क्रिया के पहले और, या इत्यादि समुच्चायक अव्यय लाते हैं। जैसे—राम या मोहन आता है। सीता आई, बैठी और रोई।

२. उद्देश्य के विस्तार को उद्देश्य के पहले और विधेय के विस्तार को विधेय के पहले रखते हैं। जैसे—**सुशील** बालक **धीरेधीरे** पढ़ता है।

३. कर्मकारक को सकर्मक क्रिया के पहले और गौणकर्म को मुख्य कर्म के पहले रखते हैं। जैसे—राम ने घर में **पुस्तक** निकाली। राजा ने **दरिद्रों** को वस्त्र दिये।

४. 'करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण' ये चार कारक कर्त्ता

और कर्म के बीच में **उलटे क्रम से** आते हैं, अर्थात् पहले अधिकरण, तब अपादान, तब सम्प्रदान और तब करण। जैसे-राम ने **घर में आलमारी से श्याम केलिये हाथ से** पुस्तक निकाली। **पं० रामावतार शर्मा।**

नोट—जब एक साथ अनेक अधिकरण आवें तब पहले कालाधिकरण लाते हैं। जैसे-सन्ध्या में घरघर आनन्द रहता है। वर्षाऋतु में आकाश में बादल छाये रहते हैं।

५. सम्बोधन वाक्य में सबसे पहले आता है। जैसे—**हे राम!** मेरी खबर क्यों नहीं लेते?

६. सम्बन्धी के पहले सम्बन्ध पद को, विशेष्य के पहले विशेषण को और क्रिया के पहले क्रियाविशेषण को लाते हैं, परन्तु विधेयविशेषण और उपाधिसूचक विशेषण विशेष्य के आगे आते हैं। जैसे—**राम का** सिपाही **अच्छे** घोड़ों को **खूब** पहचानता है। आपका पुत्र **सुशील** है। मोहनलाल **मिश्र** आये हैं।

नोट—विशेषण का भी विशेषण होता है जो उसके पहले आता है। जैसे-अत्यन्त सुन्दर बालक। बहुत ही अच्छा घोड़ा। बड़ा भारी वृक्ष।

(२) सम्बन्धी का विशेषण सम्बन्धपद के पहले रखना उचित नहीं, परन्तु यदि भ्रम न हो तो रख भी सकते हैं। जैसे-'आश्रम की शीतल, मन्द और सुगन्ध वायु श्रम को नाश करती है। सरोवर के समीप एक बड़ा भारी शाल्मली का वृक्ष था।' (कादम्बरी)

(३) जब एक ही विशेष्य के कई विशेषण एक साथ आवें तब अन्तिम विशेषण के पहले और, या इत्यादि समुच्चायक अव्यय लाते हैं। जैसे-'महाराज, यह सुआ सकलशास्त्रवेत्ता, राजनीतिज्ञ, सद्वक्ता, चतुर, सकलकलाभिज्ञ, महाकवि और गुणी है।' (कादम्बरी)

(४) 'केवल, सिर्फ़, प्रधानतः, कठिनता से' इत्यादि शब्द जिसके पहले आते हैं उसीकी विशेषता बतलानेलगते हैं। इनको प्रयोग करते समय विशेष ध्यान रखना चाहिये, नहीं तो अर्थ में उलटफेर होजायगा। जैसे-केवल राम चिट्ठी को पढ़ सकता है। राम केवल चिट्ठी को पढ़सकता है। राम चिट्ठी को केवल पढ़ सकता है।

(५) यदि एक सम्बन्धी के कई अधिकारी सम्बन्धपद हों तो सम्बन्ध के चिन्ह को कभी अन्तिम अधिकारी के आगे और कभी सभी के आगे लाते हैं। जैसे-यह माधुरी और कुन्ती की माता हैं। वह तुम्हारा और मेरा घर है।

(६) सम्बन्धपद के समानाधिकरण में कई संज्ञाओं के रहनेपर भी सम्बन्ध का चिन्ह केवल अन्तिम संज्ञा के आगे आता है। जैसे-यह ग्रियर्सन साहब, स्थानीय कलक्टर और मजिस्टर की चिट्ठी है।

(७) क्रिया की पूर्ति उसीके पहले आती है। जैसे-एक पलंग बिछाहुआ था। उसका लड़का चोर निकला।

७. प्रश्नवाचक शब्द को उसीके पहले रखना चाहिये जिसके विषय में मुख्यतः प्रश्न किया जाता है। जैसे-"वह **कौन शिक्षक** है? वह शिक्षक **कौन है**? राम **क्या बनाता है**? **क्या राम** बनाता है?" इन चारों वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्दों ही के कारण अर्थभेद होगये हैं।

यदि पूरा वाक्य ही प्रश्न हो तो प्रश्नवाचक शब्द को वाक्य के आरम्भ में रखते हैं। जैसे-**क्या**, आपको यही करना था?

नोट—जब वाक्य में प्रश्नवाचक शब्द नहीं आता तब बोलने के ढंग और वक्ता के मुख की आकृति से प्रश्न समझाजाता है। जैसे-मुझे ठहरना होगा? कुछ पूछना चाहते हो?

८. पूर्वकालिक क्रिया समापिका क्रिया के पहले आती है। जैसे-राम खाकर पढ़ता है। मोहन सोकर पढ़ेगा। सीता ने देखभालकर खाया।

नोट—(१) पूर्वकालिक और समापिका दोनों क्रियाएँ अपने अपने विस्तार को अपने से पहले रखती हैं। जैसे-राम अपने घर में रोटी खाकर स्कूल में पुस्तकों को भलीभाँति पढ़ता है।

२. यदि पूर्वकालिक और समापिका दोनों क्रियाओं का एक ही विस्तार हो तो इसे पूर्वकालिक ही से पहले रखते हैं। जैसे-राम ने पाठशाला में मेरी पुस्तक लेकर पढ़ली।

९. विस्मयादिबोधक शब्द को प्रायः वाक्य के आरम्भ में लाते हैं। जैसे-**वाह**! आपने खूब कहा।

१०. वाक्य में आनेवाले दूसरे दूसरे पदों में से जो पद जिसके साथ

अन्वित होसके उसको उसीके पास रखना चाहिये। जैसे—वह घर पर किस हेतु गया है ? देवमन्दिर घर के आगे है।

(२)

ऊपर क्रमनिर्णय के जितने नियम दिये गये हैं, यद्यपि वे मुख्य हैं तथापि उनका निर्वाह भलीभाँति नहीं होता। कारण नीचे लिखेजाते हैं।

१. वाक्य के **जिस भाग या पद की प्रधानता** दिखानी हो उसे पहले रखते हैं ' इससे वाक्य के अन्य अंशों में भी स्थानपरिवर्तन हो जाता है। जैसे—

क्रिया कर्त्ता से पहले—खाता तो हूँ मैं, आप क्यों दुःखी होते हैं ? बुलाहट थी मेरी, गया वह । **पूर्वकालिक क्रिया कर्त्ता से पहले**—मुझे देखकर वह घर में घुसगया। साँप देखकर सभी डरजाते हैं। **कर्म पहले**—तुम्हीं को वह बुलाता है। उसी को मैं मारूँगा। **करण पहले**—छुरी से उसने हाथ काटा । **सम्प्रदान पहले**—आप केलिये मैंने सब कुछ किया। **अपादान पहले**—झूले से वह गिरी तो सही, परन्तु सखियों ने बीच ही में लोकलिया। **सम्बन्ध पहले**—मेरी तो आपने कोई पुस्तक नहीं देखी। **सम्बन्धपद से सम्बन्धी पहले**—घर किसका है? यह पुस्तक मोहन की है। घर मेरा और झगड़ा तुमलोगों में। **अधिकरण पहले**—तिल में तेल है। सिंहासन पर राजा है। **अन्य शब्द सम्बोधन से पहले**—सुनते हो, लड़के ! अभी अभी, बेटा ! **क्रियाविशेषण पहले**—अभी अभी वह यहाँ से उठके गया है । **क्रियाविशेषण कर्म से पहले**—वह भलीभाँति आपको पहचानता है। **विधेयविशेषण पहले**—सच्चे और निराले तो तुम्हारे सभी कार्य होते हैं। **पूरक पहले**—चोर तो उसका लड़का निकला, इसका क्या अपराध ? इत्यादि ।

२. **कविता में** प्रायः सभी पद और किसी किसी के टुकड़े भी स्थान परिवर्तन करते हैं। जैसे—

दो प्राणी भी अवनि व्रज के साथ जो बैठते थे।
तो आने की न मधुवन से बात ही थे चलाते ॥

पूछा जाता परसपर भी व्यग्रता से यही था।
दोनों प्यारे कुवँर अबलौं लौटके क्यों न आये॥ (प्रियप्रवास)

३९. अभ्यास (Exercise).

१. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो—

जब नल का ऐसा दुर्दशा हुई तब उसने दमेन्ती से बोला कि आयसी आपती में हम और तू अलग हो जायँ। दमेन्ती कहा "हे राजा तेरा बात सुन कर मेरा छाती फटता है। ऐसे बिपत्ती में हम तुमको छोड़कर किस तरह जासकते हैं! जब तुम माश्ग का थाका अउर भूषा अपना पूरब सुध समरन करेगा तो हम तेरी दुख का साथी हूँगा।"

मंदिर का भीतर वाला चारिका भीत पर पाथर में खोदाहुआ अनेक प्रकार का देवमूर्तियाँ बना हैं जिनका आकित आरजों का मूरतियों से बहुत मिलते हैं। इनके अतीत्ररक्त उश मंदिर में पाथरों पर अयसी अद्भूत चितरकारीआँ हैं जिशको देखने से असचरज होती है।

बिल्ली उत्तर दी—"हाँ आपकी प्रभुता मुझे शक्तिमान् बिल्ली बनाई है। अभी हम दूसरे बिल्लियों से डर नहीं करता हूँ, पर मैं एक नई बैरी पाई हूँ।

मैं आपका कृपापत्र पाया। बाँच के बड़ा प्रसन्न हुए। आप जो पुस्तकें हमारे पास ऐसे कृपासे भेजे हैं सो बहुत ही अच्छे हैं। मैंने संस्कृत में दो नवीन ग्रन्थ बनाया हूं।

२. नीचे चार पदसमूह हैं। प्रत्येक समूह के शब्दों को इस प्रकार बैठाओ कि एक पूर्ण वाक्य बनजाय।

(१) यह, लोचन भर अच्छा, प्यारी को, देखने का, है। (२) छन्द, कैसी, इस समय, इसकी, चढ़ी, एक, बनाने में, भौंह, लगती है, सुन्दर, और, स्पष्ट, पुलकित, प्रीति, कपोलों से, कैसी, झलक, रही है। (३) खिलने की, छंद, तो, सखा, मैंने, परन्तु, बनालिया, नहीं है, सामग्री। (४) पदतीजा, तू, कोमल, मैं, इस, अपने, कमल के, नखों से, पत्ते पर, लिखलूँगा।

३. नीचे लिखे प्रत्येक वाक्यसमूह में परस्पर क्या भेद है?

(१) केवल शिक्षक इस पुस्तक को पढ़ा सकते हैं। शिक्षक केवल इस

पुस्तक को पढ़ा सकते हैं। शिक्षक इस पुस्तक को केवल पढ़ा सकते हैं। (२) मैं कठिनता से पढ़ सकता हूँ। कठिनता से मैं पढ़ सकता हूँ।

वाक्यार्थबोध ।

वाक्यार्थबोध केलिये आगे लिखी बातों का होना भी आवश्यक है- **आकांक्षा,योग्यता और आसत्ति ।**

१ आकांक्षा-वाक्य में एक पद को दूसरे पद के साथ अन्वय केलिये जो चाह होती है, उसे आकांक्षा कहते हैं। जैसे-'**घोड़ा, बैल, हाथी**' इत्यादि अकेले रहकर वाक्यार्थ नहीं दे सकते जब तक उनके साथ '**चरता है, जाता है, आवेगा**' इत्यादि चाहक पद न आवें।

२. पदों के परस्पर उचित सम्बन्ध को योग्यता कहते हैं। जैसे-यदि कोई कहे कि "**आग से सींचते हैं**" तो यह शुद्ध वाक्य नहीं हुआ, क्योंकि 'सींचते हैं' क्रिया की योग्यता आग से नहीं बल्कि 'जल' से है। इस कारण '**जल से सींचते हैं**'-शुद्ध वाक्य हुआ। इसी प्रकार '**गत दिवस को काशी जाऊंगा। आगामी सोमवार को मित्र आये थे**' इत्यादि वाक्य भी अशुद्ध हैं।

३. पदों की समीपता को आसत्ति कहते हैं। जैसे-यदि कोई भोर के '**बालक**' कहकर साँझ को '**पढ़ता है**' बोले तो यह अर्थबोधक वाक्य नहीं होगा। '**बालक**' के साथ ही '**पढ़ता है**' कहने से शुद्ध वाक्य होगा।

४०. अभ्यास (Exercise).

१. वाक्य में आकांक्षा योग्यता और आसत्ति की क्या आवश्यकता है?
२. आकांक्षा, योग्यता और आसत्ति से क्या समझते हो?
३. 'आंख से सुनते हैं। नाक से देखते हैं।' यह दोनों वाक्य हैं या नहीं? क्यों?
४. 'गतवर्ष हम परीक्षा देंगे'। इस वाक्य में क्या भूल है? कारण दो।

वाक्यविभजन * (Analysis).

वाक्यविभजन में वाक्य के अङ्ग अलग अलग कर दिये जाते हैं और यह दिखायाजाता है कि वे आपस में क्या सम्बन्ध रखते हैं ?

नोट-पीछे लिख आये हैं कि स्वरूप के अनुसार वाक्य के तीन भेद हैं-अमिश्र,संकीर्ण और संसृष्ट। आगे इन्हीं वाक्यों के विभजनबताये जाते हैं।

(१) अमिश्रवाक्य (Simple Sentences).

अमिश्रवाक्य के विभजन में मुख्यतः चार भाग दिखाये जाते हैं-उद्देश्य, उद्देश्य का विस्तार, विधेय और विधेय का विस्तार। विधेय के विस्तार में कर्म, कर्म का विस्तार और विधेयार्थवर्द्धक नाम के तीन भाग कियेजाते हैं। इसलिये सब मिलाकर छ भाग हुए-

१. उद्देश्य। २. उद्देश्य का विस्तार। ३. क्रिया और यदि क्रिया अपूर्ण हो तो पूरक भी। ४. कर्म। ५. कर्म का विस्तार। ६. विधेयार्थवर्द्धक।

उदाहरण।

विभजन केलिये वाक्य—

१. मोहन का भाई मेरी पुस्तक धीरेधीरे पढ़ता है। २. वह कुत्ता परसों से पागल हो गया है। ३. आयेहुए मनुष्य ने पाठशाला में मुझे एक चित्र दिखाया। ४. एक सेर दूध ठीक होगा। ५. मुझे कल रुपये देने पड़ेंगे। ६. छिपे हो कौनसे पर्दे में बेटा! ७. बिना सफाई के जीना कठिन है।

---

* वाक्यविश्लेषण, वाक्यपृथक्करण, वाक्यविग्रह, वाक्यविच्छेद इत्यादि भी वाक्यविभजन के नाम हैं।

विभजन—

उद्देश्य		विधेय			
			विस्तार		
उद्देश्य	विस्तार	क्रिया	कर्म	कर्म का वि.	विधेयार्थवर्द्धक
(१) भाई	मोहन का	पढ़ता है	पुस्तक	मेरी	धीरे धीरे
(२) कुत्ता	वह	पागल (पू०) होगया है	—	—	परसों से
(३) मनुष्यने	आये हुए	दिखाया	चित्र (मु) मुझे (गौ)	एक	पाठशाला में
(४) दूध	एक सेर	ठीक (पू०) होगा	—	—	— कल
(५) मुझे	—	देने पड़ेंगे	रुपये	—	कौन से
(६) (तुम) बेटा	—	छिपे हो	—		पर्दे में
(७) जीना	--	कठिन (पू०) है	—	—	बिना सफाई के

(मु)=मुख्य । (गौ)=गौण । पू०=पूरक ।

(२) सङ्कीर्णवाक्य (Complex Sentences).

संकीर्णवाक्य में पहले यह ढूँढ़ना होगा कि कौन अंश **प्रधान** है और कौन **अङ्गवाक्य** । फिर अङ्गवाक्य को पदविशेष समझकर समूचे वाक्य का विभजन 'अमिश्रवाक्य' के समान करनापड़ेगा । इसके पीछे अङ्गवाक्य का भी विभजन अमिश्रवाक्य के समान होगा ।

उदाहरण—

विभजन केलिये वाक्य—

१. श्याम कहता है कि शीघ्र पढ़ो ।

२. मेरा भाई, जो यहाँ बैठा था, परसों आया ।

३. जब राम का बैल आता है तब काली गाय जाती है ।

विभजन—

वाक्य	वाक्यभेद		समुच्चयबोधक	उद्देश्य		विधेय			
				उद्देश्य	विस्तार	क्रिया	विस्तार		
							कर्म	कर्म का वि.	विधेयार्थ वर्द्धक
(१) श्याम कहता है	संकीर्ण	प्रधान	कि	श्याम	...	कहता है	(तुम शीघ्र पढ़ो)	...	...
(तुम) शीघ्र पढ़ो।		अङ्ग (संज्ञा)		तुम	...	पढ़ो	...	...	शीघ्र
(२) मेरा भाई परसों आया	संकीर्ण	प्रधान	...	भाई	मेरा, जो यहाँ बैठा था	आया	...	...	परसों
जो यहाँ बैठा था।		अङ्ग (विशेषण)		जो	...	बैठा था	...	...	यहाँ।
(३) काली गाय तब जाती है	संकीर्ण	प्रधान	...	गाय	काली	जाती है	...	...	तब, जब राम का बैल आता है
जब राम का बैल आता है		अङ्ग (क्रियावि.)		बैल	राम का	आता है	...	...	जब

संसृष्ट वाक्य (Compound Sentences).

जिन सब वाक्यों के मिलाने से **संसृष्ट वाक्य** बना हो, उन्हें **अलग अलग कर दो** और **समुच्चायक को भी दिखाओ** । यदि संसृष्ट वाक्य अमिश्रवाक्यों से बना हो तो अमिश्रवाक्य की रीति से और यदि संकीर्ण-वाक्यों से बना हो तो सङ्कीर्णवाक्य की रीति से 'वाक्यविभजन' करो ।

उदाहरण—

१. राम पढ़ेगा, पर भोजन नहीं करेगा ।

२. श्याम दुष्ट है, इसलिये जब वह आता है, मैं चल देता हूँ ।

३. जब बच्चा रोता है, मा आती है और जब सोता है, चली जाती है ।

विभजन—

वाक्य	भेद			
१. राम पढ़ेगा [1]	संसृष्ट		अमिश्र [1]	शेष कीजिये संकीर्णवाक्य का विभजन देखो ।
पर				
(वह) भोजन नहीं करेगा । [2]			अमिश्र [2]	
२. श्याम दुष्ट है [1]	संसृष्ट		अमिश्र [1]	
इसलिये				
मैं (तब) चल देता हूँ [2]		संकीर्ण	प्रधान [2]	
वह जब आता है [3] ।			अंग (क्रि०वि० [3]...	
३ मा (तब) आती है [1]	संसृष्ट	संकीर्ण	प्रधान [1]	
बच्चा जब रोता है [2]			अंग (क्रि०वि०) [2]...	
और				
(वह तब) चली जाती है [3]		संकीर्ण	प्रधान [3]	
(वह) जब सोता है । [4]			अङ्ग (क्रिवि०) [4]...	

४१. अभ्यास (Exercise).

नीचे लिखे वाक्यों का विभजन करो-

१. राम के पास एक सुन्दर चित्र था। २. किसी समय दो मित्र साथ चले जाते थे। ३. आदिनाथ बाबू उस लड़के को पानी में डूबते हुए देखकर अपने प्राणों का मोह न करके उसके उद्धारार्थ कुएँ में कूदपड़े! ४. आदिनाथ ने एक हाथ से लड़के को पकड़ा और दूसरे हाथ से डोरी पकड़ी। ५. जिन का चरित्र अच्छा है वे भद्र हैं। ६. जो लोग स्थायी ऐश्वर्य केलिये क्षणभंगुर शरीर और चञ्चला लक्ष्मी का मोह नहीं रखते वे देवत्व प्राप्त करके महाधन के अधिकारी होते हैं। ७. जो सब मनुष्यों को प्यार करता है वह ईश्वर का प्यारा होता है। ८. उन्हों ने निर्भय होकर पूछा-"आप इस पुस्तक में क्या लिख रहे हैं?" ९. तुम्हारा कोई पड़ोसी यदि दुर्जन है तो उसके साथ तुम सर्वदा सदय व्यवहार करो। १०. जब उसमें से निकलने का कोई उपाय न देखा तब वे कबूतर जाल लेकर उड़े।

पदच्छेद (Parsing).

किसी वाक्य के शब्दों में व्याकरण घटाने के समय संज्ञा क्रिया आदि भेद प्रभेदों को बिलगाने, लिङ्ग वचन आदि को दिखाने और दूसरे दूसरे शब्दों से उनका सम्बन्ध बताने को **पदच्छेद** (वाक्यविवरण, पदपरिचय, पदनिर्देश, पदानिर्णय, पदविन्यास, शब्दबोध, व्याकरणघटाना) कहते हैं।

संज्ञा के पदच्छेद में संज्ञा, संज्ञा के भेद, लिङ्ग, वचन, कारक आदि और अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध-इतनी बातें बताई जाती हैं।

सर्वनाम के पदच्छेद में संज्ञाही के समान सर्वनाम, सर्वनाम के भेद, पुरुष, लिङ्ग, वचन, कारक और अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध-इतनी बातें बताईजाती हैं।

विशेषण के पदच्छेद में संज्ञा ही के समान सब बातें कहनीपड़ती हैं, अर्थात् विशेषण, विशेषण के भेद, लिङ्ग, वचन, कारक आदि और विशेष्य।

क्रिया के पदच्छेद में क्रिया, क्रिया के भेद, वाच्य, प्रकार, काल, लिङ्ग, वचन, पुरुष और वह शब्द जिससे क्रिया सम्बन्ध रखती है--इतनी बातें बताईजाती हैं।

अव्यय के पदच्छेद में अव्यय, अव्यय के भेद और यदि अव्यय सम्बन्ध रखनेवाला हो तो सम्बन्धी शब्द-इतनी बातें लिखी जाती हैं।

उदाहरण-मैं अच्छी पुस्तकें धीरे धीरे पढ़ता हूँ।

मैं-सर्वनाम, पुरुषवाचक, उत्तमपुरुष, पुल्लिङ्ग, एकवचन, 'पढ़ता हूँ' क्रिया का कर्त्ता।

अच्छी-विशेषण, गुणबोधक, स्त्रीलिङ्ग, बहुवचन, कर्मकारक, इसका विशेष्य 'पुस्तकें' है।

पुस्तकें-संज्ञा, जातिवाचक, स्त्रीलिङ्ग, बहुवचन, कर्मकारक, 'पढ़ता हूँ' क्रिया का कर्म।

धीरेधीरे-रीतिवाचक क्रियाविशेषण, 'पढ़ता हूँ' क्रिया की विशेषता बतलाता है।

पढ़ता हूँ-क्रिया, सकर्मक, कर्तृवाच्य, साधारण, सामान्यवर्तमान, पुल्लिङ्ग, एकवचन, उत्तमपुरुष, इसका प्रधान कर्त्ता 'मैं' और कर्म 'पुस्तकें' है।

४२. अभ्यास (Exercise).

नीचे लिखे वाक्यों के प्रत्येक पद का पदनिर्देश करो—

तुम अवश्य जाओ। मैं पीछे गया। राम आपके पीछे गया। घोड़े दौड़े क्या हैं, उड़ आये हैं। लीजिये, महाराज, मैं यह चला। तुम मेरी मदद पत्थर करोगे!

परिवर्तन (Conversion).

१. पद, वाक्यांश और खण्डवाक्य।

(Words, Phrases and Clauses).

नोट-पद वाक्यांश और खण्डवाक्य के परस्पर परिवर्तन के मुख्य-आधार 'समास, कृत और तद्धित' हैं।

(क) पद के बदले वाक्यांश-

सुखद–सुख देनेवाला। द्रुत–शीघ्र चलनेवाला। यथाशक्ति–शक्ति के अनुसार। आपादमस्तक–पैर से सिर तक। शाक्त–शक्ति के उपासक।

(ख) पद के बदले खण्डवाक्य—

कृतज्ञ–जो की हुई भलाई को मानता है। स्वदेशी-जो अपने देश का है। सधवा–जिस स्त्री का पति जीवित है। देय–जो देने के योग्य हो। दुःखी–जिसको दुःख हो।

(ग) वाक्यांश के बदले खण्डवाक्य-

मेरे बैल के आते ही–जब मेरा बैल आता है। निन्दा का पात्र–जिसकी निन्दा सभी करते हैं। नीति का जाननेवाला–जो नीति को जानता है। पहचान से बाहर–जो पहचाना न जा सके।

४३ अभ्यास (Exercise).

१. नीचे लिखे प्रत्येक पद को वाक्यांश में परिवर्तन करो—

सादर, अलौकिक, सन्यासी, नास्तिक, आपादमस्तक।

२. नीचे लिखे प्रत्येक खण्डवाक्य को पद में परिवर्तन करो-

जो की हुई भलाई को नहीं मानता। जिस स्त्री का पति नहीं है। जिसको सुख हो। जो दुःख देनेवाला हो।

नीचे लिखे प्रत्येक खण्डवाक्य को वाक्यांश में परिवर्तन करो—

जब मेरी गाय आती है। जिसकी प्रशंसा सभी करते हैं। जो गणित अच्छा जानता है। जिस पर दया की जाय। जो सुख देने वाला है।

४. नीचे लिखे प्रत्येक संज्ञाशब्द को संज्ञावाक्य (Noun clause). में बदलो-जलज, पतङ्ग, निशाचर, वासुदेव, चक्रपाणि।

५. नीचे लिखे प्रत्येक विशेषणवाक्य (Adjective clause) को विशेषण शब्द में परिवर्तन करो-जो कभी नहीं सुना गया। पुनः पुनः जो दीप्त होता है। जो दीर्घ काल तक जीवे। जिसकी तुलना नहीं है। ईश्वर में जिसका विश्वास हो। जो पहले कभी न देखागया हो। जो कहने के योग्य न होवे।

वाक्यसंकोचन और सम्प्रसारण।
(Contraction and ExPansion of Sentences).

अर्थ में बिना कुछ भेद डाले अनेक पदों के किसी वाक्य को थोड़े पदों में प्रकाशित करने को **वाक्यसंकोचन** और थोड़े पदों के वाक्य को अनेक पदों में प्रकाशित करने को **वाक्यसम्प्रसारण** कहते हैं।

वाक्यसंकोचन का उलटा वाक्यसम्प्रसारण है, इसलिये संकोचन के नियमों को विपरीत भाव से काम में लाकर सम्प्रसारण करते हैं।

समापिका क्रिया का [१]**असमापिका** में तथा अंगवाक्य, वाक्यांश या कई पदों को [२]**सामासिक**, [३]**प्रत्ययान्त** या [४]**अल्पपदों** में बदलने से बड़ा वाक्य छोटा होजाता है। जैसे–

प्रसारित वाक्य।	संक्षिप्त वाक्य
१. शिक्षक ने विद्यार्थी को पढ़ते देखा और उसे पारितोषिक देने का वचन दिया।	१. शिक्षक ने विद्यार्थी को पढ़ते देख पारितोषिक देने का वचन दिया।
२. मोहन परदेश से लौट आये और अपने घर के लोगों को प्रेम से पालन किया।	२. मोहन ने परदेश से लौटकर परिवार को प्रेम से पालन किया।
३. देव और असुर का संग्राम हुआ	३. देवासुर संग्राम हुआ।
४. जानकी का मुख चन्द्र के समान है।	४. जानकी चन्द्रमुखी है।
५. जिसको दुःख हो उसका दुःख हटाओ।	५. दुःखी का दुःख हटाओ।

संक्षिप्त वाक्य।	प्रसारित वाक्य।
१. आकाश अनन्त है।	१. आकाश का अन्त नहीं है।
२. रामचंद्र शैव हैं।	२. रामचंद्र शिव के उपासक हैं।
३. यह कार्य अनिवार्य है।	३. इस कार्य का निवारण नहीं किया जा सकता।
४. राम ने चिट्ठी पढ़तेही प्रसन्न होकर कहा—"पुस्तक लेजाओ"।	४. राम ने चिट्ठी पढ़ी, पढ़कर प्रसन्न हुए और कहा कि पुस्तक लेजाओ।

५. भीम हनुमान् सा बलवान् पुरुष था।	५. जैसा भीम बलवान् पुरुष था वैसा हनुमान भी था।

नोट–(१) एक वाक्य में दो या अधिक पूर्वकालिक क्रियाओं का एक साथ आना उचित नहीं। यदि अधिक पूर्वकालिक क्रियाओं की आवश्यकता पड़ने लगे तो वाक्य को बांट देना चाहिये। जैसे–**शिक्षक ने विद्यार्थी को पढ़ते देखकर, बड़े आनन्दित होकर और पारितोषिक देकर उसका साहस बढ़ाया**। यह वाक्य मधुर नहीं जान पड़ता। इसके बदले नीचे का वाक्य उचित है–"**शिक्षक विद्यार्थी को पढ़ते देख बड़े आनन्दित हुए और पारितोषिक देकर उसका साहस बढ़ाया।**"

(२) सर्वनाम वाक्य की मधुरता को बढ़ा देता है। यदि सर्वनाम न हो तो वाक्य में बरावर संज्ञाओं के प्रयोग से एक तो वह भद्दा जान पड़ेगा और दूसरे बढ़ भी जायगा। जैसे–

अप्रयुक्तवाक्य।	प्रयुक्तवाक्य।
मोहन कल घर गया, वहाँ जाकर मोहन ने मोहन की माता से कहा कि मोहन को भूख लगी है, भोजन दो। माता ने कहा कि हे मोहन, मोहन के पिताजी फल लाते होंगे, फल खाकर मोहन की भूख शांत कर लेना।	मोहन कल घर गया, वहाँ जाकर उसने अपनी माता से कहा–" मुझे भूख लगी है, भोजन दो।" उसने कहा–'बेटा, तुम्हारे पिताजी फल लाते होंगे, उन्हें खाकर अपनी भूख शांत कर लेना।'

४४. अभ्यास (Exercise).

१. नीचे लिखे प्रत्येक वाक्य का संकोचन करो–

तुम न्यायपथ से विचलित होकर चलते हो, इससे तुम कभी सुखी नहीं हो सकते। श्याम शक्ति का उपासक है। इसप्रकार की घटना पहले कभी नहीं सुनी गई थी। इस प्रकार का व्यापार पूर्व में कभी नहीं देखा गया था। तुमने जिस व्यक्ति को अपने आश्रय में रक्खा है, वह कहाँ है? जिसकी सब निन्दा करते हैं, वह हतभाग्य है। जिस स्थान में ठाकुरजी की पूजा होती है, वहाँ

जूता पहनकर मत जाओ। जो लिखना पढ़ना जानता है, उसे सब प्यार करते हैं। जिसको परलोक में विश्वास नहीं है, वह पापपुण्य को नहीं मानता। गुरुजी दौड़ने लगे और उनके साथ विद्यार्थी भी दौड़ने लगे।

२. नीचे लिखे प्रत्येकवाक्य का सम्प्रसारण करो—

सभी को कायिक और मानसिक परिश्रम करना उचित है। दरिद्र से घृणा मत करो। वह निर्जीव है। अश्रुतपूर्व घटना के श्रवणमात्र से रोमाञ्च होजाते हैं। अभिलषित वस्तु सर्वदा नहीं मिलती। ऊसर में बीज बोना व्यर्थ है। श्री मैथिली शरण गुप्तजी की पुस्तकें अच्छी होती हैं। अभागे की सभी निन्दा करते हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र बाल्यावस्थाही से कविता करते थे। शरीर क्षणभङ्गुर है। पार्थिव सुख क्षणस्थायी है।

कई वाक्यों के बदले एक वाक्य।

(वाक्यसंयोजन)

(Synthesis of Sentences).

(क) नियम—समापिका क्रिया को **असमापिका** में बदलने, मिलते हुए अंशों को **एकही बार रखने** और **अव्ययों** के प्रयोग से कई वाक्य एक वाक्य में बदलजाते हैं। जैसे—

कई वाक्य।	एक वाक्य।
१. राम ने रोटी खाई। राम ने पुस्तक पढ़ी	१. राम ने रोटी खाकर पुस्तक पढ़ी।
२. श्याम रोटी खाता है। श्याम दाल खाता है। श्याम तरकारी खाता है। श्याम पानी पीता है।	२. श्याम रोटी, दाल और तरकारी खाकर पानी पीता है।
३. मोहन गरीब है। मोहन सन्तोषी है। मोहन सुखी है।	३. यद्यपि मोहन गरीब है, तथापि सन्तोषी होने से सुखी है।

(ख) नियम—यदि अर्थ में बाधा न पड़े तो वाक्यों के शब्दों को **कुछ उलटफेर करके** कम कर दो।। कतिपय वाक्यों को **पद, वाक्यांश** और **अङ्गवाक्य** भी बना दे सकते हैं। जैसे—

कई वाक्य।	एक वाक्य।
१. अर्जुन धनुर्धर थे। उन्होंने लड़ाई में आश्चर्यजनक काम किये। लड़ाई कुरुक्षेत्र में हुई।	१. धनुर्धर अर्जुन ने कुरुक्षेत्र की लड़ाई में आश्चर्यजनक काम किये।
२. गंगाप्रसाद रामपुर गये हैं। वह मोहनलाल के भाई हैं। मोहन लाल मेरे स्कूल के शिक्षक हैं।	२. मेरे स्कूल के शिक्षक मोहनलाल के भाई गंगाप्रसाद रामपुर गये हैं।
३. वैदेहीशरण राधाउर रहता है। वह विद्यार्थी है। राधाउर सुरसण्ड के समीप है। राधाउर एक ग्राम है।	३. वैदेहीशरण विद्यार्थी सुरसण्ड के समीप राधाउर ग्राम में रहता है।

४८. अभ्यास (Exercise).

नीचे लिखे प्रत्येक वाक्यसमूह को एक वाक्य में बदलो।

१. रामलाल एक प्रसिद्ध पुरुष है। उसकी प्रशंसा सब करते हैं। रामलाल मोहनपुर का रहनेवाला है। मोहनपुर गंगा के किनारे है। प्रशंसा करनेवाले लोग सारे बिहार में रहते हैं। रामलाल राजेन्द्रप्रसाद का भाई है।

२. 'रामायण' हिन्दी साहित्य का एक महाकाव्य है। गोस्वामी तुलसीदास इसके रचयिता हैं। उन्होंने इस काव्य को लिखकर हिन्दी साहित्य में युगान्तर उपस्थित कर दिया है।

३. राधाउर एक ग्राम का नाम है। वह अत्यन्त ही प्रसिद्ध ग्राम है। वह मिथिला देश में है। महँगूसाहु वहाँ के एक प्रतिष्ठित गृहस्थ हैं। वह उनके ज्येष्ठ पुत्र हैं।

४. ध्रुव भक्तों का शिरोमणि था। उसने पाँच वर्ष की अवस्था में संसार-त्याग किया। वह जङ्गल में गया। वहाँ उसने भगवान् की खोज में कठोर तपस्या की।

एक वाक्य के बदले कई वाक्य।

(वाक्यवियोजन)

(Resolution of sentences).

वाक्यसंयोजन का उलटा वाक्यवियोजन है, इसलिये संयोजन

के नियमों को विपरीत भाव से काम में लाकर वियोजन करते हैं। जैसे–

एक वाक्य	कई वाक्य
१ रात बीतते ही चिड़ियाँ चहचहाने लगीं।	१. रातबीत गई। चिड़ियाँ चहचहाने लगीं।
२. सवेरा होते ही ठंढी हवा बहने लगी।	२. सवेरा होगया। ठंढी हवा बहने लगी।
३. साहसीराम ने एक बाघ को मारा।	३. राम साहसी है। उसने एक बाघ को मारा।
४. परीक्षा समाप्त होने पर मुझे रखके समय क्यों खराब करते हैं?	४. परीक्षा समाप्त होगई। अब मुझे मत रखिये। मेरा समय खराब जाता है।

४६. अभ्यास (Exercise).

नीचे लिखे प्रत्येक वाक्य को कई मधुर वाक्यों में बदलो—

इस संकट में सिवा भगवान् के मेरी सहायता कोई नहीं कर सकता। अयोध्यापति दशरथ के पुत्र रामचन्द्र ने अश्वमेध यज्ञ किया। मुझे रखकर समय खराब करने के बदले जाने की आज्ञा दीजिये।

एक समय प्रातःकाल जब चन्द्रमा अस्त होगया और पक्षी सब चहचहा रहे थे और सूर्य के उदयसे गगनमण्डल रक्तवर्ण हो रहा था और आकाश-स्थित अन्धकाररूपी धूल सूर्य की किरणरूपी झाड़ू से परिष्कृत होगई और सप्तऋषिलोग स्नानादिके निमित्त मानसरोवर के तटपर उतरे; उसी समय उस वृक्षमें रहनेवाले पक्षी भी सब अपने अपने इच्छानुसार देशदेशान्तर को चले। (कादम्बरी)

वाक्यपरिवर्तन।

(Interchange of Sentences).

अमिश्र, संकीर्ण और संसृष्ट वाक्य—

(१) अमिश्र से संकीर्ण और संकीर्ण से अमिश्र वाक्य—

नियम–अमिश्रवाक्य के एक या अधिक पदों को अङ्गवाक्य में बदल देने से वह संकीर्णवाक्य बनजाता है। जैसे–

अमिश्र (Simple)	संकीर्ण (Complex).
१. सुशील बालक बड़ों की आज्ञा मानते हैं।	१. जो बालक सुशील होते हैं वे बड़ों की आज्ञा मानते हैं।
२. चोर ने अपने बचाव का कोई उपाय नहीं देखा।	२. चोर ने देखा कि मेरे बचाव का कोई उपाय नहीं है।
३. मेरे बैल के आते ही काली गाय चली जाती है।	३. जब मेरा बैल आता है तब काली गाय चली जाती है।

☞ संकीर्णवाक्य के अङ्गवाक्य को पद या वाक्यांश में बदल देने से वह **अमिश्र वाक्य** बनजाता है। जैसे–

संकीर्ण (Complex)	अमिश्र (Simple).
१. जो प्राणी रात्रि में विचरण करते हैं, वे दिन में प्रायः छिपे रहते हैं।	१. रात्रिचर प्राणी दिन में प्रायः छिपे रहते हैं।
२. जब विपद् आवे तब धैर्य रक्खो।	२. विपद् में धैर्य रक्खो।
३ जिसे दया नहीं, वह पशु है।	३. दयाहीन व्यक्ति पशु है।

४७ अभ्यास (Exercise).

१. अमिश्रवाक्यों को संकीर्ण (Complex) में बदलो।

रामजी का जन्म अयोध्या में हुआ था। अन्याय का धन शीघ्र नष्ट होता है। सब कोई विद्वान् का आदर करते हैं। अपने कर्त्तव्य को मत भूलो। उसके आने का समय हमें मालूम नहीं। परिश्रमी विद्यार्थी परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं। इस पुस्तक के लेखक का वासस्थान कहाँ है? इस समाचारपत्र के सम्पादक कहाँ रहते हैं? सूर्योदय होते ही पक्षी बोलने लगे।

२. नीचे के संकीर्ण वाक्यों को अमिश्र (Simple) में बदलो।

तुम परीक्षोत्तीर्ण हुए, यह हमें क्यों नहीं कहा? जिसको बुद्धि है वही इस कार्य को करेगा। हमने उसको जिस प्रकार कहा उसने वैसाही किया। हमें बताइये, आपका जन्मस्थान कहाँ है? राम ने हमारा जो उपकार किया है, उसे जन्मभर नहीं भूलेंगे। जहाँ रामजी का अवतार हुआ था उसे अयोध्या कहते हैं। पटने में जो गोलघर है उसे अंगरेजों ने बनवाया।

(२) अमिश्र से संसृष्ट और संसृष्ट से अमिश्रवाक्य—

नियम—अमिश्रवाक्य के किसी वाक्यांश को एक अपेक्षा रहित वाक्य में बदल देने से वह **संसृष्टवाक्य** बन जाता है। ऐसी अवस्था में योजक अव्यय का प्रयोग होता है। यदि वाक्यांश में कोई असमापिका हो तो उसे समापिका में बदलकर निरपेक्षवाक्य बनाना चाहिये।

अमिश्र (Simple)	संसृष्ट (Compound).
१. आगे बढ़कर शत्रुओं का सामना करो। शत्रुओं का सामना करने के लिये आगे बढ़ो।	१. आगे बढ़ो और शत्रुओं का सामना करो।
२. बिल्ली के पंजों में नख होते हैं।	२. बिल्ली के पजे होते हैं और उनमें नख होते हैं।
३. सूर्योदय होते ही अपने कार्य्य में लगें।	३. सूर्योदय हुआ और हम अपने कार्य में लगे।

☞ संसृष्ट वाक्य में एक निरपेक्षवाक्य को छोड़ शेष को पदों या वाक्यांशों में बदल देने से वह **अमिश्रवाक्य** बन जाता है। कभी कभी समापिका क्रिया को पूर्वकालिक में बदलकर आमिश्रवाक्य बनाते हैं। अमिश्रवाक्य बनाने पर योजक अव्यय छूटजाता है।

संसृष्ट (Compound).	अमिश्र (Simple)
१. आप इसे बहुत चाहते थे इसीलिये वह नष्ट हुआ।	१. आपके चाहने के कारण वह नष्ट हुआ।
२. आप से आशा थी, परन्तु वह पूरी न हुई।	२. आप से मेरी आशा पूरी न हुई।
३. मुझे सत्य बोलना उचित है, परन्तु वह अप्रिय न हो।	३. मुझे अप्रिय सत्य बोलना उचित नहीं।

४८. अभ्यास (Exercise).

१. नीचे के अमिश्रवाक्यों को संसृष्ट (Compound) में बदलो।

दुर्बलता के कारण वह स्कूल नहीं जासका। गङ्गा गङ्गोत्तरी से निकलकर बंगाले की खाड़ी में गिरती है। परिश्रमी विद्यार्थी परीक्षोत्तीर्ण होते

हैं। मैंने पुस्तक खरीद कर पढ़ीं। संध्या होते ही वह लौट आता है। दरिद्रता से किसी कार्य में भलीभाँति उन्नति नहीं होती। परिश्रम करने से उसकी उन्नति हुई। सत्कार्यों से आत्मा को शान्ति मिलती है।

२. नीचे के संसृष्टवाक्यों को अमिश्र (Simple) में बदलो।

वस्त्र केवल शोभा ही के लिये नहीं हैं, परन्तु उनसे स्वास्थ्य की रक्षा भी होती है। राजा प्रजा का रक्षक है, भक्षक नहीं। गुरुजी बीमार हैं, इस लिये पढ़ाने नहीं आये। ईश्वर पर भरोसा रक्खो, तुम्हारी भलाई होगी। श्याम माखनचोर है, इसलिये जब मैं ढूँढ़ती हूँ, वह छिपजाता है। हिमालय पर्वत परम रमणीय है, क्योंकि वहाँ प्रकृति के वास्तविक दर्शन होते हैं।

(३) संकीर्ण से संसृष्ट और संसृष्ट से संकीर्णवाक्य—

नियम—संकीर्णवाक्य के अङ्गवाक्य को प्रधान में बदल देने से वह **संसृष्टवाक्य** बनजाता है। ऐसी अवस्था में संकीर्ण के नित्यसम्बन्धी अव्यय इत्यादि शब्दों और 'कि' के बदले योजक या विभाजक अव्यय लाते हैं। जैसे—

संकीर्ण (Complex).	**संसृष्ट** (Compound).
१. यद्यपि तू धनी है, तथापि सुखी नहीं है।	१. तू धनी है, परन्तु सुखी नहीं है।
२. तू जानता है कि वह खराब लड़का है।	२. वह खराब लड़का है और तू यह जानता है।
३. यदि अकाल पड़ेगा तो मरेंगे।	३. अकाल पड़ेगा और मरेंगे।

☞ संसृष्टवाक्य के एक निरपेक्षवाक्य को छोड़ शेष को अप्रधान में बदलने से वह **संकीर्णवाक्य** बनजाता है। ऐसी अवस्था में योजक और विभाजक अव्ययों के बदले नित्यसम्बन्धी शब्दों और कि का प्रयोग होता है। जैसे—

संसृष्ट (Compound)	**संकीर्ण** (Complex).
१. वह मूर्ख है, परन्तु उसे धर्मज्ञान है।	१. यद्यपि वह मूर्ख है तथापि उसे धर्मज्ञान है।
२. चेष्टा मत करो, कोई फल नहीं मिलेगा।	२. यदि तुम चेष्टा करोगे तौभी कोई फल नहीं मिलेगा।

६. तुमने झूठ कहा है, तुम्हारा छुटकारा नहीं।	३. जब तुमने झूठ कहा है तब तुम्हारा छुटकारा नहीं।

४९. अभ्यास (Exercise).

१. नीचे के संकीर्णवाक्यों को संसृष्ट (Compound) में बदलो।

यदि मनसे विद्या पढ़ोगे तो सुखी होगे। यदि उनकी दुर्दशा देखोगे तो तुम्हें अवश्य दया होगी। जो चले गये थे वे फिर आये हैं। यदि पढने न जाओगे तो दण्ड मिलेगा। जो पुस्तक हमने खरीदी है उसका मोल एक रुपया है। मैं समझता हूँ कि आप अच्छे हैं। यदि तुम जाओगे तो कुछ नहीं मिलेगा।

२. नीचे के संसृष्ट वाक्यों को संकीर्ण (Complex) में बदलो।

वह ज्ञानी है, किन्तु उसको इसके लिये गर्व है। वह धनी है, परन्तु उस को अहङ्कार नहीं। सच्ची बात कहो, कोई डर नहीं। कलकत्ते में एक किला है वह अंगरेजों का बनाया हुआ है। हमने बहुत से वृक्ष लगाये हैं, वे फल देते हैं। वर्षा हुई है, परन्तु धान होने की आशा बहुत ही कम है।

प्रकृतिभेद से वाक्यपरिवर्तन.

(Different forms of sentences).

२. विधानार्थक[1] (Affirmative). निषेधार्थक[2] (Negative).

यह गृह लोकशून्य है।	इस गृह में कोई नहीं है।
वह अन्यायी मनुष्य है।	इस मनुष्य में न्याय नहीं है।
यह निर्विवाद है।	इसमें कोई विवाद नहीं है।
कायर कार्य से भागते हैं।	कायर के सिवा और कोई कार्य से नहीं भागता।

२. निषेधार्थक[2] (Negative). विधानार्थक[1] (Affirmative).

तुम 'न' नहीं कहो।	तुम 'हाँ' कहो।
झूठ मत बोलो।	साँच बोलो।
परिश्रम व्यर्थ नहीं हुआ।	परिश्रम सफल हुआ।
तुम रोगी नहीं हो।	तुम नीरोग हो।

१. विधानार्थक = विधिवाचक, सम्मतिसूचक, निश्चयार्थक।
२. निषेधार्थक = असम्मति सूचक।

३. प्रश्नार्थक² (Interrogative).	निषेधार्थक³ (Negative).
क्या उसका जाना उचित है ?	उसका जाना उचित नहीं।
क्या तुम इसे जानते हो ?	तुम इसे नहीं जानते।
ज्ञापक (Assertive).	**भिन्न भिन्न वाक्य।**
(क) हम तुम्हें घर जाने को कहते हैं।	(क) तुम घर जाओ। (आज्ञार्थक Imperative).
(ख) भगवान् से आपका भला चाहते हैं।	(ख) भगवान् आपका भला करे ! (इच्छार्थक Optative).
(ग) गुसाईं जी की रामायण अवर्णनीय है।	(ग) अहा ! गुसाईं जी की कैसी अच्छी रामायण है ! (विस्मय-सूचक⁴ Exclamatory).
(घ) शिवजी बड़े दयालु हैं।	(घ) क्या शिवजी बड़े दयालु नहीं हैं ? (प्रश्नार्थक Interrogative).

८०. अभ्यास (Exercise).

१. नीचे के वाक्यों को निषेधार्थक (Negative). में बदलो।

राम बुद्धिमान् हैं। रुपये से सभी पदार्थ मिलते हैं। मनसे पढ़ने से विद्या आती है। वह अद्वितीय पण्डित है। लड़के चंचल होते हैं। शिवाजी कर्म्मवीर पुरुष थे।

२. नीचे के वाक्यों को विधानार्थक (Affirmative). में बदलो।

इस समय मोहन घर पर नहीं है। कर्म्मचारियों ने आपकी आज्ञा के बिना कोई कार्य्य नहीं किया है। ग्रीष्मऋतु में रात्रि को मुझे नींद नहीं आती। बिना परिश्रम के कोई कार्य नहीं होता।

३. नीचे के वाक्यों को प्रश्नार्थक (Interrogative) में बदलो।

ईश्वर सर्वशक्तिमान् हैं। उसको अपना भेद कहना उचित नहीं। अपनी जन्मभूमिकी सब प्रशंसा करते हैं। इस अवस्था में उसे सुधारना कठिन है। चोर को घर में आने देना उचित नहीं। छात्रों को अच्छी पुस्तक पढ़नी चाहिये

२, प्रश्नार्थक = जिज्ञासक।
३. निषेधार्थक = असम्मतिसूचक।
४. विस्मयसूचक = उत्क्रोशार्थक।

४. नीचे लिखे वाक्यों को ज्ञापक (Assertive) में बदलो।

सर्वदा सची बातें बोलो। भगवान् तुम्हें दीर्घायु करे? तुम्हारा क्या नाम है? अहा! कैसी सुन्दर मूर्ति है। तुम्हारी मङ्गलकामना पूर्ण हो! सर्वदा नम्र बने रहो। बड़ों का कहा मानो।

वाच्यपरिवर्तन (Changes of voice).

क्रिया के तीन वाच्य हैं–कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।

यदि कर्त्ता के अनुसार क्रिया के लिंग, वचन आदि हों तो यह **कर्तृवाच्य** कहलाती है। जैसे–राम पुस्तक पढ़ता है। सीता ग्रन्थ पढ़ती है।

नोट–"कलम नहीं चलती। भोजन बनता है। फल पकते हैं। मेंह बरसता है। कपड़े भींगते हैं। पानी बहता है।" ऐसे वाक्यों में कर्म करनेवाला कर्त्ता नहीं बताया जाता और दिखाया जाता है कि काम आपसे आप होता है। ऐसी क्रियाएँ वास्तव में कर्मकर्तृवाच्य हैं।

यदि कर्म के अनुसार क्रिया के लिङ्ग वचन आदि हों तो वह क्रिया **कर्मवाच्य** कहलाती है। जैसे–सीता ने भात खाया। राम ने रोटी खाई। मोहन से पुस्तक पढ़ीजाती है। राम से रोटी खाईगई।

यदि कर्त्ता या कर्म के अनुसार क्रिया के लिङ्ग वचन आदि न हों, बल्कि वह सदा एकवचन, पुल्लिङ्ग और अन्यपुरुष में रहें तो वह क्रिया **भाववाच्य** कहलाती है। जैसे–रानी ने सहेलियों को बुलाया। मुझसे सोया नहीं जाता। आयाजाय।

कर्तृवाच्य के कर्त्ता में और कर्मवाच्य के कर्म में कोई चिन्ह नहीं लगता। भाववाच्य के कर्त्ता में ने और कर्म में को लगाते हैं।

कर्मवाच्य और भाववाच्य के कर्त्ता में ने लाते हैं, परन्तु इसका अपवाद 'खाजा' इत्यादि जा धातु से युक्त 'संयुक्तधातुओं' के प्रयोगों में पाया जाता है। ऐसे धातुओं के साथ कर्त्ता में ने के बदले 'से' लगाते हैं। जैसे-'मैं खागया' इस का कर्मवाच्य 'मुझसे खायागया' है न कि 'मुझ ने खायागया,। 'खायागया' खाजा इस संयुक्त धातु का कर्मवाच्य है, रूढ़ धातु 'खा' का नहीं।

–पं० रामावतार शर्मा

कर्मवाच्य क्रिया केवल सकर्मक होती है, परन्तु कर्तृवाच्य और भाववाच्य क्रियाएँ अकर्मक और सकर्मक दोनों होती हैं।

पीछे लिख आये हैं कि क्रिया के अनुसार वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—कर्तृप्रधान, कर्मप्रधान और भावप्रधान वाक्य। यहाँ इन्हीं वाक्यों के परस्पर परिवर्तन के कुछ उदाहरण दिये जाते हैं।

१. कर्तृप्रधान वाक्य।	**कर्मप्रधान वाक्य।**
मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।	मुझसे पुस्तक पढ़ी जाती है।
राम पुस्तक देगा।	राम से पुस्तक दी जायगी।
२. कर्तृप्रधान वाक्य।	**भावप्रधान वाक्य।**
तू बैठता है।	तुझसे बैठाजाता है।
आइये।	आयाजाय।
वह सोवे।	उससे सोयाजाय।

'मैं ग्रन्थ पढ़जाता हूँ। राम पुस्तक देजायगा। तू बैठजाता है। आजाइये। वह सोजावे।' इन वाक्यों के 'कर्म और भावप्रधान वाक्य' भी क्रमशः ऊपर ही के अनुसार होते हैं, परन्तु कहीं कहीं अर्थों में कुछ भेद होजाता है। इसी प्रकार '**मैं रोटी खागया**' का कर्मप्रधान वाक्य '**मुझसे रोटी खाईगई**' है।

'**मैंने रोटी खाई**' यह वाक्य कर्मप्रधान है इसके कर्म में को लाने से 'मैंने रोटी को खाया' भावप्रधान वाक्य बनजाता है।

५१. अभ्यास (Exercise).

१. नीचे लिखे वाक्यों का वाच्य के अनुसार परिवर्तन करो।

मनुष्य जो कुछ काम करते हैं, सुख केलिये ही करते हैं। आइये, आप ही का घर है, कोई संकोच मत कीजिये। तारापद ने स्थिर किया था कि वह रुपये को लौटादेगा। भगवान्! तूने भी मुझे योंही त्याग दिया! यह भी आशीर्वाद दीजिये कि मैं सच्चरित्र पुरुषों के पदाङ्क का अनुसरण कर सकूँ। रानी ने सहेलियों को बुलाया।

उक्तिभेद (Reported speech).

जब किसीकी कही हुई बात को दूसरे से कहते हैं तब उसे यातो वक्ता ही की उक्तिमें प्रकाश करते हैं या अपनी उक्ति में।

जब वक्ता के वक्तव्य को ठीक ठीक उसीके शब्दों में प्रकाश करें तब उसे **प्रत्यक्ष या साक्षात्** उक्ति और जब अपने शब्दों में करें तब उसे **परोक्ष उक्ति** कहते हैं।

☞ प्रत्यक्ष उक्ति को " " के बीच में रखते हैं।

प्रत्यक्ष (Direct form).	परोक्ष (Indirect form).
१. राम ने कहा था, "मैं आऊँगा"	१. राम ने अपने आने की बात कही थी।
२. पिता ने मुझे कहा—"राम की पुस्तक पढो"	२. पिता ने मुझे राम की पुस्तक पढ़ने को कहा।
३. ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया, "कल्याण हो।"	३. ब्राह्मण ने कल्याण होने के लिये आशीर्वाद दिया।
४. मैंने पूछा, "आप कहाँ जाते हैं?"	४. मैंने उनके जाने के बारे में पूछा।
५. गुरुजी ने कहा-"पृथ्वी चलती है।"	५. गुरुजी ने कहा कि पृथ्वी चलती है।

५२. अभ्यास (Exercise).

नीचे लिखे वाक्यों को उक्तिभेद के अनुसार परिवर्तन करो।

कुछ देर तक चुप रहकर तारापद ने कहा-"अच्छा जाइये।" राम ने कहा-"कुछ नहीं।" श्याम ने बहुत देर के बाद मुझसे पूछा-"आप कहाँ जाते हैं?" कातरता से और कुछ दिन ठहरने के लिये कहा। गुरुजी ने घर जाने के लिये कहा।

एकार्थबोधक वाक्य।

(Expression of a Sentence in Different ways).

अर्थ को बिना बदले एक वाक्य को **भिन्न भिन्न वाक्यों में** बदल

सकते हैं। इससे रचना में मधुरता आती है और लेखक की पटुता और अभिज्ञता प्रकट होती है।

ऐसा करने में यह ध्यान रहे कि वाक्य मुहावरेदार और रोज़मर्रे के अनुसार हो, अर्थ न बदल जाय और भद्दा भी न होजाय। इसके लिये 'परिवर्तन' के पाठों पर लक्ष्य रहे। नीचे कुछ उदाहरण दिये जाते हैं—

(१) उसने जन्म लिया। वह संसार में आया। उसका जन्म हुआ। उसका अवतार हुआ। उसका प्रादुर्भाव हुआ। इत्यादि।

(२) कुछ भी स्थायी नहीं है। सभी वस्तुएँ क्षणिक हैं। सभी नाशवान् हैं। सभी क्षणभङ्गुर हैं। संसार ही नश्वर है। ध्वंस ही संसार का नियम है। सभी विदा होजायँगे। कोई पदार्थ चिरकाल तक नहीं रहेगा।

(३) वह शोक से कातर है। वह शोकार्त है। उसका हृदय शोक से जर्जर है। वह वियोग के दुःख से कष्ट पा रहा है। शोक से उसका हृदय दुखता है। वह शोक में डूबा हुआ है।

(४) वह मरगया। उसने इस लोक को छोड़दिया। उसने परलोकगमन किया। उसके प्राण निकल गये। उसकी मौत होगई। उसका परलोक हो गया। उसने शरीर त्याग दिया। उसने प्राण छोड़ दिये। उसने संसार को त्याग दिया। उसने संसारयात्रा समाप्त की। उसकी प्राणवायु निकल गई। उसके प्राण पखेरू उड़गये। उसकी संसारलीला समाप्त हुई। उसका संसार से नाता टूट गया। उसको गङ्गालाभ हुआ। उसका स्वर्गवास होगया। वह पञ्चत्व को प्राप्त हुआ। उसका जीवनप्रदीप बुझगया। वह कालकवलित हुआ। वह काल के मुख में पड़गया। वह काल के गाल में जापड़ा। उसने स्वर्गारोहण किया। वह संसार से चलबसा। उसकी मानवलीला समाप्त हुई।

९३. अभ्यास (Exercise).

बिना अर्थ बदले नीचे लिखे प्रत्येक वाक्य को भिन्न भिन्न वाक्यों में प्रकाश करो।

मनुष्य मरणशील है। साँझ हुई। सूर्योदय हुआ। आप कहाँ रहते हैं? सत्य की जय अवश्य होती है। कालिदास अद्वितीय कवि थे। संसार में कुछ भी स्थायी नहीं है।

अनुक्त पदों की पूर्ति।

(Filling up of Ellipses).

अनुक्त पदों की पूर्ति केलिये कोई विशेष नियम नहीं दिया जासकता। शब्दप्रकरण के भिन्न भिन्न प्रयोगों और वाक्यरचना के नियमों पर ध्यान रखकर वाक्यार्थबोध के अनुसार **शब्दों की पूर्ति** करनी चाहिये।

प्रत्येक रिक्तस्थान केलिये केवल एक शब्द या एक पद को चुनना चाहिये। दो तीन पदों को रखना अनुचित है।

(१) आदर्श—

---किताब लिखी। उसने---पढ़ीं। राम ने रोटी-----।

श्याम ने किताब लिखी। उसने **पुस्तकें** पढ़ीं। राम ने रोटी **खाई**।

अनुक्त पदों की पूर्ति करो—

(१) ---पत्र लिखा है। --- आम दिये हैं। --- बातें कही हैं। ------ मछली मारी थी। ---फल खाये होंगे। --- किताब पढ़ी होगी।

(२) राम ने --- मारे। लड़कों ने ---लिखे हैं। कौओं ने --- खाडाले हैं। विद्यार्थी ने --- लिखी होगी। सीता ने ---- सुनी थी।

(३) आपने ग्रन्थ -----। सीता ने चिट्ठियाँ ----। व्याधे ने चिड़ियां ----। मोहन ने दूध ----। श्याम ने मक्खन ----।

(२) आदर्श--

मोहन---सोहन---। गाय---बकरी---।

मोहन **और** सोहन **जाते हैं**। गाय **या** बकरी **बिकेगी**।

राम का --- घोड़ा --- आता है। तुम्हारी --- पुस्तक ---है।

राम का **लाल** घोड़ा **धीरेधीरे** आता है। तुम्हारी **यह** पुस्तक **अच्छी** है।

यदि---पढ़ोगे---बुद्धि---और---रहोगे।

यदि विद्या पढ़ोगे तो बुद्धि होगी और सुखी रहोगे।

अनुक्त पदों की पूर्ति करो—

(१) सीता---राम को---भेज---। तेरा---उस का---घर---भाई---। गाय---बकरी का---दूध---।

(२) सीता की---बेटी---चलीगई। मेरा---विद्यार्थी---पढ़ता है।---घर की---दीवाल पर---बिल्ली---बैठी है।

(३)---वह---तथापि---बुद्धि---। जब---दुष्ट---आता है---राम का---चुपचाप---। लाठी---भैंस।

(३) आदर्श—

इस...जो...सुखी...चाहता हो......क्रोध......प्रयत्न...चाहिये। ......क्रोध को......वश में...रखसकता वह......वस्तुओं के......हुए......सुख ......भोगसकता।

इस **संसार** **में** जो **मनुष्य** सुखी **रहना** चाहता हो **उसे** क्रोध **छोड़ने** **का** प्रयत्न **करना** चाहिये। **जो** क्रोध को **अपने** वश में **नहीं** रखसकता वह **सुख** **की** वस्तुओं के **रहते** हुए **भी** सुख **नहीं** भोगसकता।

अनुक्त पदों की पूर्ति करो—

मनुष्य...कुछ...करते हैं, सुख केलिये...करते हैं। ...पाने की...सब को...। ...उद्देश्य...रहता है...हम को...मिले,...गला...सुख...चिल्लाने...सुख...मिलसकता।

८४. मिश्रित अभ्यास (Miscellaneous Exercise).

१. नीचे लिखे प्रत्येक अंश को विधेय का विस्तार मानकर वाक्य बनाओ।

इन्द्र के वज्र को भूल। उसके सम्मुख, पाँव में काँटा लगने का मिस करके। किस मिससे इस आश्रम में। तपस्वियों के आश्रम में। अंग भंग करके। भुक्ती पर स्नेह की दृष्टि। प्यारी की सहवासिनी हरिणियों पर।

२. नीचे लिखे प्रत्येक वाक्यांश से मिश्र (Complex) वाक्य बनाओ।

तब मेंढ़क बोलते हैं। साधु कहता है। बुरी संगत का फल बुरा होता है।

जो लड़के अच्छे होते हैं। ऐसा शब्द हो रहा था। यह धर्म की मूल बात है। मानों शिवजी शूकर के पीछे जाते हैं। दिखाई भी सहज नहीं पड़ता।

३. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो।

किसने आज रात में चिल्लाया कि मेरी नींद ने टूटगयी। मैं तो तुमसे कहा ही था कि मेरी कान में आज बड़ा खुजलाहट है। उसका विषय में आप क्या जानते हो? (से०डि० परीक्षा १६१२)

एक राजा जब नीँद में पड़ा था की ऊनका परम भक्त सेवक एक वानर ऊन्हें पङ्खा झल रहा था। एक मक्खी को बारबार ऊसके छाती पर बैठता देख बानर तलवार चलाया। राजा मर गया। मक्खी तो पहले ही ऊड़गई।

(फ० डि० परीक्षा १६१४)

४. नीचे के शब्दों को इस प्रकार बैठाओ कि एक पूर्ण वाक्य बनजाय।

छोटी, दूर, पहले, होने के, कारण, वस्तु, दिखाई, जो, देती, थी, सो, बड़ी, अब, जान पड़ती है, मिली, और, जो, हुई सी थी, निकली, अलग, सो, अलग।

५. आये हुए रविवारको स्त्रीलोग अकेले जायँगे। वह पानी लगाकर तेल से नहा लिया। मान्यनीय गुरुजी यद्यपि भी शान्त थे छात्रको सापराधी होने से दण्ड दिया। इन वाक्यों को नियम प्रदर्शनपूर्वक शुद्ध करो।

६. नीचे लिखे वाक्यों का विभजन करो—

हिमालय पर्वत परम रमणीय है, क्योंकि वहां प्रकृति के वास्तविक दर्शन होते हैं। अब वह राजर्षि के नाम से नहीं, वरन् ब्रह्मर्षि के नाम से प्रसिद्ध हो गये। मेरे मित्र ने कहा, "अब मुझे इसकी आवश्यकता नहीं।" हे चकई, अब चकवा से न्यारी हो, रात आई। तुम मुझ से इस दशा में हँसी करती हो।

७. छठे प्रश्न के अन्तिम दो वाक्यों के प्रत्येक पद का पदनिर्देश (Parsing) करो।

८. नीचे लिखे प्रत्येक वाक्यांश को शब्द में बदलो।

जो गोपन करने के योग्य है। जितनी आशा की थी उससे अधिक

जिस स्त्री का पति मर गया। नगर में जो उत्पन्न हो। जो पहले कभी न देखा गया हो। जिसने प्रतिष्ठा पाई है।

९. नीचे लिखे वाक्यों के बदले एक वाक्य दो।

यही छड़ी है। इससे मैं काम भुगताता था। काम द्वारपाली का था। वह काम रनवास में था। वह काम आगे करता था। अब बुढ़ापा आया है। बुढ़ापे में मैं चलता हूँ। इसमें यही छड़ी सहारा बनी है।

१०. नीचे लिखे अमिश्र, संकीर्ण और संसृष्ट वाक्यों का परस्पर परिवर्त्तन करो।

मनुष्य समाज को सुखी बनाने के हेतु कितने ही उपाय हैं। मनुष्य जो कुछ काम करते हैं, सुख केलिये ही करते हैं। इस पवित्र विशाल भारतवर्ष में आदर्श पुरुषों का बिलकुल अभाव होजाना क्या कभी संभव है? इस वर्तमान भारत में भी अनेक महापुरुषों ने जन्म ग्रहण करके अपने उदार चरित्रों से लोगों को अनेक उपदेश दिये हैं। आदर्श पुरुष उच्च हृदय के हुए तो जाति उन्नत होती और आदर्श नीच प्रकृति के हुए तो जाति की अवनति होती है।

११. नीचे के वाक्यों में अनुक्त पदों की पूर्ति करो।

समय अमूल्य जीवन—है। अतएव एक—भी—नष्ट नहीं—चाहिये। बुद्धिमान्—समय—उत्तम—से उपयोग करना—हैं और उसको सुख के—या लाभ—काम—लगाते हैं। वे सुस्त—नहीं रहते पर विद्याभ्यास—विनोद में सतत—रहते हैं। आलस्य दुर्गुणों की—है। यह—संसार है और यह भी—है कि आलस्य मूर्खों—ही पेतृक—है। (B. A. Examination, 1915).

चिन्हविचार (Punctuation).

वाक्यों में कुछ चिन्ह लगायेजाते हैं जो ठीक ठीक ठहराव के साथ उनके बोलने में सहायक होते, उनके पदों, वाक्यांशों और खण्डवाक्यों में परस्पर सम्बन्ध सूचित करते तथा उनके अर्थों को भलीभाँति स्पष्ट करते हैं।

१. विराम या ठहराव के चिन्ह (Stops).

(,) अल्पविराम [Comma].

जहाँ यह चिन्ह (,) रहे तहाँ उतने समय तक ठहरना चाहिये जितना एक के उच्चारण करने में लगता है।

नियम-१. यदि कई शब्द, पद, वाक्यांश या खण्डवाक्य एक ही दशा में हों तो अन्तिम शब्द या पद इत्यादि को छोड़ शेष के आगे अल्पविराम लाते हैं, परन्तु अन्तिम शब्द या पद इत्यादि के पहले प्रायः 'और, या' इत्यादि समुच्चायक आते हैं। जैसे राम, श्याम और मोहन ने यह कार्य किया। धर्म और विद्या की शिक्षा प्राप्त कर उस समय के शिष्य जितेन्द्रिय, सत्यवादी, परोपकारी, दयालु और विवेकी होजाते थे। उनका यहाँ रहना, लोगों से प्रेमपूर्वक मिलना, बड़ों का आदर करना और सीधीसादी चाल सबों को पसंद है। यदि आप अपने पुत्र के पढ़ाने का समुचित प्रबन्ध न करेंगे तो वह आलसी बनजायगा, उसका समय व्यर्थ जायगा, उसकी उन्नति के स्थान में अवनति होगी और वह समाज में मूर्ख गिनाजायगा। प्रायः इस बातको सभी जानते हैं कि माता, पिता, गुरु आदि बड़े सभी पूज्य हैं।

२. जहाँ अर्थ में बाधा पड़े वहाँ भी अल्पविराम (,) दियाजाता है। जैसे-राजा स्वदेशी हो या विदेशी, राजा का प्रधान कर्तव्य है कि प्रजा में विद्या का प्रचार करे।

३. सम्बोधन के परे अल्पविराम (,) लाते हैं और यदि सम्बोधन पद वाक्य के बीच में पड़जाय तो उसके पहले भी। जैसे-बालको, परिश्रम करो। सुनो, बच्चो, जंगल में मत जाओ। (आगे विस्मयादिबोधक चिन्ह देखो।)

४. यदि दो परस्पर अन्वित पदों को, कोई पद, वाक्यांश या खण्डवाक्य, बीच में आकर अलग अलग करदे तो उनकी

दोनों ओर अल्पविराम (,) लाते हैं । जैसे–राम, जिसे सब जानते हैं, बड़ा नेक है । मेरी, आपके परिवार से, कौन बात छिपी है ? मेरा घर, आपकी दुहाई, कभी नहीं बिकसकता । वह ग्रन्थ, जो खरीदा है, जरा ले तो आओ । उस दिन, जब मैं पुस्तक लिख रहा था, आपसे भेंट हुई । (आगे निर्देशक चिन्ह का तीसरा नियम देखो ।)

५. **नित्यसम्बन्धी शब्दों के प्रत्येक जोड़े का दूसरा शब्द हि लुप्त रहे तो वहाँ अल्पविराम (,) लाते हैं** । जैसे–यदि आप आवें, मेरे लिये कुछ फल लाइयेगा ! वह जहाँ जाता है, बैठरहता है । यदि पढ़ना है, पढ़ो, नहीं तो घर जाओ ।

६. **'वह, यह' जब लुप्त हों तब अल्पविराम (,) लाते हैं।** जैसे–कब छुट्टी मिलेगी, मैं कह नहीं सकता । राम कब आवेगा, हम नहीं जानते । मनुष्य जो कुछ करते हैं, सुख केलिये करते हैं ।

७. **किसी की उक्ति के पहले अल्पविराम (,) लाते हैं** जैसे–राम ने कहा, " मैं परसों आऊँगा । " [ऐसी जगह अल्पविराम के बदले निर्देशक चिन्ह (–) भी लगाते हैं ।]

८. **यदि कोई खण्डवाक्य 'वरन् , पर, परन्तु, किन्तु, लेकिन, क्योंकि, इसलिये, तौभी, कारण' या इसी प्रकार के किसी अन्य शब्द या संस्कार से आरम्भ हो तो उसके पहले अल्पविराम (,) लाते हैं** । जैसे–मां उसे व्याकरण का नियम नहीं समझाती, **वरन्** शुद्ध बात बतादेती है । पहलेपहल केवल बोली हुई भाषा का प्रचार था, **पर** पीछे से विचारों को स्थायीरूप देने केलिये कई प्रकार की लिपियां निकाली गईं । लिखित प्राकृत का विकास रुकगया, **परन्तु** कथित प्राकृत विकसित अर्थात् परिवर्तित होतीगईं । उसका यह रूप नया नहीं है, **किन्तु** उतना ही पुराना है जितने कि उसके दूसरे रूप। खाने में तो अच्छा है, **लेकिन** वह स्वास्थ्य बिगाड़देता है । आजकल इस काव्य की मूलभाषा का ठीक ठीक पता नहीं लग सकता, **क्योंकि** भिन्न भिन्न

प्रान्त के लेखकों और गवैयों ने इसे अपनी अपनी बोलियों का रूप देदिया है। वह बीमार है, **इसलिये** नहीं आया। स्वच्छ वायु आवश्यक है, **कारण** मैली वायु से रोग होते हैं। दिखलाई तो नहीं देते, **तौभी** ये पानी में अवश्य मिले रहते हैं। वह रुपया मेरा न था, मेरे मालिक का था। राम रोरहा है, कोई नहीं सुनता। आप दौड़धूप मत करें, कुछ फल नहीं मिलेगा। (अर्द्धविराम का नोट देखो।)

९. वाक्य के आरम्भ में आनेवाले पद या वाक्यांश में पूर्व के किसी विषय के सम्बन्ध की कुछ भी गन्ध हो तो उसके आगे अल्पविराम (,) लाते हैं। जैसे–**हाँ,** एक एक गुण का अभ्यास करके लोग गुणों से अपने को अलंकृत करसकते हैं। **बस,** एक सत्य का आश्रय ग्रहण करने से और जितने गुण हैं, आप से आप आकर तुम्हारा हाथ पकड़ेंगे। **प्रथम,** नागर अपभ्रंश और **द्वितीय** अर्धमागधी। **अन्यथा,** प्राकृतभाषा का व्यवहार भारत में उस समय से चला होगा।

१०. अन्य स्थानों में भी ठहराव के कारण यदि अल्पविराम (,) देने की आवश्यकता हो तो देसकते हैं। जैसे— क, थ, म, इत्यादि। जैनहितैषी, नवाँ भाग, बारहवाँ अङ्क (आश्विन १९७०) प्रकाशक, हिन्दीपुस्तकभण्डार, लहेरियासराय, दरभंगा।

(;) अर्द्धविराम (Semicolon).

जहाँ यह चिन्ह (;) रहे वहाँ अल्पविराम की अपेक्षा कुछ अधिक काल तक ठहरना चाहिये।

नियम–जहाँ अल्पविराम की अपेक्षा कुछ अधिक काल तक ठहरने की आवश्यकता हो तथा एकवाक्य या वाक्यांश के साथ दूसरे का, दूर का सम्बन्ध बताना हो वहाँ अर्धविराम लाते हैं। जैसे–व्यवसाय बन्द है; वाणिज्य बन्द है; कृषिकार्य बन्द है; चारों ओर हाहाकाररव उत्थित होरहा है। पृष्ठ संख्या ३००; आकार मझोला; छपाई और कागज उत्तम; जिल्द बँधी हुई; मूल्य १) रुपया। वे

हमारी चिट्ठी साफ़ हजम करगये; डकार तक न ली।

नोट–(१) बहुतसे विद्वान् अर्धविराम की जगह अल्पविराम या पूर्णविराम ही से काम लेते हैं। हम ने भी ऐसा ही किया है।

(२) कोई कोई 'पर, परन्तु, इसलिये, किन्तु, क्योंकि, लेकिन, तौभी, कारण,' इत्यादि के पहले भी अर्धविराम लाते हैं। (देखो, अल्पविराम का आठवाँ नियम।)

(:) अपूर्णविराम (Colon).

जहाँ यह (:) चिन्ह रहे वहाँ अर्द्धविराम की अपेक्षा कुछ अधिक कालतक ठहरना चाहिये।

नोट–अकले अपूर्णविराम से विसर्ग का भ्रम होता है, इसलिये इसके आगे एक छोटी लकीर लगाकर इस (:—) रूप में लिखते हैं।

नियम–किसी वक्तव्य को कुछ अलग करके बताना या गिनाना हो तो उसके पहले अपूर्णविराम (:—) लाते हैं। ऐसी जगह केवल एक लकीर (—) से भी काम चलाते हैं।

जैसे—नीचे के वाक्यों को शुद्ध करो:—

नीचे के वाक्यों को शुद्ध करो—

नोट–आगे 'निर्देशक चिन्ह' देखो।

(।) पूर्णविराम (Full Stop).

जहाँ यह चिन्ह (।) रहे वहाँ भली भाँति ठहरना चाहिये।

नियम–प्रत्येक वाक्य की समाप्ति पर पूर्णविराम (।) आता है। जैसे–हिन्दी हमारी मातृभाषा है।

नोट–(१) परिभाषा या सूत्र लिखकर उदाहरण दिखाने में 'जैसे, यथा' इत्यादि शब्दों के पहले अर्द्धविराम देने से वाक्य की जटिलता दूर हो जाती है। अन्यथा, उनके पहले पूर्णविराम भी ला सकते हैं।

(२) नीचे के दो चिन्ह (?!) पूर्णविराम के अपवाद में हैं।

(?) प्रश्नबोधक (Note of interrogation).

प्रश्नबोधकवाक्य के आगे पूर्णविराम के बदले यह (?)

चिन्ह आता है। जैसे—तुम कहाँ जाते हो ?

नोट–जिस शब्द के शुद्ध या उचित प्रयोग होने में लेखक को सन्देह होता है उसके आगे कोष्ठ में प्रश्न का चिन्ह लिखाजाता है। जैसे–सच बोलना कितना आवश्यकीय (?) है, सच बोलने में कितनी बड़ी वीरता है–मैं सब कुछ दिखा चुका।

(!)विस्मयादिबोधक (Note of Admiration).

नियम–(१) विस्मय, शोक, करुणा आदि चित्तवृत्तियाँ जतानेवाले शब्द, पद, वाक्यांश या वाक्य के आगे विस्मयादिबोधक चिन्ह (!) लाते हैं। जैसे–हाय ! ऐसा अन्धेर ! यदि मैं परिश्रम करता तो मैं भी न आज गुलछर्रे उड़ाता ! " अहा ! ओहो !! हुर्रे हुर्रे !!!......उड़गये धुर्रे !

(२) यदि किसी वाक्य में प्रश्न की झलक रहने पर भी उत्तर की कांक्षा न हो तो उसके आगे भी विस्मयादिबोधक चिन्ह (!) लाते हैं। जैसे–बुढ़ापे पर दया मेरे जो करते, तो वन की ओर क्यों तुम पैर धरते !

(३) जिस सम्बोधन से विस्मय, शोक, आनन्द इत्यादि भाव प्रकाशिक करें उसके आगे विस्मयादिबोधक चिन्ह (!) लाते हैं। जैसे–छिपे हो कौनसे पर्दे में बेटा ! प्यारे ! अब फिर कब दर्शन होंगे ? भाग्य ! तेरी भी क्या प्रशंसा करें !

नोट–जो शब्द, पद, वाक्यांश या वाक्य किसी असम्भव बात का सूचक हो और उस पर विस्मय भी प्रकाश किया जाय तो उसके आगे कोष्ठ में यह चिन्ह (!) लाते हैं। जैसे–त्रिकालदर्शी (!) लेड़बीटर।

(—) निर्देशक (Dash).

नियम–(१) जहाँ वाक्य एकाएक टूटगया हो, जहाँ कोई पद या वाक्यांश किसी कारण से लिखने योग्य न हो और जहाँ किसी पद या वाक्य की भूल सुधारने या उसपर

अधिक प्रकाश डालने केलिये विवरण करना हो, वहाँ निर्देशक चिन्ह लाते हैं। जैसे-जिनको ऐश्वर्य का मद-हाँ हाँ, मैं सुनरहा हूँ, मुझी को कहते हो × ! गत परीक्षा में तुम ने-की थी, यह बात सब जानगये। यह तुम्हारी बात-बात नहीं करामात है।

(२) विषयविभाग सम्बन्धी प्रत्येक शीर्षक के आगे तथा वार्तालापविषयक लेखों में वक्ता के नाम के आगे निर्देशक चिन्ह (-) लगाते हैं। जैसे-राजभक्ति के लाभ-राजा की भक्ति से......। शकुन्तला-मैं बड़ों का अपराध न लूँगी।

(३) यदि वाक्य के बीच में कोई स्वतन्त्र पद, वाक्यांश या वाक्य आजाय तो इसकी दोनों ओर निर्देशक चिन्ह (-) लगाते हैं। 'जैसे-' मेरे पति ने-परमात्मा उनकी रक्षा करे !-विदेश-यात्रा की है।'

(४) कोष्ट और विराम के बदले भी निर्देशक चिन्ह (-) कभी कभी लाते हैं। जैसे-' अपना जीवन-अपनी जिन्दगी-भली भाँति सार्थक करलो।

तेरी उल्फत की चिंगारी ने, जालिम, एक जहाँ फूँका-
इधर चमकी-उधर सुलगी-यहाँ फूँका-वहाँ फूँका।

(५) यदि बोलने में ठिठकनापड़े तो निर्देशक चिन्ह लाते हैं। जैसे-'हमें-चिन्ता है-कि-आपके-दर्शन-नहीं होंगे।'

नोट-अल्पविराम का सातवां नियम देखो।

(२) अन्यचिन्ह (Other Signs).

[{ () }] कोष्टचिन्ह (Brackets).

नियम-(१) किसी पद, वाक्यांश या वाक्य के अर्थ को

× वक्ता के मुँह से 'जिनको ऐश्वर्य का मद' यह वाक्यांश सुनते ही बात काटकर श्रोता ने कहा-हाँ हाँ, मैं सुन रहा हूँ, मुझी को कहते हो।'

अथवा किसी अन्य वाक्य, वाक्यांश या पद को कोष्ठ चिन्हों के भीतर रखते हैं। जैसे-वार्तों का क्रम (सिलसिला) ठीक है। सरस्वती (प्रयाग) के पाँचवें अङ्क में छपा था।

(२) यदि कई पद, वाक्यांश या वाक्य ऊपर नीचे लिखकर घेरेजायँ तो इन [{ }] चिन्हों से घेरते हैं।

नोट-कोष्ठ के चिन्ह गणित में अधिकता से आते हैं।

" " उद्धरणचिन्ह (Inverted commas).

नियम-दूसरे की जिस उक्ति को अविकल उद्धृत करना हो या लेख के जिस छोटे या बड़े अंश पर विशेष ध्यान की आवश्यकता हो, उसे इन " " के भीतर रखते हैं। जैसे-शिक्षक ने कहा-" बालको, ध्यानपूर्वक सुनो "। " ने चिन्ह के प्रयोग " भलीभाँति सीखो।

नोट-यदि दूसरे की उक्ति के भीतर तीसरे की उक्ति आजाय तो उसे एकहरे उद्धरण चिन्हों (' ') के भीतर रखते हैं। जैसे-गुसाईं जी ने लिखा है—"रामजी ने ब्राह्मण को प्रणाम किया। उन्होंने 'दीर्घ-जीवी हो' कहकर आशीर्वाद दिया।"

(-) योजक (Hyphen).

नियम-(१) लिखते समय यदि कोई शब्द पंक्ति के अन्त में समूचा न लिखा जासके तो उसके एक या अधिक खण्डों को उस पंक्ति में लिखकर योजक चिन्ह (-) लगाते हैं और शेष दूसरी पंक्ति के आरम्भ में लिखते हैं। जैसे—

> दिनभर में पेटभर भोजन भी कठिन-
> ता से मिलता था।

नोट-१. उच्चारण के अनुसार प्रत्येक शब्द में एक, दो या अधिक खण्ड होसकते हैं। जैसे-श्री-मान्, कला-धर। यदि ये दोनों शब्द बाँट कर लिखे जायँ तो ठीक ऊपर लिखे अनुसार बाँटना चाहिये, इन्हें श्रीमा-न् और कलाध-र में बाँटना उच्चारणविरुद्ध होगा। पुस्तकों में प्रेसों की असावधानी से शब्दों के खण्ड प्रायः ठीकठीक अलगाये नहीं रहते। प्रेसवालों को इस भूल पर ध्यान देना चाहिये।

२. आजकल दो चार को छोड़ शेष सभी विद्वान् 'ने, को, से, का, में' इत्यादि चिन्हों को शब्दों से अलग * ही लिखते हैं। इसी परिपाटी के अनुसार हमने भी इन्हें अलग ही लिखा है, परन्तु जो साथ लिखनेवाले हैं वे ऊपर लिखी अवस्था में अलगाने के समय योजकचिन्ह लगाते हैं।

३. आजकल कोई कोई विद्वान् समस्त शब्दों के मूल खण्डों को अलग अलग लिखनेलगे हैं। ऐसी अवस्था में वे योजकचिन्हों से काम लेते हैं जैसे-

जयति मनुज-कुल-दया-द्रवित, दुखियन-दुख-भंजन।
जय भारत-निज-प्रजा-प्रणय-भाजन, जन-रंजन॥ (प० श्रीधर पाठक)

(———————या……या × × × इत्यादि)

वर्जन या लोपचिन्ह-

नियम-(१) लेख में जब एक या अधिक वाक्य शब्द या अक्षर अप्रकाशित रखना चाहें तब वर्जन चिन्ह लाते हैं। जैसे-उसने———कहकर गाली दी।

(२) यदि किसी वर्णन का कुछ अंश लिखने से सम्पूर्ण का बोध होजाय तो शेष केलिये वर्जनचिन्ह लाते हैं। जैसे-
आगे चले बहुरि………परवत नियराई।

(०, .) लाघव चिन्ह-

नियम-जो शब्द बहुत प्रसिद्ध हो या जिसे बारबार लिखना पड़े उसका प्रायः पहला अक्षर लिखते हैं और आगे

---

* 'ने, को, से, का, में' इत्यादि चिन्हों को अलग लिखना चाहिये या साथ? इस प्रश्न के उत्तर केलिये श्री प० अम्बिकादत्त व्यास कृत विभक्ति विभाग और श्री प० गोविन्दनारायण मिश्रकृत विभक्ति विचार नाम की पुस्तकें पढ़ो।

लाघवचिन्ह लाते हैं। जैसे—तारीख केलिये ता०, मिती केलियेमि०, इत्यादि। (पीछे 'लाघव' का पाठ देखो।

(‸) त्रुटिचिन्ह—

नियम—यदि लेख के बीच में कोई अक्षर, शब्द, पद, वाक्यांश या वाक्य लिखने से छूटजाय तो वहाँ त्रुटिचिन्ह लगाकर छूटे हुए अंश को किनारे पर लिखदेते हैं। जैसे—

बाजार से आटा ‸ और चीनी लाना। ,, दाल

☛ हस्तचिन्ह—

नियम—किसी प्रधान बात को लक्षित करना हो तो हस्तचिन्ह लगाते हैं। जैसे—

☛ ने चिन्ह पर ध्यान रक्खो।

(*, ×, †, ‡, §, ¶, इत्यादि) तारक—

नियम—किसी अक्षर, शब्द, पद, वाक्यांश या वाक्य के सम्बन्ध में कुछ अन्यत्र लिखना हो तो उसके आगे तारकचिन्ह लगाते हैं और पृष्ठ के अधोभाग में रेखा के नीचे फिर वैसा ही चिन्ह लगाकर तत्सम्बन्धी बातें लिखते हैं। (उदाहरण इसी पुस्तक में अन्यत्र देखो।)

(३) अनुच्छेद (Paragraph).

जब कई वाक्यों में किसी विषय का एक भावगत खण्ड समाप्त होता है और उस पर लेखक को कुछ कहना शेष नहीं रहता तब उसका विच्छेद किया जाता है और दूसरा खण्ड नई पंक्ति से आरम्भ होता है।

नोट—(१) लघुता और गुरुता के विचार से एक भाव कई खण्डों में

लिखाजासकता है, परन्तु एक खण्ड में कई भावों का समावेश करना अनुचित है।

(२) कथोपकथन (Dialogue) परस्पर वार्तालाप को कथोपकथन कहते हैं। इसमें प्रत्येक की उक्ति को अलग अलग एक एक अनुच्छेद में रखना चाहिये।

(३) यदि रचना के बीच बीच में कहा, बोला इत्यादि क्रियाएँ आवें तो समूचे कथोपकथन को एक ही अनुच्छेद में रखना उचित है।

५५. अभ्यास (Exercise).

नीचे जहाँ जहाँ उचित हो, विरामादि चिन्हों को लगाओ और अनुच्छेदों को अलग करो-

उनकी मुद्रा भी देखने ही योग्य थी वह पद्य इस भाँति पढ़ते कि आप आशय का रूप बन जाते थे और लोग भी नकल उतारते थे पर वह बात कहाँ वह पढ़ने में अङ्गों से भी काम लेते थे जैसे प्रदीप का विषय बाँधते तो पढ़ते समय एक हाथ से प्रदीप और दूसरे की ओर वहीं फानूस बनाकर बताते क्रोध या अप्रसन्नता का विषय होता था तो आप भी त्योरी चढ़ाकर वहीं बिगड़जाते क़हक़हों के शब्द आते हैं देखना कवियों का झुण्ड आन पहुँचा इन का आना ग़ज़ब का आना है ये ऐसे खुले चौड़े होंगे कि इनकी ढिठाई गम्भीरता से ज़रा न छिपेगी इतना हँसें और हँसायँगे कि मुँह थक जायँगे पर न उन्नति के डेग आगे बढ़ायँगे न अगली अटारियों को ऊँचा उठायँगे उन ही कोठों पर कूदते फाँदते फिरेंगे इन भाग्यवानों को पठंगा भी अच्छा मिलेगा ऐसे गाँहक हाथ आयँगे कि एक एक फूल इनका केसर की क्यारी के मोल बिकेगा देववाला क्या मैं तुम को भूल सकता हूँ पर क्या करूँ आज गुरु जी ने छुट्टी सूरज डूबने पर की इसी से यहाँ आने में कुछ अबेर हो गई क्या मैं थोड़ी बेर और न आता तो तू यहाँ से चली जाती हाँ भाई क्या करती अँधेरा होनेपर यहाँ ठहर तो नहीं सकती मा जो कुढ़ने लगती हैं देवनन्दन तो फिर हमसे तुमसे आज भेंट कैसे होती दे० बा० कैसे होती इसी से तो कहती हैं तुम जैसे पहले मेरे घर आया करते थे उसी भाँति अब भी आया करो मा भी एक दिन कहती थीं बहुत दिन हुए देवनन्दन को मैं ने नहीं देखा दे० न० तुम्हारे घर आने में मुझे कौन अटक है पर देखो यदि नहीं

पढ़ने लिखने के हैं जो इधर उधर घूम फिर कर इनको बिता दूँगा तो फिर पढ़ना लिखना कैसे आवेगा देवबाला ने रूठकर कहा क्या हमारे घर आना इधर उधर घूमना है हमारे घर घड़ी आध घड़ी के लिये आओगे तो क्या इसी में तुम्हारा पढ़ना लिखना न हो सकेगा देवनन्दन ने हँसकर कहा अच्छा अब मैं फिर तुम्हारे घर कभी कभी आया करूँगा

भाषा व्यवहार।

लाघव (Abbreviation).

१. कोई आशय जितने ही थोड़े पदों से प्रकाश किया जाय उतना ही वह उत्कृष्ट समझाजाता है। जैसे—'हम तो यहाँ अब बैठगये, अब हम यहाँ से उठनेवाले नहीं हैं।' 'जो लोग उठादेनेसे उठजाते हैं वे हमारे सदृश नहीं हैं।' लाघव के विचार से इसकी जगह यों बोलना चाहिये—'हम जहाँ बैठगये, बैठगये। उठनेवाले कोई और होंगे।'

लाघव करने में इस बात पर पूरा ध्यान रखना चाहिये कि अर्थ भ्रष्ट न होनेपावे।

२. निश्चय, आवश्यकता आदि के कारण किसी विषय को जोर देकर कहना हो तो वहां लाघव का विचार नहीं कियाजाता। जैसे—'सच बोलना कितना अच्छा है, सच बोलना कितना आवश्यक है, सच बोलने में कितनी बड़ी वीरता है—मैं सब कुछ दिखाचुका। उस लड़के में कौनसा दोष नहीं है? झूठ वह बोलता है, चोरी वह करता है, जूआ वह खेलता है।'

गम दिया, रंज दिया, दाग़ दिया, जहर दिया—
खूब बीमारे*मुहब्बत की दवा तुमने तो की।

३. (क) जो शब्द बहुत प्रसिद्ध हो, या जिसे वारवार लिखनापड़े उसका अक्सर पहला अक्षर लिखते हैं। जैसे—

* यह रीति उर्दू की है, हिन्दी की नहीं।

सन केलिये स०, तारीख केलिये ता०, मिति केलिये मि०, नम्बर केलिये न०। नाटक आदि में राम, कृष्ण, शकुन्तला या और कोई नाम बारबार न लिख कर रा०, कृ०, श०, आदि लिखते हैं।

(ख) पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ, छठा इत्यादि क्रम से '१ ला, २ रा, ३ रा, ४ था, ५ वाँ, ६ ठा' आदि से लिखते हैं।

(ग) किसी शब्द को दोबार लिखना हो तो अक्सर उसे एकबार लिखके उसके परे (२) अङ्क लिखदेते हैं, **पर यह चाल अच्छी नहीं +। प. केशवराम भट्ट।**

रोज़मर्रा (Common Use).

१. हिन्दी जिनकी मातृभाषा है वह अपनी नित्य की बोलचाल में वाक्यरचना जिस रीति से करते हैं उसे रोज़मर्रा कहते हैं। जैसे—'कलकत्ते से पेशावर तक सात आठ कोस पर एक पक्की सराय और एक कोस पर चबूतरा बना हुआ था'। यह वाक्य रोज़मर्रे के अनुसार नहीं है। इसकी जगह यों होना चाहिये—'**कलकत्ते से पेशावर तक सात सात आठ आठ कोस पर एक एक पक्की सराय और कोस कोस भर पर एक एक चबूतरा बनाहुआ था।**

२. बोलने और लिखने में यथासम्भव रोज़मर्रे का विचार रखना बहुत ही आवश्यक है। बिना इसके लिखना या बोलना कौड़ी काम का नहीं।

३. रोज़मर्रे के प्रयोग का ऐसा कुछ नियम नहीं बनसकता। अच्छे अच्छे लेखकों के लेख बारबार ध्यान देकर पढ़ना और अच्छे अच्छे बोलने-वालों की बातचीत ध्यान देकर सुनना—सिवा इसके कदाचित् और कोई उपाय नहीं है।

४. बोलचाल का रोज़मर्रा नया गढ़ा नहीं जासकता। 'जैसे—**पाँच सात' 'सात आठ' या 'आठसात' पर अनुमान करके 'छआठ'**

+ उस वर्ग के अच्छे २ लड़कों को पुस्तकें दीगईं। ऊपर की रीति से इस वाक्य के आगे लिखे दो अर्थ होते हैं-(क) अच्छे दो लड़कों को और (ख) अच्छे अच्छे लड़कों को।

'आठछ' या 'सातनौ' बोलाजाय तो उसे रोज़मर्रा नहीं कहेंगे। क्योंकि भाषा में कभी ऐसा नहीं बोलते।

पं० केशवराम भट्ट।

लेखक को उचित है कि वाक्यों में एकही ढंग के शब्द प्रयोग करें। उच्च भाषा के शब्दों के साथ साधारण भाषा के शब्द रहने से वाक्य मधुर नहीं हो सकते। यदि अन्यान्य भाषाओं के शब्दों की आवश्यकता हो तो उन्हीं को लाना चाहिये जो प्रयोग में भलीभाँति आगये हों। वाक्यों में सान्दिग्ध शब्दों को लाना उचित नहीं। इन कारणों से "उसने मेरा हस्त पकड़ा। मैंने राम का हाथ धारण किया। यह काव्य उच्च दर्जे का है। अभी इक्ज़ामिनेशन के फ़िफ्टीन डेज़ हैं। शायद मौर्निंग ट्रेन से टुमारो स्टार्ट होजाऊं। इस सोसाइटी में पब्लिक का क्या ओपिनियन है?" इत्यादि वाक्य हिन्दी केलिये योग्य नहीं।

वाग्धारा या मुहावरा (Idiom).

"१. कोई वाक्य या वाक्यांश अपना सामान्य अर्थ न जताकर कुछ और ही विलक्षण अर्थ जताये तो उसे वाग्धारा कहते हैं। 'जैसे—रणजीतसिंह ने पठानों के दाँत खट्टे कर दिये'। घर में बैठेहुए यों 'पाँव निकाले,' तुमने। इतना कहते ही वह 'पानी पानी होगया'। उसे अच्छे से 'पाला पड़ा है'। इस बात के सुनते ही उसके 'पेट में घोड़ा कूदने लगा।'

२. मौलवी अल्ताफ़ हुसैन हाली का मत रोज़मर्रे और मुहावरे के विषय में पढ़ने योग्य है। " रोज़मर्रे की पाबन्दी जहाँ तक सम्भव हो लिखने और बोलने में जरूरी समझी गई है। यहाँ तक कि वाक्य में जितना रोज़मर्रे की पाबन्दी कम होगी उतना ही उसमें लालित्य कम होगा, परन्तु मुहावरे केलिये यह बात नहीं है। मुहावरा जो उत्कृष्ट रीति से बाँधाजाय तो निस्सन्देह निकृष्ट आशय को उत्कृष्ट और उत्कृष्ट को उत्कृष्टतर कर देता है, पर हर जगह मुहावरे का बाँधना ऐसा कुछ आवश्यक

नहीं बिना मुहावरे के भी ओजस्वी वाक्य होसकता है। मुहावरा मानो मनुष्य के शरीर में कोइ सुन्दर अंग है और रोज़मर्रे को ऐसा जानना चाहिये जैसे अंगों का तारतम्य मनुष्य के शरीर में। लोग साधारणत: उसी लेख को बहुत पसंद करते हैं जो रोज़मर्रे पर ध्यान देकर लिखागया हो और जो रोज़मर्रे के साथ मुहावरे की भी चाशनी हो तो वह उनको और भी अधिक स्वाद देता है।"

—पं० केशवराम भट्ट।

८६. अभ्यास (Exercise).

नीचे लिखे वाक्यों को लाघव, रोज़मर्रे और मुहावरे पर ध्यान रखकर ठीक करो।

वे इतना हँसेंगे और इतना हँसायँगे कि सबके मुँह थक जायँगे, पर वे न उन्नति के डेगों को आगे की ओर बढ़ायँगे और वे न आगे वाली अटारियों को ऊँचा उठायँगे। मेरे पास चार करोड़ चौरासी लाख सत्तावन हजार पाँच सौ बयालीस रुपये चौदह आने और तीन पैसे निकले। गर्दा उड़ उड़कर पड़जाने से सड़क पर के मकान ठीक नहीँ। कई दिन के बाद आज दो चावल भात खाया है। राम ने मुझे चरण से सिर तक देखा। आठबारह दिन में हम अपने शरीर को आपके यहाँ लावेंगे। उसने आपके मनको सत्ताईसो बार कहा, परन्तु आपके मन ने उस काम में ध्यान नहीँ दिया। शहरका मार्केट भाव साढ़े फाइवसेर है। इस बात को कान में लेते ही उसकी अँतड़ी में गधा कूदने लगा। इतना कहते ही वह लाज से दूध दूध होगया। बादल की आड़ में सूर्य्य बैठा था। ऐसे ऐसे गाँहक सब हाथ में मिल जायँगे कि इनका एकएक फूल केसर की क्यारी के मोल में बिकजाया करेगा।

कुछ मुहावरेदार शब्द, वाक्यांश इत्यादि।

(Someldiomatic words, Phrases, etc).

१. संज्ञा—

अड़ोसपड़ोस, अदलबदल, आगापीछा, आन्दोलन, उछलकूद, कथोपकथन, काटछाँट, कानाफूली, कूपमण्डूक, कोहराम, खरीदबिक्री, गुलगपाड़ा, गोलमाल, चमकदमक, चलताहिसाब, चिन्तास्रोत, छक्कापंजा, छलप्रपंच,

छलबल, छानबीन, जोड़तोड़, तीनतेरह, दानापानी, धर्म्माधर्म, धूमधाम, नीचऊँच, नोकझोंक, पर्वतश्रेणी, पुष्पाञ्जलि, फलाफल, मरुभूमि, मतामत, मारपीट, मुक्तकण्ठ, मेलाठेला, लगावचभाव, लड़काबाला, शत्रसम्प्रदाय, षड्यन्त्र, सभासमाज, सर्वस्वहरण, सर्वसाधारण, सुखदुःख, स्त्रीपुरुष, हस्तामलक, हाथपाँव, हिताहित, इत्यादि।

तीन दिन की छुट्टी, चार सेर का आटा, दो बीघा ज़मीन, गाड़ीगाड़ी लकड़ी, पाँचों टुक कपड़े, टिड्डियों का झुण्ड, एक जोड़ा बैल, अंगूरों का गुच्छा, लकड़ी का टाल, इत्यादि।

प्रयोग–कोहराम मचा हुआ है। थोड़ी देर पीछे बन्दरों के **गुलगपाड़े** की आवाज सुनाईपड़ी। उसने **मुक्तकण्ठ** से आपकी प्रशंसा की। उस खिलाड़ी केलिये **'हस्तामलक'** हैं वे सभी। **चार सेर का आटा** बिका।

२. सर्वनाम—

हमारे में, हम सब, हमलोग, तेरे में, आप सब, आपलोग, आपका, कोई कोई, निज, स्वतः, स्वयं, एक, एक दूसरा, दोनों, जो कोई, जो–सो, जो–वह, जौन जौन, जौन–तौन, तौन तौन, कोई और, आप, कौन कौन, कई एक, इत्यादि।

आप ही आप, एक आध, एक वह तो एक यह, कोई कुछ तो कोई कुछ, किसी किसी, चाहे वह चाहे यह, जो हो सो हो, जिस तिसका,, कोई न कोई, किसी न किसी का, इत्यादि।

प्रयोग–भगवान जाने **हमारे में** यह सुमति कब आयगी। (प्रताप) **किसी किसी** को यह रीति पसंद नहीं। हम तुम्हें एक अपने **निज के** काम में भेजा चाहते हैं। हम आज **अपने आप** को भी हैं **स्वयं** भूले हुए। दुविधा में **दोनों** गये माया मिली न राम। सभा में **एक** आता है तो **एक** जाता है। पीछे 'सर्वनाम प्रयोग, देखो।)

३. विशेषण—

अजरअमर, अदृष्टपूर्व, अधमुआ, अनगढ़ी, अनगिना, अनपढ़, अनसुँधा, अनिर्वचनीय, अर्थलोलुप, अश्रुतपूर्व, असाधारण, असूर्यम्पश्या, अभूतपूर्व,

अपरिमित, कलमुहा, किंकर्तव्यविमूढ़, कृतकार्य, खुल्लमखुल्ला, घनघोर, घटाटोप, घमासान, चमत्कारिक, चितचोर, जीवन्मृत, डाँवाडोल, धपाधप, नकचढ़ा, नंगधड़ंग, न्यूनाधिक, पकापकाया, बनाबनाया, बहुसंख्यक, भग्नहृदय, भूतपूर्व, भोलाभाला, मनमाना, मूशलधार, लालबुझक्कड़, लोहूलुहान, लोमहर्षण, विलक्षण, श्रृङ्खलाबद्ध, सर्वसाधारण, सर्वसम्मत, साफसुथरा, सायंकालीन, स्वार्थशून्य, हस्तान्तरित, हृदयविदारक, इत्यादि।

प्रयोग—असूर्यम्पश्या नारी। वीभत्स उपचार। **अभूतपूर्व** आनन्द। **दुर्लङ्घ्य** पर्वत। **लोमहर्षण** हत्याकाण्ड। **सायंकालीन** शोभा। **अपरिमित** ऐश्वर्य। इत्यादि।

४. क्रिया—

उ—वह एकदम **उखड़गया**। तुम क्यों **उबल** पड़े?

क—सूअर **किकियाता है**। मुर्गी **कुरकुराती** है। लड़के **कनभनाते हैं**। दाँत **कटकटाता है**। आसमान **कड़कड़ा** रहा है। नदी **कलकल** करके बहती है। आदमी **कुड़कुड़ा** रहा है। मोर **कूकता है**। पेट में **कलछुल फिरनेलगी**। ख—पत्ते खड़खड़ाते हैं। **खिलखिला** कर हँसपड़ा। किंवाड़ खटखटाता है। दाँत **खट्टे होगये**। ग—बादल **गड़गड़ा** रहा है। गुस्से में **गरगराने** लगा। लड़की **गिड़गिड़ा** रही है। बाघ **गुर्राने** लगा। भौंरे **गुंजार** करते हैं। घ—गला **घड़घड़ाता है**। जी **घिनघिनाता** है। कबूतर **घुटुकता** है।

च—चिड़ियाँ चहचहाती हैं। चढ़चलो। चढ़धाओ। चढ़बैठो। **चबाचबा** कर बातें मत करो। हाथी चिग्घाड़ने लगा। क्या अक्ल **चरने गई** थी। छ—घी **छनछनाता** है। आँसू **छलछला** आये। भूख से छटपटा रहा है। **झ**—पानी बरसे **झमझमझम**। चील झपट्टा मारती है। हथियार झनझनाते हैं। आँखें **झिलमिलाती** हैं। नौबत **झरने** लगी।

ट—बेंग टरटराता हैं। तुम क्यों टर्रा रहे हो। बगुले **टक लगाये** बैठे हैं। **ठ—ठठाकर** मत हँसो। तबला **ठनठनाने** लगा। इस वंश का चिराग **ठंढा** होगया। **ड**—आँखें डबडबा गईं। ढ—घाव **ढलढला** रहा है।

त-आँखें तिरमिरा गईं। थ-वह **थरथरा** गया। म **थर्रा** गया। द-कुल में **दाग़ मत लगाओ**। ध-छत **धमधमाने** लगी। छाती **धकधकाती** है।

प-क्या खोजते हो, **पार होगया**। फ-साँप फुफकारता है। पंख **फरफराने** लगे। ब-ऊँट **बलबलाता** है। आपही को तो **बनआया** है। उसी को तो **बनपड़ा** है। आप क्यों **बिगड़** पड़े। भ-मक्खियाँ **भनभनाती** हैं। मिट्टी **भुरभुरा** गई। वहाँ से **भागनिकले**। कहो, **भंडा फोड़ दूँ**। म-घर **मड़मड़ाता** है। चील मड़राती है। क्यों **मुँह चलाते** हो? बकरी मेमिआती है।

ल-पाँव **लटपटाते** हैं। वह **लरखरा** गया। जो मन आया, **लिखमारा**। स-हवा **सनसनाती** है। वह **सटपटा** गई। ह-लम्बी चौड़ी **हाँक** रहे थे। घोड़ा **हिनहिनाता** है। सियार **हुआँहुआँ करता** है।

५. अव्यय—

अंधाधुन्ध, अनुपहपूर्वक, अबतब। आगापीछा, आपादमस्तक, आमने-सामने, आजकल करके, आठोंपहर। इधर उधर, इतने ही में। एकदएक, एक एक करके, एकही बार, एक न एक दिन। कबकब, किसी न किसी दिन, कौड़ीकौड़ी, कर्तव्यानुरोध से, कभीकभी, कुछनकुछ, कबतक, कहाँतक, कहाँकहाँ, क्याक्या, कानाकानी, कहीं न कहीं, कुछकुछ। खींचाखींची। गुत्थमगुत्था, गद्गद वचन से। घरघर। चुपचाप। छीनाछीनी। ज्यों त्यों करके, जैसे का तैसा, जबकभी, जबतक, जहाँ कहीं से, जबनतब, जभी-तभी, जहाँ-तहाँ, जो कुछ, जब-तब, ज्योंत्यों करके, ज्यों का त्यों, जिधर तिधर। टकटकी बाँधे। दैवक्रम से, दिनदिन, दौड़ादौड़ी, दौड़तेदौड़ते। धीमे धीमे। न-न। पलक मारते, पाँवपाँव, पुङ्खानुपुङ्ख रूप से, पीड़ावशतः। बालबाल करके, बूँदबूँद करके, बाहर भीतर, बैठेबैठे। भाँतिभाँति। मुँहामुँही, मनही मन, मुँह ही मुँह, मुक्तहस्त से, मुश्किलन, जन न। यावज्जीवन, यथा-शक्ति, यहाँवहाँ से, यहाँतक, यहींवहीं का, यद्यपि-तथापि या तौभी, यदि-तो। रातोंरात। सचमुच. सुचारुरूप से, स्वेच्छानुसार, सबकुछ, सोचते विचारते,

सोते जागते। हाथों हाथ।

प्रयोग– सोते जागते टोका सबको, **उठतेबैठते** रोका सबको। **आठोपहर** उसी धुन में रहते हो। **कौड़ीकौड़ी** चुकादो। वह **रातोंरात** काशी चलागया। (पीछे 'अव्यय' देखो।)

परिशिष्ट—

(१) नीचे कुछ और मुहावरे दियेजाते हैं—

(१) हाथ धो बैठना (खो देना), हाथ डालना (आरम्भ करना), हाथ खींचना (छोड़ना), हाथ उठाना (मारना), हाथ मारना (शर्त करना), हाथ चलाना (छेड़ना), हाथ धरना (कृपा करना), हाथ कटाना (काबू न रखना), हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना (कुछ न करना), हाथ खाली होना (कुछ न रहना), हथियाना (लेना), हाथ धोकर पीछे पड़ना (लगातार पीछे पड़ना), हाथ मलना (पछिताना), हाथ आना (मिलना), इत्यादि।

(२) मुँह मारना (मुँह में जाना), मुँह की खाना (कड़ा जवाब पाना), मुँह चलाना (बकना), मुँह फिरना (घमण्ड होना), मुँह ही मुँह देना (जवाब पर जवाब देना), मुँह बनाना (चेष्टाविशेष करना), मुँह बिगाड़ना (उलटा जवाब देना), मुँह फाड़ना (हँसना), मुँह फक्क होना (घबड़ाना), मुँह में पानी भरना (इच्छा होना), मुँह काला होना (कलंक लगना), मुँह माँगी मौत मिलना (चाही हुई बात का पूर्ण होना), इत्यादि।

(३) आँख मारना (इशारा करना), आँख मटकाना, आँख मूँदना (विचार न करना), आँख मिचना (मरना), आँख खुलना (समझ आना), आँख दिखाना (धमकाना), आँख लगना (प्रेम होना, सोना), चार आँखें होना (सामने होना), आँख बदलना (मन फिरना), आँखों में चर्बी छाना (घमण्ड आना), आँखें नीली पीली करना (नाराज़ होना), आँख उठाकर देखना (क्रोधित होना), आँखों में खून उतरना (क्रोध से आँखें लाल होना), इत्यादि।

(४) दाँत खट्टे करना (हराना), दाँतकाटी रोटी (बड़ी मुहब्बत), दाँत पीसना (क्रोध करना) दाँत तोड़ना (चोट पहुँचाना), दाँत मारना (कौर भरना), दाँत दिखाना (लाचारी जताना), दाँतों में उँगली देना (अचंभित होना), इत्यादि।

(५) नाक का बाल (बहुत प्यारा), नाक कटना (इज़्ज़त खोना), नाक

दबाना (दबाव डालना), नाक चने बिनवाना (बेहद तङ्ग करना), नाक रखना (शर्म रखना), इत्यादि।

(६) खून उबलना (क्रोध आना), खून बहाना (मारडालना), खून बिगड़ना (खून का रोग होना), खून सूखना (डरना), खून का प्यासा मारने की इच्छा करनेवाला), इत्यादि।

(७) पानी भरना (हार मानना), पानी ढलना (बेशर्म होना), पानी पड़ना (शर्म आना), पानी उड़ना (इज़्ज़त बिगड़ना), पानी पी जाति पूछना (काम करके पीछे सोचना), पानी में आग लगाना (बेबात लड़ाई करना), चुल्लू भर पानी में डूबना (बड़ी शर्म की बात होना)।

(८) सिर मुड़ना (ठगना), सिर लेना (ज़िम्मा लेना), सिर हिलाना (मना करना), सिर देना (बलिदान होना), सिर चिराना (हठात् किसी से कुछ लेना), सिर कटना (माराजाना), सिर पड़ना (नाम लगना),सिर पर चढ़ना (इतराना), सिर डालना (हठात् सौंपना), सिर पटकना (किसी दूसरे पर डालना), इत्यादि ।

(९) ख़ाक उड़ना (बरबाद होना), ख़ाक चाटना (तबाह होना), ख़ाक उड़ाना (बदनाम करना), ख़ाक डालना (छिपाना), ख़ाक बरसाना (नाश होना), ख़ाक में मिलना (बरबाद होना), ख़ाक छानना (बहुत ढूँढ़ना), इत्यादि।

(२) कुछ मुहावरेदार वाक्य—

अपना पचड़ा सुनाने लगजायँगे । अपने दिनों का फेर है । अब क्या, बस पौ बारह है। अपने चंगुल में फँसा लिया। अभी लम्बी ही चौड़ी हाँक रहा था। आफत पर आफत आई। आँखों में सूरत समागई । आप क्यों लालपीले होरहे हैं ? आप भी उपमा की टाँग तोड़नेलगे। आन की आन में आन पहुँची। आज दिनभर एकादशी है। आजकल रूपवर्णनका बाजार गर्म है। अङ्गरेजी विचार की गन्ध छू तक नहीं गई। इज़्ज़त मिट्टी में मिलगई। इस काम से काम ऐंठते हैं। उसकी खूब खबर लीगई। उसका पिंड कभी न छोड़ेंगे। उसका माथा ठनका। एकदम फूल से लदगई। एक पर एक टूटापड़ता था। और चार बातें सुनाईं। कुल में दाग लगाया। कविता समुद्र के पार होगई। काम में बहुत फँसे हैं। क्या उनकी हँसी उड़ाते हो। खैर, जाय यह झंझट। खूब कस कस कर खालिया। घर नीलाम पर चढ़गया। गाड़ी गाड़ी चावल आया।

धूमधाम कर लौट आये। जहाँ राज रजना वहाँ भीख नहीं माँगनी। जड़ में कुल्हाड़ी क्यों लगाते हो? जान लो कि बात क्या है? जान हथेली पर रख कर खेलगया। जाओ तो जासकते हो। जाओ या न जाओ, वह तो जायगा ज़रूर। जी में एक न समाई। झगड़ा मोल लेना उचित नहीं। ठहाका क्यों लगाते हो? डेरा जमता ही जाता है। तुम मुँह दिखाने योग्य नहीं। तुम छीना छीनी कर रहे हो। दिन कटे तो कैसे कटे! देखकर भी नहीं देखा। देहमें आगसी लगगई। भूषणों से नखसिख लदी है। नौ दो ग्यारह हुए। पर ऐसा होना ही क्यों था? पहाड़ फूंककर उड़ाना चाहता है। पागल हो और क्या? पीलराग का पितृश्राद्ध होता था। पीछे पैर नहीं देगा। पेट भर के पीलो। प्राण मुँह को चले आते हैं। प्रेम उछलपड़ा। फिर हमसे दाँत खटाखट क्यों करते हैं? बरसाकाल मुँह पर आया। बड़े दिमाक रच रहे हैं। बात बढ़गई। बात ही बात में यह बात निकली। बुद्धि में बृहस्पति का कान काटता है। भले ही लोग टें टें पों पों किया करें। मन रनवास में घरा होगा। मनलड्डू से भूख बुझा ली। माल चबादिया। मुकदमा दायर करो। मुहब्बत की बला सिर पर सवार हुई। मेरी समझ पर पत्थर पड़गये। मेरे पंजे में आये। मेरे माथे मत टोको। रक्खी रक्खी तलवार जंग खागई। रुपये फूँक दिये। रूप उछलापड़ता था। लम्बी साँस खींचने लगे। लूटमार का बाजार बन्द होगया। लो मैं बाण उतार देता हूँ। वह गिरेगिरे हुआ है। वह अब इस संसार में नहीं है। वह मुँह दिखाने योग्य नहीं है। वह मारे भय के मरे तुल्य होगया। वह आठ आठ आँसू रोई। वह जार बेजार रोनेलगी। वह दैन से चूर होगया। वह तुम से रगड़ा करता है। वह होंठ चाट रहा है। वह पहले ही से जान का प्यासा हो रहा था। शरीर सूखाजाता है। सच पूछिये तो है ही नहीं। सबके होश हवा खाने चले गये। सब छक्केपंजे भूल गये। समझता क्या हूँ। साहब ने तुम्हें लेडाला। सिर की खूब खबर ली जायगी। सुनते ही उनकी बाई पचगई। सुनकर हृदय पिघलगया। सौ बातों की एक बात है। हम जो कोई क्यों न हों। हाथ को हाथ नहीं सूझता। हो तो उसे छोड़ दो। होंठ काट कर चुप रह गये। हौले हौले दुबले होते जाते हैं। हँसी में बात उड़ा दी। हँसी खुशी के चहचहे उड़ रहे थे।

५७. अभ्यास (Exercise).

१. नीचे लिखे प्रत्येक शब्द को एक एक वाक्य में रक्खो।

धूमधाम, षड्यन्त्र, सर्वाङ्गसुन्दर, दोनों, घमासान, लालबुझक्कड़, हृदयविदारक, भग्नहृदय, कलमुहा, ढलढल, अधमुआ, चकनाचूर, भलाचंगा, करतूत, उथलपथल। (Matriculation Examination, 1915).

२. नीचे लिखे वाक्यांशों से एक एक वाक्य बनाओ।

लिखमारा, ठण्ढा होगया, नालचाल करके, टँटँ पाँ पाँ, हाथ मलने लगा, आँख दिखाना, खून का प्यासा, उपमा की टाँग, कसकसकर, सधफपर पत्थर, लेहाला, खुशी के चहचहे।

३. नीचे लिखे वाक्यों को मुहावरेदार वाक्यों में बदलो।

आप क्यों रंज होरहे हैं? आज किसीने कुछ नहीं खाया। इस काम को अब नहीं करेंगे। व्यर्थ झगड़े में फँसना उचित नहीं। राम भाग गया। मैं नहीं समझ सका। वह मर गया। क्रुद्ध होकर चुप रहगये।

४. आँख के जितने मुहावरे तुमको याद हों उन्हें वाक्यों में प्रयोग करो।

कहावत (Proverb).

'कहावत' मौकेपर कही जाती है और उससे घटना का फल निकाला जाता है। यह मुहावरे के समान वाक्य का कोई अङ्ग नहीं, बल्कि एक **स्वतन्त्र वाक्य है**। कहावत बोलचाल में नमक और लेखों की भाषा में जीवन डालदेती है। यह एक ओर सचाई रखती है और दूसरी ओर तीव्र आलोचना चाहती है। इससे सांसारिक कार्यों का बहुत बड़ा लगाव है। जिस रचना में उचित स्थान पर दो एक कहावतों का प्रयोग हो वह बड़ी सुन्दर हो जाती है।

'कहावत' को लोकोक्ति या प्रवादवाक्य भी कहते हैं। नीचे थोड़ी सी कहावतें दी जाती हैं।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता। अशर्फी की लूट कोयले पर मुहर। अपनी डफली अपना राग। अनदेख चोर राजा बराबर। अधजलगगरी छलकत जाय। आगे नाथ न पीछे पगहा। आँखों के अन्धे गाँठ के पुरे। आँखों के अन्धे नाम नैनसुख। आप डूबे तो जग डूबा। आगे दौड़ पीछे चौड़। आग लगते झोपड़ा जो निकले सो लाभ। आम का आम गुठली का दाम।

उंगली पकड़ कर पहुँचा पकड़ना। उधार का खाना फूँस का तापना। उलटा चोर कोतवाल को डाँटे। ऊँट के मुँह में जीरा। ऊधो का लेना न माधो का देना। ऊँची दूकान, फीके पकवान। ऊँट किस करवट बैठे। एक मियान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं। एक से एक इस होते हैं। एक पंथ दो काज। एक तो करैला दूसरे नीम चढ़ी। ओछे की प्रीत बालू की भीत। ओस के चाटे प्यास नहीं बुझती। ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर। अंधों में काना राजा। अंधेर नगरी चौपट राजा। कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर। करघा छोड़ तमासे जाय, नाहक मार जुलाहा खाय। कहाँ राजा भोज कहाँ भोजवा तेली। काला अक्षर भैंस बराबर। काठ की हाँड़ी एकही बार चढ़ती है। कानी गैया के अलगे बथान। काल के हाथ कमान, बूढ़ा बचे न ज्वान। काजल की कोठरी में धब्बे का क्या डर? काम जो आवे कामरी का लेकरै कमाच। काबुल गये मुगल बनि आये बोलन लागे बानी, अब अब करि पूता मरिगये सिरहाने में पानी। क्या काबुल में गधे नहीं होते? किस बिते पर तत्ता पानी! कुल्हिया में गुड़ फोड़ना। कूड़े का बालू फेरफार। कोयले की दलाली में हाथ काले। खरी मजूरी चोखा काम। खरा खेल फरुखाबादी। ग्वालिन अपने दही को खट्टा नहीं कहती। गाँव का जोगी जोगड़ा बाहर का सिद्ध। गुरु गुड़ चेला चीनी। गुरु कीजै जान पानी पीजै छान। घर की मुर्गी दाल बराबर। घर का भेदी लंका ढाह। घर में चूहे डंडौत करते हैं। घोड़ा घास से यारी करे तो खाय क्या? घर पर फूस नहीं नाम धनपत। घर में भूँजी भाँग नहीं। घी कहाँ गया खिचड़ी में। चना और चुगल मुहँ लगे अच्छे नहीं। चारदिनों की चाँदनी फिर अंधेरी रात। चिराग तले अंधेरा। चिउँटी पर तोप चलाना। चोर की दाढ़ी में तिनका। चींटी पर के आये हैं। चोर चोर मौसेरे भाई। छठी का दूध ज़बान पर आगया। छोटा मुहँ बड़ी बात। जबतक साँस तब तक आस। जान है तो जहान। जिस की लाठी उसकी भैंस। जिस को पिया चाहे वही सुहागिन। जूते तो अवश्य मारे पर वे लाल थे। जैसे कन्ता घर रहे वैसे रहे विदेश। जैसी करनी वैसी भरनी। जैसी बहे बयारि पीठ तब तैसी दीजै। जैसा गुरु वैसा चेला माँगे गुड़ लावे ढेला। जो गरजता है सो बरसता नहीं। जो चढ़ेगा सो गिरेगा। जो बोले सो किंवाड़ खोले। डूबते को तिनके का सहारा। डूबा वंश कबीर का उपजे पूत कमाल। ढाक के तीन पात। तिरिया तेल, हमीरहठ, चढ़े न दूजीबार। तीन बुलाये तेरह आये। तीन लोक से मथुरा

न्यारी। तुख़्म तासीर सुहबते असर। तुम डारडार हम पातपात। थूक का चाटना अच्छा नहीं। थूक में सत्तू नहीं सनता दस की लाठी एक का बोझ। दही में मूसर। दादा कहे बनिया गुड़ न दे। दाई से पेट नहीं छिपता। दाल भात में मूसलचन्द। दाल भात में ऊँट के ठेहुन। दिन ईद रात शब्बरात। दुधार गाय की लात भली। दूर के ढोल सुहावन। दूध का जला छाछ को फूँक फूँक पीता है। धरे को सोर तो घर लिया गोड़। धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का। न देने के नौ बहाने। न रहे बाँस न बजे बाँसुरी। नदी नाव संयोग। नदी में रहकर मगर से बैर। न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी। नाच न जाने आँगन टेढ़। नौ नगद न तेरह उधार। नंगी क्या नहाय और क्या निचोड़े। नीम हकीम ख़तरे जान। नौ सौ चूहे खायके बिल्ली चली हज्ज को। नौ जानते हैं छ नहीं। पराधीन सपने सुख नाहीं। पहले भीतर तब देवता पीतर। पाँचों घी में। पानी पी घर पूछना नाहीं भलो विचार पाँच पंच तहाँ परमेश्वर। पूछे न आछे मैं दुलहिन की चाची। पैसे की हाँडी गई कुत्ते की जाति पहचानी गई। पहले कौर सरवगरास। प्रथमग्रासे मक्षिकापातः। बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ छोटे मिया सुभान अल्ला। बकरे की मा कब तक खैर मनावेगी। बन्दर क्या जाने आदी का सवाद। बारह वर्ष दिल्ली में रहे, क्या भाड़ झोंका। बिल्ली के भाग से छींका टूटा। बिन माँगे मोती मिले माँगे मिले न चून। बाँझ क्या जान प्रसव की पीड़ा। बल का बैल गया नौ हाथ का पगहा गया। भरी जवानी मंझा ढीला। मेहरी मेहरी मत करो मेहरी बड़ी झगड़ी, तीन चीजें याद रहें नून, तेल, लकड़ी। मन में राम बगल में ईंट। मान न मान मैं तेरा मेहमान। मियाँ की जूती मियाँ के सर। मियाँ की दौड़ मसजिद तक। रख पत रखा पत। रस्सी गई ऐंठन न गई। रूख ना बिरीछ तहाँ रेंड़ पुरधान। रोग का घर खाँसी, लड़ाई का घर हाँसी। रोजा गये छुड़ाने नमाज़ गले पड़ा। लीख से लाख। लूट का चरखा नफा। शठे शाठ्यं समाचरेत्। सन्तोषः परमं सुखम्। संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति। सावन के अंधे को हरा ही दीखता है। सूई से भकन्दर होगया। सौ सयाने एक मत। सौ बार चोर की एक बार साध की। शौकीन बुढ़िया चटाई का लहँगा। सीधी अँगुली से घी नहीं निकलता। हम तुम राजी तो क्या करेगा काजी। हाथ कंगन को आरसी क्या। हलुआई की दुकान दादा का फ़तेहा। हाथ सुमिरनी बगल कतरनी। हाज़िर में हुज्जत नहीं। हँसुए के ब्याह में खुरपे का गीत।

कहावत का प्रयोग।

(१) हमलोगोंको उचित है कि सदा दूसरों की भलाई किया करें जो तन, मन, धन से परोपकार करते हैं वेही धन्य हैं। यदि अपने ही लिये जन्म गँवाँदिया तो क्या किया ? **अपना पेट तो गधा भी भर लेता है।**

(२) भाई, क्या कहें ! ड्योढ़ी की गति बुरी है। पुराने और तजुर्बेकार लोगों की वहाँ कुछ भी पूछ नहीं। कुछ चालबाज लोगों ने ऐसा प्रपंच रच रक्खा है कि उनके सामने किसी की नहीं चलती बेचारे सच्चे और सीधेसाधे मारे मारे फिरते हैं। अफसोस है—**साईं घोड़नी के अछत गदहन पायो राज।**

(३) हमारे देश के अमीरों की बात ही न्यारी है। वह सदा खुशामदी लोगों के हाथ के खिलौने बने रहते हैं। इन्हीं के कहने पर वे चला करते हैं और खुद कुछ भी नहीं सोचते विचारते। यदि वे अपनी आँखों सभी काम देखा करें तो किसी प्रकार की भूल नहीं हो, परन्तु यह कभी नहीं होने का। उनको क्या कमी है, जो इन झंझटों में पड़ें। जो कुछ खुशामदी लोगों ने समझा दिया उसी के अनुसार बेपेंदी के लोटे की तरह इधर उधर लुढ़कते फिरे। ठीक है, **बड़े लोगों के आखें नहीं होतीं, कान होते हैं।**

(३) संसार में किसी के दिन एक से नहीं जाते। एक समय था जब आर्यजाति की चर्चा सारे संसार में थी। सभी इसकी सभ्यता के आगे सिर झुकाते थे। आज वही अज्ञान, द्वेष, कलह और फूट के कारण अवनति के गढ़े में गिरगई है। ठीक है **फरा सो झरा और बरा सो बुताना।**

(५) मुख में चारि बेद की बातें, मन पर धन परतिय की घातें।
धनि बगुला भक्तिन की करनी, **हाथ सुमिरनी बगल कतरनी॥**

(६) बिन समरथि झूठी आशा है, काहुहिं कर न खराब।
उस दाता से सूम भला जो जल्दी देइ जबाब॥

(७) अथिर अपव्यय जनित जस अवसि नसाइहि साख।
चार दिना की चांदनी फेर अँधेरो पाख॥

(८) जहँ राखन चाहु व्यवहार, अधिक रखहुँ तहँ न्याय विचार।
लेहुन भूलि सकुच कर नाम, **खरी मजूरी चोखा काम** ॥
(९) इष्ट सिद्ध में परै जु विघ्न, तबहू मन न करो उद्विग्न।
होइहि अवसि अटूट श्रम करो। **सतुआ बाँधि के पीछे परो** ॥
(लोकोक्तिसंग्रह)

५८. अभ्यास (Exercise).

१. निम्नलिखित प्रत्येक कहावत का अभिप्राय (Significance). प्रयोग द्वारा दिखाओ।

मन चंगा कठौती गंगा। टाटपर रेशम की बखिया। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता। होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

(I. A. &. I. Sc. Examination 1920).

मोहरों की लूट और कोयलों पर छाप। अपना हफला आप बजाना। मियाँ की दौड़ मसजिद तक। (I. A. &. I. Sc. Examination, 1919).

२. नीचे लिखे प्रत्येक अभिप्राय को कहावत में बदलो।

घर की वस्तु की कदर नहीं। बुरे काम से बुराई ही मिलती है। किसी बड़े काम का थोड़ा प्रबंध। अपनी चीज को कोई बुरा नहीं कहता। कपट से एक ही बार काम होता है। थोड़े से क्या होता है? एक ही जगह दो का अधिकार नहीं हो सकता। बहुत परिश्रम का थोड़ा फल। दोषी बिना पूछे ही बोल उठता है। कहे सो करे। सब से अलग ढंग। जड़ से मिटा देना। किसी काम के लिये ऐसा प्रबंध न करना चाहिये जो न हो सके।

भाषा की शैली (Style).

" भाषाओं के तीन विभाग होते हैं। यथा, घराऊ भाषा, गद्य की भाषा और पद्य की भाषा। "
—भारतेन्दु।

घराऊ भाषा में प्रान्तभेद से भिन्नता रहती है। एकही शब्द भिन्न भिन्न प्रान्तों में भिन्न भिन्न प्रकार से बोलाजाता है। साहित्य की भाषा में यह भेदभाव नहीं। अब इसी भाषा का व्यवहार घरमें भी होना चाहिये, जैसाकि होता जारहा है। यह वही भाषा है जिसमें सामायिक पत्र पत्रिकाएँ निकाली

जारही है। इसको साधुभाषा या परिष्कृत भाषा भी कहसकते हैं। ऐसी भाषा लिखने में भाषारीति अर्थात् शब्दयोजना के प्रकार को पूर्णरीति से निबाहना चाहिये। हिन्दी जिनकी मातृभाषा है वे "लिङ्ग, वचन, विभक्ति, क्रियाओं के रूप, रोज़मर्रे और मुहावरे (वाग्धारा) आदि का बर्ताव जैसा करते हैं उसी को ठीक मान करके उसका अनुसरण 'साधुभाषा' में यथासम्भव सब किसी को करना चाहिये।" —प० केशवराम भट्ट।

नीचे हमने "व्यवहार की हिन्दी, विशुद्ध हिन्दी और ठेठ हिन्दी के आदर्श दिखाये हैं। ये वर्तमान हिन्दी के अच्छे उदाहरण हैं। लोगों को उचित है कि इन्हीं आदर्शों पर ध्यान रखकर विषय की गम्भीरता में तारतम्य के अनुसार अपने वक्तव्य को सरल और सुबोध बनावें। "उन्हें वागाडम्बरों द्वारा पाठकों पर यह प्रकट करने की चेष्टा न करनी चाहिये कि वे कोई बड़ी ही गम्भीर और बड़ी ही अलौकिक बात कह रहे हैं। इस प्रकार की जटिल भाषा को अनेक पाठक और समालोचक उच्च श्रेणी की भाषा कहते हैं। जिस रचना में संस्कृत के सैकड़ों क्लिष्ट शब्द हों, जिसमें संस्कृत के अनेकानेक वचन और श्लोक उद्धृत हों, जिसमें योरोप तथा अमेरिका के अनेक देशों, पंडितों और लेखकों के नाम हों, जिसमें अंगरेज़ी नाम, शब्द और वाक्य अंगरेजी ही में लिखे हों—उस रचना को लोग बहुधा पांडित्यपूर्ण समझते हैं, परन्तु यह गुण नहीं, दोष है। हिन्दी में यदि कुछ लिखना हो तो भाषा ऐसी लिखनी चाहिये जिसे केवल हिन्दी जाननेवाले भी सहज ही में समझ जाँय। संस्कृत और अंगरेज़ी शब्दों से लदी हुई भाषा से पाण्डित्य चाहे भले ही प्रगट हो, पर उससे ज्ञान और आनन्द दान का उद्देश्य अधिक नहीं सिद्ध हो सकता। यदि एकमात्र पाण्डित्य दिखाने के उद्देश्य से ही किसी लेख या पुस्तक की रचना की गई हो तो ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिये जिसमें अधिकांश पाठक समझ सकें। तभी रचना का उद्योग सफल होगा—तभी उससे पढ़नेवालों के ज्ञान और आनन्द की वृद्धि होगी।"

—प० महावीर प्रसाद द्विवेदी।

यदि कोई वादग्रस्त विषय लिखना होवे, किंवा कोई गूढ़ मीमांसा करनी हो, अथवा मनोभावव्यञ्जक कोई उपयुक्त शब्द भाषा में न प्राप्त होता होवे—तो हम संस्कृत शब्दों से हिन्दी लिखने के समय अवश्य काम लेसकते हैं—ऐसी अवस्था में हमको कोई दोषभागी भी न बनावेगा। किन्तु यदि हम कोई साधारण बात लिखना चाहते हैं, और भाषा के भंडार से आवश्यकतानुसार शब्द प्राप्त हो सकने पर भी संस्कृत शब्दों की तृष्णा नहीं त्यागते हैं, और दौड़ कर भाषा के चिकने कोमल शब्दों को संस्कृत का पूर्ण रूप देने का ही आग्रह करते हैं, तो हम दोषभागी हैं।

—प० अयोध्यासिंह उपाध्याय।

नोट—भारतेन्दु जी की राय में कविता की भाषा दूसरी ही है परन्तु आजकल सभी विद्वान् इसी साधुभाषा (खड़ी बोली) को कविता की भाषा बनाने में लगे हुए हैं, जो समय के अनुसार बहुत ही उचित है। इस भाषा में प्रियप्रवास, भारतभारती, वीरपंचरत्न इत्यादि बहुत ही उत्तम काव्य ग्रन्थ निकलचुके हैं और आगे भी निकलने की सम्भावना है।

१. व्यवहार की हिन्दी—

"...बोलचाल में संस्कृत फ़ारसी, अरबी आदि भाषाओं के शब्द ऐसे मिलजुल गये हैं जैसे दूध में मीठा, उन्हें भी अब हिन्दी ही का अङ्ग समझ कर बेखटके बरतना चाहिये। फ़ारसी अरबी होनेके कारण नित्य की बोलचाल में प्रचलित शब्दों को हिन्दी में नहीं आने देना भाषा को अस्वाभाविक, कृत्रिम, नीरस और दरिद्र बनाना है।" —प० केशवराम भट्ट।

"संस्कृत, फ़ारसी, अंगरेज़ी आदि भाषाओं के जो शब्द प्रचलित हो गये हैं, उनका प्रयोग हिन्दी में होना ही चाहिये। वे सब अब हिन्दी के शब्द बनगये हैं। उनसे घृणा करना उचित नहीं। —प० केशवरामभट्ट।

उदाहरण—

"महाराज, फिर सन्तोषने बड़ा काम किया, राजा प्रजा सब को अपना चेला बनालिया। अब हिन्दुओं को खानेमात्र से काम, देश से कुछ काम नहीं। रोज़गार न रहा तो सूद ही सही। वह भी नहीं तो घर ही का सही।

रोटी ही को सराह सराह के खाते हैं, उद्यम की ओर देखते ही नहीं। निरुद्यमता ने भी सन्तोष को बड़ी सहायता दी। व्यापारको इन्हीं ने मार भगाया। फिर, महाराज, अपव्यय ने खूब लूट मचाई। अदालत ने भी अच्छे हाथ साफ़ किये।"

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

चारों लड़के ऐसे सुन्दर थे कि मानों विधाता ने सारी सुन्दरता उन्हीं में खर्च कर दी हो। वे ज्यों ज्यों बड़े होने लगे त्यों त्यों उन्हों ने सब तरह की विद्याएँ सीखलीं। लिखना, पढ़ना, कुश्ती लड़ना, तीर चलाना, घोड़े की सवारी, शिकार खेलना, सभी बातें उन्हों ने बहुत जल्द सीखडालीं। चारों राजकुमार अपने से बड़े लोगों की इज्ज़त करते थे। उनके सामने लड़ते झगड़ते न थे। ऐसे अच्छे लड़के पाकर राजा और रानियाँ, सब बहुत खुश हुए।

—प० रामजी लाल शर्मा।

२. विशुद्ध हिन्दी—

"हमारे मत में हिन्दी और उर्दू * दो न्यारी न्यारी हैं। हिन्दी इस देश के हिन्दू बोलते हैं और उर्दू यहाँ के मुसलमान और फ़ारसी पढ़े हुए हिन्दुओं की बोलचाल है। हिन्दी में संस्कृत के पद बहुत आते हैं, उर्दू में अरबी फ़ारसी के, परन्तु कुछ अवश्य नहीं है कि अरबी, फ़ारसी के शब्दों बिना हिन्दी न बोली जाय और न हम उस भाषा को हिन्दी कहते हैं जिस में अरबी फ़ारसी के शब्द भरे हों।"

—राजा लक्ष्मणसिंह।

उदाहरण—

कण्व की बेटी शकुंतला यही है। उस ऋषि का हृदय बड़ा कठोर होगा जिसने ऐसी सुकुमारी को ऐसा कठिन काम सौंपा है और वृक्षों की छाल के वस्त्र पहराये हैं। इस सुन्दरी को, जिसके देखते ही मन हाथ से निकलजाता है, तपस्विनी बनाना ऐसा है जैसे नील कमल की पखुरी से सूखा छोंकर काटना। बकले की कंचुकी इसको शोभा नहीं देती है जैसे नये फूल को पुराने पत्ते से ढाँकना मेल नहीं खाता। नहीं, नहीं, बकले का वस्त्र इस

---

* उर्दू—"ख़्वाब में तसवीर का बोसा लेने से साहबेतसवीर के होठों का नीला पड़जाना, बजाय इसके कि साहबेतसवीर की नज़ाकत साबित करे बोसा लेनेवाले का जादूगर होना साबित करता है।" —अलताफ़ हुसैन हाली।

मोहनी के गात को शोभा देता ही है। यह मने भूलकर कहा कि नहीँ देता है, क्योंकि कमल के फूल पर काई भी अच्छी लगती है और पूर्ण चंद्र में काली रेखा भी खुलती है। ऐसे ही इस पद्मिनी का अंग वकले पहरने से भी मनोहर दिखाई देता है। सत्य है, रूपवती को सभी सोहता है।—शकुंतला।

३. ठठ हिन्दी—

"जैसे शिक्षित लोग आपस में बोलतेचालते हैं भाषा वैसी ही हो, गँवारी न होनेपावे, उसमें दूसरी भाषा अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अंगरेज़ी इत्यादि का कोई शब्द शुद्ध रूप या अपभ्रंश रूप से न हो, भाषा अपभ्रंश संस्कृत शब्दों से प्रयुक्त हो और यदि कोई संस्कृत शब्द उसमें आवे भी तो वही, जो अत्यन्त प्रचलित हो और जिसको एक साधारण जन भी बोलता हो।" जहाँ तक मैं समझता हूँ ठेठ हिन्दी की परिभाषा भी यही हो सकती है।"

—प० अयोध्यासिंह उपाध्याय।

उदाहरण—

एक ग्यारह बरस की लड़की अपने घर के पास की फुलवारी में खड़ी हुई किसी की बाट देख रही है। सूरज डूबने पर है, बादल में लाली छाई हुई है, बयार जी को ठंढा करती हुई धीरेधीरे चल रही है। थोड़ी वेर में सूरज डूबा, कुछ झुटपुटा सा हो गया, फुलवारी की एक ओर से कोई उसी ओर आता दीख पड़ा, जिस ओर वह लड़की खड़ी थी। कुछ वेर में वह आकर उस लड़की के पास खड़ा हो गया, लड़की ने देखकर कहा, "देवनन्दन! अब तक कहाँ थे? मैं बहुत बेर से यहाँ खड़ी तुम को अगोर रही हूँ।—ठेठ हिन्दी का ठाट।

नोट—अलंकार के विचार से भाषा के दो भेद हैं—अलंकृत और अनलंकृत। अलंकृत भाषा में उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों * का विधिपूर्वक प्रयोग होता है, परन्तु अनलंकृत में इन सबों की आवश्यकता नहीं। अलंकृत भाषा उच्चश्रेणी के सिद्धहस्त लेखक लिख सकते हैं। विद्यार्थियों को उचित है कि वे एकबएक इस बखड़े में नहीँ पड़ें। उन्हें समझ लेना चाहिये कि अनलंकृत भाषा में भी रचना मधुर, सुन्दर और ओजस्विनी हो सकती है। जब सरल रचना करते करते बुद्धि परिपक्व हो जाती है तब

* इसका पूर्ण वर्णन हमारे "अलङ्कारचन्द्रोदय" में मिलेगा।

आपही आप वह प्रौढ़, परिमार्जित और अलंकृत होनेलगती है। नीचे दोनों प्रकार की रचनाओं के उदाहरण दिये जाते हैं—

अनलंकृत—सूर्यास्त हुआ। चारों ओर अन्धकार छागया। नलिनी मुरझागई। पक्षी बोलनेलगे। राजभवन में दीप जलायेगये।

अलंकृत—सूर्यरूपी सिंह के तिरस्थ होने से अन्धकाररूपी छोटे जीवों ने देश को आक्रमण किया। नलिनी को अपने वल्लभ तमारि के विरह से अमररूप आँसू ढार कर कमलरूपी नेत्रों को बन्द करते देख पक्षी भी सम-वेदना प्रकट करनेलगे। इसके अनन्तर प्रज्वलित दीपशिखा और मणि की ज्योति से राजभवन में अप्रकाश का नाश हुआ। (कादम्बरी)

८९. अभ्यास (Exercise).

१. नीचे लिखे अनुच्छेद को विशुद्ध हिन्दी में लिखो।

इसके बाद वे आप भी गद्दीसे उठ कर महल में गये, खाना खाकर सोने के कमरे में बिस्तरे पर लेटे और ड्योढ़ीदार को वैशम्पायन के लाने का हुक्म दिया। ड्योढ़ीदार जल्दी से वैशम्पायन को सोने के कमरे में ले आया।

२. नीचे लिखे अनुच्छेद को ठेठ हिन्दी में लिखो।

इसे श्रवण कर वाटिका की एक ओर से देवबाला ने अपने महल को प्रस्थान किया। पश्चात् देवनन्दन भी चिन्ता करते करते वाटिका से बहिर्गत हुआ।

३. नीचे लिखे अनुच्छेद को व्यवहार की हिन्दी में लिखो।

अब वर्षा विगत शरद ऋतु आई। मेघदल दूर हुआ और सूर्य ने अपने तेज से पङ्कमय मार्ग को शुष्क किया। नद, नदी और सरोवर इत्यादि का पानी निर्मल हुआ। राजहंस नदी के तीर पर मधुर सुर से कलरव करनेलगे। यात्रीलोगों का कष्ट दूर हुआ और चतुर्दिक धान की मञ्जरी दिखाई देनेलगी और जल से प्रीति होनेलगी। (कादम्बरी)

४. नीचे लिखे अनुच्छेद को अलंकृत हिन्दी में लिखो।

वर्षाकाल का समय आपहुँचा। नीले बादल से आकाश छिपगया। सूर्य का दर्शन दुर्लभ हुआ। चारों ओर अन्धकार छागया। मेघ के गर्जन और बिजली की चमक से हृदय कम्पायमान होनेलगा (कादम्बरी)

५. नीचे लिखे अनुच्छेद को अनलंकृत हिन्दी में लिखो।

तिमिरनाशक के भय से छिपा हुआ तिमिर प्रकट हुआ। सन्ध्या के चय होने

के शोकसे दु:खित रात्रि अन्धकाररूपी मलिन वस्त्र धारण करके दृष्टिगोचर हुई। गृहरूपी चोर भी जो सूर्य के प्रताप से छिपे थे बाहर निकले। (कादम्बरी)

अपप्रयोग।

हमने नीचे 'अपप्रयोग' की बातें लिखी हैं, इनके प्रमाणस्वरूप प्राय: पीछे के पाठ हैं। यहाँ केवल विद्यार्थियों के लाभ केलिये ऐसा कियागया है।

(१) उच्चारण, संयोग और अक्षरसम्बन्धी अशुद्धियाँ-

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
गर्द्व	गर्दभ	भागवत्	भागवत
गड़ुर	गरुड़	आधीन	अधीन
दशहारा	दशहरा	दर्शण	दर्शन
हिर्णमयी	हिरण्मयी	सिंघ	सिंह
अनिठ	अनिष्ट	दुर्णाम	दुर्नाम
घनिठ	घनिष्ट	विष्मर्न	विस्मरण
पुष्कर्नी	पुष्करिणी	व्रिहष्पति	बृहस्पति
उज्वल	उज्ज्वल	अर्च्चणा	अर्चना
उत्पात्	उत्पात	गर्ज्जण	गर्जन
द्वारिका	द्वारका	गगण	गगन
भविष्यत	भविष्यत्	विषयिनी	विषयिणी
तड़ित	तड़ित्	बेराम	बीमार
फाल्गुण	फाल्गुन	मतलब	मतलब
स्मसान	श्मशान	अमघुर	अमरूद
निरिह	निरीह	अरमुद	अमरूद
नीरिक्षन	निरीक्षण	अमदी	आदमी
जागृत	जागरित	चहुँचना	पहुँचना
पैत्रिक	पैतृक	निसाफ़	इनसाफ़
प्रवर्त्त	प्रवृत्त	भरथ	भरत
भागिरथी	भागीरथी		

(२) प्रत्ययसम्बन्धी अशुद्धियाँ—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आवश्यकीय	आवश्यक	सम्बन्धीय	सम्बन्धी
उत्कर्षता	उत्कर्ष	साम्यत्व	साम्य.
दारिद्रता	दारिद्र	सिञ्चन	सेचन
धैर्यता	धैर्य	सिञ्चित	सिक्त
पार्वतीय	पर्वतीय	सौन्दर्यता	सौन्दर्य
बाहुल्यता	बाहुल्य	मान्यनीय	मान्य, माननीय
भाग्यमान	भाग्यवान्	बुद्धिवान्	बुद्धिमान्
महानता	महत्ता	सौजन्यता	सौजन्य
मैत्रता	मित्रता	अकाट्य	अखण्डनीय
विद्यमान्	विद्यमान	अजानित	अज्ञात
विद्यामान्	विद्यावान्	सराहनीय	श्लाघनीय
व्यवहारित	व्यवहृत	षठम	षष्ठ
व्याकुलित	व्याकुल	सख्यता	सख्य
श्रीवान्	श्रीमान्		

नोट—हमने ऊपर जिन शब्दों को अशुद्ध बताया है, वे संस्कृत प्रणाली के अनुसार अशुद्ध हैं, परन्तु उनमें से कई को हिन्दी के विद्वानों ने अपने ग्रन्थों में स्थान दिया है। जैसे —

१. हिन्दुओं का **साम्यत्व** निश्चय करके धीरे से कहते हैं। (भारतेन्दु)

२. विना विचारे **अकाट्य** सिद्धान्त न मानलें। (विभक्तिविचार)

३. हिन्दुजाति की **महानता** का प्राण हिन्दी भाषा ही है। (प्रभा)

४. विचार रखना बहुत ही **आवश्यकीय है**। (पं० केशवराम भट्ट)

(३) समाससम्बन्धी अशुद्धियाँ—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कृतघ्नी	कृतघ्न	निराशा	नैराश्य
गुणीगण	गुणिगण	पक्षीशावक	पक्षिशावक
महात्मागण	महात्मगण	शशीभूषण	शशिभूषण

कालीदास	कालिदास	निर्दोषी	निर्दोष
देवीदास	देविदास	निर्धनी	निर्धन
षष्ठीदास	षष्ठिदास	निर्लज्जा	निर्लज्ज
दिवारात्रि	दिवारात्र	सत्तम	त्तम
नीरोगी	नीरोग	सतोगुण	सत्वगुण
निरपराधी	निरपराध	पिताभक्ति	पितृभक्ति
		भ्राताागण	भ्रातृगण

(४) सन्धिसम्बन्धी अशुद्धियाँ—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अत्योक्ति	अत्युक्ति	पित्रीण	पितृण
इतिपूर्व	इतःपूर्व	अक्षोहिणी	अक्षौहिणी
उपरोक्त	उपर्युक्त	प्रोढ़	प्रौढ़
जगबन्धु	जगद्बन्धु	अन्तरपुर	अन्तःपुर
पश्चाधम	पश्वधम	अधस्पतन	अधःपतन
वारम्वार	वारंवार	नमष्कार	नमस्कार
मनान्तर	मतान्तर	पुरष्कार	पुरस्कार
मनोकष्ट	मनःकष्ट	भाष्कर	भास्कर
महदुपकार	महोपकार	निरोग	नीरोग
सदोपदेश	सदुपदेश	यशोइच्छा	यशइच्छा
सन्मान	सम्मान	जगधात्री	जगद्धात्री
सम्मुख	सम्मुख	दुस्कर	दुष्कर
मनहर	मनोहर	मृतमय	मृन्मय
गमनान्तर	गमनानन्तर	शिरमणि	शिरोमणि
रजोतम	रजस्तम		

(५) पुनरुक्तिसम्बन्धी अशुद्धियाँ—

अशुद्ध	शुद्ध
पूज्यास्पद	पूज्य, पूजास्पद ।
ग्राह्ययोग्य	ग्राह्य, ग्रहणयोग्य ।
यौवनावस्था	यौवन, युवावस्था ।

पूज्यनीय	पूज्य, पूजनीय।
असंख्यप्राणिगण	असंख्यप्राणी, प्राणिगण।
अपने स्वाधीन	स्वाधीन।
समतुल्य	सम, तुल्य।
सुगन्ध सौरभ	सुगन्ध, सौरभ।
अधीनस्थ	अधीन।

(६) विशेषण और विशेष्यसम्बन्धी अशुद्धियाँ—

अशुद्ध	शुद्ध
सन्तोषचित्त	सन्तुष्टचित्त
साध्य को प्रमाण किया	साध्य को प्रमाणित किया।
निश्चयपदार्थ	निश्चितपदार्थ।
आश्चर्यदृश्य	आश्चर्यजनकदृश्य।
गोपनकथा	गोपनीयकथा।
वह खुशी हुआ	वह खुश हुआ।
सावकाश नहीं है	अवकाश नहीं है।
सविनयपूर्वक	विनयपूर्वक, सविनय।
सावधानपूर्वक	सावधान, अवधानपूर्वक।
वास्तविक में	वास्तव में।

(७) लिङ्गसम्बन्धी अशुद्धियाँ—

हिन्दी में सबसे बड़ा झगड़ा लिङ्गभेद का है। —— हिन्दी में निर्जीव पदार्थों के सूचक शब्द भी पुलिङ्ग अथवा स्त्रीलिङ्ग ही के अन्तर्गत मानेगये हैं। —— इसके कोई भी स्थिर नियम नहीं हैं, केवल बोलचाल और मुहावरे के अनुसार इस पर कारवाई कीजाती है। यही कारण है कि अंगरेज़ों एवं अन्य विदेशियों को हिन्दी सिखाने में सबसे अधिक उलझन लिङ्गभेद में ही पड़ती है और प्रायः आजन्म उन्हें इस बाधा से छुटकारा नहीं मिलता। इतना ही नहीं, बरन हमारे यहाँ के वे समालोचक, जो ईर्षा द्वेष वश आलोच्यलेख एवं लेखक का खण्डन करना ही अपना कर्त्तव्य समझते हैं, हिन्दी में प्रसिद्ध लेखकों तक की ऐसी ही भूलें खोज निकालने

केलिये बड़े उत्सुक रहाकरते हैं! वे इतना तक नहीं विचारते कि यदि हमारे नामी लेखकगण भी इस लिङ्गभेद को नहीं समझसकते तो इसमें किसका दोष है!! यह देखने केलिये कि ऐसी भूलें हमारे जैसे अल्पज्ञ ही कियाकरते हैं या भाषा के मर्मज्ञ लेखकों के विषय में भी यह कहाजासकता है, हमने "सरस्वती" पत्रिका के प्रथम भाग के पृष्ठों को उलटपलटकर देखा तो एक, दो, तीन की बात नहीं, वरन् एकदम सभी लेखकों के लेखों में वैसे प्रयोग पायेगये। ------------- हमारा तो यह मत है कि **जहाँ तक कोई नपुंसक लिङ्गवाला प्रयोग स्पष्ट और निर्विवादरूप से अशुद्ध न ठहरजावे, वहाँ तक उसमें लिंगभेदविषयक "अशुद्धियाँ" स्थापित न करनी चाहियें।** ---- **मिश्रबन्धुविनोद।**

विशेषण में लिङ्गसम्बन्धी अशुद्धियाँ—

अशुद्ध	शुद्ध
श्रीमान् रानी.	श्रीमती रानी।
गुणवान् स्त्री	गुणवती स्त्री।
बुद्धिमान बालिका	बुद्धिमती बालिका।
जलवाही नदी	जलवाहिनी नदी।
मूर्त्तिमय करुणा	मूर्तिमयी करुणा।

नोट—सुन्दर स्त्री या सुन्दरी स्त्री, चञ्चल नारी या चञ्चला नारी, शोभित लता या शोभिता लता इत्यादि प्रयोगों के देखने से जानपड़ता है कि **संस्कृत अप्रत्ययान्त मूल विशेषण** स्त्रीलिङ्ग में अविकृत भी लिखेजाते हैं।

(८) अर्थ और रोज़मर्रे इत्यादि की अशुद्धियाँ—

	अशुद्ध	शुद्ध
(१)	गतवर्ष वह कलकत्ते जायगा। आगामीवर्ष वह कलकत्ते गया था।	गतवर्ष वह कलकत्ते गया था। आगामीवर्ष वह कलकत्तेजायगा।

(२) उसने मेरा हस्त पकड़ा। उसने मेरा हाथ धारण किया।	उसने मेरा हस्त धारण किया। उसने मेरा हाथ पकड़ा।
(३) यह काव्य उच्च दर्जे का है।	यह काव्य उच्च कोटि का है
(४) अभी इक्ज़ामिनेशन के फ़िफ़्टीन डेज हैं।	अभी परीक्षा के १५ दिन हैं।
(५) इस सोसाइटी में पब्लिक का क्या ओपिनियन है?	इस सभा के सम्बन्ध में जनसमाज का क्या विचार है?

६०. अभ्यास (Exercise).

१. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो।

इतने ही से हमारी अभिष्ट सिद्ध न होगी। इस कारज में भूलकर भी शैथिल्यता न कीजाय। भविष्यत में इतने ही से काम नहीं चलेगा। सम्मेलन को इसकी ओर विशेषतः ध्यान देना आवश्यकीय है। हमको कुछ भी सावकाश नहीं है। मैं आपसे सविनयपूर्वक निवेदन करता हूँ। वह त्रैवार्षिक परिक्षा में उत्तरीन हुआ। आज जगधात्री देवी की पूजा है। उनके भ्रातागण की आजकल दुरावस्था है। वालि की सौजन्यता से राम बड़ा ही प्रमोद हुआ। वह धैर्य नहीं हुआ। बुद्धिवान् मनुष्य विद्यामान होते हैं। उसने सादरपूर्वक राम को आशा दिलावाई। सभी विद्वान लोग हिन्दी से प्रेम नहीं करते। दुष्टों का वाह्यिक भाव समझना कठिन है। भगवान् जगबन्धु कहलाते हैं। आपके दर्शण कब होंगे? उनकी पैत्रिक सम्पत्ति अच्छी है। ग्रन्थकर्ता ने सब अधिकार अपने स्वाधीन रक्खे हैं। सावधानपूर्वक आओ। महात्मागण अपने सदोपदेश से मनुष्यों को मुग्ध करते हैं। बुद्धिमान् बालिका ने श्रीमान् सीता देवी की कथा बड़े प्रेम से सुना।

अर्थप्रकाश (Expression of the Meaning)

१. व्याख्या या टीका * (Explanation)-

व्याख्या में किसी वाक्य या विषय की पूरी ज्ञातव्य बातें

---

* पदच्छेदपदार्थोक्तिर्विग्रहो वाक्ययोजना।
आक्षेपस्य समाधानं व्याख्यानं पञ्चधा स्मृतम्॥ (देखो पृष्ठ १६८)

दी जाती हैं जिसमें अबूझ व्यक्ति भी उसका पूर्ण जानकार होजाय। अतः, जिस गद्य या पद्य की व्याख्या करो, पूर्वापर प्रसंग (Context) से उसका सम्बन्ध बताते हुए पद-योजना पर ध्यान रखकर उसके प्रत्येक पद पर प्रकाश डालो। जटिल और सङ्कुचित अंशों को भलीभाँति खोलदो और इसके पीछे उसका भाव लिखो। आवश्यकतानुसार आक्षेपों का समाधान करो, दृष्टान्तों से उसकी पुष्टि करो तथा अलङ्कार इत्यादि विशेषताओं पर दृष्टि डालो। यदि पद्य हो तो उसके पदों को अलगाओ, सामासिकशब्दों को बिलगाओ और अन्वय के अनुसार गद्यक्रम को ठीक करो।

नोट–कविता के सभी पद गद्य के क्रम से नहीं रहते। जब इसके पदों को गद्य के नियमानुसार रखते हैं और स्पष्टता के निमित्त अनुक्त पदों की पूर्ति करते हैं तब उसे अन्वय अर्थात् पद्य को गद्य में बदलना (Prose Order) कहते हैं।

उदाहरण—

(१) जे पुर ग्राम बसहिं मगमाहीं। तिनहिं नाग सुर नगर सिहाहीं॥
केहि सुकृती केहि घरी बसाये। धन्य पुन्यमय परम सुहाये॥
जहँ जहँ रामचरन चलिजाहीं। तहँ समान अमरावति नाहीं॥
परसि रामपदपदुमपरागा। मानति भूरि भूमि निज भागा॥

अन्वय–राम मगमाहीं (मार्ग में) जे (जो) पुरग्राम बसहिं (बसते हैं), तिनहिं (उन्हें) (देखकर) नाग (नगर और) सुर-नगर सिहाहीं (सिहाते हैं)। केहि (किसी) सुकृती (ने) केहि (किसी) (शुभ) घरी (घड़ी में) बसाये (इन्हें बसाया है)(जिससे वे)

पदों को अलगअलग करना, पदों के अर्थ करना, समस्तपदों का विग्रह करना, वाक्ययोजना अर्थात पदों का क्रम स्थापन करना और आक्षेपों का समाधान करना–व्याख्या की यही पाँच रीतियाँ हैं।

पुन्यमय (पुण्यमय) (और) परम **सुहाये** (शोभायमान होगये हैं) **जहँजहँ** (जहाँजहाँ) **रामचरन** (रामचरण) **चलिजाहीं** (चले-जाते हैं) **तहँ** (उनके) समान **अमरावति** (अमरावती भी) **नाहीं** (नहीं है)। रामपद**पदुमपरागा** (पद्मपराग को) **परसि** (स्पर्शकर) भूमि **निजभागा** (अपने भाग्यको) **भूरि मानति** (बड़ा मानती है)।

अन्वय के अनुसार कविता का गद्य–

राम मार्ग में जो पुरग्राम बसते हैं उन्हें देखकर नागनगर और सुर-नगर सिहाते हैं। किसी सुकृती ने किसी शुभ घड़ी में उन्हें बसाया है जिससे वे धन्य, पुण्यमय और परम शोभायमान होगये हैं। जहाँ जहाँ रामचरण चलेजाते हैं उनके समान अमरावती भी नहीं है। रामपदपद्मपराग को स्पर्श कर भूमि अपने भाग्य को बड़ा मानती है।

व्याख्या—यह प्रसंग गोस्वामी तुलसीकृत रामायण के अयोध्याकाण्ड में रामवनवास के समय का है। रामजी सीता और लक्ष्मण समेत भरद्वाजजी से विदा होचुके हैं और यमुना उतरकर बन में चले जारहे हैं। राह में अनेक बटोही मिलते हैं जो इनकी सुकुमारता देख और वनवास सुन आहें भरते हैं और साथी होकर पहुँचाने केलिये आज्ञा माँगते हैं, परन्तु रामजी विनती करकरके उन्हें लौटातेजाते हैं। कवि की यह उक्ति (चौपाइयाँ) इसी समय की है–रामजी सीता और लक्ष्मण समेत रास्ता पकड़े जा रहे हैं, राह में कई बसे हुए पुर और गाँव पड़तेजाते हैं, जिनमें (भगवान् की राह में पड़ने के कारण) गौरव आगया है, इसलिये उन्हें देखदेखकर नागलोग (जो अपने को बहुत ही गौरववान् समझते थे) सिहाते हैं और यही नहीं सिहाते बरन इनसे श्रेष्ठतर स्वर्ग भी (जो देवताओं के वास के कारण अपने को सबसे श्रेष्ठ समझते थे) अपने भाग्य को कोसते हुए (या कोसते हुए कि हम क्यों नहीं भगवान् की राह में पड़े ! हममें किस पुण्य की कमी थी, इत्यादि) सिहाते हैं–" जानपड़ता है कि किसी सुकार्य करनेवाले पुण्यात्मा ने (पुण्यात्मा को भी धन्य है कि उनके कार्य भगवान् के कारण गौरान्वित

हुए) ग्रह नक्षत्र आदि के विचार के साथ कुग्रहों की शान्ति कराके किसी शुभ मुहूर्त्त में (उस मुहूर्त्त का भी भाग्य खुलगया–यह खुला कि अन्य लोग भी ज्योतिषी से उसी मुहूर्त्त का निश्चय कराके किसी कार्य की नीव इस आशा से रक्खेंगे कि वह भगवान् से आदर पावे) इन अल्पपुर ग्रामोंको बसाया है जिससे वे धन्यधन्य होरहे हैं अर्थात् उनका बखान होरहा है, पुण्यमय हुए हैं अर्थात् उन्हें पुण्य मिला है और अत्यन्त ही शोभावाले होगये हैं–रामजी की राह में पड़ने के कारण क्षुद्र पुरग्रामों को यह बातें नसीब हुईं। जहाँजहाँ अर्थात् जिनजिन पुरग्रामों की सीमाओं के भीतर होकर (रास्ते में पड़ने के कारण) रामजी के चरण चले-जाते हैं उनकी बराबरी करनेवाला स्वर्ग (जो इन्द्र की राजधानी होने और देवताओं के वास होने के कारण फूला रहता है) भी नहीं है–पदरज के पड़ने से प्रत्येक स्थान ऐसा होताजाता है कि उससे अमरावती भी बराबरी नहीं कर सकती। इतनाही नहीं बल्कि रामजी के चरणकमलों (रामजी के चरणों की उपमा कमल से दी गई है अर्थात् रामजी के चरण-कमल के समान कोमल हैं) के पराग अर्थात् रज के स्पर्श से भूमि भी अपने भाग्य को बड़ा मानती है-यह समझती है कि रामजी ने अपने चरण से छूकर मेरे भाग्य को, जो कभी भी नहीं खुलनेवाला था, बढ़ादिया जिस से मैं गौरवशाली बनगई। सार यह निकला कि रामजी जिनजिन पुरग्रामों और भूमि होकर जाते हैं वे सब के सब उनके पदरज के कारण पुण्यमय होजाते हैं और उनके आगे पाताल स्वर्ग सभी तुच्छ हुए जाते हैं। यहाँ राम जी की सीधी बड़ाई न करके कवि ने मार्गस्थ ग्रामों आदि के यश गाने के बहाने 'राममहत्व' गाया है।

व्याख्यासम्बन्धी अन्य बातें–'व्याख्येयविषय' चौपाई छन्द में है। तुलसीदास की चौपाइयों में दसपन्द्रह छन्द निकलते हैं, परन्तु उन्होंने इन सबको 'चौपाई' कहा है, परन्तु यहाँ का छन्द 'पादाकुलक' है।*

पुर कहिये छोटो नगर राज नगर के तीर।
बन में जे लघुपुर बसैं तिनसों कहियत ग्राम॥

* देखिये "पिंगलप्रबोध या छंदचंद्रिका। मूल्य ।≈)

नगर पुर से भी बहुत बड़ा होता है। कवि ने यहाँ लिखा है कि इन ग्राम और पुरों को न केवल साधारण नगर, वरन नाग एवं सुरनगर लिहाते हैं, सो यहाँ अयोग्य के योग्य वर्णन से सम्बन्धातिशयोक्ति अलङ्कार * पूरा हुआ। पुरग्रामों में स्वयं बड़ाई नहीं है, परन्तु राम के रास्ते में पड़ने से उनमें गौरव आया है जिससे द्वितीय अर्थान्तरन्यासालंकार होता है। पहले नागनगर लिहाये और फिर उनसे भी श्रेष्ठतर सुरनगर लिहागये सो उत्तरोत्तर महत्त्ववृद्धिसे सारालंकार वर्णन में आया। 'केहि सुकृती केहि घरी बसाये' में 'केहि' के सम्भ्रमतापूर्वक दो बार आने से पदार्थावृत्तिदीपक अलंकार है। ऐसे स्थानों पर वर्ण्य एवं अवर्ण्य का एक धर्म्म प्रायः नहीं होता, परन्तु आचार्यों ने फिर भी यह अलंकार माना है। इन दोनों प्रश्नों से कवि का कुछ पूछने का प्रयोजन नहीं है, वरन् इनसे वह प्रकट करता है कि किसी बड़े सुकृती ने उन्हें किसी अच्छी घड़ी में बसाया। इस प्रकार काकु अलंकार हुआ। इन दोनों प्रश्नों एवं 'धन्य पुन्यमय परम सुहाये' से उनके माहात्म्य का बड़ा भारी गौरव दिखलाया गया है, जिससे उदात्त अलंकार होता है। 'धन्य पुन्य' में वृत्त्यनुप्रास है। किसी सुकृती ने अच्छे समय पर ग्राम बसाया, जिसके योग से आज ग्राम ने भी इतनी बड़ाई पाई कि उसमें रामचरण गये। यहाँ द्वितीय अर्थान्तरन्यासालंकार है। 'जहँ जहँ' में वीप्सालंकार है और 'रामचरण चलिजाहीं' में उपादान लक्षणा है, क्योंकि चरण राम के चलाने से चलते हैं। "तहँ समान अमरावति नाहीं" में चतुर्थ प्रतीपालंकार है, क्योंकि यहाँ उपमेय से उपमान का निरादर हुआ है। यहाँ द्वितीय अर्थान्तरन्यासालंकार एवं सम्बन्धातिशयोक्ति भी है। "परसि पदपदुमपरागा" में आदि वर्ण वृत्त्यनुप्रास आया है। इन दोनों पदों में अधिक अभेदक रूपक है। पराग के कारण परिणाम नहीं होनेपाया। 'भूरि, भूमि, भागा' में भी वृत्त्यनुप्रास है। रामपदरज के स्पर्श से भूमि के भूरिभाग्यवर्द्धन से उसमें श्लाघ्य चरित्र का महत्त्व प्रकट हुआ, जिससे उदात्तालंकार आया। यहाँ ऋद्धि से भी उदात्त होसकता है, परन्तु आचार्यों ने ऋद्धिवाले उदात्त का धन से ही रूढ़ि का लिया है। पुरग्राम धन्य, पुण्यमय तथा शोभायमान हैं। यहाँ समुच्चय अलंकार हुआ। प्रथम दो पदों में विशेषवर्णन, द्वितीय दो में सामान्य और तृतीय दो में फिर विशेष है, सो यहाँ विकस्वर अलंकार हुआ। कुछ अलंकारों में अप्रस्तुत प्रशंसा

* देखिये "अलंकारचन्द्रिका"। मूल्य ॥)

मुख्य है, क्योंकि प्रस्तुत राम की सीधी इन छन्दों में बड़ाई न करके कवि ने मार्गस्थ ग्रामों आदि का यश गाया है, जिससे रामयश निकलता है। छन्दों में यद्यपि लाक्षणिक पद आये हैं तथापि वाचक पात्र है और उसी का सर्वत्र प्राधान्य है। यहाँ अर्थव्यक्ति प्रधान गुण है, परन्तु समता, समाधि, सुकुमारता, उदारता, प्रसाद और कान्ति भी हैं। सो इन दो छन्दों में साहित्य के १० गुणों में से श्लेष, माधुर्य और ओज छोड़कर सभी वर्त्तमान हैं। इतने गुणों का एक स्थान पर मिलना प्रायः असम्भव है। इनमें भारती और सात्वती वृत्तियाँ हैं। दोषों में यहाँ भूरि शब्द पर ध्यान जाता है, जो कि भाग और भूमि दोनों की ओर जासकने से सन्दिग्ध हुआजाता है, परन्तु वह भी भाग के प्राबल्य से विशेषण होता है, सो दोषोद्धार होजाता है। वर्णन नागर है, क्योंकि पद-रज पड़ने से प्रतिस्थान ऐसा होजाता है कि उससे अमरावती भी शरमाती है। यहाँ अद्भुत रस का समावेश है। इसके आलम्बन 'रामचरण एवं मार्गस्थ पुरग्राम हैं' और स्थायी 'यह आश्चर्य है कि मार्गस्थ पुरग्रामों के महत्व को नाग तथा सुरनगर सिहाते हैं एवं अमरावती उनकी समता नहीं कर पाती।' उद्दीपन यहाँ 'रामगवन का समय' है। 'रामचरण का चलना, भूमि द्वारा रामपद का स्पर्श होना तथा अपना भूरिभाग मानाजाना' संचारी हैं। "केहि सुकृती केहि घरी बसाये, धन्य पुन्यमय परम सुहाये और तहँ समान अमरावति नाहीं" अनुभाव हैं। चलने में उग्रता संचारी है, जो शृङ्गाररस में वर्जित है, किन्तु इतर रसों में नहीं। अतः अद्भुत रस पूर्ण है। यह रस यहाँ प्रच्छन्न है।

सब बातों के ऊपर यहाँ रामचन्द्र का महत्व और कवि की उनमें प्रगाढ़ भक्ति मुख्य हैं, सो तात्पर्याख्यावृत्ति सर्वप्रधान है। कुल बातों पर ध्यान देने से प्रकट है कि यह उत्तम काव्य है।——————(मिश्रबन्धुविनोद से उद्धृत)

(२) सारा संसार अहल्याबाई की वन्दना करता है। मयूरकवि उसकी वन्दना क्यों नहीं करेगा? (अहल्याबाई)

व्याख्या—यह अंश इन्दौर की प्रातःस्मरणीया रानी अहल्याबाई के समकालीन राजकवि ब्राह्मणवंशोद्भव मयूरकविविरचित महाराष्ट्रीय कविता का अनुवाद है। 'रानी अहल्या' मल्हार राव होल्कर के पुत्र खंडेराव

की पत्नी थीं। यह अल्पावस्था ही में विधवा होगईं, जिससे उन्हें राज्य-भार अपने हाथ में लेनापड़ा। इन्होंने अल्प ही काल में अपनी राज्य-शासनदक्षता और धर्म्मशीलता का परिचय देदिया। अनेक धर्मकार्य किये। प्रजा की भलाई की। गया में विष्णुपद और काशी में विश्वनाथ के मन्दिर इन्हीं के बनवाये हुए हैं। ऐसेऐसे कार्यों से यह सारे भारत की प्रेमपात्री बनगईं। अभी भी इनके नाम के उच्चारण से श्रोताओं के हृदय में एक अभूतपूर्व आनन्द का प्रवाह होनेलगता है। भक्तिपरायणा अहल्या की, देवताओं और ब्राह्मणों में असीम श्रद्धा थी। यद्यपि आप शूद्री थीं तथापि उपर्युक्त गुणों के कारण वह अपने जीवनकाल ही में ब्राह्मणगणों से भी वन्दनीया होगई थीं। अतः, जब सबकोई महारानी अहल्या को देवता समझकर पूजते हैं तब यह ब्राह्मण मयूरकवि उनकी पूजा करे-इस में आश्चर्य ही क्या है?

अर्थ (Paraphrase)—

अर्थ को पदपरिवर्तन या अनुवाद भी कहते हैं। अर्थ लिखने में कठिन शब्दों को सरल और मधुर शब्दों में तथा जटिल और संकुचित अंशों को विस्तार के साथ सरल भाषा में स्पष्टतापूर्वक बदलना चाहिये। शब्दों और वाक्यांशों के भाव लेकर स्वतन्त्र वाक्यरचना द्वारा भी अर्थ कर सकते हैं जिसको भावानुवाद और कोईकोई भावार्थ भी कहते हैं। यदि पूर्व प्रसंग से लगाव हो तो उसे भी लिखना उचित है। जैसे—

(१) व्याख्यावाले 'चौपाई छन्द' का अर्थ—

(वन में रामजी सीता और लक्ष्मणसमेत यमुनापार हो रास्ता पकड़े जारहे हैं। उनकी) राह में जो पुर और गाँव बसते हैं, उनको (भगवान् की राह में पड़ने से गौरवान्वित होते) देखकर नागलोक और (इनसे भी श्रेष्ठतर) देवलोक सिहाते हैं कि किसी सुकार्य करनेवाले पुण्यात्मा ने

(ग्रहनक्षत्र इत्यादि के विचार के साथ कुग्रहों की शान्ति कराके) किसी शुभ मुहूर्त्त में (इन अल्प पुर ग्रामों को) बसाया है जिससे वे धन्यधन्य होरहे हैं अर्थात् उनका बखान होरहा है, पुण्यमय हुए हैं अर्थात् उनको पुण्य मिला है और अत्यन्त ही शोभावाले होगये हैं-रामजी की राह में पड़ने के कारण क्षुद्र पुरग्रामों को यह बातें नसीब हुई। जहाँ जहाँ अर्थात् जिन पुरग्रामों की सीमाओं के भीतर होकर (रास्ते में पड़ने के कारण) रामजी के चरण चले जाते हैं उनकी बराबरी करनेवाला स्वर्ग भी नहीं है-पदरज के पड़ने से प्रतिस्थान ऐसा होताजाता है कि उससे अमरावती भी शरमाती है। (इतना ही नहीं बल्कि) रामजी के चरण-कमलों के पराग अर्थात् रज के स्पर्श से भूमि भी अपने भाग्य को बड़ा मानती है-यह समझती है कि रामजी ने अपने चरण से छूकर मेरे भाग्य को बढ़ादिया जिससे मैं गौरव से भरगई।

(२) औंधाई सीसी सुलखि, बिरहबरति बिललात।
बीचहिं सूखि गुलाब गौ, छींटौ छुई न गात॥

अर्थ—नायिका को विरहाग्नि से जलती और विलाप करती हुई छटपटाती देखकर, तापशान्ति केलिये उसके ऊपर गुलाब की शीशी उलटी की, परन्तु शरीर से जो विरहाग्नि की लपटें निकलरही थीं, उनसे गुलाब-जल बीच ही में सूखगया, शरीर तक एक भी बूँद न पहुँची।

—बिहारी की सतसई (पं० पद्मसिंह शर्मा)।

(३) आज जो समाज सुखी और समृद्धिशाली बना है, संभव है कल उसे औरों की जूतियाँ उठानीपड़ें, इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरापड़ा है।

अर्थ—इतिहास में ऐसी सैकड़ों मिसालें मौजूद हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि हमेशा एकसी दशा किसी की नहीं रहती। यदि इस समय कोई देश, जाति वा समाज, धन और सुख से पूर्ण अर्थात् स्वतंत्र हो तो यह निश्चय नहीं है कि हमेशा वह स्वतंत्र ही बनारहे-मुमकिन है कल

दूसरी जातियों का गुलाम बनना पड़े (अर्थात् अच्छी अवस्था में कभी किसी को स्वार्थी और पागल न होना चाहिये)। –पं० रामरत्न शर्मा।

सरलार्थ (Clear Meaning)-

मूल को विना बढ़ाये या घटाये साफसाफ सरल शब्दों और छोटेछोटे वाक्यों में प्रकाश करना–यही 'सरलार्थ' कहलाता है। यदि अर्थ का क्रम न बैठे तो कभी कभी दो एक शब्द बाहर से लेसकते हैं। यदि पद्य का सरलार्थ लिखना हो तो उसे पहले अन्वय के अनुसार गद्य में बदल दो तब उसी गद्य का सरलार्थ लिखो।

(१) व्याख्यावाले चौपाईछन्द का सरलार्थ—

रामजी की राह में जो पुर और गाँव बसते हैं उन्हें देखकर नागलोक और देवलोक भी सिहाते हैं। किसी पुण्यात्मा ने किसी शुभ मुहूर्त में उन्हें बसाया है जिससे वे धन्यधन्य, पुण्यशाली और अत्यन्त शोभायमान होगये हैं। जहाँजहाँ रामजी के चरण चलेजाते हैं उन स्थानों की बराबरी करनेवाला स्वर्ग भी नहीं है। रामजी के चरणकमलों के रज को छूकर भूमि भी अपने भाग्य को बड़ा मानती है।

(२) हौंही[२] बौरी[३] बिरहबस, कै[४] बौरो[६] सब गाम।
कहाजानि ये[२] कहत हैं, ससिहि सीतकर नाम[३]।

विरह के कारण मैं ही बावली हूँ, या सारा गाँवही बावला है। क्या समझकर ये लोग चन्द्रमा को शीतकर (ठण्ढी किरणोंवाला) कहते हैं।–

—बिहारी की सतसई (पद्मसिंह शर्मा)।

अनलंकृत अर्थ (Simple Meaning)-

अलंकारों को छोड़कर जो अर्थ कियाजाता है उसे अनलंकृत अर्थ (साधारणतः अर्थ प्रकाश करना) कहते हैं।

(१) व्याख्यावाले 'चौपाई छन्द' का अनलंकृत अर्थ—

रामजी की राह में बसनेवाले पुरों और गाँवों को देखकर पाताल और स्वर्ग भी सिहाते हैं। किसी पुण्यात्मा के किसी शुभ मुहूर्त में बसाने से वे इस समय धन्यधन्य, पुण्यवान् और सुहावने होगये हैं। जहाँजहाँ रामजी जाते हैं उनकी बराबरी करनेवाला स्वर्ग भी नहीं है। भूमि भी रामजी के चरणों को छूकर अपने भाग्य को सराहती है।

(२) श्रीगुरुचरण सरोज रज, निजमनमुकुर सुधारि।
बरणों रघुवर विमल यश, जो दायक फल चारि॥

गुरुजी के चरणों की धूलि से अपने मन को पवित्र कर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के देनेवाले रामयश को वर्णन करता हूँ।

संक्षिप्तार्थ (Summary)-

मूल के अर्थ को समझकर उस पर स्वतन्त्र वाक्यरचना करके बहुत थोड़े वाक्यों में जो अर्थ प्रकाशित कियाजाता है उसे संक्षिप्तार्थ कहते हैं।

(१) व्याख्यावाले 'चौपाई छन्द' का संक्षिप्तार्थ—

पुण्यात्मा के हाथ से शुभ मुहूर्त में बसेहुए पुर और गाँव सब रामजी की राह में पड़ने से, अत्यन्त ही भाग्यशाली होगये हैं, जिन्हें देखकर पाताल और स्वर्ग सिहाते हैं तथा उनकी बराबरी नहीं करसकते।

(२) वर्षा ही से सब पेड़पौधे, घासफूस हरे और जीवित रहते हैं। इसीसे जीवधारी अपनेअपने भोजन पाजाते हैं। खेती करनेवाले देशों में एकही साल की अनावृष्टि से सत्यानाश होजाता है, क्योंकि अनाज पैदा ही नहीं होता तो लोग क्या खाकर जियें! इस महालाभ के अतिरिक्त वर्षा से हमारे चित्त प्रफुल्लित रहते हैं और स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है।

संक्षेप–चर और अचर सब जीव वर्षा से ही हरेभरे और जीवित रहते हैं। एकही साल वर्षा न होने से घोर अकाल पड़जाता है तथा मनुष्य

और पशु भूखसे तड़पने लगते हैं। वर्षासे चित्त और स्वास्थ्य अच्छा रहता है।—प० रामरत्न शर्मा।

सारार्थ (Substance)—

सारार्थ में विषय का सारमर्म दियाजाता है। जैसे—

(१) व्याख्यावाले 'चौपाई छन्द' का सारार्थ—

रामजी जिन पुरग्रामों और भूमि होकर जारहे हैं वे सबके सब उनके पदरज के महत्व के कारण पुण्यमय होगये और उनके आगे पाताल और स्वर्ग सभी तुच्छ होगये।

(२) भौंरा ये दिन कठिन हैं, दुख सुख सहो शरीर।
जब लगि फुले न केतकी, तब लगि बिलम करीर॥

कवि किसी विपद्ग्रस्त मनुष्य की ओर संकेत करके कहता है—

कठिन दिन आपड़ने पर उस समय तक दुःखसुख सहते रहो जब तक अच्छे दिन न आजाँय।

तात्पर्य (Purport)-

"वक्तुरिच्छा तात्पर्य्यम्" वक्ता की इच्छा का नाम तात्पर्य है। तात्पर्य में यह लिखाजाता है कि 'मूल' में कौन मुख्य बात लेखक दिखलाना चाहता है। तात्पर्य और सार में **बहुत कम भेद है।**

(१) व्याख्यावाले 'चौपाई छन्द' का तात्पर्य—

जो पुर और गाँव रामजी की राह में पड़े हैं, जिन स्थानों पर वे गये हैं और जिस भूमि ने उनके चरणरज का स्पर्श किया है, सबों में उनके महत्व के कारण गौरव आगया।

(२) सारार्थवाले दूसरे पद्य का तात्पर्य—

ये विपत्ति के दिन गम्भीरता से काटलो जबतक अच्छे दिन फिर न आवें।

(३) आपके हाथ कमल के तुल्य हैं।

तात्पर्य–आपके हाथ कोमल और सुन्दर हैं।

भाव (Sense)-

लेखक मूल में जो कुछ दिखाना चाहता है उसे भाव में लिखते हैं। यह तात्पर्य का सार अंश है। जैसे—

(१) व्याख्यावाले 'चौपाई छन्द' का भाव—

कवि ने पुरग्रामों इत्यादि के महत्व गाने के बहाने रामजी का महत्व गाया है।

(२) सारार्थवाले दूसरे पद्य का भाव—

समझदार मनुष्य को बुरे दिनों में घबड़ाना न चाहिये।

(३) अनलंकृत अर्थवाले दूसरे पद्य का भाव—

सद्गुरु के चरणों के ध्यान से विघ्नबाधाएँ नाश होजाती हैं, कार्य पूरा हो जाता है।

—पं० रामरत्न शर्मा।

६१. अभ्यास (Exercise).

(१) नीचे लिखे अनुच्छेदों की व्याख्या करो।

(क) अनसूया। सखी तू अपने गुणों को घटाकर कहती है, नहीं तो ऐसा मूर्ख कौन होगा जो सूर्य का ताप मिटानेवाली शीतल शरद चाँदनी को रोकने केलिये अपने सिर पर कपड़ा ताने। (शकुन्तला)

(ख) दुष्यन्त। जो आपने कृपा की है तो इससे अधिक और आशीर्वाद क्या होगा और कदाचित आप प्रसन्न ही हुए हों तो यह आशीर्वाद दो कि राजाओं की बुद्धि प्रजा का सुख बढ़ाने में प्रवृत्त रहे और वेदपाठी सरस्वती के पूजन में चित्त लगावें और नीलकण्ठ लोहितजटा स्वयंभू सदाशिव मुझे इस संसार के आवागमन से छुड़ावें। (Test Examination 1920.)

२. नीचे लिखे पद्यों की व्याख्या करो।

(क) क्षुद्र वारीश्वर! तुझे धिक्कार सौ सौ बार है,
जो न तुझ से स्वल्प भी संसार का उपकार है।

क्या कभी तूने बुझाई है किसी की प्यास भी,
व्यर्थ तो सबसे बड़ा है विश्व में आकाश भी।

(I. A. & I. Sc. Examination 1919.)

(ख) कोटि यतन कोऊ करौ, परै न प्रकृतिहिं बीच।
नलबल जल ऊँचो चढ़ै, अंत नीच को नीच॥
गुनी गुनी सबही कहै, निगुनी गुनी न होत।
सुन्यो कहूँ तरु अर्कते, अर्क समान उदोत॥

(B. A. & B. Sc. Examination 1918.)

३. नीचे लिखे पद्य का अर्थ लिखो।

निश्चेष्ट होकर बैठ रहना यह महा दुष्कर्म है,
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है।
इस तत्व पर ही कौरवों से पाण्डवों का रण हुआ,
जो भव्यभारतवर्ष के कल्पान्त का कारण हुआ।

(Matriculation Test Examination).

४. नीचे लिखे अनुच्छेद का संक्षिप्तार्थ (Summary) लिखो।

कितनी बेर हमने नगर की स्त्रियों को उड़ते भौंरे से कटाक्ष करके मुख मोड़ते देखा है, परन्तु सदा बनावट ही पाई। इस भोगी के भौंह मरोड़ने और आँखें तिरछी करने में कैसा सीधापन है। हे भौंरे, तू बड़ा बड़भागी है कि इन चंचल नेत्रों की कोर को स्पर्श करता है और कानों के निकट ऐसा जाता है मानों कुछ रहस्य का सँदेसा सुनावेगा। जब तक वह हाथ उठाती है तू अमृत भरे होठों से रस ले जाता है। (शकुन्तला)

५. नीचे लिखे अनुच्छेद का सारार्थ (Sudstance) लिखो।

निश्चय यह ऋषि की बेटी सजातीय स्त्री से तो नहीं है। पर यह सन्देह वृथा है, क्योंकि इस पर जो मेरा चित्त ऐसा लगा है तो अवश्य यह क्षत्री के व्याहने योग्य होगी, क्योंकि सज्जनों के हृदय में जो कभी कुछ सम्भ्रम उपजता है तुरंत ही वह अंतःकरण की भावना से मिटजाता है। मेरा मन इसके वश हुआ इसलिये निश्चय यह ब्राह्मण की बेटी नहीं है जो मेरे व्याहनेयोग्य न हो। भला हो, सो हो, इसका सत्यवृत्तान्त तो खोजना चाहिये। (शाकुन्तल)

६. नीचे लिखे अनुच्छेद का तात्पर्य (Purport) लिखो।

दुष्यन्त (कान पर हाथ धरकर) क्या तू मुझ निर्दोषी को कलंक लगाने केलिये कुछ छल करती है। देखो, जो नदी मरजाद छोड़कर चलती है वह अपना ही तट खसकाकर गदली होती है और तट के वृक्षों को गिराकर अपनी शोभा बिगाड़ती है। (शकुन्तला)

(७) इसका भाव (Sense) बताओ—

(नेपथ्य मे) हे चकई, अब चकवा से न्यारी हो, रात आई।

(Test Examination 1920)

पत्ररचना (Letter-Writing).

पत्र में ध्यान देनेयोग्य बातें।

१. पत्र बातचीत के ढंगपर लिखना चाहिये। लिखनेवाले को ऐसा समझना चाहिये कि हम जिसके पास पत्र लिखते हैं उससे बातें कररहे हैं। ऐसे पत्रके पढ़ने से पढ़नेवाले का जी आनन्द से भरजाता है।

२. पत्र उस समय लिखना चाहिये जब मन चंचल न हो। जब क्रोध चढ़ा हो उस समय पत्र लिखने से पीछे पछतानापड़ता है। यदि किसीके पत्र का उत्तर देना हो तो पत्र को सामने रखकर ठीक उसी के अनुसार उत्तर दो।

३. पत्रको अच्छी तरह सोच विचारकर लिखना उचित है। पत्र में केवल काम की बातें हों, सो भी छोटेछोटे वाक्योंमें और मधुर शब्दों में। पत्रकी भाषा पढ़नेवाले की योग्यता के अनुसार होनी चाहिये।

४. जानपहचानवाले के पत्र में प्रेम और घरेलूपन दिखाना उचित है, परन्तु अनजान मनुष्यों केपास पत्र भेजने में इसकी आवश्यकता नहीं, क्योंकि उन्हें केवल कामकाज के पत्र भेजेजाते हैं।

५. कोई पत्र क्यों न हो, ऐसा न होना चाहिये कि उससे घमण्ड झलके।

आधुनिक प्रथा।

पत्र के मुख्य ६ अंश होते हैं—

१. इष्टदेव या गुरु इत्यादि का स्मरण करना। *
२. जहाँ से पत्र जाय उस स्थान का नाम और तारीख।
३. प्रशस्ति अर्थात् आदर के शब्द और वाक्य।
४. प्रणाम आशीर्वाद इत्यादि शब्द।
५. काम की बातें (हालसमाचार)।
६. उचित विशेषण के साथ लिखनेवाले का नाम।

नोट–(१) कामकाज के पत्रों में पहले और चौथे अंश छोड़ दियेजाते हैं और प्रशस्ति के शब्द भी साधारण रहते हैं।

२. आधुनिक पत्रों की प्रशस्ति और समाप्ति के शब्द नीचे दिये-जाते हैं—

पिता के लिये— (१) मान्यवर (पूज्यतम) पिताजी।
(२) आपका दास, चरणसेवक।

माता केलिये— (१) महामन्या माताजी।
(२) आपका दास, चरणसेवक।

मामा केलिये— (१) महानुभाव।
(२) आपका (भवदीय) सेवक।

फूफा केलिये— (१) परम मान्य।
(२) आपका (भवदीय) सेवक।

बड़े भाई केलिये — (१) पूज्यवर भ्राता जी।
(२) आपका स्नेहभाजन।

गुरू केलिये— (१) श्री मान्यवर, पूज्यतम।
(२) चरणसेवक, आपका दास।

पति केलिये— (१) श्री आर्यपुत्र, प्रियप्राणनाथ।
(२) आपकी दासी।

प्रतिष्ठा में बड़े केलिये—(१) मान्यवर महाशय।
(२) आपका कृपापात्र, कृपाकांक्षी, कृपाभिलाषी।

---

* आजकल लोग प्रायः यह अंश छोड़देते हैं, परन्तु आस्तिकहिन्दुओं केलिये यह उचित नहीं जान पड़ता।

धर्म वृद्ध केलिये-- (१) धर्मप्रवर्त्तक, धर्मधुरीण।
(२) आपका कृपापात्र, कृपाकांक्षी, कृपाभिलाषी।
स्वामी केलिये— (१) प्रभुवर, स्वामिवर, महानुभाव।
(२) आपका दास।
मित्र केलिये--- (१) सुहृद्वर, प्रियवर, प्रियमित्र।
(२) आपका प्रियमित्र।
पुत्र केलिये— (१) चिरंजीव (प्रियवत्स, चिरंजीवि) नाम दो।
(२) तुम्हारा शुभचिन्तक।
छोटेभाई केलिये-- (१) चिरंजीवि (नाम), प्रिय (नाम)
शिष्य केलिये— (१) आयुष्मान् (नाम)।
(२) तुम्हारा शुभचिन्तक।
स्त्री केलिये-- (१) प्राणप्रिये।
(२) तुम्हारा प्रियतम।
प्रतिष्ठा में छोटे केलिये-(१) प्रिय महाशय।
(२) आपका शुभचिन्तक।
नौकर के लिये-- (१) (प्रिय) नाम।
(२) आपका, तुम्हारा।
दूकानदार केलिये (१) महाशय, श्रीमान्।
(२) आपका भवदीय
राजसम्बन्धी अधिकारी केलिये (१) महाशय, मान्यवर।
(२) प्रार्थी, सेवक, आज्ञाकारी।
निमन्त्रणपत्र में-- (१) श्रीयुत मान्यवर, परमप्रिय महाशय।
(२) दर्शनाभिलाषी, विनयी, कृपाकांक्षी।

२. प्राचीनप्रथा।

पुराने ढंग के पत्रों में प्रशस्ति पर बड़ा ध्यान रक्खा जाता है। तिस पर भी 'श्री' की संख्या पर विशेष ध्यान रहता है। 'श्री' लिखने के नियम का एक दोहा नीचे दिया जाता है।

श्री लिखिये षट् गुरुन को, पाँच स्वामि रिपु चारि।
तीन मित्र द्वै भृत्य को, एक शिष्य सुत नारि॥

अर्थात् गुरु (पिता, माता आदि) को ६, मालिक को ५, शत्रु को ४, मित्र को ३, नौकर को २ और शिष्य, पुत्र तथा स्त्री को १ श्री लिखते हैँ। ईश्वर या किसी बड़े महाराजा केलिये १०८ श्री का प्रयोग होता है।

अपने से छोटे को 'आशीर्वाद,' बड़े को 'प्रणाम,' और बराबरवालोँ को 'नमस्कार' के शब्द लिखेजाते हैँ। बड़ोँ के पत्रोँ मेँ श्री के पहले 'सिद्धि' और छोटोँ तथा बराबरवालोँ के पत्रोँ में श्री के पहले 'स्वस्ति' शब्द लिखते हैँ।

पत्रों के नमूने।

आधुनिक रीति—

श्री रामजी।

लहेरियासराय,
कार्तिक शु० ६, संवत् १९७७।

श्री मान्यवर पिताजी,

सविनय प्रणाम।

मैँ परसोँ परीक्षा देने जाऊँगा। देखेँ ईश्वर की दया मेरे ऊपर कैसी है। परीक्षा शुक्र को समाप्त होजायगी। मेरी इच्छा है कि समाप्त होते ही आपकी सेवा में पहुँचूँ। माताजी से मेरा सविनय प्रणाम कहदेँगे। जयी और जानकी को मेरी याद करादीजियेगा।

चरणसेवक
देवनारायण।

प्राचीन रीति—

सिद्ध श्री गयाजी शुभ स्थान अनेक उपमायोग्य पूज्यवर श्री ६ पिताजी की सेवा में लहेरियासराय से चरणसेवक देवनारायण का प्रणाम पहुँचे। मैँ आपके आशीर्वाद से सकुशल हूँ। आपका कुशलक्षेम परमेश्वर से चाहता हूँ। समाचार यह है कि... ... ...इति शुभम्।

शुभ मिति कार्तिक शु० ६, संवत् १९७७।

नोट-हमने यहाँ पत्र की थोड़ीसी बातेँ दी हैँ। हमारी पत्रचन्द्रिका मेँ इसका विशेष वर्णन है। उसमें तमस्सुक, केवाला, पट्टा इत्यादि लेनदेन के पत्र भी दियेगये हैँ।

६२. मिश्रितप्रश्न।

(Miscellaneous Exercise).

१. लिखते समय यदि कोई शब्द समूचा न लिखाजासके तो क्या करना चाहिये ? उदाहरण देकर समझाओ।

२. अनुच्छेद (Paragraph) बनाने में किनकिन बातों पर ध्यान रखना चाहिये ?

३. 'राजा स्वदेशी हो या विदेशी, राजा का प्रधान कर्तव्य है कि वह प्रजा में विद्या का प्रचार करे।' इस वाक्य में 'विदेशी' शब्द के आगे अल्पविराम (,) क्यों दियागया ?

४. 'उस लड़के में कौनसा दोष नहीं है ? झूठ वह बोलता है, चोरी वह करता है, जूआ वह खेलता है।' इस कथन में लाघवका विचार क्यों नहीं कियागया ? अपनी ओर से तुम भी एक ऐसा ही उदाहरण दो।

५. 'किसी शब्द को दोबार लिखना हो तो अक्सर उसे एक बार लिखके उसके परे (२) अङ्क लिखदेते हैं।' इस नियम के विषय में तुम्हारा क्या विचार है ? अपने विचार केलिये प्रमाण भी दो।

६. "कलकत्ते से पेशावर तक सात आठ कोस पर एक पक्की सराय और एक कोस पर एक चबूतरा बना हुआ था" इस वाक्य को रोज़मर्रे के अनुसार लिखो।

७. मुहावरे से क्या लाभ है ? पाँच मुहावरेदार वाक्य लिखो।

८. नीचे लिखे अंशों का उपयोग अपने बनाये वाक्यों में करो। जँगरैतिन टोह, तरल, अठखेली चाल, लटके, नितान्त, उद्धृत, संवाददाता, चिट्ठा, तड़ितसमाचार। (सम्मेलनपरीक्षा)

९. नीचे लिखे प्रत्येक शब्द का क्या आशय है ?

आलोचना, समालोचना, प्रत्यालोचना, पण्डिताइन, पण्डिता, सठियाना, गदहपचीसी, घुणाक्षरन्याय। (सम्मेलनपरीक्षा)

१०, नीचे लिखे हुए मुहावरों और कहावतों की व्याख्या करो।

आँख का पानी ढरकजाना। शरम हया को पीबैठना। मिट्टी छूते सोना होता था। ग्रन्थचुम्बकों को मुँह खोलने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। नौ नक़द न तेरह उधार। कोयले के व्यवहार में हाथ काले। (सम्मेलनपरीक्षा)

११. नीचे लिखी हुई कहावतों के अर्थ लिखो और प्रयोग दिखाओ।
काल्हि के जोगी माईमाई। किस बिरते पर तत्ता पानी। नाचि न जाने आँगन टेढ़। ऊँट के मुँह में जीरा। दमड़ी की बुलबुल टका हलाल।

१२. हमलोगों को कैसी भाषा लिखनी चाहिये जिसमें हिन्दी साहित्य की भलाई हो?

१३. नीचे लिखे शब्दों पर तुम्हारा क्या विचार है?
आवश्यकीय, अकाट्य, सराहनीय, पूज्यास्पद।

१४. लिङ्गघटित अशुद्धियों के विषयों में तुम्हारा क्या विचार है?

१५. 'महानता, महनीयता, महत्त्व और महत्ता' इनकी अलग अलग व्याख्या करो और अपने विचार प्रकट करो। (सम्मेलनपरीक्षा)

१६. नीचे लिखे पद्य का सारार्थ (Substance) लिखो।

प्रियपति! वह मेरा प्राणप्यारा कहाँ है।
दुखजलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है॥
लख मुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ।
वह हृदय हमारा नयनतारा कहाँ है॥ (मिड्ल परीक्षा)

१७. अपनी माता को एक पत्र लिखो जिसमें तुम्हारी गत परीक्षा की बात हो।

१८. तुम्हें अपने भाई के विवाह में जाना है, ३ दिनों की छुट्टी के लिये एक विनयपत्र लिखो।

१९. तुम्हें किसी पुस्तकविक्रेता से पुस्तकें डाकद्वारा मँगानी हैं, एक पत्र लिखकर भेजो।

२०. तुम्हारे एक मित्र ने पत्र में तुमसे नीचे के पद्य का अर्थ पूछा है, उत्तर भेजो।

मेरी भवबाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जातन की झाँई परै, श्याम हरित दुति होय॥

Text, Examination, 1920.

परीक्षापत्र (Examination Papers).

वर्नेक्यूलर स्कूललीविंग परीक्षा।

(Vernacular School Leaving Certificate Examination)

१९१८—

५. तद्धित प्रत्यय से बने हुए दो चार पदों को वाक्यों में प्रयोग करो।

६. निम्नलिखित गद्य का भाव सरल हिन्दी में लिखो—मेरा अमूल्य समय व्यर्थ गया। मैं ने अपने आपको नहीं पहचाना। मुझको सुमार्ग पर चलानेवाली मेरी आत्मा ही थी, पर अज्ञानता और लोभ ने मेरी आँखें बन्द करदीं इसलिये मैं अपनी आत्मा के ज्ञान रूपी प्रकाश को नहीं देख सका। मनुष्य अमर नहीं है। मैं ने जो जो अन्याय किये हैं उनके कारण भविष्यत् में मुझे अच्छा फल मिलने की आशा नहीं है। मेरी छावनी इस समय भय और शंका में पड़ी है। उसको सन्देह हो रहा है कि मेरे पीछे उसका कोई स्वामी हो सकेगा या नहीं। मैं इस संसार में कुछ लेकर नहीं आया था और सिवाय मानुषी निर्बलता के कुछ लेकर नहीं जाता हूँ। मुझे डर है कि मेरा उद्धार कैसे होगा।

१९१९— पहला पत्र।

३. बहुव्रीहि और द्वन्द्व समास का उदाहरण वाक्य में प्रयोग करके दिखाओ।

४. कृदन्त से बने हुए कर्तृवाचक और भाववाचक संज्ञाओं का उदाहरण वाक्य में प्रयोग करके दिखलाओ।

६. नीचे दिये हुए गद्यों का भाव सरल हिन्दी में लिखो--व्यास देव ने बतलाया है कि जीवनक्षेत्र में यदि कठिनाइयाँ उपस्थित हों तो दुर्योधन के समान असावधानी मत करो, नाश होगा, किन्तु युधिष्ठिरके समान खूब समझ-बूझ कर सावधानी से काम करो, कठिनाइयाँ दूर होजायँगी, जीवन की गाँठ सुलझजायगी, जीवन धन्य होगा और संसार में सदा केलिये नाम रहजायगा।

९. इनको शुद्ध करके लिखो-ऐस्वजंसाली, प्रस्न, संस्कीरित, जथाकरम।

दूसरा पत्र ।

१. नीचे दिये पदों के साथ अलग अलग वाक्य बनाओ ।
प्रतिदिन, झट, मनोहर, कीर्ति, कौशल ।

२. 'गुरु, प्रसिद्ध, महात्मा, स्वच्छ इनसे संज्ञा बनाओ ।

३. निम्न लिखित पदों को वाक्यों में व्यवहार करो—
मारामारी, उठापटक, क्रमशः, यथाशक्ति, दुर्दैव से ।

४. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करके लिखो—

(क) मैं नहीं जानते की उसका आँख कौन फोड़ा । (ख) भारतेश्वर ज्योर्ज पञ्चम की सासन काल मे बाघ बकरी एक साथ पानी पीते हैं । (ग) बेटी पराये घर का धन होता है ।

५. नीचे वाक्यों के रिक्त स्थानों में उचित शब्द रक्खो ।
कैकयी–कहने से–ने रामचन्द्र को–में जाने केलिये– । कितनी कठोर–है । हस्तिनापुर में द्रोणाचार्य्य–और–को अस्त्रविद्या–थे । उनको–का–निराला था । सब–में उनका–फैलगया था ।

६. किसी कन्यापिता की ओर से विवाह सम्बन्धी एक निमन्त्रणपत्र लिखो, जिसमें सर्वसाधारण का बुलावा हो ।

१९२० **पहला पत्र ।**

३. रात्रियौस, कुब्जकुब्ज, अहिमयूरमृगवाघ, तपोवन, रामलषन, धनहीन—इनमें से किसी दो का विग्रह लिखकर समासों का नाम बताओ ।

४. निम्न लिखित गद्य का भाव सरल हिन्दी में लिखो ।

(क) निष्कलंक चरित्र अमूल्य सम्पत्ति है । लोग इसी सम्पत्ति के बल से सर्वसाधारण में सम्मानभाजन और श्रद्धास्पद होते हैं । चरित्र अच्छा होने पर अच्छे काम में प्रवृत्ति होती है, धर्म्मानुराग बढ़ता है और लोगों के उपकार करने की बलवती इच्छा होती है । सारांश यह कि चरित्रसम्पन्न मनुष्य सब तरह अच्छे अच्छे गुणों का अधिकारी होता है । परिश्रमी, सत्यवादी, उदारचेता और सब तरह सत्स्वभावसम्पन्न पुरुष सर्वसाधारण का प्रीतिपात्र होता है ।

६. जिस वाक्य में भिन्न भिन्न लिङ्ग के कई कर्त्ता हों तो वहाँ क्रिया किस के अनुसार होगी ? उदाहरण देकर समझाओ ।

१०. कृदन्त से बने हुए २ पदों को वाक्य में प्रयोग करके दिखलाओ।

११. नीचे के वाक्यों को शुद्ध करो।

(क) सोहन ने स्त्रियों को भेजी। (ग) तुम हम और वह पाठशाला चलूँगा। (ख) घोड़े बैल व बकरियाँ चरते हैं। (घ) बड़ा लड़का को बुलाओ।

दूसरा पत्र।

१. निम्न लिखित पदों को अलग अलग वाक्य में व्यवहार करो। दैनिक, प्रशंसनीय, परमात्मा, दत्त, यथाशक्ति, प्रेमपात्र, प्रायः, निर्विघ्न अद्वितीय, सर्वत्र।

२. इनसे विशेषण बनाओ—उद्योग, कृपा, भक्ति, प्रतिष्ठा, भाग्य।

३. "पूजा की छुट्टी तुमने कैसे बिताई" इस विषय का एक पत्र किसी मित्र के पास लिखो।

४. (क) आँख में धूल डालना। (ख) तीन तेरह होजाना। (ग) दोनों हाथ लड्डू। (घ) मन चंगा कठौती गंगा। इन सभों का अर्थ लिखो।

मिड्ल और गुरुट्रेनिङ्ग परीक्षा।

(Middle & G. T. Examination)

१९१३—

६. इन शब्दों का वाक्य में प्रयोग दिखाओ—यथार्थ, विलक्षण, अन्तर्यामी, पुरस्कार, मातृभाषा, चिन्तित और अतएव

७. शुद्ध संस्कृत शब्द लिखो—सनेह, कलेस, परस और गुसाईं।

८. इन वाक्यों को शुद्ध करो—

मैं आज दर्खास्त दिया है। उसकी ध्यान उनके ओर थी (उनका ये उपदेश बड़ा महत्व का है। मेरे तरफ के लोग उसके निगाह में था। इसका मतलब उनकी जी में आते हैं।

१०. "ने" किस कारक का चिन्ह है और इसका कहाँ प्रयोग होता है? उदाहरण देकर लिखो।

१९१५—

१. नीचे लिखे पदों में व्यास वाक्य के साथ समास बताओ—
अनुपम, प्रेमवश, स्वर्गसोपान त्रिविध भय, निरन्तर।

४. बिलखत, बसाय, सराहि—ये कैसी क्रियाएँ हैं ?

७. इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग दिखाओ-यथार्थ, विलक्षण, अधिक भाषा, माधुर्य, गरिमा, चिन्तित, क्रोधित ।

८. इन वाक्यों को शुद्ध करो मैं आज अर्जी दिया । मेरी ध्यान तेरे ओर थी । इनका आज्ञा बड़े महत्व का है । हमारा पुत्री बीमार था । इसके बात मनमें आते नहीं ।

१६१८—

५. इन शब्दों का वाक्य में प्रयोग करो, धर्मरक्षा, मूलधन, देवाराधन, सारांश हानिलाभ आत्मीय और चकनाचूर ।

६. इन शब्दों के शुद्ध संस्कृत शब्द लिखो—सुभाव, राज, अछूत और मील ।

७. इनमें समासों के विग्रह और नाम-लिखो असज्जन अमूल्य धर्मानुराग, अनपढ़, उरगृह, शुभाशुभ ।

८. इनको कारण दिखाकर शुद्ध करो- आज सूर्य देव उदय हुये हैं । मेरे ओर के घोड़ा भाग गये । ग्वालिन अपनी दही को खट्टी नहीं कहती । उसने सच बोला परन्तु उसकी भीतर की भाव दूसरी ही थी ।

११. सम्बन्धकारक के चिन्ह का, के, की, इनमें से कहाँ किसका प्रयोग होता है उदाहरण देकर लिखो ।

१६१६—

२. भाववाच्य क्रिया किसे कहते हैं और इसके बनाने की क्या रीति है ? किसी किसी भाववाच्य क्रियाओं को वाक्य में प्रयोग करो ।

३. निम्न लिखित शब्दों को वाक्य में प्रयोग करते हुए उनके लिङ्ग पहचानने की रीति बताओ ।

पक्षी, मछली, प्यास, लेनदेन, लात, भात, पानी, महिमा, किरण, कुशल ।

६. यदि तीनों पुरुषों के कर्ता एक साथ आवें तो क्रिया किस पुरुष की होगी ? उदाहरण दो ।

७. इन शब्दों का वाक्य में व्यवहार करो—

प्रभाव मनमाना, सहर्ष, घृणा, परिष्कृत और दुस्तर ।

१० नीचे लिखे वाक्यों में शून्य स्थानों को पूर्ण करो।

(क) मित्र--में घड़ी भर भी--हराम है।

(ख) जैसे शिष्य—के आगे तथा--इन्द्र के आगे--रहते हैं,--प्रजा—के निकट--रहे।

(ग) राजा--प्रजा की--करता है।

१९२०—

४. निम्न लिखित पदों का वाक्यों में प्रयोग दिखलाओ।

सम्मानित, निश्चेष्ट, उल्कापात, मितव्ययी, कृतकार्यता, प्रतिनिधि, विद्वत्ता, प्राचीन, अतिरिक्त।

६. नीचे लिखे वाक्यों में बताओ कि कौन कौन शब्द तद्धितान्त और कौन कौन कृदन्त हैं।

पाठक का पाठ सुनकर अपना विचार करो। मैला आदमी घिनौना होता है। पनेरी कतरनी चलाता है। रस्सी की ऐंठन नहीं जलती। कहसुनकर मनमुटाव न बढ़ाओ।

७. मिठास, प्यास, गन्ध, बछी इन शब्दों को लेकर वाक्य बनाओ।

९. नीचे दियेहुए शब्दों से विशेषण बनाओ।

दया, मान, यश, सुख, गाँव, तेज।

१०. क्रिया के लिंग वचन और पुरुष कर्म के लिंग वचन और पुरुष के अनुसार कब होते हैं? वाक्य में उदाहरण देकर समझाओ।

११. नीचे लिखे शब्दों का शुद्ध संस्कृत शब्द लिखो।

पच्छी, सर्बस, दर्शन, सतसंग, लखन, बर्खा।

हिन्दी साहित्यसम्मेलन की परीक्षाएँ।

प्रथमा परीक्षा।

१९७१—

(१)

२. नीचे लिखे शब्दों का उपयोग अपने बनाये वाक्यों में करिये-जँगरैतिन टोह; तरल; अठखेली चाल; खटके; नितान्त; उद्धृत; संवाददाता; चिट्ठा; तड़ित्समाचार।

३. नीचे लिखे शब्द किस आशय को प्रकाशित करते हैं:-आबोहवा;

समालोचना; प्रत्यालोचना; पण्डिताइन; पण्डिता; सठियाजाना; गदहपचीसी; घुणाक्षरन्याय ।

४. इन कहावतों का आशय समझाये :-

आठ वार नौ त्योहार; काला अक्षर भैंस बराबर; हाथी का खाया कैथ; रुपयों का ठिकरी करना; उलटे छुरा मूँड़ना; रेवड़ी केलिये मसजिद ढहाना ।

७. (क) इन शब्दों के समास बताइये और लक्षण लिखिये:--सप्ताह; मुखकमल; यथाशक्ति; निरक्षरभट्टाचार्य; संवाददाता ।

(ख) इन तद्धित वा कृदन्त शब्दों के प्रकार बताइये:—पढ़नालिखना; फक्कड़बाजी; नोकझोंक; कतरनी; सनकी; दयालु; सराहना; पातञ्जल; शैव; पढ़ीलिखी ।

८. (क) हिन्दी में कर्त्ता का चिन्ह 'ने' कहाँ कहाँ नहीं आता ?

(ख) क्या विशेषणों का रूप विशेष्य के अनुसार बदलता है ? उदाहरण देके अपने उत्तर की पुष्टि कीजिये ।

९. (ख) विसर्ग के स्थान में श, ष वा स का आदेश किन किन दशाओं में होता है ?

१०. नीचे लिखे वाक्यों में अशुद्धियाँ हों तो सुधारिये:-पण्डितमानी लोग अपना भूल स्वीकार नहीं करते। पण्डितजी आसन में बैठे हैं। पण्डित ने लाठी को सीधी किया। पण्डित कछुआ का बचा प्यार करता है। पण्डित! घास, पेड़, बूटी, लता, बल्ली बनस्पति कहाती है। पण्डित मदनमोहन मालवीय जी, की कृपा उस सम्बन्ध का कारण हुई थी।

(२)

३. (ख) धर्मात्मा, प्रजापति, गौरीशंकर, विद्यावारिधि, इनका समास लिखिये।

(ग) राम ने सीता को ग्रहण किया। लक्ष्मण ने राम की सेवा की। विभीषण का भाई बड़ा दुष्ट था। राजा भूखों को अन्न देता है। लड़का गाड़ी से गिरपड़ा। इन वाक्यों में रेखाङ्कित पदों में कौन कारक है ? लक्षण सहित लिखिये ।

१९७२—

१. ईकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग होते हैं। चार ऐसे ईकारान्त शब्द लिखिये जो स्त्रीलिंग न हों।

२. कृत और कृदन्त शब्दों के लक्षण लिखिये और कृदन्त शब्दों के चार उदाहरण दीजिये।

३. निम्न वाक्यों का सरल हिन्दी में अनुवाद कीजिये:—

(अ) जिसे छुओ, वही अंगारेसा गरम बोध होता है। मानो त्वगिन्द्रिय शीत स्पर्श से निराश हो जल में शैत्यगुण का निर्देश करनेवाले कणाद मुनि की बुद्धि का भ्रम मानबैठी हो।

(आ) उस शुभ्र ज्योत्स्नापूर्ण विभावरी में सुधाधर अंशुमाली से प्राप्त किरणों द्वारा अभ्रंलिह उच्च शाखीगण की शाखिकाओं को भी धवलित कररहा था।

१९७३—

(१)

(६) नीचे लिखे हुए महावरों की व्याख्या कीजिये। १—आँख का पानी ढलकजाना। २—शरमहया को पी बैठना। ३—पैरा बहगया। ४—मिट्टी छूते सोना होता था। ५—ग्रन्थचुम्बकों को मुँह खोलने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। ६—इनके कहने को ज़रा भी किसी ने टूला कि त्योरी बदलजाती थी। ७—नौ नक़द न तेरह उधार। ८—कोयले के व्यवहार में हाथ पैर काले।

१९७४—

निम्न लिखित शब्दों के अर्थ लिखिये--कपालक्रिया, शिष्टाचार, ब्रह्मदंड, अंतःपुर, मुस्तैदी, अग्निसमाज, शर्वरीनाथ, अनट, संजोउ, सीकर, लिप्सा, कलेवर, धनंजय, ब्याज, उल्का, वृकोदर।

७. नीचे लिखे हुए मुहावरों के अर्थ लिखिये और अपने बनाये हुए वाक्यों में उनका शुद्ध प्रयोग दिखलाइये—हाथ डालना, आँख चोरना, मुँह लगाना, वित्त से बाहर, ख़बर लेना, गोता खाना, खेत रहना, बकुला मारे पखना हाथ।

(२)

५. निम्न लिखित वाक्यों का स्पष्ट अर्थ लिखिये:—

(क) ये लोग रेवड़ी केलिये मसजिद ढहानेवाले हैं॥ १॥ खेतमेत की टाँयटाँय कररहा है॥ २॥ खल उधरें तत्काल॥३॥ बात की करामात॥ ४॥ आज चकोर को दिन में चकाचौंधी कैसी॥५॥ पूत सपूत तो धन क्या, पूत कपूत तो धन क्या॥६॥

(घ) नीचे लिखे शब्दों का उपयोग अपने बनाये वाक्यों में कीजिये:- पेट मारे, रामकमीशन, तरद्दारी, प्रतिनायक, स्थानभ्रष्ट, धाराधात, दुहाई, छेड़छाड़ ।

७. (क) निम्नलिखित गद्य का सारांश अपनी भाषा में लिखिये- प्रकृति का सदा से यह नियम चलाआया है कि किसी देश की भाषा सदा एक रूप में नहीं रहती। प्रत्येक देश की भाषा के सम्बन्ध में इस नियम का उदाहरण मिल सकता है-बहुधा देखाजाता है कि देश के अभ्युत्थान के साथसाथ भाषा भी उन्नति के शिखर पर चढ़तीजाती है; पीछे देश के अधः पतन होने पर जब उसकी पहिली उन्नति के कोई चिन्ह नहीं रहजाते, तब केवल भाषा ही वहाँ की प्राचीन उन्नति की पूरी साक्षी भरती है ।

(१) "उन्नति के" इस शब्द का कारक बताइये । किस शब्द से इसका सम्बन्ध है ?

(२) वाक्य में "भरती है" का कर्ता और कर्म बताइये ।

मध्यमा (विशारद) परीक्षा ।

१९७२—

(१)

१. निम्नलिखित छन्दों का अर्थ और आशय लिखिये:-

(क) ब्रह्म के आनन ते निकसे ते अत्यन्त पुनीत तिहू पुर मानी ।
राम युधिष्ठिर के बरने बालमीकिहु व्यास के अंग सोहानी ॥
भूषण यों कलि के कविराजन राजन के गुन पाय नसानी ।
पुन्य चरित्र सिवा सरजै वर न्हाय पवित्र भई पुनि बानी ॥

(२)

१० निम्न लिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिये—

(अ) उसने राम को गाली दी और कहनेलगा मैं तुझे कुछ नहीं समझता । (आ) उसकी मृत्यु परसों होगयी । (इ) उसने मुझे एक किताब का दिया (ई) मैं क्या तेरे आधीन हूँ ?

१९७३—

१-निम्न लिखित छन्दों के अर्थ लिखिये और उन्हें भली भाँति समझाइये-

क-(१) कीन्हेसि अग्निपवन जल खेहा। कीन्हेसि बहुतै रङ्ग औ रेहा॥
कीन्हेसि धूप सेव औ छाहाँ। कीन्हेसि मेघ बीज तेहि माहाँ॥ १॥
(२) कीन्हेसि अगर कस्तुरी बीना। कीन्हेसि भीमसेन औ चीना॥
कीन्हेसि दर्प गर्व जेहि होई। कीन्हेसि लोभ अघाइ न कोई॥ २॥

१९०४—

७. विविध तरंगाकुल यमुना यद्यपि आती थी।
उमड़ाकर निज हृदय वेदना प्रगटाती थी।
मनों सोचजल में डूबी बहती जाती थी।
कभी भँवर भ्रम में पड़ तट से टकराती थी।
बस जान आर्यगौरव गया सुधि बुधि तजि घन सोगिनी।
रज तन लपेट रमनेलगी मानों कोई योगिनी॥ १॥
सुख दुख में नित एक हृदय को प्रिय विराम थल।
सब विधि सों अनुकूल विसद लच्छन मय अविचल।
जासु सरसता सकै न हरि कबहूँ जरठाई।
ज्यौं ज्यौं बाढ़त सघन सघन सुन्दर सुखदाई।
जो अवसर पै संकोच तजि परिणत दृढ़ अनुराग सत।
जग दुर्लभ सज्जन प्रेम अस बड़भागी कोऊ लहत॥ २॥
(क) उक्त छन्दों का अनुवाद सरल स्वच्छन्द भाषा में कीजिये।
(ख) रेखाङ्कित शब्दों की पदव्याख्या कीजिये।
(ग) द्वितीय छन्द का वाक्यविश्लेषण कीजिये।

ट्रेनिङ्ग (नार्मल) स्कूल।

फर्स्ट डिपार्टमेंटल परीक्षा।

१६२०—   (१)

६। निम्न लिखित पदों का शुद्ध संस्कृत लिखो जिनके ये अपभ्रंश हैं—बछाह, अनुशासन, पवन, सनेह, धीरज, भुआल।

७। निम्न लिखित पदों में से किसी दो के भावार्थ लिखो।

(क) प्रभुहिं चितै पुनि चितइ मही, राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग, जनु बिधु मण्डल डोल॥

(ख)पुनि पुनि रामहिं चितव सिय, सकुचति मन सकुचैन।
हरत मनोहर मीन छबि, प्रेम पियासे नैन॥

(ग) ललकि ललकि लोचन तेहि लखि लखि होहु निहाल।
लाली इत उत की लहत, लहै जीय जेहि लाल।

६। सातवें प्रश्न के प्रथम पद्य का पदनिर्देश (पार्सिङ्ग) करो।

(२)

४। कलश, आघात, प्रतिष्ठा बुढ़ापा—इन शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करो।

५। हिन्दी में कहीं कहीं मैं और तू की जगह मुझ और तुझ पाते हैं। इस का क्या नियम है? वाक्यों में प्रयोग करके दिखलाओ।

६। "कौन" और "क्या" शब्दों में कुछ भेद है या नहीं? वाक्य में प्रयोग करके दिखलाओ।

७। जाना धातु के अपूर्ण भूत और सन्दिग्ध भूत काल के रूप वाक्य में प्रयोग करो।

८। हँसना, लेटना, रोना, जीतना इन क्रियाओं को सकर्मक और प्रेरणार्थक रूपों में बदल कर वाक्यों में दिखलाओ।

९। एक ऐसा वाक्य बनाओ जिसमें भूतकाल के सभी भेद पाये जायँ।

१०। नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो—कुमार का जय हो। मैं आपका कृपापत्र पाया। दमयन्ती कहा हे राजा तेरा बात सुनकर मेरा छाती फटता है।

११। ऐसे तीन उदाहरण दो जिनमें गुणवाचक शब्दों के लिंग और वचन विशेष्य के अनुसार न हों।

१२। मिश्र वाक्य किसे कहते हैं? नीचे के मिश्र वाक्यों को सरल वाक्य बनाओ (१) तुमने जो मेरा उपकार किया है, उसे मैं कभी न भूलूँगा।

(२) जो सब प्राणी जमीन पर चलते हैं उनमें मनुष्य ही श्रेष्ठ है।

सेकंड डिपार्टमेंटल परीक्षा।

१९२०

१। आकाङ्क्षा, योग्यता और श्रासत्ति किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाओ।

२। "हम और तुम पढ़ेंगे" इस वाक्य में क्रिया किस नियम से उत्तम-पुरुष के अनुसार रक्खी गई है?

३। नीचे लिखे पदों को वाक्य में व्यवहार करो।
अथवा, किन्तु, एवं, ज्यों ज्यों।

५। निम्न लिखित पदों में कौन समास हैं?
प्रतिमास, रातदिन, जन्मस्थान, चन्द्रमुख, नीलाम्बर, त्रिभुवन।

६। तद्धित और कृदन्त में क्या भेद हैं? उदाहरण देकर समझाओ।

७। सम्बन्ध कारक कहाँ कहाँ होता है।

११। 'हमलोगों ने पोथियों को पढ़ा' इस वाक्य में किस नियम से क्रिया एकवचन और पुल्लिङ्ग हुई है?

१२। नीचे के वाक्यों में वाच्य परिवर्तन करो।
(क) मुझसे बिना सोये नहीं रहा जाता। (ख) राम ने रावण को मारडाला। (ग) कहो क्या किया जाय।

१३। नीचे दिये प्रत्येक का अर्थबोधक एक पद विशेषण बनाओ।
(क) जो कहने के अयोग्य है। (ख) जो देखने के अयोग्य है। (ग) जो देवता के विरोधी हैं। (घ) जो वस्तु लोक में नहीं है।

School Examinations.

Buxar, H. E. School.

1. Rewrite the following passage, filling up the ellipses (अनुक्तपदों की पूर्ति करो)-पश्चात्य देशों-की शिक्षा ने-विलक्षण-धारण

किया । वहाँ-ने निश्चय-कि स्त्रियों-प्रत्येक-की शिक्षा-चाहिये । इसी-स्त्रियों -सामाजिक स्वतंत्रता दी गई ।

2. Give in plain Hindi, the meaning of the following Idiomatic expressions and use them in short sentences (इन कहावतों के अर्थ बताओ और प्रयोग करो) दाँतों उँगली काटना । आँख दिखाना । निन्नानवे के फेर में पड़ना । मुँह में पानी भर जाना । गले का हार होना ।

Bankipur Girls' High School.

1. Constract sentences to illustrate any 4 from the following (इन कहावतों का प्रयोग करो)—

जब पड़े कपार तब बुझे गँवार । उलटे चोर कोतवाल को डाँटे । अंत करैला तीता । छ पांच में पड़ना । पानी पानी हो जाना ।

2- Correct the following (शुद्ध करो)-अच्छा अब उस शासतरों के तरफ-उन विज्ञान के तरफ धेयान दिजीये जिनका समवन्ध मन से हैं बाहरी वस्तुओं से भी है ऐसे शासतर में जन्त्र शासतर को सबसे अधिक लिया बोलते हैं ।

3. Cite and illustrate the uses of ने (ने चिन्ह के प्रयोग, उदाहरण देकर बताओ ।

Darbhanga Raj H. E. School.

1. Constract to show the use of the following (इन कहावतों का प्रयोग करो)-(*a*) उलटा चोर कोतवाल को डाँटे । (*b*) मूस का जी जाय बिल्ली का खिलौना । (*c*) चले न जाने आँगन टेढ़ ।

2. (*a*) Frame sentences with the following (वाक्य बनाओ)- कागज की धारा ; चक्कर चलाना ; हड़ताल देना ; धूल में रस्सी बाँटना ।

(*b*) Fill up the gaps in the following (अनुक्त पदों की पूर्ति करो)- कैकेयी पुत्र भरत ने-के-जो-यश-किया-वह-काल-अत्यन्त-है । वे-में-भी-थे ।-का-ये-हो-। इनका-चरित्र-के-लिये-लक्षित । इनकी-भी-थी ।

3. (*a*) Which संयुक्त क्रियाएं composed of both सकर्मक and अकर्मक take ने after their nominatives (सकर्मक और अकर्मक से बनी कैसी क्रियाओं के कर्त्ता ने चिन्ह लेते हैं ?)

(*b*) Correct the following (शुद्ध करो)-

परशुराम के आने का आहट पाकर जनकपुर की स्त्री पुरुष भय से काँपने लगीं। कहते हैं उनके देह के झलक प्रभाव शाली राजों को भी भयानक दिखने लगा। कितने ने तो वहाँ से चल दिया, पुरुष, बालक और स्त्री सबके सब ईश्वर का आराधना करने लगीं।

Chupra Zilla School.

1. Turn the following sentences into a Simple one (नीचे लिखे वाक्यों को मिलाकर एक अमिश्र वाक्य बनाओ)-

कुश और लव दोनों भाइयों ने वीणा बजाकर गाना आरम्भ किया। उन लोगों की आकृति बड़ी ही सुहावनी थी। उनकी अवस्था भी बहुत कम थी। इस गान की मधुरता अनिर्वचनीय थी। रामायण की कथा का अवलम्बन कर यह गान रचा गया।

2. Develop the idea contained in the following (आशय बताओ)-" कर्म्म प्रधान विश्वकरि राखा। जो जस किये सो तस फल चाखा॥"

3. Frame complex sentences to explain the correct use of the following expression (नीचे लिखे प्रत्येक शब्द से एक एक संकीर्ण वाक्य बनाओ)--चौकन्ना, चकनाचूर मुहतोड़ and धर्म्महल्ला।

Ram Mohan Ray Seminary, Bankipur.

1. Write a short letter in Hindi to your guardian stating what you propose to do after passing your Matriculation Examination (प्रवेशिका परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर तुम क्या करना चाहते हो यह बात अपने संरक्षक को एक पत्र में लिखो)।

2. Correct (शुद्ध करो)-

क्या महाराज कहाँ को जाते होंगे। यहाँ नेक बिसराम करके जाइयेगा। बहुत दिनों से आपका दर्शन नहीं मिला था आज बड़ी कृपा हुई। अपने अपने ओर से सेवा में कसर नहीं पड़ेगी यहाँ जब तक रहोगे सतसंग हुआ करेगा। सन्त लोग का रहना बड़ा भाग्य से होता है। न जानूँ फिर कब दर्शन मिलेगा।

3. Fill up each of the blanks with an appropriate word (अनुक्तपदों की पूर्ति करो)।

भोर- सूरज- सुनहरी किरणें धीरे धीरे आकाश-फैल-हैं, पेड़ों की पत्तियाँ सुनहरा-रही हैं, और-के पोखरे के-में धीरे धीरे आकर उतर रही हैं।

4. Write sentences to illustrate the uses of (इन कहावतों का प्रयोग करो)-(a) बन्दर के हाथ में नारियल। (b) उल्टा चोर कोतवाल को डांटे (c) एक हाथ से ताली नहीं बजती। (d) कद्दू पर सितुहा चोख।

North brook H. E School.

1. Frame short sentences with adjectives derived from (नीचे लिखे शब्दों से जो विशेषण बनें उनसे अलग अलग वाक्य बनाओ)— भय, हरण, भक्ति, माया, लड़ाई, डर।

2. Are the following words correct ? give reason. (क्या नीचे के शब्द शुद्ध हैं ? कारण दो)-
वर्त्तमान्, श्रीमान्, दयामान्, बुद्धिवान्, विपद, ऐक्यता।

3. Supply appropriate nouns after the following adjectives (प्रत्येक विशेषण के बाद उचित संज्ञा भरो)-सायंकालीन, अभूतपूर्व, दुर्लक्ष्य, लोमहर्षण, अपरिमित, विमत्त, अनिर्वचनीय, हृदयविदारक।

4. Contract the following sentences (प्रत्येक वाक्य का संकोचन करो) शिक्षकने विद्यार्थी को पढ़ते देखा और उसे पारितोषिक देने का वचन दिया। इस कार्य का निवारण नहीं किया जा सकता। राम ने चिट्ठी पढ़ी, पढ़कर प्रसन्न हुए और कहा कि पुस्तक ले जाओ। जिसको दुःख हो उसका दुःख हटाओ।

5. Correct the following (शुद्ध करो)-
जब बड़ों को देखो, उन्हें नमस्कार करो, क्योंकि वे तुम पर भक्ति रखते हैं। निरपराधी मनुष्य को दण्ड देना उचित नहीं इस खबर ने इस कान से उस कान, उस कान से इस कान फैल गई बहुसंख्यक मनुष्यगण यहाँ आये थे। आप कहा था ? जी नहीं, हम नहीं कहा था।

North brook H. E. School.

1. Correct the following (शुद्ध करो)-
भगमान साधी सन्सार को भगती पुरवक पालता है। जब मैं ने आपके यहाँ आकर बैठा तो आपने बोला कहो भाई किधर पर आये हो । सीतामढ़ी का मेला बहुत सा हाथी घोड़ा बैल अरु मनुष्य से भरल रहता है। सीता की बापं बड़ी गो है। ईसुर का सहायता सभी को मिलता है अतह बिपद में धीरताई रखो। गतवर्ष हम परीक्षा देंगे।

2. Distinguish between (नीचे लिखे प्रत्येक युगल में भेद बताओ)-
उपकरण-उपादान । अहङ्कार-अभिमान । नीर-नीड़ । बासना-वासना।

3. Rewrite the following in विशुद्ध हिन्दी (विशुद्ध हिन्दी में लिखो)-
सच है जिस बात का इरादा, किया जाय उसमें खतरा जरूर होता है। हाय चट्टान पर यही फूलों का बिस्तर है जिसपर वह सोई थी। यही कमल का पत्ता है जिसपर प्यारी ने मुहब्बत का खत लिखा था।

4. Use the following proverbs (नीचे की कहावतों का प्रयोग दिखाओ)-अपना पेट तो गधा भी भरलेता है। बड़े लोगों के आँखें नहीं होतीं, कान होते हैं। साईं घोड़न के अछत गदहन पायो राज।

Ranchi Zilla School.

1. How many Samases are there ? Describe and illustrate each (समास कितने हैं ? उदाहरण देकर समझाओ) ।

2. Give from standard authors fwe examples of उपमा point out their suitability, and make sentences of your own making use of the उपमा (विद्वानों की पुस्तकों से उपमा के पांच उदाहरण दो और अपने वाक्यों में उनका प्रयोग करो)

3. जो संपति शिव रावणहिं, दीन्ह दिये दशमाथ।
सो संपदा विभीषणहिं, सकुचि दीन्ह रघुनाथ ॥
Give the allusions and them explain the passage (उपर्युक्त की व्याख्या करो और यह भी लिखो कि क्या लक्ष्य करके यह कहा गया है)।

4. Correct (शुद्ध करो)--
सीवजी का पूजा करती आदमी सुअरग पहुंच जाते है। अच्छी घी थोड़ी

बड़ी मीठी पानी पड़ता बीबी में दो देर क्यों करती है राहा ने रोटी खाया में तुम्हरे मुंह में बोलदिया । जौंक को जलज कहाता है ।

Calcutta University.

Matriculation. 1913.

3. (b) Are there exceptions to the general rule in Hindi "that names of lifeless things ending in 'e' are feminine" ? Give examples 'निर्जीव ईकारान्तशब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं ।' क्या इस नियम के अपवाद भी हैं ? उदाहरण दो)—

4. Correct the following (शुद्ध करो)-

अकबर बादशाह के यह रीति था कि सदा फकीर के भेष से रात को नगर के गली गली नाकेनाके में फिरता और जिस दरिद्रि कंगाल दुखी को देखते उसके दुःख दूर करता । एक दिन ज्यों निकले त्यों देखते क्या हैं कि कोई साहूकार के बेटि गोख में खड़े रो रो बिसूर रहा है । ये बोले माई ! टुकड़ा भेजो; वह रोटि देने आये उन्होंने उससे पूछा- तू क्यों रोते हैं ? उत्तर दीना मेरो स्वामी बारे बरस से जहाज से बनजको निकले हैं उनकी कुछ समाचार नहीं पाई, इस दुःख से रोती हूँ । इतना सुनी रोटि ले, आशिश दी आगे बढ़ा ।

Matriculation. 1916.

3. Give in your own words the significance of the following proverbs (नीचे की कहावतों का प्रयोग दिखाओ)—

ग्वालिन अपने दही को खट्टा नहीं कहती । घर पर फूस नहीं और नाम धनपत । रस्सी जलगई पर बल नहीं गया । सत्तर चूहे खाके बिल्ली चली हज को ।

4. write sentences to illustrate the use of the following (इनसे वाक्य बनाओ) —अधमूआ, चकनाचूर, भलाचङ्गा, करतूत, उथलपुथल।

Patna University

Matriculation. 1918.

2. Fill up the blanks in the following (अनुक्तपदोंकी पूर्ति करो)—

जो सच्चे-से ईश्वर-भक्ति करता है उस-ईश्वर प्रसन्न होकर उसका मनोरथ-करता है, जिस प्रकार प्यासा-की, भूखा-की, और कृपण धन की प्रीति करता है उसी-ईश्वर भी अपने भक्तों की-करता है । जो सदा सुखी होना- वह सदा ईश्वर का-करे ।

3. Frame sentences in Hindi illustrating the use of का, के, की and ने (का, के, की और ने का प्रयोग वाक्यों में करो)-

5. Give the substance of the following (सारांश लिखो)—

तुम काहू पर मत हँसो, जासे हँसे न कोय।
जगमें निश्चय जानियो, हँसी हँसी ते होय॥

Matriculation. 1920.

3. Fill up the blanks (अनुक्तपदों की पूर्ति करो)—

पंचमी—दिन श्रीरामचन्द्र समुद्र के—जाने का विचार करने-फिर वानरों —सहायता—नल और नील‌ने समुद्र पर पुल बाँधा। यह सेतु दस योजन चौड़ा सौ योजन—था। उस पर—तीन—दिन —वानरी सेना पार हो—।

4. Correct the following (शुद्ध करो)—

हम, तुम और वह जायगा। छोटे लड़के लड़कियाँ खेलते हैं। उसने नयी रीतियों को चलायीं। उसकी बात पर मोहन हँस दिया। दंगे में बालक, युवा, नर, नारी, सब पकड़ी गयीं।

5. Explain the following in Hindi (व्याख्या करो)—

(*a*) श्रम से विद्या पाइये, श्रमही से धन होइ।
श्रम ही से सुख होत है, श्रम बिन लहे न कोइ॥
जे नर श्रम नहिं करत है, आलस वश धन पाइ।
अति दुख पावें जगत में, सञ्चित धन बिनसाइ॥
(*b*) कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर।
समय पाइ तरुवर फरै, केतक सींचहि नीर॥

Calcutta University.

Intermediate. 1913.

4. Fill up the blanks in the following (अनुक्तपदों की पूर्ति करो)—

अजी क्या बकबक कर-हो। मुझे इन धूर्तों-अच्छी खबर है। उड़ते-गुब्बारे-कहते-कि मेरे गुरु-उड़ रहे हैं - हाथ से पटरी चलाते हैं-बतलाते हैं कि भूत-चला रहा है। आस्तीन से रुपये निकालते हैं और चिल्लाते हैं कि जिन-गया है। घी भरा हुआ टिन नदी में-कर मगाते हैं तो प्रसिद्ध करते हैं कि सरयू मैया ने-भेज-है। अफसरों के-से अपराध-आते हैं तो-ते हैं-मैं यहाँ

नहीं-था-रूप में रामजी पहुँचे-घमाइन-। सब बात-कर लड़का होने के समय कितने-थे और किस मुँह के घर में-हुआ सो सब बतलाते हैं।

5. Correct where nesessary and punctuate (शुद्ध करो और विराम के चिन्ह भरो।)

राम अजी मैंने हजारों धूर्तों को यह कहते सुने हैं कि तीन कालों का बात वह कह सकते हैं पर पूछी जाने पर कुछ भी ठिकाने न बतला सकते हैं श्याम भाई साहब आप कैसा कहते हो कलह को तो एक साधु महाराज आया था जो आना बेजाना सबके बाप दादा को नाम गाम बतायी थी राम छिछि सब बात बताता था तो किसी किताब में उँगली रखकर उसको काहे नहीं पूछी कि किस पन्ने में उँगली है श्याम क्या आप ऐसी ही सीधी प्रश्न महात्माओं से कहते हो जो यहां से अमेरिका का खबर बता सक्ता है उसके लिये यह कौन कठिनाई है।

स्वस्ति श्री महाराज जी के चरन में दास के परति दिनको परनाम आगे बहुत दिन भइल कि आपकी खबर कुछ ना मिला। किरिपा करके कुशल पत्र लिखिएगा चित्त लगी रहती है हमारा पढ़ने का प्रबध कीजियेगा तब हम आऊँगा आपका दास रामरतन खत भेजा पलामूँ से तारीख सत्तरहवीं जून सन् १६११ खत मिले श्री स्वामीजी महाराज चेतन मठ सहर बनारस लछिमी कुंड पर।

Intermediate. 1916.

3. Translate or explain the following passages (व्याख्याकरो)-

(a) आये तो हरि भजन को ओटन लगे कपास। (b) एक चना भाड़ नहीं फोड़ता। (c) एक खून का खूनी लाख खून का गाजी। (d) गुड़ खायँ गुलगुलों से परहेज। (e) जैसा देस तैसा भेस।

4. Rewrite one of the following correctly (शुद्ध करो)—

देखो, पृष्ठ १३५, अभ्यास के पहले प्रश्न से प्रथम और द्वितीय विच्छेद।

Patna University.

I. A. & I. Sc. Examination. 1919.

2. Correct the following (शुद्ध करो)—

उसने भोजन के लिये रोटियां खायीं। उसने रातभर बैठा बैठा उसका

पुष्ट देखा किया । विद्यालय के दरबानने मुझको बड़ा सम्मान किया । सादरपूर्वक मेरा निवेदन है कि मैं सापराधी नहीं हूं । आरोग्यता भी क्याही निर्मूल्य वस्तु है ।

3. Explain the following (नीचे की कहावतोंकी व्याख्या करो)—

(*a*) मोहरों की लूट और कोयलोंपर छाप । (*b*) पेट में चूहा कूदना । (*c*) अपना हफला आप बजाना । (*d*) मियांकी दौड़ मसजिद तक । (*e*) चोरकी दाढ़ी में तिनका । (*f*) जंगल में मङ्गल । (*g*) भस खोटना ।

5. Explain the following (व्याख्या करो)—

क्षुद्र वारीश्वर ! तुझे धिक्कार सौ सौ बार है,
जो न तुझसे स्वल्प भी संसार का उपकार है।
क्या कभी तूने बुझाई है किसीकी प्यास भी,
व्यर्थ तो सबसे बड़ा है विश्व में आकाश भी ॥

I. A. & I. Sc. Examination.

3. Exmidation the following (व्याख्या करो)—

(*a*)मन चङ्गा कठौती गङ्गा ।(*b*) टाटपर रेशम की बखिया । (*c*) लकीर के फकीर । (*d*) सोने में सुगन्ध । (*e*) सौ सयाने एकमत । (*f*) अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता । (*g*) होनहार बिरवान के होत चीकने पात ।

4. Frame sentences, using the following verbs in the past tense. (नीचे लिखी संयुक्त क्रियाओं के भूतकालिक रूपों से एक एक वाक्य बनाओ)–हाथमारना, हाथलगाना, मुंहलगाना, बातबनाना, मुंहआना, लहूहोना, बातफेरना, आँखदिखाना ।

5. Explain the following (व्याख्या करो)—

(a) खाली हंसन की चलै, चरन चोंच कटि लाल ।
लखि परिहैं बक सब कला, झष मारत ततकाल ॥
(b) मुखिया मुखसो चाहिये, खानपानको एक ।
पाले पोषै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक ॥

Calcutta University.

B. A. Examination. 1913.

2. (a) Form Sentences to illustrate the meanings of (वाक्य बनाओ)—मुंह गिराना, मुंह दिखाना, मुंह करना, मुंह लगाना, मुंह की खाना, मुंहतोड़, मुंहज़ोर।

(b) Fill up the blanks (अनुक्त पदों की पूर्ति करो)—

स्वामी विवेकानन्द नाम सभी शिक्षित परिचित होंगे जिन्हों ने उनके वार्तालाप है, उनके व्याख्यान हैं अथवा उनके ग्रन्थों को है वे तरह जानते होंगे कि स्वामी जी अध्यात्मविद्या के कैसे बद्भुत थे।

संस्कृत साहित्य में महाभारत ही एक ऐसा है जो सब से बड़ा उत्तम और सब से अधिक उपयोगी। महाभारत ही आर्यों का प्रधान है, वही आर्यों सच्चा इतिहास है और वही सनातन का है।

B. A. Examination 1916.

3. Fill up the blanks (अनुक्त पदों की पूर्ति करो)—

समय अमूल्य जीवन-है। अतएव एक-भी-नष्ट नहीं-चाहिये। बुद्धिमान्-समय-उत्तम-से उपयोग करना-हैं और उसको सुख के-या लाभ-काम-लगाते हैं। वे सुस्त-नहीं रहते पर विद्याभ्यास-विनोद- में सतत-रहते हैं। आलस्य दुर्गुणों की-है। यह-संसार-है और यह भी-है कि आलस्य मूर्खों-ही पैतृक-है।

Patna University.

B. A. & B. Sc. Examination. 1918.

4. Explain in idomatic Hindi (व्याख्या करो)—

कोटि यतन कोऊ करौ, परै न प्रकृति हि बीच।
नल बल जल ऊँचौ चढ़ै, अंत नीचको नीच॥

Or गुनी गुनी सबही कहै, निगुनी गुनी न होत।
सुन्यौ कहूं तरु अर्कते, अर्क समान उदोत॥

B. A. & B. Sc. Examination. 1920.

3. Write the subotance of the followings (सारांश लिखो)—

संसार पर विजय प्राप्त करनेवाले वे लोग हैं जो ज्ञानवान् हैं; योद्धा नहीं। महम्मद ग़ोरी, अकबर अथवा सिकन्दर ने सचमुच दिग्विजय नहीं किया;

रामदास, तुकाराम, तुलसीदास, गौतम बुद्ध, प्लेटो तथा भगवान् श्रीकृष्ण संसार के सच्चे स्वामी हैं। जिन राजाओं ने हमारे पूर्वजों पर राज्य किया उनका नाम तक नहीं रहा। जिन थोड़े लोगों की कीर्ति बनी हुई है वह केवल किसी न किसी महानुभाव महात्मा के सत्समागम के कारण बची है। कालिदास के नाम पर भोज, व्यास के कारण युधिष्ठिर अब तक भी प्रसिद्ध हैं। ऐसे महात्मा लोग अपने समय की सन्तान में ही जीवित नहीं रह गये, किन्तु सब समय में सब युगों में वे जीवित हैं। यही कारण है कि उनके चरित्रों का अन्त नहीं है। बड़े बड़े राजदरबारों के राजकाजधुरंधर प्रधान और मंत्रीलोगों का तो नाम तक नहीं रहता। बेकन नाम का एक व्यक्ति न्यायाधीश था। वह ज्ञानवान् पुरुषों में श्रेष्ठ गिना जाता है। बेकन की "ज्ञान की प्रगति" का यह प्रभाव है कि युरोप खण्ड आज भौतिक उन्नति में अग्रसर हो रहा है। जिनकी बलशाली भुजाओं के वृक्षों की छाया में यह सम्पूर्ण पृथ्वी एक समय निर्भय हो गयी थी। ऐसे बड़े बड़े शूरवीर राजा इस भूमण्डल पर हो चुके हैं, पर उनकी स्मृतिमात्र भी जिसकी कृपा के बिना नहीं होती ऐसे प्रकृतिपूज्य कविकुलिको प्रणाम है।

4. Explain the following in Hindi (व्याख्या करो) —

(*a*) हे मन ! सज्जन ! कर वही, जाते यश रहि जाई ।
चंदन देह घसाय निज, पर तन देइ बसाइ ॥

(*b*) लखिके सुन्दर वस्तु अरु, मधुर गीत सुनि कोइ ।
सुखिया जनहू के हिये, उत्कंठा यदि होइ ॥
कारण ताको जानिये, सुधि प्रगटी है आय ।
जन्मान्तर के सुखन की, जो मन रही समाय ॥

(*c*) लखि लखि छाया आपनी, शंकित मन ह्वै जाय ।
लक्षण है यह मोहका, भूलि आपही जाय ॥
बोलत ही मुख तें वचन, प्रति उत्तर मिलि जात ।
अंगुरी दृगपर धरतही, इक के द्वै है जात ॥
जो कल्पित रचना रची, वही उपस्थित होत ।
दास कहैं बाधक सबै, शंकित मनको होत ॥

गद्यसाहित्य का अनुपम ग्रन्थ ।

क्या ही अच्छा सम्पादन हुआ है !

राजा लक्ष्मणसिंहजी की

शकुन्तला

(गद्य संस्करण)

इस अमूल्य गद्य ग्रन्थ का बहुत ही उत्तम संस्करण निकाला गया है। राजा साहब ने शकुन्तला का गद्यपद्यमय अनुवाद भी किया है। इस अनुवाद में जितने पद्य हैं, सभी, उक्त गद्य संस्करण में उचित स्थानों पर टिप्पणी के रूप में छापे गये हैं तथा कठिन शब्दों, मुहावरों और बारीकियों पर प्रकाश भी डाला गया है। आप गद्य पढ़ते जाइये और साथ ही स्थान स्थान पर टिप्पणी में दिये राजा साहब के पद्यों से तुलना करके काव्य का आनन्द लेते हुए उनकी क़लम की करामात पर लट्टू भी हूजिये। मूल्य बहुत ही कम ।॥), सचित्र १)

हिन्दी पुस्तक भण्डार,
लहेरियासराय।